अध्याय - 1

आयुष्कामीयाध्याय

1. धर्म अर्थ सुख का साधन आयु हैं।
2. ब्रह्मा ने आयुर्वेद का स्मरण किया था।
3. अष्टांग आयुर्वेद का वर्णन हैं
   (काय चिकित्सा, बाल, ग्रह, उर्ध्वाङ्ग, शल्य, दंष्ट्रा, जरा, वृष चिकित्सा)
4. कफ दोष के कारण मध्यम कोष्ठ होता हैं।
5. रोग विशेष ज्ञान - निदान, प्राग्रूप, लक्षण, उपशय, सम्प्राप्ति
6. देश - 2 प्रकार - भूमि देश व देह देश।
   जांगल देश - वात प्रधान
   आनूप देश - कफ प्रधान
   साधरण देश - सम दोष
7. काल - 2 प्रकार (क्षणादि अवस्था, व्याधि अवस्था)
8. मानसिक दोषों की उत्कृष्ट औषध - धीधैर्यात्मादिविज्ञान। (NIA Lec. 2020)
9. औषध गुण में बहुकल्पं का अर्थ- बहुत सारी कल्पनाएं (क्वाथ, स्वरस, वटी, चूर्ण) बनायी जा सके।
   सम्पन्नं - कृमि, पानी, अग्नि आदि से दूषित न हो।
   योग्य - जिस व्याधि के लिए उपयोगी की जाये उस रोग को दूर करने में योग्य हो।
10. वैद्य के गुण तीर्थात्तशास्त्रार्थो का अर्थ - तीर्थ का अर्थ - गुरू अर्थात् गुरू से प्राप्त शास्त्रार्थ (शस्त्र के अर्थ का ज्ञान)
11. रोगी के गुण ज्ञापक का अर्थ (पीड़ा या लक्षणों को ठीक तरह से बताने वाला)
    सत्ववान् - (प्रवर या मध्य सत्व वाला हो)
    आढ्यो रोगी - (चिकित्सा के लिए साधन जुटा सकें)
12. पुरूषों में रोग सुख साध्य होते है क्योंकि स्त्री में या नपुंसक में भीरूता होने से रोग असाध्य या कष्टसाध्य होते हैं।
13. चिकित्सा अयोग्य में अविधेयं का अर्थ - जो वैद्य की आज्ञा को नहीं मानता हो। (NIA Lec. 2020)
    वैद्यमानि - जो वैद्य ना होते हुए भी अपने को वैद्य मानता हो।

14. रासायन व वाजीकरण का वर्णन उत्तर स्थान में किया गया है।
15. अमरगुरू ब्रह्म व धनवन्तरि के लिए प्रयुक्त हुआ।
16.

दोष	अग्नि	कोष्ठ	प्रकृति	(NIA PHD)
वात	विषम	क्रूर	हीन	
पित्त	तीक्ष्ण	मृदु	मध्यम	
कफ	मंद	मध्यम	उत्तम	

17. वा. ने पित्त के अम्ल व कटु गुण नहीं माना, लघु विस्रं गुण माना गया।
18. कफ के गुणों में पिच्छिल व मधुर गुण न मानकर मन्द, श्लक्षण, मृत्स्न व स्थिर गुण माना।
19. धातु के लिए 'दूष्य' शब्द का प्रयोग किया।
20. स्वादु - अम्ल - लवण - तिक्त - उष्ण (कटु) - कषाय (मधुर) यथापूर्व बलावहा: है।
21. त्रिविध परीक्षा - रोगी परीक्षा - दर्शन, स्पर्शन, प्रश्न
22. औषध के दो प्रकार - शोधन व शमन
23. दक्ष व शुचि गुण - वैद्य व परिचारक दोनों का माना गया है।
24. अतुल्यदुष्यदेशर्तुप्रकृति - सुखसाध्य रोगों का लक्षण माना गया।
25. अरिष्ट का वर्णन शारीर स्थान में किया गया हैं।
26. अ.ह. उत्तर तंत्र - 40 अध्याय (MH. PGET 2010)
27. पित्त के प्राकृत गुण - सर, लघु, द्रव आदि (RPSC 2011)
28. विष चिकित्सा का वर्णन-उत्तर तत्रं में (BHUPG 2014)
29. विकृति विज्ञान नामक अध्याय का वर्णन - अष्टांग हृदय (NIA 2006)

अध्याय - 2

दिनचर्याध्याय

1. चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम् (चक्षु तेजोमय है इसलिए विशेषकर कफ से भय रहता है)
2. अभ्यंग - दृष्टि प्रसादन
3. विशेष रूप से अभ्यंग शिर, श्रवण व पाद पर करना चाहिए। (GPSC LEC 2018) (BHU 2013)
4. शीतकाल व बसन्त ऋतु में अर्द्ध शक्त व ग्रीष्म, वर्षा, शरद में अर्ध शक्ति से कम व्यायाम करना चाहिए।
5. प्रतमक श्वास, तृष्णा, श्रम, रक्तपित्त, क्लम अति व्यायाम से उत्पन्न व्याधि। (NIA 2017 PG Exam)
6. स्नान - दीपनं वृष्यमायुष्यं
7. उत्तमाङ्ग (शिर) पर गर्म जल से परिषेक से केश व चक्षु का बल नष्ट होता हैं। (TPGET 2009)
8. भुक्तवत्सु को स्नान नहीं करना चाहिए।
9. दशविध पाप (कायिक, वाचिक, मानसिक) का वर्णन किया गया हैं।
10. सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्यः सुखं च न बिना धर्मतस्माद्धर्मपरो भवेत (सब प्राणियों की प्रवृतियां सुख के लिए होती हैं और सुख बिना धर्म के नहीं मिलता इसलिए मनुष्य को धर्मपरायण होना चाहिए।
11. अनुयायात्प्रतिपंद सर्वधर्मेषु मध्यमाम् (सब धर्मो में मध्यममार्ग (बुद्धि) का अनुसरण करें।
12. आचार्यः सर्वचेष्टासु लोक एवं हि धीमतः। अनुकुर्यात्तमे वातो लौकिकऽर्थे परीक्षक (बुद्धिमान मनुष्य के लिए सब क्रियाओं में लोक (समाज) ही आचार्य है, उनसे सीखे। परीक्षक मनुष्य लौकिक व्यवहार में लोक का अनुसरण करें।
13. रात्रिचर्या का भी संक्षेप में वर्णन किया गया हैं।
14. दिनचर्या का पालन करने से आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य व शाश्वत लोक मिलता हैं।
15. स्वस्थ पुरूष आयु की रक्षा के लिए ब्रह्म मुर्हुत में उठे।
16. दातौन सेवन - कषाय, कटु व तिक्त रस वाली, दन्तपवन की ल. - 12 अंगुल
17. नित्य प्रयोग - सौवीर अंजन (सुश्रुत - स्रोतोञ्जन)
18. रसांजन प्रयोग - सप्तरात्रि में 1 बार, (चरक - 5 वें/8 वें दिन पर।)
19. व्यायाम सेवन - अर्धशक्ति तक निर्दिष्ट हैं।
20. उद्धर्तनं - कफहरं मेदसः प्रविलायनम् (सुश्रुत - वातहरं कफमेदो विलापनम्)
21. स्नान वर्जित - अर्दित रोगी, नेत्ररोगी, मुखरोगी, कर्ण रोगी, अतिसार, आध्मान, पीनस व अजीर्ण में। (AIIA LEC 2021)
22. काले हितं मितं ब्रुयादबिसंवादि पेशलम्।
23. क्रम - नावन-गण्डूष-धूमपान-ताम्बूल (PHD NIA 2018)

अध्याय - 3

ऋतुचर्याध्याय

1. बल का क्रम (ऋतुनुसार)
   हेमन्त और शिशिर - मनुष्य का श्रेष्ठ बल
   शरद और बसन्त - मनुष्य का मध्यम बल
   वर्षा और ग्रीष्म ऋतु - मनुष्य का न्यून बल
2. बलवान पुरूष में शीत के कारण अवरूद्ध होने से उष्मा बाहर न निकलने से जठराग्नि प्रबल हो जाती हैं।
3. दिवास्वप्न करना चाहिए - ग्रीष्म ऋतु
4. युक्ति से सूर्य की किरण सेवन, स्वेदन तथा पादत्राणं का उपयोग - हेमन्त ऋतु।
5. आदानकालजनित रूक्षता व शीत अधिकता - शिशिर ऋतु में
6. गुरूशीत दिवास्वप्न स्निग्धाम्लमंधुरात्यजेत् - बसन्त ऋतु (चैत्र-बैशाख) (RPSC 2011)
7. पटुकटु अम्ल व्यायामार्ककरांस्त्यजेत्- ग्रीष्म ऋतु
8. रसाला, रागषाडव, पानक, पञ्चसारं आदि सेवन- ग्रीष्म ऋतु
9. अपादचारी - वर्षा ऋतु
10. घृत तिक्तं विरेको रक्तमोक्षण - शरद ऋतु
11. हंसोदक सेवन (हंसोदक न अभिष्यन्दि है न रूक्ष होता है व पीने आदि कार्यों में अमृत समान हैं - शरद ऋतु (NIA & JAM...2009)
12. नित्यं सर्वरसाभ्यासः स्वस्वाधिक्य मृतावृतौ।
13. आदान काल में रस बल का उपचयापचय क्रम - तिक्त - कषाय - कटु - क्रम से बलवान।
14. विसर्ग काल में रस की क्रम से बलवत्तरस - अम्ल - लवण - मधुर
15. मूर्ध्निं तैल को हेमन्त ऋतुचर्या में निर्दिष्ट किया गया हैं।
16. मद्यं न पेयं पेयं वा स्वलंप, सुबहुवारि वा - ग्रीष्म ऋतु
17. श्रृङ्गबेराम्बु, साराम्बु मध्बम्बु / जलदाम्बु सेवन - वसन्त ऋतु
18. ग्रीष्म ऋतु में अविधि से मद्य सेवन करने से शोष, शैथिल्य, दाह व मोह उत्पन्न होता हैं।
19. ससितं माहिषं क्षीरं चन्द्रनक्षत्र शीतलम् ग्रीष्म ऋतु में वर्णित हैं।
20. मध्वरिष्ट सेवन - वर्षा ऋतु में निर्दिष्ट
21. उदमन्थ निषेध - वर्षा, प्रार्वट व हेमन्त ऋतु
22. तुषार सेवन निषेध - शरद ऋतु में
23. ऋतु निर्दिष्ट रस सेवन

1.	शीत (हेमन्त व शिशिर)	1.	मधुर, अम्ल, लवण
2.	वर्षा	2.	मधुर, अम्ल, लवण
3.	वसन्त	3.	तिक्त, कटु कषाय
4.	निदाधे (ग्रीष्म)	4.	मधुर
5.	शरद	5.	मधुर, तिक्त, कषाय

24. ऋतुसंधि काल – पूर्व ऋतु के अंतिम सात दिन व अग्रिम ऋतु के प्रथम सात दिन
25. अ.ह. अनुसार गोष्ठी कथा वसन्त ऋतु में बताई गयी है। (NIA PHD 2018)
26. कुन्देन्दुधवल उपमा शालि चावल के लिए प्रयुक्त हुआ है। (NIA PHD 2018)
27. शशांक किरणान् भक्ष्यान् का प्रयोग ग्रीष्म ऋतु में वर्णित है। (NIA PHD 2018)
28. शिशिर ऋतु में तिक्त रस की उत्पत्ति होती है। (NIA PHD 2018)
29. इस अध्याय में दन्तपवनं का वर्णन किया गया है (TRIVENDRUM PGET 2009)
30. आध्मान पीनसाजीर्ण भुक्तवत्सु के द्वारा निषेध हैं– स्नान (RPSC-2011)

अध्याय - 4

रोगानुत्पादनीयाध्याय

1. वाग्भट्ट ने कास को अधारणीय वेग माना है। (CHATTISGARH MO 2009)
2. विबन्ध हृदयोरसोः - उद्गार वेगरोध
3. मन्यास्तम्भ - क्षवथु, जृम्भा वेग रोध (अश्रु)(UPSC 2021)
   क्षवथु वेग रोध (चरक)
4. बाधिर्य - पिपासा वेग रोध
5. गुल्म - श्वास वेग रोध, अपान वायु वेग रोध शकृत वेग रोध
6. विड्वमं, तृट्शूलार्त, क्षीण - असाध्य वेग रोधी
7. जृम्भा वेगरोध लक्षण - क्षवथु वेग रोध समान - वातनाशक चिकित्सा
8. रोगाः सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदीरणधारणैः। (वेगो के धारण व उदीरण से सभी प्रकार के रोग होते है)
9. वेगधारण करने से वायु अनेक प्रकार से कुपित होता हैं।
10. भेषजक्षपिते पथ्यमाहारैर्बृंहणं (भेषज से क्षीण को पथ्य आहार से बृहण करवाना चाहिए)
11. अष्टांग हृदय में अधारणीय वेग में उद्गार का वर्णन नहीं किया गया।
12. अंगभङ्ग लक्षण-क्षुधा, मूत्र व शुक्र वेगरोध में पाया जाता हैं।
13. हृदयस्योपरोधनम् लक्षण - मल वेगावरोध जन्य, (सुश्रुत - अधो वात वेगावरोध जन्य)
14. मुखेन विट्प्रवृत्ति लक्षण - मलवेगावरोधजन्य, (अधोवात व पुरीष वेगावरोधजन्य सुश्रुत)
15. अवपीड़क घृत का सेवन मूत्रवेगावरोध जन्य रोगों में निर्दिष्ट हैं।
16. अर्क विलोकन - सूर्य को देखना - श्रुत् (छींक) क्षवथु वेगावरोध जन्य विकार चिकित्सा में निर्दिष्ट हैं।
17. ज्वर लक्षण - वमथु व शुक्र वेगावरोध जन्य
18. शोधनकाल -

दोष संचय ऋतु	शोधन काल
1. शीतकाल (कफ दोष)	वसन्त ऋतु
2. ग्रीष्म काल (वात दोष)	अभ्रकाल (वर्षा)
3. वर्षा (पित्त दोष)	घनात्यय (शरद ऋतु)

अध्याय - 5

द्रवद्रव्यविज्ञानीयमध्याय

1. सामुद्र जल सेवन - अश्विन मास में सेवन (UK PGET 2015)
2. पथ्य नदी जल - जो पश्चिम समुद्र में गिरती हैं।
   - जो पानी निर्मल है।
   - जो नदियां तेज बहती है।
3. स्थिर नदियां का जल - कृमि, श्लीपद, हृदय रोग, कण्ठरोग, और शिरोरोग उत्पन्न।
4. अवन्ती से पूर्व व पश्चिम के देश से उत्पन्न नदियां - अर्श रोग।
5. माहेन्द्र पर्वत से उत्पन्न नदियां - उदर रोग व श्लीपद रोग।
6. सह्याद्रि और विन्ध्याचल से उत्पन्न नदियां - कुष्ठ रोग, पाण्डुरोग, शिरोरोग
7. परियात्र पर्वत से उत्पन्न नदियां - दोषनाशक, बल, पौरूष देने वाली (समुद्र का जल - त्रिदोषकारक) (JAM-2012)
8. शरद व ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर स्वस्थ मनुष्य को भी अल्प मात्रा में पानी पीना चाहिए।
9. श्रेष्ठ जल - वर्षा ऋतु में वर्षा जल (निकृष्ट जल - नदी जल (वर्षा ऋतु में))
10. इक्षु वर्ग में मधु का वर्णन किया गया हैं।
11. मद्य वर्ग में मूत्र का वर्णन।
12. मधु - व्रणशोधन सन्धान रोपणं वातलं
13. मध्वासव - मेहपीनसकासजित्।
14. तोय (जल) वर्ग, क्षीर वर्ग, इक्षुवर्ग तैल वर्ग व मद्य वर्ग - 5 वर्गों का वर्णन द्रवद्रव्यविज्ञानीय अध्याय में किया गया हैं।
15. भोजन समय जलपान को गुणावगुण समस्थूलकृशा भुक्तमध्यान्तप्रथमाम्बुपाः (BHU -2013)
16. बस्तिशोधन गुण - उष्ण जल व नारिकेल जल
17. गोदुग्ध - रसायन, मेध्य, बल्य, जीर्णज्वर नाशक
18. अविदुग्ध अहृद्य माना गया हैं।
19. एकशफ दुग्ध - बाढमुष्णं (अतिशय उष्ण) शाखवातहरं
20. दधि - अम्लपाकरसं, सेवन निषेध - वसन्त, ग्रीष्म व शरद ऋतु
21. घृत - वयसः स्थापन् परम् स्नेहानामुत्तमं
22. गोदुग्धः गोघृत श्रेष्ठ, (अवि दुग्ध, अवि घृत-अवर/निन्दित)
23. इक्षु विकार में शर्करा श्रेष्ठ व राब निकृष्ट हैं।
24. कृशानां बृंहणायाल स्थूलानां कार्शनाय च व संस्कारत्सर्वरोगाजित् - तैल का गुण

25. मद्य – कृशस्थूलहितं, स्रोतोविशोधनम्, नष्टनिद्रातिनिद्रेभ्यो।

७26. किलाट – बल्य, विष्टम्भि व गुरू (GPSC LEC 2018)

27. तीक्ष्णाग्नि व अनिद्रा – माहिष दुग्ध

28. गरीयोऽतिश्रृतं व धारोष्ण दुग्ध – अमृतोपमम्

अध्याय - 6

अन्नस्वरूपविज्ञानीयमध्यायं

1. इस अध्याय में - शूक वर्ग, शिम्बी वर्ग, पक्वान्नवर्ग, मांस वर्ग, शाक वर्ग, फल वर्ग व औषधवर्ग का वर्णन हैं।
2. सन्धान कारी - गोधूम
   भग्नसन्धानकारी - प्रियङ्गु
   भग्नसन्धानकृद् - लशुन
3. कृतान्न वर्ग में मण्ड पेया विलेपी ओदन - पूर्व क्रम से लघु (UPSC MO 2010)
4. दृग्घ्नं - विरूढ़क धान्य, शुष्क शाक, तिल विकृति।
5. जाङ्गल मांस - पित्तोतर वात मध्य सन्निपात में प्रशस्त
6. भक्ष्य मांस - सद्योहत्, शुद्ध, वयस्थ मांस
7. अत्याग्नि - गो मांस
8. हृद्यं, कृमिनुतं - पटोल
9. रक्तपितहरं परम - वृषं (वासा)
10. वल्ली फल में - कूष्माण्ड (श्रेष्ठ)
11. फल वर्ग द्राक्षा - उत्तम, लकुच - निकृष्ट (Tibbia 2008)
12. लवण का वर्णन - औषध वर्ग में
    (8 लवण का वर्णन)
13. त्रिजात - त्वक्, तेजपत्र, एला
    चर्तुजात - त्रिजात + केसर
14. सर्वदोषजित् - लघु पंचमूल
15. पित नाशक - तृण पंचमूल
16. चक्षुष्य वृष्यं - जीवन पंचमूल
17. दृष्टि व शुक्र नाशक - निष्पाव व अलसी
18. कुलथी यूष - गुल्मतूनीप्रतूनिजित्
19. चटक मांस - शुक्रलाः परम्
20. मकोय शाक - रसायनी

उपोदिका – मदघ्नी
जीवन्ती – चक्षुष्या, सर्वदोषघ्न
वल्लीफल – वस्तिशुद्धि कर, वृष्यं

21. बालमूली – अव्यक्त रस
22. सूरण – विशेषादर्शसां पथ्यः
23. आम कपित्थ – अकण्ठय
24. भिलावा – कफवातहरं परम्
25. सर्व शुष्क शाक सेवन वर्ज्य है – (अपवाद – मूलक)
26. अपक्व फल त्याज्य हैं। (अपवाद – बिल्व फल)
27. हरीतकी – वयसः स्थापनी परम्
28. आर्द्रक – श्लीपद नाशक
29. पंचकोल – चव्य, चित्रक, पिप्पली, पिप्पलीमूल, सोंठ
    पंचकोल + मरिच – षडूषण
30. पचंपचंमूल – बृहत्, लघु, मध्यम, जीवनीय, तृण पंचमूल का वर्णन किया गया।
31. धान्य वर्ग – वर्ग 2 प्रकार (असित व गौर वर्ण)
32. लाजा श्रेष्ठ – छर्दि में (UPPSC MO 2015)

अध्याय - 7

अन्नरक्षाऽध्यायं

1. विष युक्त अन्न की पशु-पक्षियों द्वारा परीक्षा

मक्षिका	-	म्रियन्ते
काक	-	क्षाम स्वर
शुक, दात्यूह, सारिका	-	उत्क्रोशन्ति
हंसः	-	प्रस्खलति
जीवञ्जीत	-	ग्लानि
चकोर	-	अक्षि वैराग्य
क्रौञ्च	-	मत्तता
कपोत,कोयल,चक्रवाक	-	जहत्यसून
मार्जार	-	उद्वेग
वानर	-	शकृत मुञ्चति
मयूर	-	हृष्येत

2. हनुस्तम्भ - मुखास्थित विष लक्षण
3. विरूद्धमपि चाहारं विद्याद्विषगरोपमम्।
4. त्रय उपस्तम्भ :- आहार, शयन, अब्रह्मचर्य
5. रात्रि जागरण - रूक्षताकारक
   दिवा स्वप्न - स्निग्ध कारक (NIA LEC 2010)
   त्वासिनी प्रचलायितम्- अरूक्षमनभिष्यदिं
6. बहु मेदः कफ व्यक्ति, नित्य स्नेह भोजी - दिवास्वप्न निषेध
   विषार्तः व कण्ठरोगी - निशा स्वप्न निषेध।
7. राजवैद्य का निवास राजगृह समीप होना चाहिए। इससे राजवैद्य सर्वत्र प्रतिजागृत रहता हैं।
8. योग व क्षेम राजा के अधीन हैं।
9. विषदाता के लक्षण-श्याव व शुष्क मुख इधर-उधर दिशाओं में बिना उद्देश्य के देखना, स्वेद, वेपथु, डरा हुआ, चलते हुए फिसलता है, जृम्भाई लेता हैं। (GPSC LEC 2018)
10. विषाक्त अन्न की अग्नि परीक्षा करने पर शिखिकण्ठ (मयूर कण्ठ) के समान धूम होती हैं।
11. बिन्दुभिश्चाचयोङ्गानां (शरीर पर जलबिन्दु के समान छाले हो जाना) पक्वाशयगत विष का लक्षण हैं।
12. विषयुक्त मनुष्य में औषध - हृद्विशोधन के लिए - सूक्ष्म, ताम्रभस्म मधु के साथ, हृद्विशोधन पश्चात् - 1 शाण हेम चूर्ण (स्वर्ण भस्म)

13. वैरोधिक आहार –
- कांस्य पात्र में 10 दिन तक रखा घृत
- मधु, घी, वसा, तैल, जल – परस्पर समान मात्रा में लेने पर
- असमान मात्रा में मधु – सर्पि अन्तरिक्ष जल के साथ
- हारिद्र – कटु तैल के साथ
- तिलकल्क सिद्ध उपोदिका अतिसार करती हैं।
- मूली आदि हरे शाक खाकर दूध न पीये।

14. पादेनापथ्यमभ्यस्तं पादपादेनं वा त्यजेत् – अभ्यास से सात्म्य अपथ्य को चतुर्थांश अथवा सोलहवें अंश से छोड़ देवें। व इसी तरह पथ्यं को चतुर्थांश से या सोलहवें अंश से ग्रहण करना चाहिए।
15. क्रमेणापचिता दोषाः क्रमेणोपचिता गुणाः सन्तो यान्त्यपुनर्भविमप्रकम्प्या भवन्ति च।
16. कालरात्रि समान – अकाल में निद्रा, अतिनिद्रा व निद्रा सेवन न करना।
17. असात्म्य के कारण रात्रि जागरण की अवस्था में जागरण काल में अर्ध समय तक अभुक्त दिवा शयन का विधान हैं।
18 अनियमित स्त्री प्रसंग से अपर्वमरण (अकाल मृत्यु) को प्राप्त होता हैं।
19. जांगल मासंरस – शीतवीर्य (वृद्ध मलकारक) (BHU 2009)

अध्याय - 8

मात्राऽशितीयमध्याय

1. गुरूणामर्धसौहित्यं लघुनां नातितृप्तता
2. हीन मात्रा भोजन - बल व ओज हानि, वात रोग का हेतु
3. दण्डालसक - त्यजेदाशुकारि, असाध्य
4. समशन, अध्यशन, विषमाशन - त्रिण्यप्येतानि मृत्युं वा घोरान् व्याधीन सृजन्ति वा
5. उष्णीकृत पुनः (दोबारा गर्म किया गया भोजन) - त्याज्य भोजन
6. पिष्ट, विरूढक, शुष्क शाक, यवक - प्रतिदिन न खायें।
7. नेत्र बल के लिए - रात्रि में घृत + मधु (असमान मात्रा) को त्रिफला के साथ खायें।
8. भोजन का क्रम
   भोजन से पहले - गुरू, स्निग्ध, स्वादु, मन्द, स्थिर द्रव्य (विस, इक्षु, मोच, चोच, आम्र, मोदक, उत्कारिक आदि)
   भोजन मध्य - शुक्त आदि अम्ल व लवण द्रव्य
   भोजन अन्त - लघु, रूक्ष, कटु, तीक्ष्ण व सर पदार्थ सेवन
9. अनुपान सेवन
   यव व गोधूम भोजन के बाद - शीतल जल
   दही, मद्य, विष, मधु सेवन बाद - शीतल जल
   पिष्टी से बने भोजन के बाद - कोष्ण जल
   शाक, मृद्ग विकृति - मस्तु, तक्र, अम्ल, काञ्जी
   कृश पुरूष मे पुष्टि के लिए - सुरा
   स्थूल पुरूष - मधूदक
   शोष रोगी - मांसरस
   मांस भोजन व अग्निमांद्य - मद्य
   औषध के बाद, स्त्री सेवन के बाद, भाषण, लंघन, धूप व श्रम पीडित क्षीण, बाल, वृद्ध - दुग्ध
10. पान - जो अनियत काल में रूचिवश पीया जाता हैं।
    अनुपान - नियत काल में विधिवश पीया जाता हैं।
11. प्रक्लिन्न देह, मेह, अक्षि गल रोगी, व्रण रोगी - पान का त्याग
12. भोजन करके आतप/अग्नि सेवन, यान, प्लवन वाहन का निषेध करें।
13. मात्रा ह्यग्ने प्रवर्तिका-भोजन की मात्रा अग्नि को प्रवृत करती हैं व गुरू व लघु द्रव्य मात्रा की अपेक्षा करती हैं।

14. अतिमात्रा में आहार सेवन सर्वदोष प्रकोपक हैं।
15. आम दोष/आम विष – विष के समान आशुकारी व विरूद्ध उपक्रम वाला होता हैं।
16. अलसक में चिकित्सा का क्रम वमन – स्वेदन – फलवर्ति – स्विन्न अंगों का वेष्टन।
17. विसूचिका रोग में पार्ष्णिदाह निर्दिष्ट हैं।
18. अजीर्ण रोगी को अतिशय पीडा होने पर भी शूलनाशक औषधि नहीं देनी चाहिए।
19. आमजन्य रोगों में त्रिविध दोष का विचार करके अपतर्पण का विधान हैं।

अल्प दोष	–	लंघन
मध्म दोष	–	लंघन व पाचन
प्रभूत दोष	–	शोधन

20.

अजीर्ण	–	चिकित्सा
आमाजीर्ण	–	लंघन (BHU 2007)
विष्टब्धाजीर्ण	–	स्वेदन (UK LEC 2018)
विदग्धाजीर्ण	–	वमन
रसशोषाजीर्ण	–	अभुक्त दिवाशयन

21. भोजन प्रमाण – कुक्षि के चार भाग
    दो भाग – अन्न
    1 भाग – द्रव्य
    1 भाग – वातादि दोष
22. अनुपान – अन्न के गुणों से विपरीत गुण वाला परन्तु अविरोधी होता हैं।
23. गरीयसो भवेल्लीनादामादेव कफवातानुबन्धा विलम्बिका (GPSC LEC 2018)

अध्याय - 9

द्रव्यादिविज्ञानीयमध्याय

1. वामक द्रव्य (उर्ध्वगामी) - अग्नि + वायु महाभूत प्रधान
   विरेचक द्रव्य (अधोगामी) - जल + पृथ्वी महाभूत प्रधान
2. तत् क्रियते येन या क्रिया - वीर्य
3. जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्। रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः। (Andhra. PG)
4. रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम्।
5. * दन्ती व चित्रक (रस, वीर्य, विपाक समान)
   दन्ती - विरेचक (प्रभाव से)
   चित्रक - दीपन - पाचन
   मुलेठी व द्राक्षा - (रस, वीर्य, विपाक समान)
   * मुलेठी - वामक (प्रभाव से)
   द्राक्षा - वामक नहीं
   * दुग्ध व घृत (वीर्य, विपाक समान)
   घृत - अग्निदीपक (प्रभाव से)
6. यव, मत्स्य, सिंह विचित्र प्रत्ययारब्ध द्रव्य हैं।
   यव - मधुर, गुरू होते हुए भी वातकारक
   मत्स्य - मधुर रस होते हुए भी उष्ण वीर्य
   सिंहमांस - कटुविपाक वाला
7. द्रव्य का आश्रय - पृथ्वी
   योनि - जल (NIA LEC 2020)
   निवृत्ति विशेष - अग्नि, वायु, आकाश
8. व्यपदेशस्तु (पंचभौतिक होते हुए भी किसी एक भूत की अधिकता से व्यवहार होता हैं) व्यपदेशस्तु भूयसा - वा. द्वारा द्रव्यादिविज्ञानीय अध्याय में वर्णित् हैं।
9. रस - व्यक्त, अनुरस - अव्यक्त अन्ते व्यक्तः
10. प्रयोजन व योजना की भिन्न-भिन्न दृष्टि से संसार का प्रत्येक द्रव्य औषधरूप हैं।
11. वा. ने अष्टविध वीर्य का वर्णन किया हैं।
12.

रस	-	विपाक
मधुर, लवण	-	मधुर

अम्ल	–	अम्ल
कटु, तिक्त, कषाय	–	कटु

13. बल की समानता होने पर रसादि में उत्कर्षता :-
रस < विपाक < वीर्य < प्रभाव
14. विचित्र प्रत्ययारब्ध अ. हृदयाकार की मौलिक देन हैं। (UPPSC 2002, BHU 2006, UPSC 2005)

अध्याय - 10

रसभेदीयमध्याय

1.	वक्त्रमनुलिम्पति ह्लादनोऽक्षप्रसादन - आजन्मसात्म्यात्कुरूते - स्तन्य सन्धान (संधान) कृद्	मधुर रस
2.	क्षालयते मुखम् उष्णवीर्यं हिम स्पर्श मूढवातानुलोमन - हृद्यः पाचन रोचन अग्निदीप्ति कृत	अम्ल रस
3.	स्यन्दयत्यास्यं कपोल गलदाह कृत अग्नि कृत - रोचन	लवण
4.	विशदयत्यास्यं रसनं प्रतिहन्ति स्तन्य कण्ठ विशोधन - क्रिमितृड़ विषम जयेत् क्लेद मेद वसा मज्ज शुकृन्मूत्रोपशोषण	तिक्त
5.	उद्वेजयति जिह्वाऽग्र मुख में चिमचिमाहट अक्षि-नासा-मुख से स्त्राव् कपोल दहतीव - व्रणावसादन स्नेह मेद : क्लेदोपशोषण दीपन : पाचनो रूच्य शुक्र बल क्षय	कटु

6. जड़येज्जिह्वां
कण्ठस्त्रोतोविबन्ध कृत
रक्त विशोधन – कषाय रस
रोपण
क्लेद: मेदोविशोषण

7. रस उत्पत्ति –

रस	महाभूत
मधुर	पृथ्वी + जल
अम्ल	पृथ्वी + अग्नि
लवण	जल + अग्नि
कटु	अग्नि + वायु
तिक्त	आकाश + वायु
कषाय	पृथ्वी + वायु

8. क्रिमि व विष नाशक गुण तिक्त रस में पाया जाता हैं।
9. तिमिर व्याधि अम्ल रस के अतिसेवन से होती हैं।
10. मूर्च्छा कटु रस के अतिसेवन से उत्पन्न होती हैं।
11. कुष्ठनाशक व कुष्ठकारक रस क्रमश: कटु व लवण हैं।
12.

रस	विशिष्ट कर्म
मधुर रस	कण्ठय
अम्ल रस	हृद्य
लवण रस	छेदन–भेदन कृत
कटु	रूच्य
तिक्त	मेध्य
कषाय	ग्राही

13. स्वर्ण धातु – मधुर वर्ग में व रजत धातु अम्ल वर्ग में सम्मिलित हैं।
14. मूत्र का वर्णन कटु वर्ग में किया गया हैं।
15. रसों के विभिन्न भेद से क्रम
1. उत्तरोत्तर उष्णता – कटु < अम्ल < लवण
2. उत्तरोत्तर शीतल – तिक्त < कषाय < मधुर
3. उत्तरोत्तर रूक्ष व मलबद्ध कारक – तिक्त < कटु < कषाय
4. उत्तरोत्तर स्निग्धता – लवण < अम्ल < मधुर
5. उत्तरोत्तर गुरूता – लवण < कषाय < मधुर
6. उत्तरोत्तर लघुता – अम्ल < कटु < तिक्त
16. रसों के संयोग – 57

1 रस – 6
द्विक – 15
त्रिक – 20
चतुष्क – 15 (UK.PG 2014)
पांच रस के संयोग – 6
छह रस – 1

17. रसों के संयोग 57 व कल्पना 63 हैं।

अध्याय - 11

दोषादिविज्ञानीयध्याय

1. दोषधातु मल मूलं सदा देहस्य (UPPSC 2014)
2. धातुओं का विशिष्ट कर्म
   रस - प्रीणनं
   रक्त - जीवनं
   मांस - लेपः
   मेद - स्नेहो
   अस्थि - धारण
   मज्जा - पूरण
   शुक्र - गर्भोत्पाद
3. पुरीष कर्म - अवष्टम्भन
   मूत्र - क्लेदवाहन्म (BHU 2015)
   स्वेद - क्लेद विधृति (NIA 2015)
4. वृद्ध रस कर्म - श्लेष्म वत् कार्य
5. श्रम, स्फिक्स्तनोदरलम्बन - वृद्ध मेद, गण्ड अर्बुद ग्रंथि - मांस वृद्धि (PGET 2019)
   उदरवृद्धिता - वृद्ध मांस
   नेत्राङ्गगौरव - वृद्ध मज्जा
   अतिस्त्री कामता - वृद्ध शुक्र
   कृतेऽप्यकृतसंज्ञताम् - वृद्ध मूत्र
6. संज्ञा मोह - वात क्षीण
   प्रभाहीन - पित्त क्षीण
   भ्रम, हृदय द्रव : श्लथसन्धिता - कफ क्षीण (UKPU 2016)
7. शब्दासहिष्णुता - रस क्षय
   अक्ष ग्लानि व सन्धिवेदना - मांसक्षय (BHU.MD 2010)
   अस्थि तोद व दन्तकेश नखादि शदनं - अस्थि क्षय (MHPGET 2010)
8. हृत्पार्श्वे पीड़यन - पुरीष क्षीणता
9. विवर्ण व रक्त युक्त मूत्र - मूत्र क्षय
10. स्फुटनं त्वचः- स्वेद क्षय
11. ओज - तेजो धातूनां शुक्रान्तानां परं

12. स्वपंन कट्याः प्लीहोवृद्धि कृशांगता – मेद क्षय (BHUPGET 2015)
13. ओज – हृदयस्थमपि व्यापि देहस्थितिनिमबन्धनम्
स्निग्धं सोमात्मकं शुद्धमीषल्लोहितपीतकम् (BHU 2007)
यन्नाशे नियत नाशो यस्मिंस्तिष्ठति तिष्ठति
14. ओज क्षय चिकित्सा – जीवनीयौषध, क्षीर, मांस रस आदि सेवन।
15. तुष्टिपुष्टिबलोदय – ओज वृद्धि लक्षण
16. चल शब्द वायु के लिए प्रयुक्त हुआ।
17.

लक्षण	धातु वृद्धि/क्षय
शिराशैथिल्य	रक्त क्षय
प्लीहा वृद्धि	मेद क्षय
भ्रमतिमिर दर्शन	मज्जा क्षय

18. दोषादि का क्षय इनकी वृद्धि की अपेक्षा अधिक कष्टकारी होता हैं।
19. आधार – आधेय संबंध (आश्रय–आश्रयी भाव)

दोष	धातु/मल
वात	अस्थि
पित्त	स्वेद/रक्त
कफ	रस, मांस, मेद, मज्जा, शुक्र, मल, मूत्र

20.

रोग (वात को छोड़कर)		चिकित्सा
वृद्धिजन्य रोग	–	लंघन
क्षयजन्य रोग	–	बृंहण
रक्त वृद्धि	–	रक्तस्राव व विरेचन
मांस वृद्धि	–	शस्त्र, क्षार, अग्नि
मेद वृद्धि	–	अपतर्पण
मेदक्षय	–	संतर्पण
अस्थिक्षय	–	तिक्त क्षीर सर्पि व वस्ति
पुरीषवृद्धि	–	अतिसार
मलक्षय	–	भेड़/बकरी का मध्य भाग, कुल्माष, यव माष का प्रयोग
मूत्रवृद्धि	–	प्रमेह
मूत्रक्षय	–	मूत्रकृच्छ्र
स्वेदक्षय	–	व्यायाम, अभ्यंग, स्वेदन, मद्य

21. प्राकृत रक्त धातु का रस → मधुर – लवण

अध्याय - 12

दोषभेदीयाध्याय

1. व्यान वायु - महाजव (Kerala Pg.)
2. अन्न का पाचन व सार-किट्ट को पृथक करता - पाचक पित्त
3.

दोष	संचय	कोप	शमन	
वात	उष्ण+रूक्ष आदि गुण	शीत+ रूक्ष	उष्ण + स्निग्ध	
पित्त	शीत+तीक्ष्ण (BHUPG 2011) आदि गुण		उष्ण+मंद	शीत+मंद
कफ	शीत+स्निग्ध (UK 2014) आदि गुण		उष्ण+स्निग्ध	उष्ण+रूक्ष

4. दोषा एवं हि सर्वेषो रोगाणामेककारणम्।
5. काय वाक् चित्त भेदने कर्मापि विभेजत्रिधा।
6. बाह्य रोग मार्ग - रक्तादि धातु व त्वक्
(शाखाश्रित रोग)

मध्यम रोग मार्ग - शिर, हृदय, बस्ति आदि मर्म, अस्थियों की संधिया व इनसे संबधित सिरा, स्नायु कण्डरा आदि।

अन्त रोग मार्ग - कोष्ठ/महास्त्रोत्/आमपक्वाशयाश्रय

7.

दोष	विशेष स्थान
वात	पक्वाधान
पित्त	नाभि
कफ	उर

8. पाचक पित्त का स्थान - पक्वामाशय मध्य।
9. द्रव गुण पाचक पित्त में पाया जाता हैं।
10. दोष - चयादि काल

दोष	चय	प्रकोप	प्रशम
वात	ग्रीष्म	वर्षा	शरद
पित्त	वर्षा	शरद	हेमन्त

	कफ	शिशिर	वसन्त	ग्रीष्म

11. शोफ, अर्श, गुल्म – बाह्य व आभ्यन्तर रोगमार्ग दोनों में वर्णन।
12. कर्मज हेतुभिर्विना **महारम्भोऽल्पके** हेतावाताङ्कों दोषकर्मजः। (NIA Lect. 2010)
13. दशविध परीक्षा – दूष्य, देश, बल, काल अनल, प्रकृति, वय, सत्व, सात्म्य, आहार की अवस्था।
14. दोष के क्षय वृद्धि और समता के आधार पर 63 भेद बताये गए।
15. वात के कुल स्थान = 6
16. पित्त के कुल स्थान = 8
17. कफ के कुल स्थान = 10 (DR. SRRAU LECT. 2010)

अध्याय - 13

दोषोपक्रमणीयध्याय

1. वात की चिकित्सा - वेष्टन, वित्रासन, मृदु संशोधन (DSRRAU LECT.2010) & (HARIDWAR PG 2013)
2. पित्त की चिकित्सा - सौम्या भाव पयः सर्पि विरेकश्च विशेषतः।
3. कफ की चिकित्सा - दीर्घकालस्थितः मद्यं सेवन
   - मेदोघ्नमौषध
   - निः सुखत्वं सुखाय
4. श्रेष्ठ औषध - प्रयोगः शमयेद्व्याधिमेंक योऽन्यमुदीरयेत् नाऽसौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत्।
5. कोष्ठ से शाखा में दोष जाने का कारण →
   - व्यायाम
   - उष्णिमा की तीक्ष्णता
   - अहित आचरण
   - वायु के द्रुतगामी
6. दोषों के शाखा से कोष्ठ में जाने के कारण स्त्रोतो के मुख शोधन (NIA Lec - 2020)
   - दोष वृद्धि
   - अभिष्यन्द
   - पाचन
   - वायु निग्रह
7. अन्य स्थानगत दोषों में यदि दोष निर्बल - उस स्थानगत चिकित्सा
   दोष बलवान - दोषानुसार चिकित्सा
8. आमदोष - ऊष्मणोऽल्पबलत्वेन धातुमाद्यपाचितम् दुष्टमाशयगतं रसामामं प्रचक्षते।
9. वात की चिकित्सा - विशेषान्मेद्यपिशितरस तैलानुवासनम्, सुख शीलता।
10. वायु को योगवाही बताया गया।
11. संसर्ग दोष में उपचार काल
    वात - पित्त संसर्ग - ग्रीष्म ऋतु का उपचार
    कफ - वात संसर्ग - वसन्त ऋतु का उपचार
    कफ - पित्त संसर्ग - शरद ऋतु का उपचार
12. दोषों का समीपस्थ मार्ग

मुख द्वारा दी गई औषध – आमाशयगत दोषों का नाश
नासिका द्वारी औषध – उर्ध्वजत्रुगत रोगों का नाश
गुदा मार्ग द्वारा औषध – पक्वाशयगत रोगों का नाश

13. शोधन काल
ग्रीष्म में संचित वात – श्रावण मास में निर्हरण
वर्षा में संचित पित्त – कार्त्तिक मास में निहरण
हेमन्त में संचित कफ – चैत्र मास में निहरण

14. 10 औषध काल का वर्णन किया गया
(i) कफ आधिक्य रोग व बलवान रोग व रोगी – अभक्त
(ii) अपान वैगुण्य – अन्न के आदि में
(iii) समान वैगुण्य – अन्न के मध्य में
(iv) व्यान – प्रातः अन्न के अंत में
(v) उदान वैगुण्य – सायं अन्न के अंत में
(vi) प्राण वैगुण्य – ग्रास के बीच में
(vii) विष, वमन, हिक्का, तृष्णा, श्वास, कास – मुर्हु–मुर्हु
(viii) अरोचक – अनेक प्रकार के भोजन के साथ
(ix) कम्प, आक्षेपक, हिक्का – स्वल्प भोजन के पूर्व व पश्चात् (सामुदग्)
(x) उर्ध्वजत्रु विकार – स्वप्न काले – (रात्रि में सोते समय) (UK LEC 2018)

15. स्त्रोतोरोध बल भ्रंश गौरव अनिल मूढ़ता – साम दोष लक्षण
आलस्यापक्ति निष्ठीवन मलसंङ्गारूचिक्लमाः (GPSC LEC 2018)

16. वात की चिकित्सा मृदु संशोधन (KARNATKA PG 2011)

अध्याय - 14

द्विविधोपक्रमणीयाध्याय

1. उपक्रम्य (जिसकी चिकित्सा की जाती है)
   उपक्रम (चिकित्सा)
2. बृहंण द्रव्य - पार्थिव व जलीय महाभूत प्रधान।
   लंघन द्रव्य - आग्नेय, वायव्य व आकशीय द्रव्य प्रधान
3. बृंहण केवल वात अथवा पित्तयुक्त वात का शमन करता हैं।
4. लंघन योग्य पुरूषों का बृंहण नहीं करना चाहिए किन्तु बृंहण योग्य पुरूष को मृदु लंघन करवा सकते हैं।
5. कार्श्यमेव वरं स्थौल्यान्न हि स्थूलस्य भेषजम्।
6. कृशता चिकित्सा - अचिन्ता, हर्षण, नित्य संतर्पण स्वप्न प्रसङ्गाच्च।
7. न हि मांससमं किञ्चदन्यदेहबृहत्वकृत।
8. स्थूल व्यक्ति - गुरू व अपतर्पण श्रेष्ठ
   कृश व्यक्ति - लघु व संतर्पण श्रेष्ठ
9. द्विविधोपक्रमणीय अध्याय का वर्णन वा. द्वारा किया गया हैं।
10. अपर्तपण के दो भेद - शोधन व शमन
11. शमन के 7 प्रकार - पाचन, दीपन, क्षुत्, तृषा, व्यायाम, आतप, मारूत (NIA Lec 2020)
12. स्वस्थ पुरूष को भी ग्रीष्म ऋतु में बृंहण व शिशिर ऋतु में लंघन कराना चाहिए।
13. स्थूल, बल, पित्त, कफ आधिक्य - संशोधन
    आमदोष, ज्वर, वमन, छर्दि, अतीसार आदि व मध्य बल, मध्य पित्त कफ - दीपन, पाचन
    आमदोषादि परन्तु हीन बल अल्पवृद्ध पित्त, कफ - क्षुत्, तृषा
    मध्य बल, वात-पित्त-कफ दोष से पीडित, दृढ़ शरीर व अल्प बल पुरूष - वायु, आतप, व्यायाम
14. स्थौल्य चिकित्सा - मेद, अग्नि व वायुनाशक, गुरू व अपतर्पण द्रव्य

अध्याय - 15

शोधनादिगणसंग्रहमध्याय

1. दुष्टव्रणविशोधन - आरग्वधादि गण
   व्रण शोधन - अर्कादिगण व सुरसादिगण
   व्रणानाम रोपण - प्रियंङ्गवादि व अम्बष्ठादि गण
2. त्रपुदिगण में सारे धातु (Metals) का वर्णन हैं।
3. भग्न संधान - न्यग्रोधादि गण
4. योनिरोग निबर्हण - न्यग्रोधादि गण
5. वर्णप्रसादन, कण्डूपिटिका कोठनाश - एलादि गण
6. वमन गण को प्रथम गण वर्णित किया।
7. कुल 33 गणों का वर्णन - 25 गण + 8 महाकषाय
8. मूत्र का वर्णन विरेचन गण में किया गया।
9. मदनफल, मुलेठी व वच - वमन व निरूह गण में आये हैं।
10. दुग्धवर्धक पध्मकादिगण व वत्सकादिगण आचार्य वा. की मौलिक देन हैं।
11. श्यामादिगण अंतिम गण वर्णित किया हैं।
12. प्रियंग्वादि व अम्बष्ठवादि गण - पक्वातीसारनाशक, मुस्तादि गण - योनिदोषहर व स्तन्य रोग नाशक

अध्याय 16

स्नेहविधिमध्याय

1. ग्रीष्म ऋतु में, पित्त, प्रकोप, वात प्रकोप तथा पित प्रधान संसर्ग विकारों में – घृत रात्रि में प्रयोग करे।
2. अच्छपेय स्नेह की श्रेष्ठ कल्पना।
3. बृहंण – स्नेह को मांस, मद्य आदि भक्ष्य पदार्थों के साथ मिलाकर भोजन के साथ लेना चाहिए।
4. शोधन के लिए – बहुत मात्रा में शुद्ध स्नेह (सायंकाल खाये अन्न के जीर्ण होने पर)
   शमन के लिए – भूख लगने पर व बिना भोजन के मध्यम मात्रा में स्नेह।
5. स्नेह पीने के विहार नियम – क्षपाशय, व्यायाम, क्रोध, शोक।
6. अति स्निग्ध लक्षण – पाण्डुत्वं घ्राणवक्त्रगुदास्त्रवाः।
7. सम्यक् स्निग्ध लक्षण – वातानुलोम्यं, दीप्तोऽग्नि वर्च स्निग्धमसंहतम।
8. स्नेह व्यापद चिकित्सा – तक्रारिष्ट
9. क्षीण रोगी में अग्नि व शरीर को बढ़ाने वाले स्नेह का प्रयोग।
10. स्नेहन द्रव्यों में सर्पि प्रवर - संस्कार अनुवर्तनात्
11. गुरूता क्रम – सर्पि < तैल < वसा < मज्जा
12. पित्तनाशक – सर्पि > मज्जा > वसा > तैल (वातकफनाशक - सर्पि < मज्जा < वसा < तैल)
13.

स्नेह	सेवन काल	उपयोगिता
सर्पि	शरद	धी स्मृति मेधा
तैल	प्रावृट्	नाडीव्रण, कृमि, क्रूर कोष्ठ
वसा व मज्जा	वसन्त	संधि अस्थि मर्म कोष्ठ रूजा दग्धाहत भ्रष्ट योनि कर्ण शिरोरूजा

14. शीतकाल में रात्रि में सर्पि सेवन से – वाताकफजन्य रोग व ग्रीष्म काल में दिन में सर्पि सेवन – पित्तजन्य रोग
15. स्नेह की 64 विचारणायें बताई गई।
16. स्नेह की त्रिविधि मात्रा
    हीन मात्रा – 2 याम में जीर्ण
    मध्य मात्रा – 4 याम में जीर्ण
    उत्तम मात्रा – 8 याम में जीर्ण
17. स्नेहोपयोग काल फल
    भोजन पूर्व – शरीर में अधोभाग रोगों का नाशक
    भोजन मध्य – मध्य देह रोगों का नाशक

भोजन अंत – उर्ध्वभाग रोग नाशक

18. स्नेहपान पश्चात्, उष्ण जल सेवन निर्दिष्ट हैं (अपवाद – तुवरकतैल व भिलावा तैल में शीतल जल पीयें।)
19. स्नेहपान अवधि तीन दिन (मृदु कोष्ठी) से 7 दिन (क्रूर कोष्ठी) माना गया हैं।
20. स्नेहन पश्चात् – 3 दिन पश्चात् विरेचन कर्म, एवम् 1 दिन पश्चात् वमन कर्म निर्दिष्ट हैं।
21. कुष्ठ, शोफ व प्रमेह में स्नेहन के लिए गुड़, आनूप मांस दूध, तिल, उड़द, सुरासव दही वर्ज्य हैं।

अध्याय - 17

स्वेदविधिमध्याय

1. स्वेदन - 4 प्रकार (ताप, उपनाह, उष्म, द्रव)
2. रात्रि के उपनाह को दिन में व दिन के उपनाह रात्रि में खोल दें।
3. स्निग्ध, उष्णवीर्य, मृदु व दुर्गन्धरहित चर्म पट्टियों का उपनाह में प्रयोग करें।
4. अल्प स्वेदन - वंक्षण
   स्वल्प/स्वेदन न करे - हृदय, दृक्, मुष्क
5. अग्नि रहित स्वेद (10) - निवातं गृह, आयास, गुरू प्रावरण, भय, उपनाह, आहव (कुश्ती आदि), क्रोध, भूरिपान, क्षुधा, आतप।
6. वायु के मेद: कफावृत होने पर - निराग्नि स्वेद
7. उपनाह स्वेद - श्लेष्मसंसृष्ट वात में, (सुरसादि गण से स्वेद)
   पित्त युक्त वात में - पध्मकादि गण से - (साल्वण स्वेद)
8. स्थानभेद से स्वेदविधि
   वात आमाशयगत - प्रथम रूक्ष बाद में स्निग्ध स्वेद -
   कफ पक्वाशयगत - प्रथम स्निग्ध बाद में रूक्ष स्वेद -
9. अतिस्वेद जन्य उपद्रव में स्तम्भन चिकित्सा निर्दिष्ट हैं।
10. नाड़ी, कर्षू, कूप स्वेद - उष्म स्वेद के प्रकार (BHU 2006)

अध्याय - 18

वमन विरेचनविधिमध्याय

1. कफे विद्ध्याद्वमनं संयोगे वा कफोल्बणे तद्वद्विरेचनं पित्ते
2. अजीर्ण में वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, धूम, गण्डूष, अञ्जन सभी कर्म निषेध हैं।
3. फेन चन्द्र रक्तवत्, जीवशोणित निर्गमात् - वमन का अतियोग।
4. विरेचक औषध के बाद भी विरेचन प्रवृत न हो तो उष्णाम्बु प्रयोग करे व पाणितापकरके उदर पर करें।
5. क्रूर कोष्ठी में विरेचक प्रवृत न होने पर - 10 दिन उपरान्त शरीर का स्नेहन करके पुनः योग्य विरेचन दें।
6. वमन के बाद धूमपान करें। विरेचन के बाद धूमपान न करें।
7. औषध सेवन के बाद (1) अग्नि मांद्य हो, (2) भली प्रकार शोधन न हो।
   (3) औषध सेवन से भली प्रकार कृशता न हो।
   (4) दोष वृद्धि से निर्बल हो, (5) औषध जीर्ण लक्षण न दिखें।
   इन अवस्थाओं में लंघन करवाये।
   अग्निमांद्य व क्रूर कोष्ठी - शोधन से पूर्व यवक्षार आदि क्षार व लवणमिश्रित घृत का सेवन करवायें।
8. दोष भेद से वमन द्रव्य -
   कफ दोष में - तीक्ष्ण, उष्ण व कटु द्रव्यों से
   पित्त दोष में - मधुर व शीतल द्रव्यों से
   वात दोष में - स्निग्ध, अम्ल व लवण से
9. सम्यक् वमन में दोष का क्रम - कफ - पित्त - वायु
10. पेयादि का क्रम - (संसर्जन क्रम)
    पेया - विलेपी - अकृत यूष - कृत यूष - अकृत मांस रस - कृत मांसरस - अन्नकाल
    प्रवर शुद्धि - 3-3 काल
    मध्यम - 2-2 काल
    अवर - 1-1 काल
11. वमन वेग/विरेचन वेग व दोष परिमाण

	वमन	विरेचन
	वेग मान	वेग मान
जघन्य वेग	4 वेग/अर्ध प्रस्थ	10 वेग/1 प्रस्थ
मध्य वेग	6 वेग/1 प्रस्थ	20 वेग/2 प्रस्थ
प्रवर वेग	8 वेग/2 प्रस्थ	30 वेग/4 प्रस्थ

12. अपक्वं वमनं दोषान् पच्यमानं विरेचनम् निहरेद्धमनस्यात् पाकं न प्रतिपालयेत्।

13. वाग्भट्ट मतानुसार पंचकर्म के प्रधान कर्मों में अनुक्रम है - वमन-विरेचन-बस्ति-नस्य-रक्तमोक्षण (UPSC 2006) & (ESI MO 2008)

अध्याय - 19

बस्तिविधिमध्याय

1. बस्ति यंत्र के लिए - अजा, अवि, माहिष की मजबूत बस्ति का प्रयोग।
   उपरोक्त के अभाव में अङ्कपाद चर्म(उरूचर्म)/मजबुत वस्त्र
2. निरूह बस्ति मात्रा
   1 वर्ष - 1 प्रकुञ्च (1 पल)
   12. वर्ष - 6 प्रसृत
   16 वर्ष - 10 प्रसृत
   18-70 वर्ष - 12 प्रसृत
   >70 वर्ष - 10 प्रसृत
3. अनुवासन वस्ति (शीत ऋतु व वसन्त ऋतु में - दिन में बस्ति दे। ग्रीष्म, शरद, वर्षा ऋतु में - (रात्रि में दें।)
4. स्नेहन और शोधन की युक्ति से बस्ति कर्म - त्रिदोषनाशक
5. स्त्रियों में ऋतुकाल में - उत्तरबस्ति दें (क्यांकि ऋतुकाल में योनि अपावृत (गर्भाशय मार्ग खुला) होने से स्नेह को ग्रहण कर लेती है।
6. उत्तर बस्ति में स्त्री को उत्तान शयन करवायें।
7. उत्तर बस्ति नेत्र प्रमाण - 12 अंगुल (पुरूषों में) (UPSC MO 2010)
   - 10 अंगुल (स्त्रियों में मुद्ग प्रवेश छिद्र)
8. स्त्रियों में उत्तर बस्ति मात्रा - 1 प्रकुञ्च (1 पल)
   बाला में उत्तर बस्ति मात्रा - 1 शुक्ति (1 कर्ष)
9. उत्तर बस्ति नेत्र प्रवेश
   स्त्रियों में - योनिमार्ग में - 4 अंगुल प्रविष्ट
   बाला में - मूत्रमार्ग में - 1 अंगुल प्रविष्ट
10. सप्त मास तक गर्भिणी को निरूह वस्ति निषेध हैं।
11. बस्ति यंत्र - स्वर्णादि धातु में निर्मित, गोपुच्छाकार
12. नेत्र प्रमाण

आयु	प्रमाण	अग्र छिद्र प्रमाण
< 1 वर्ष	5 अंगुल	मुद्ग
2-6 वर्ष	6 अंगुल	मुद्ग

7 वर्ष	7 अंगुल	माष
12 वर्ष	8 अंगुल	शुष्क कलाय
16 वर्ष	9 अंगुल	क्लिन्न कलाय
20 वर्ष व अपर	12 अंगुल	बदरास्थि

13. अनुवासन की मात्रा – निरूह का चतुर्थांश
14. स्नेहनिवृत्ति काल – 3 प्रहर (याम) (निम्न काल में निवृत न होने पर तीक्ष्ण फलवर्ति या तीक्ष्ण वस्ति का प्रयोग करें) निरूह वस्ति निवृत्ति – 1 मुर्हुत (2 घटिका)
15. निरूह मिश्रण – माक्षिकं लवणं स्नेह कल्कं क्वाथमिति क्रमात्
16.

अनुवासन संख्या	बस्ति	उपरांत भोजन सेवन
कफ दोष	1/3 बस्ति	यूष
पित्त दोष	5/7 बस्ति	दूध
वात दोष	9/11 बस्ति	मांसरस

17. I कर्म वस्ति – 30 बस्ति – (1+12+12+5)
प्रथम अनुवासन – क्रम से 12 निरूह व 12 अनुवासन – अंत में 5 अनुवासन
II काल वस्ति – 15 वस्ति – (1+6+5+3) (UK 2014)
प्रथम अनुवासन – क्रम से 6 अनुवासन व 5 निरूह अंत में 3 अनुवासन
III योग – 8 वस्ति – (1+3+3+1)
प्रथम अनुवासन – क्रम से 3 अनुवासन व 3 निरूह अंत में 1 अनुवासन
18. मात्रावस्ति – स्नेहपान की हस्व मात्रा (2 याम में जीर्ण) प्रयुक्त होती हैं।
19. वमन के 15 दिन पश्चात् विरेचन, विरेचन के 15 दिन पश्चात् निरूह बस्ति, निरूह के तुरन्त बाद अनुवासन वस्ति दे सकते हैं।
20. वस्ति – चिकित्सार्ध माना गया हैं।

अध्याय - 20

नस्यविधिमध्याय

1. नासा हि शिरसों द्वारं।
2. अभिष्यन्द, गलरोग - विरेचन नस्यं
   सूर्यावर्त, स्वरक्षय, अवबाहुक - बृंहण नस्य
   केश दोष - शमन नस्य
3. प्रधमन नस्य - 6 अंगुल द्विमुख नाड़ी का प्रयोग, चूर्ण को मुख की वायु में नासा में प्रविष्ट करें।
4. तर्जनी अंगुली के 2 पर्वों को द्रव में डुबोकर निकालने से जितना स्नेह या स्वरस गिरता हैं- बिन्दु कहते हैं।
5. मर्श नस्य
   उत्कृष्ट मात्रा 10 बिन्दु
   मध्यम 8 बिन्दु
   ह्रस्व 6 बिन्दु
6. अवपीड़क नस्य (कल्कादि की मात्रा) (UDAIPUR 2007)
   उत्तम मात्रा 8 बिन्दु
   मध्यम मात्रा 6 बिन्दु
   ह्रस्व मात्रा 4 बिन्दु
7. वात से आक्रान्त शिरोरोग, अपतानक, मन्यास्तम्भ, स्वरभ्रंश में प्रतिदिन सायं व प्रातः नस्य।
8. नस्य लेते समय मूर्च्छा आने पर - शिर को छोड़कर शीत जल से परिषेक।
9. नस्य लेने के उपरान्त उत्तान स्थिति में 1 से 100 तक गिनती के समय लेटे रहें।
10. प्रतिमर्श नस्य के काल - 15 (अ. ह्र.)
    14 (सु.)
11. स्वस्थ पुरूष के लिए नित्य प्रति तैल का नस्य उत्तम माना गया हैं
12. अवस्थानुसार विधान
    नस्य - 7-80 वर्ष
    धूमपान - > 18 वर्ष
    कवल - < 5 वर्ष
    वमन - विरेचन - 10-70 वर्ष
13. अणु तैल निर्माण में प्रयोज्य क्षीर - अजा क्षीर

14. नस्य के 3 प्रकार – विरेचन, बृहंण, शमन (UDAIPUR 2007)

15. नस्य काल ऋतुनुसार

स्वस्थ/शरद व बसन्त ऋतु		पूर्वाह्न
शीत काल		मध्याह्न
ग्रीष्म		सांयकाल
वर्षाकाल		सूर्य दर्शन होने पर
● दोष	–	काल
कफ	–	प्रातः
पित्त	–	मध्याहन
वात	–	सांय व रात्रि

16. नस्य 7 दिन तक करना चाहिए।

17. प्रतिमर्श नस्य जन्म से मृत्यु पर्यंत उत्तम माना गया हैं।

18. प्रतिमर्श नस्य की अपेक्षा मर्श नस्य आशुकारी व गुणों में उत्कृष्ठट है।

19. प्रतिमर्श नस्य दुष्ट पीनस, अकाल व उरः क्षत में नहीं देते (BHU MD 2012)

अध्याय - 21

धूमपानविधिमध्याय

1. उर्ध्वजत्रुगत वात - कफ रोग - धूमपान प्रयोग।
2. नासा या मुख से पिया धूम - मुख से धुआं निकालें।
3. कास रोगी - दो शरावं सम्पुट में 10 या 8 अंगुल लंबी नलिका से धूमपान।
4. नासिका व शिर में स्वयं उत्क्लिष्ट दोष - पहले नासिका से फिर मुख से धूमपान कण्ठगत व दोष स्वयं उत्क्लेशित न होने पर फिर मुख से धूमपान।
5. नासिका व शिर से स्वयं उत्क्लिष्ट दोष न होने पर व कण्ठगत दोष स्वयं उत्क्लेशित होने पर पहले मुख से फिर नाक से धूमपान
6.

धूमनेत्र	प्रमाण	दोष
तीक्ष्ण धूम -	24 अंगुल	(कफ प्रधान रोग)
मध्यम धूम -	40 अंगुल	(वात - कफ प्रधान)
स्नेहन धूम -	32 अंगुल	(वात रोगों में)

7. धूमपान करते समय 3 - घूंट भरे
   तीक्ष्ण धूम - 3 - 4 बार दिन में प्रयोग करे।
   मध्यम धूम - 2 बार दिन में प्रयोग करे।
   स्नेह धूम - 1 बार दिन में प्रयोग करे।
8. धूमवर्ति - 12 अंगुल लंबे सरकण्डे पर धूम द्रव्यों को पीसकर 5 बार लेप करें। अंगुष्ठ जितनी मोटाई व यवाकार - लेप।
9. धूमपान अन्य प्रकार - शराव सम्पुट में 10/8 अंगुल लंबी नलिका लगाकर धूम को मुख से पियें।

अध्याय - 22

गण्डूषादि विधिमध्यायं

1. दन्तहर्ष, दन्तचाल, वातिक मुख रोग - सुखोष्ण अथवा शीत तिलकल्कोदक से गण्डूष
2. क्षारादि से ऊषा होने, दाहयुक्त पाक में, आगन्तुज व्रण, विषपान, क्षार या अग्नि जलने पर - घृत या दूध से गण्डूष।
3. मुख विशदता - मधु गण्डूष धारण
4. मुखशोषनाशक - कांजी का बिना लवण शीतल गण्डूष
5. भिनत्ति श्लेष्मणाश्चयम् - क्षाराम्बु गण्डूष
6. वक्त्रलाघवम् - सुखोष्णोदक गण्डूष
7. शिरोऽभ्यंग - रौक्ष्यकण्डूमलादिषु (UPSC 2015)
   शिरो पिचु - केशशात, स्फुटन, धूपन, नेत्र स्तम्भ (JAM 2014)
   शिरोबस्ति - अर्दित, रात्रिजागरण, नासा शोष, मुख शोष, तिमिर, दारूण शिरोरोग
   परिषेक - अरूषिका, शिरतोद, दाह, पाक, व्रण
8. शिरोबस्ति में स्नेह इतना डाले कि स्नेह बालों की भूमि से 1 अंगुल ऊपर आ जायें।
9. शिरो बस्ति को 8 दिन तक सेवन करना चाहिए।
10. गण्डूष - 4 प्रकार

द्रव्य	प्रयोज्य
(i) स्निग्ध - मधुर, अम्ल, लवण द्रव्यों से सिद्ध स्नेह हैं।	वातादि दोष में
(ii) शमन - मधुर, तिक्त व कषाय द्रव्यों से।	पित्त दोष में
(iii) शोधन - तिक्त, कटु, अम्ल, लवण द्रव्यों से उष्ण	कफ दोष में (BHUMD 2010)
(iv) रोपण - तिक्त व कषाय द्रव्यों से	व्रणनाशक

11. तिल तैल या मांसरस का नित्य गण्डूष उत्तम हैं।
12. गण्डूष - अंसचारी
    कवल - संचारी
13. प्रतिसारण - 3 प्रकार - कल्क, रसक्रिया व चूर्ण
14. मुखालेप - दोषनाशक, विषनाशक व वर्णकारक
15. लेप प्रमाण - 3 प्रकार (I) अंगुलि के 1/4 भाग
    (II) अंगुलि के 1/3 भाग
    (III) अंगुलि के 1/2 भाग

16. मूर्ध्नि तैल के 4 प्रकार वा. की मौलिक देन हैं।
अभ्यंग, सेक, पिचु, शिरोबस्ति
17. शिरोवस्ति में स्नेह धारण काल
वात रोग – 10,000 मात्रा
पित्त रोग – 8,000 मात्रा
कफ रोग – 6,000 मात्रा
स्वस्थ – 1,000 मात्रा
18. कर्णपूरण काल– स्वस्थ में 100 मात्रा तक (सूर्यास्त पश्चात) (IPGT & RA 2013)
19. मात्रा निमेष – उन्मेष का एक काल जितना समय अथवा दक्षिण घुटने पर दक्षिण हाथ के अग्रभाग से जितने समय में चारों और घूमता हैं।

अध्याय - 23

आश्चोतनाञ्जनविधिमध्याय

1. आश्च्योतन में → 10-12 बिन्दुओं को 2 अंगुल दूरी से परिषेक करें।
2. अञ्जन शलाका → 10 अंगुल लंबी

	अंजन	शलाका	द्रव्य
1.	लेखन	ताम्र निर्मित	अम्ल, कषाय, लवण, उष्ण
2.	रोपण	काल लोह/अंगुली	तिक्त द्रव्य
3.	प्रसादन	स्वर्ण या रजत	मधुर व शीतल द्रव्य

3. पिण्ड अञ्जन- गुरू दोष में
   रसक्रिया अञ्जन - मध्यम दोष
   चूर्ण अञ्जन - लघु दोष में
4. तीक्ष्ण चूर्ण की मात्रा - 2 शलाका (Ch. Brahamprakash Lect.2010)
   मृदु चूर्ण की मात्रा - 3 शलाका
5. तीक्ष्णांजन सेवन - दिन में निषेध
6. कफ अत्याधिक बढ़ने, शुक्र अर्म आदि लेखनीय रोग अधिक उष्ण काल न होने पर - तीक्ष्णांजन दिन में प्रयोग कर सकते हैं।
7. अश्मनो जन्म लोहस्य तत एव च तीक्ष्णता। उपधातो तनैव तथा नेत्रस्य तेजसः (NIA 2015)
8. अक्षि रोगों में वा. ने आश्च्योतन को प्रथम उपक्रम माना। (NIA 2002 & 2009)
9. अञ्जन कल्पना - पिण्ड, रसक्रिया, चूर्ण
10. तीक्ष्ण पिण्ड - हरेणु मात्रा
    तीक्ष्ण रसक्रिया - वेल्लज (विडंग) मात्रा
    तीक्ष्ण चूर्ण - 2 शलाका
    मृदु चूर्ण - 3 शलाका
11. प्रत्यञ्जन - तीक्ष्ण अञ्जन से अभितप्त नेत्रों में शीतल चूर्ण का प्रयोग। (UDAIPUR 2007)

अध्याय - 24

तर्पणपुटपाक विधिमध्याय

1. नस्य के अयोग्य - तर्पण व पुटपाक के भी अयोग्य
2. तर्पण व पुटपाक जितने दिन करें उससे दुगुने दिनों तक हितसेवी रहें।
3. तर्पण में काल
   वर्त्म रोग - 100 मात्रा
   संधि रोग - 300 मात्रा
   शुक्ल रोग - 500 मात्रा
   कृष्ण रोग - 700 मात्रा
   दृष्टि रोग - 800 मात्रा
   अधिमंथ/वातरोग - 1000 मात्रा
   स्वस्थ/पित्तरोग - 600 मात्रा
   कफ - 500 मात्रा
4. तर्पण - वातरोग - प्रतिदिन प्रयोग
   पित्त रोग - 1 दिन छोड़कर प्रयोग
   स्वस्थ/कफरोग - 2 दिन छोड़कर प्रयोग
5. पुटपाक - 3 प्रकार - स्नेहन, लेखन, प्रसादन

पुटपाक	रोग	मात्रा	स्नेह
स्नेहन	वात रोग	200 मात्रा	कोष्ण स्नेह
लेखन	कफ मिश्रित वात	100 मात्रा	कोष्ण
प्रसादन	स्वस्थ/वात/पित्त/रक्त	300 मात्रा	शीतल

6. धूमपान् - स्नेहन व लेखन पुटपाक उपरान्त प्रयोग (प्रसादन उपरान्त वर्ज्य)
7. तर्पण/पुटपाक पंश्चात् चमेली या मल्लिका पुष्प नेत्र पर बांधे।

अध्याय - 25

यन्त्रविधिमध्याय

1. 6 अंगुल लंबा संन्दशं यन्त्र - सूक्ष्मशल्योपपक्ष्मणाम्।
2. मुचुण्डी यन्त्र - गम्भीर व्रणमांसानामर्मण: शोषितस्य
3. अर्शोयन्त्र - पुरूषों के लिए - 5 अंगुल मोटा
   स्त्रियों के लिए - 6 अंगुल मोटा
4. नाड़ी व्रण अभ्यङ्ग व प्रक्षालन हेतु यन्त्र - 6 अंगुल लंबा
5. मूढ़गर्भ हरेत् - 8 अंगुल लंबा गर्भ शकु यन्त्र
6. अश्मर्याहरणं - सर्पफणा यन्त्र
7. दन्तपातनं - 4 अंगुल लंबा शरपुङ्खमुख यन्त्र (JAM)
8. अनुयंत्र - अयस्कान्त, रज्जु, वस्त्र, पत्थर, मुद्गर, वध्र, आँत, जिह्वा, बाल, शाखा, नख, मुख, दांत, काल, पाक, कर, पाद, भय, हर्ष (NIA Lec 2020)
9. यन्त्र कर्म - निर्घातन, उन्मथन, पूरण, मार्ग शुद्धि संव्यूहन, आहरण, बन्धन, पीड़न, आचूषण, उन्नमन, चालन, भङ्ग, व्यावर्त्तन, ऋजुकरण।
10. स्वस्तिक यंत्र - 18 अंगुल - अस्थितगत शल्य हेतु
    संदंश यंत्र - 16 अंगुल - त्वक, शिरा, स्नायु, मांसगत शल्य हेतु
    ताल यंत्र - 12 अंगुल - कर्ण व नाडीगत शल्य हेतु
    नाडी यंत्र - स्रोतस अनुसार प्रमाण
11. मुचुण्डी , शल्यनिर्घातनी, शमी यंत्र, अंगुलित्राणक्, योनिव्रणेक्षण, घटी यंत्र आचार्य वा. की मौलिक देन हैं।(BHUPGET 2015)
12. कण्ठशल्यावलोकिनी नाडी यंत्र - 10 अंगुल लंबी व 5 अंगुल मोटी
13. शल्य निर्घातनी - 12 अंगुल प्रमाण
14. अर्श यंत्र - गोस्तनाकार, 4 अंगुल प्रमाण, द्विछिद्र
15. शमी यंत्र - अर्श प्रपीडन हेतु, (अर्श यंत्र समान परन्तु छिद्र नहीं होता) (PGET 2019)
16. अंगुलित्राणक - गोस्तनाकार, द्विछिद्रं, 4 अंगुल लबा, विवृत वक्त्र को खोलने में
17. योनिव्रेक्षण यंत्र - 16 अंगुल लंबा
18. श्रृंग यंत्र - 18 अंगुल - सिद्धार्थक छिद्र
    अलाबु यंत्र - 12 अंगुल लंबा, 18 अंगुल मोटा व चौडा (कफ दूषित रक्त निर्दहरण)
    घटी यंत्र - अलाबु यंत्र समान, गुल्म विलयन हेतु

19. शंकु यंत्र – छः
    2 शंकु – 16 अंगुल व 12 अंगुल–सर्पफण मुखी–व्यूहन कर्म
    2 शंकु – 10 अंगुल व 12 अंगुल–शरपुंख मुखी–चालन कर्म
    2 शंकु – वडिशाकार – आहरण कर्म
20. गर्भशंकु – 8 अंगुल लबा मूढ़गर्भ हरण
21. शरपुखमुख यंत्र – 4 अंगुल, दंतपातन हेतु
22. नासार्बुदहदाह हेतु शलाका – कोलास्थिदल तुल्य
23. 19 प्रकार के अनुयंत्र का वर्णन किया गया।
24. कंकमुख यंत्र प्रधान माना गया हैं।
25. हस्त प्रधानतम् यंत्र माना गया है।

अध्याय - 26

शस्त्रविधिमध्याय

1. ताम्रमीय द्विमुखी शलाका - लिंगनाश वेधन
2. अंगुलिशस्त्र - गल स्त्रोतो रोग मे छेदन व भेदन
3. बडिश शस्त्र - शुण्डिका व अर्म ग्रहण करने में
4. करपत्र (10 अंगुल लंबा) - अस्थियों के छेदन
5. कर्तरी - स्नायु, सूत्र, केश छेदन के लिए।
6. नख शस्त्र - सूक्ष्म शल्य को निकालने, छेदन, भेदन, प्रच्छान व लेखन में।
7. दन्तलेखन शस्त्र - दन्तशर्करा शोधन
8. सूची शस्त्र - 3 प्रकार
   स्थान विशेष से
   मांसल प्रदेश में - 3 अंगुल लंबी सूची
   अल्पमांस अस्थि संधि व्रण - 2 अंगुल लंबी सूची
   पक्वाशयआमाशय में - 11/2 अंगुल लंबी सूची
   (व्रीही मुख व धनुर्वक्त्र समान)
9. कुर्च शस्त्र - नीलिकाव्यङ्ग के शात में कुट्टन कर्म
11. खज शस्त्र - हाथ से मथकर इससे नासिका से रक्त निकाला जाता हैं।
12. यूथिका शस्त्र/कर्णव्यधन शस्त्र - कर्णपाली व्यधन
13. आरा शस्त्र - बहल कर्णपाली वेधन, आम व पक्व शोथ संशय में।
14. अनुशस्त्र - जलौका, क्षार, अग्नि, काच, पत्थर, नख व लोह रहित अन्य वस्तुएं
15. शस्त्र कर्म - उत्पाटन, पाटन, सीवन, ऐषण, लेखन, प्रच्छान, कुट्टन, छेदन, भेदन, वेधन, मन्थन, ग्रहण, दहन। 12 (अ. स.)
16. शस्त्र कर्म - 13 (अ. ह.)
17. शस्त्र दोष - कुण्ठ खण्ड तनु स्थूल ह्रस्व दीर्घ वक्रता: खर धार।
18. छेदन, भेदन व लेखन कार्य में - शस्त्र फलक और वृन्त के बीच में से तर्जनी, मध्यमा व अंगुष्ठ द्वारा पकड़े।
    विस्त्रावण शस्त्र - तर्जनी व अंगूठे से वृन्त के अग्रभाग से पकड़े।
    व्रीहिमुख शस्त्र - हथेली से वृन्त के अगले भाग को ढाप कर शस्त्र को मुख से पकड़े।
    आहरण शस्त्र - मूल से शस्त्र पकड़े

19. सविष जलौंका – मल से उत्पन्न, जलौंका, इन्द्रायुध, विचित्र उर्ध्वराजयों, रोमश जलौंका।
20. पित्त दूषित रक्त में अलाबू या घटी यन्त्र न प्रयोग करें। (क्योंकि अग्नि का संबध होता हैं।)
21. रक्तमोक्षण करने बाद शीतल प्रदेह के कारण वात प्रकोप होने से तोद व कण्डूयुक्त शोफ होने पर उष्ण सर्पि से सिञ्चन करें।
22. 26 प्रकार के शस्त्र माने गए
23. मण्डलाग्र शस्त्र – लेखन/छेदन कर्म (पोथकी, शुण्डिका आदि में)
    वृद्धि शस्त्र – छेदन/भेदन/पाटन कर्म (गम्भीर व कम शोफ में)
    उत्पल/अर्धधारा – छेदन/भेदन
24. सर्पवक्त्र शस्त्र – घ्राण कर्णाशश्छेदने
25. एषणी – गण्डुपद मुखी – व्रण गति वेक्षण
    सूचीमुखी एषणी – क्षारसूत्र प्रवेशार्थ
    वेतस शस्त्र – वेधन कर्म
    शरारिमुख/त्रिकूर्चक – रक्तादि स्त्रावण
    व कुशपत्र/आटीमुख
    व्रीहिमुख – शिर व उदर वेधन
    कुठारी – अस्थिगत शिरा का वेधन
26. शस्त्र दोष – 8 माने गये हैं।
27. शस्त्र कोष – नौ अंगुल चौड़ा व 12 अंगुल लंबा
28. सविष जलौका से कण्डू, पाक, ज्वर व भ्रम होता हैं। विषनाशक व रक्तपित्त नाशक चिकित्सा करें।
29. निर्विष जलौका में भी रक्तमत्ता त्याज्य हैं।
30. आदन्ते प्रथमं हंसः क्षीरं क्षीरोदकादिव जलौका हेतु वर्णित।
31. जलौका का पुनः उपयोग सात दिन पश्चात् करना चाहिए। (NIA Lec 2020)
32. जलौका पात्र का 7 वें या 5 वें दिन पर जल बदलना चाहिए।
33. श्रृंग – वात –पित्त दूषित रक्त निर्हरण, तुम्बी/घटी यंत्र–कफ – वात दूषित रक्त निर्हरण
34. पिण्डित रक्त – प्रच्छान
    अवगाढ़ रक्त – जलौका प्रयोग
    त्वक् स्थित दूषित रक्त – तुम्बी/घटी/श्रृंग
    सर्व शरीर गत दूषित रक्त – सिरावेध

अध्याय - 27

सिराव्यधविधिमध्याय

1. सिरा वेधन - 16-70 वर्ष आयु
2. उन्माद रोग - उर, उपाङ्ग, ललाट में आश्रित सिरावेध।
3. विद्रधी (उरोविद्रधि) व पार्श्वशूल - पार्श्वस्थ/कक्षा या स्तान्तरों में स्थित सिरा का वेधन।
4. तृतीयक ज्वर - स्कन्ध मध्य सिरा वेधन
   चतुर्थक ज्वर - स्कन्ध के नीचे सिरा वेधन
5. गलगण्ड रोग - उरू की सिरा वेधन
6. अपची रोग - इन्द्रबस्ति मर्म के 2 अंगुल नीचे सिरा वेधन।
7. सिरावेधन से पूर्व स्निग्ध रस युक्त अन्न के साथ प्रतिभोजन (यवागू-पेया आदि) सेवन करें।
8. मांसल स्थान - ब्रीहि धान्य बराबर गहरा व्रीहिमुख से वेधन, अस्थियों के उपर - अर्ध यव के बराबर गहरा कुठारिका से वेधन।
9. दुर्विद्ध सिरावेधन - तैल की छोटी - 2 बूंद के समान रक्त निकलता हैं।
10. यन्त्र शिथिलता, अतिसौहित्य भोजन, कुण्ठित शस्त्र, निर्बलता वेग धारण, भय, मूर्च्छा, अस्वेदन - सिरावेध से रक्तस्त्राव् न होने के कारण।
11. रक्तमोक्षण के बाद रक्त अशुद्ध रहा हो तो - सायंकाल या दूसरे दिन पुनः रक्त निकले।
    बहुत दूषित रक्त होने पर - 15 दिन बाद रक्तमोक्षण करे।।
12. बहता हुआ रक्त बन्द न हो तो स्तम्भन चिकित्सा करें।
13. शुद्ध रक्त किञ्चित शीताष्ण, मधुर - लवण पध्मेन्द्रगोपहेमाविशशलोहित समान (NIA LEC 2020)
14. सिरावेध स्थान
    विश्वाची/ग्रधृसी - जानु से 4 अंगुल ऊपर या नीचे
    अपची - इन्द्रबस्ति के 2 अंगुल नीचे
    क्रोष्टुक शीर्षक - गुल्फ के 4 अंगुल ऊपर
    पाददाह/पादहर्ष, खुड, विपादिका, वातकण्टक या चिप्प रोग क्षिप्र मर्म के 2 अंगुल पर
15. रक्तस्राव प्रमाण - 1 प्रस्थ
    अतिशय रक्तस्राव चिकित्सा - अभ्यंग, मांसरस, दूध, रक्तपान
16. रक्तनिर्हरण परश्चात् रक्त व अग्नि की विशेष रक्षा करनी चाहिए- न अति उष्ण न अति शीत, दीपनीय लघु भोजन का सेवन करें।

अध्याय - 28

शल्याहरणविधिमध्याय

1. शल्य की गति - 5 (वक्र, ऋजु, तिर्यक, उर्ध्व, अधो)
2. बुद्बुद्वत्पिटिकोपचत व्रण - अन्त शल्य लक्षण।
3. त्वक् आदि नष्ट शल्य लक्षण - अभ्यङ्ग, स्वेदन या मर्दन करने पर लालिमा, वेदना, दाह, शोफ उस स्थान पर घृत जल्दी पिघल जाये। उस स्थान पर लेप जल्दी सूख जाये।
4. सन्धि से नष्ट शल्य लक्षण - प्रसारण - संकोचन से क्षोभ पीड़ा।
5. सामान्यतः विक्षोभ वाली क्रिया से जिस स्थान पर वेदना हो उस स्थान को शल्य युक्त समझना चाहिए।
6. पक्वाशय गत शल्य - विरेचन से निकाले।
7. कण्ठ स्त्रोतों गत शल्य - किसी धागे को बिस के साथ बांधकर गले में डाले व खींचकर निकालें।
8. मछली का कांटा गलें में कसने पर - बालों की गुच्छी लंबे धागे में बांधकर वामक द्रव्ययुक्त द्रव के साथ निगला देना चाहिए।
9. स्रोतोगत शल्य - स्वगुणकर्म हानि
   धमनीगत शल्य - अनिल रक्त को फेन युक्त उदीरयत् करती हैं।
   अस्थिसंधिगत शल्य - अस्थिपूर्णता, अनेक रूजा
   संधिगत शल्य - चेष्टानिवृत्ति
   कोष्ठगत शल्य - आनाह, आटोप
   मर्मगत शल्य - मर्मविद्ध समान लक्षण
10. शल्य निर्हरण दो उपाय - अनुलोम व प्रतिलोम
11. अदृश्य शल्य को कंक, भृङ्ग, कुरर, शरारि व वायसमुख यंत्र से पकड़ें।
12. त्वकस्थित शल्य - संदंश से निकाले
    सुषिर शल्य - ताल यंत्र से निकाले
    सुषिरस्थानगत शल्य - नाडी यंत्र से निकाले
13. स्वर्ण, रजत आदि धातु शल्य अधिक देर तक शरीर में रहने पर विलय हो जाते हैं।
14. मिट्टी, बांस, लकड़ी, सींग, अस्थि, दंत, बाल, पत्थर - विलीन नहीं होते - (मांस व रक्त का पाक कर देते है।)

अध्याय - 29

शस्त्रकर्मविधिमध्याय

1. व्रण में पहले शोफ और बाद में पाक होता है इसलिए शोथ की चिकित्सा करनी चाहिए।
2. ऽल्पोष्मरूक्, कठिन, स्थिर- अपक्व शोफ
3. शूलंनर्तेऽनिलादाहः पिताच्छोफः कफोदयात रागो रक्ताच्च पाकः।
4. पाटन प्रमाण- बहुत बड़ा पाक होने पर भी 2 अंगुल से अधिक पाटन न करें। ऐसी अवस्था में 2 या 3 अंगुल के अन्तर पर दूसरा व्रण कर ले।
5. व्रण रोगियों के लिए नवधान्यादि वर्ग - सर्वदोष प्रकोपक
6. मेदजन्य ग्रंथियों व कर्ण की छोटी पाली को लेखन करके सीवन कर्म करें।
7. वंक्षण - कक्षा आदि व अल्प मांस किन्तु गतिशील स्थान के व्रणों का सीवन कर्म न करें।
8. गहरे मांसल भाग व अचल स्थान व्रण - सीवन कर्म करें।
9. जिस व्रण के ओष्ठों से रक्त न आता हो उस व्रण के किनारों में थोड़ा सा लेखन करके रक्त निकालने पर सीवन कर्म करे।
10. रक्त सन्धान का कार्य करता हैं।
11. वात-कफकज व्रण, शीतकाल में व बसन्त ऋतु में - 3-3 दिन के अन्तर पर बंध खोले।
12. पितरक्तज व्रण, ग्रीष्म व शरद ऋतु में - प्रातः सांय बंध खोलकर बदलें।
13. शिथिल स्थान पर वात-कफज व्रण हो तो सम बंध बाधें किन्तु सम स्थान में वात-कफज व्रण हो तो गाढ़ बन्ध बाधे व गाढ़ बंधन के स्थान पर अति गाढ़ बंधन बाधे।
14. पित्त- कफज व्रण में उपरोक्त से विपरीत बंध बाधे।
15. वस्तिरिवाततः व्रणवत्स्पर्शनासहः साङ्गमर्दविजृम्भिकः - पच्यमान शोफ लक्षण
16. वस्ताविवाम्भस - पक्व शोफ।
17. रक्तपाक - घनस्पर्शवमश्मवत् त्वकसावर्ण्य।
18. आम/अपक्व शोथ के छेदन से क्षत्तजन्य विसर्प उत्पन्न होता हैं।
19. शस्त्र कर्म से पूर्व रोगी को प्रिय अन्न खिलायें।
    अपवाद - मूढ़गर्भ, अश्मरी, मुखरोग, उदररोग
20. प्रशस्त शस्त्रकर्म वैध - शौर्य, आशुक्रिया करने वाला (शीघ्रकारिता), तीक्ष्ण शस्त्र युक्त, अस्वेद, अवपेथु, असम्मोह।
21. शस्त्रकर्म उपरान्त त्याज्य कर्म

कर्म	उत्पन्न लक्षण

श्रम – शोथ
रात्रिजागरण – शोथ व लालिमा
दिवास्वप्न – शोथ, लालिमा व रूजा
स्त्री सेवन – शोथ, लालिमा, रूजा व मृत्यु

23. व्रण बंध – 15 प्रकार
उत्संग बंध आचार्य वा. की देन हैं–
कोश बंध – अंगुलि पर्व
स्वस्तिक बंध – कर्ण, कक्षा, स्तन, संधि
मुत्तोली – मेढ्र, ग्रीवा
चीन – अपाङ्ग
दाम – सम्बाध अङ्ग
अनुवेल्लित – शाखा
खट्वा – हनु, गण्ड, शंख
विबन्ध – पृष्ठ, उदर
स्थगिका – अंगुष्ठ, अंगुलि, मेढ्राग्र अन्त्रवृद्धि
वितान – पृथुल अङ्ग, शिर
उत्संग – लटकने वाले अंग
गोफणा – नासिका, ओष्ठ, चिबुक, संधि
यमक – यमक व्रण
मण्डल – वृत अङ्ग
पंञ्चाङ्गी – उर्ध्वजत्रु

24. गाढ़ बंध – ऊरू, स्फिक्, कक्षा, वंक्षण, शिर। (NIA LEC 2020)
सम बंध – हस्त, पाद, मुख, कर्ण, उरः, पृष्ठ, पार्श्व, गला, उदर, मेहन, मुष्क।
शिथिल बंध – नेत्र व संधियों

25. बंध निषेध –
कुष्ठी, अग्नि दग्ध, क्षारदग्ध, विष रोगी, कुन्दुरू (चूहे) विष में कर्णिकासार से दग्ध, मांसपाक, गुदपाक, वेदना – दाह व शोथ की अवस्था, विसर्पणशील व्रण।

26. रोपित व्रण पश्चात् 6 या 7 मास तक वर्ज्य नियम का पालन करना चाहिए।

अध्याय - 30

क्षाराग्निकर्मविधिमध्याय

1. अर्श रोग, अग्निमांद्य, अश्मरी, गुल्म, उदर रोगों गर विष में क्षार का अन्तः पान।
2. श्वित्र, भगन्दर, अर्बुद, ग्रन्थि, दुष्ट व्रण, नाड़ी व्रण - क्षार का बाह्य प्रयोग।
3. 7 दिन के बाद क्षार का प्रयोग करें।
4. वर्ति, गोदन्त, सूर्यकान्मणि, शर से - त्वक् दाह करें।
   मधु, स्नेह, जाम्बवौष्ठ व गुड से - मांस दाह व सिरा दाह
5. त्वक् दाह - मषक, अंगग्लानि, शिर रूक्, अधिमन्थ, चर्मकील, क्षुद्र रोग में।
   मांस दाह - अर्श, भगन्दर, ग्रंथि, नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण
   सिरा दाह - श्लिष्टवर्त्म, रक्तस्त्राव्, असम्यग् सिरा वेधन।
6. शस्त्रक्षाराग्नयो यस्मसन्मृत्योः परममायुधमं अप्रमतों भिषक् तस्मतान् सम्यगवचारयेत्।
7. सर्व शस्त्र व अनुशस्त्र में क्षार श्रेष्ठ हैं।
8. ज्वर, अतिसार, हृदय रोग, तिमिर, वृषण एवं मेहन, नखान्तर आदि में क्षार प्रयोग निषिद्ध हैं।
9. तीक्ष्ण क्षार - चित्रक, दन्ती, कलिहारी, वचा, विडलवण, अतीस, आदि द्रव्यों का निर्वाप।
   तीक्ष्ण क्षार कफ, वात या मेदजन्य अर्बुद में प्रयोज्य। (मध्यम अर्बुद - मध्यम क्षार)
   सभी अर्श व पित्त रक्तजन्य अर्बुद - मृदु क्षार
10. क्षार के 10 गुण बताये गए - नातितीक्ष्ण, नातिमृदु, श्लक्ष्ण, पिच्छिल, शीघ्रशामी, श्वेत, शिखरी, मुखनिर्वापी न विष्यन्दी, नातिरूक्।
11. क्षारसाध्य रोग में क्षार काल - 100 मात्रा
    वर्त्म रोग - 50 मात्रा
    कर्ण अर्श - 50 मात्रा
12. क्षारदग्ध स्थान पर तिलकल्क, मधुक (मुलेहठी) का घृत के साथ लेप करने से व्रणरोपण होता हैं।
13. सम्यक् दग्ध - क्षार कर्म पक्वजम्बासितं
    दुर्दग्ध - ताम्रतातोदकण्डू
    अतिदग्ध - रक्तास्रावण, मूर्च्छा, दाह, ज्वर
14. अतिदग्ध में अम्ल द्रव्यों से परिषेक, मधु, घृत व तिल का लेप करें। (अम्ल स्पर्श में शीतल होता हैं।)
15. अग्नि कर्म क्षार कर्म से अधिक श्रेष्ठ हैं।
16. अग्निकर्म त्वक्, मांस, सिरा, स्नायु संधि व अस्थि में किया जाता हैं।
17. सम्यक् अग्नि कर्म उपरान्त मधु-घृत लेप, शीतल द्रव्यों का लेप करें।

18. सुदग्ध अग्नि कर्म लक्षण – पक्वतालकपोताभं
19. दग्ध – 4 प्रकार
    तुच्छ दग्ध – त्वक विवर्णता, अतिदाह,
    दुर्दग्ध – स्फोट उत्पत्ति, दाह व तीव्र ओष
    अतिदग्ध – मांसलम्बन, संकोच, दाह, धूपन, वेदना, सिरादि का नाश, तृष्णा, मूर्च्छा, मृत्यु।
20. चिकित्सा – तुच्छ दग्ध – अग्नि सेक, उष्ण द्रव्य
    दुर्दग्ध – शति व उष्ण उपचार के पश्चात् शीत उपचार
    सम्यक् दग्ध – पित्तविद्रधिवत क्रिया
    अतिदग्ध – पित्तविसर्प वत क्रिया
21. स्नेहदग्ध – अतिशय रूक्ष उपचार
22. सूत्र स्थान – अष्टाङ्ग हृदय का रहस्य स्थान
23. सिरा, स्नायु, तरूणास्थि पर क्षार प्रयोग निषेध (BHUMD 2010)

अष्टाङ्ग संग्रह

☞ आयुष्कामीयमध्याय सूत्रस्थान का प्रथम अध्याय हैं।

☞ अग्निवेश, हारीत, भेल, माण्डव्य, सुश्रुत और कराल आदि शिष्यों को आयुर्वेद का उपदेश दिया गया।

☞ सभी तन्त्रों का संग्रह करके अस्थान, विस्तर, आक्षेप तथा पुनरूक्तादि दोषो से रहित हेतु, लिंग एवं औषध का प्रकाशन करके अपने व अन्य तन्त्रों का परस्पर विरूद्ध स्थलो का अत्यंत निवारण करके वर्तमान युग के अनुरूप सन्दर्भों सहित अष्टांग संग्रह का निर्माण किया गया।

☞ जो नित्योपयोगि व दुर्बोध, सर्वाङ्गव्यापि हैं ऐसा कायचिकित्सा प्रधान अष्टांग संग्रह ग्रंथ का संग्रह किया गया।

☞ रोगोत्पत्ति का मूल कारण दोष हैं और रस-रक्तादि दूष्य हैं।

☞ धातुओं के विशिष्ट कर्म का वर्णन सूत्रस्थान प्रथम अध्याय में किया गया हैं।

☞ शरीरं धारयन्त्येते धात्वाहारश्च सर्वदा (अ. हृ. सू. 1/33)

☞ इन्द्रियार्थ गुण (शब्द, स्पर्श, रूप रस, गन्ध व्यवायी व विकासी गुणों का भी वर्णन किया हैं)

☞ व्यवायि गुण पहले सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होता हैं तत्पश्चात पाक होता हैं।

☞ विकासी गुण धातुओं को नष्ट कर संधि बन्धन को ढीला करता है।

☞ कुछ आचार्य व्यवायी और विकासी गुण को क्रम से सर और तीक्ष्ण का उत्कर्ष मानते हैं।

☞ सत्व, रज, तम को महागुण कहा हैं। (BHU 2002)

☞ अ. स. के सूत्रस्थान में 40 अध्याय हैं।

☞ शारीर स्थान - 12 अध्याय

- निदान - 16 अध्याय
- चिकित्सा स्थान - 40 अध्याय
- कल्प सिद्धिस्थान - 8 अध्याय
- उत्तर तन्त्र - 50 अध्याय

☞ अ. स. में 6 स्थान व 150 अध्याय हैं।

☞ सूत्रस्थान का द्वितीय अध्याय शिष्योपनयनीय हैं।

☞ शिष्योपनयन का अर्थ है छात्र का गुरू के समीप जाना।

☞ शिष्य को गुरू भक्त, अभियुक्त (पढ़ने का अभ्यासी) अतियुक्त (अत्यंत युक्ति पूर्वक कार्य करने वाला) पाटव होना चाहिए।

पाटव (चतुर) जितद्वन्द (सुख - दुख, लाभ हानि को जीतने वाला) होना चाहिए।

☞ भिषक् अनुद्धत (गम्भीर) स्तब्ध (चिरकारी सोच-विचार कर कार्य करने वाले) सुनृत (सत्य-वादी), बहुश्रुत, कालवेदी (समय को जानने वाला), ज्ञात ग्रन्थ (शास्त्र में जानने वाला) अनाथान् रोगियों (निरूपाय रोगियों को) पुत्रवत्समुपाचरेत (पुत्र के समान सम्यक् उपचार करता हो) के गुण कहे गये हैं।

☞ राजवैध की परिभाषा द्वितीय अध्याय में दी गयी हैं।

☞ इक्षु वर्ग में श्रेष्ठ - पौण्ड्रक (DSRRAU PGET 2015)

☞ चिकित्सा के चारों पादों में दोष होने से तथा दैवात्त कर्म से एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्राप्त होती हैं।

☞ रात्रिचर्या का वर्णन दिनचर्या अध्याय में किया गया हैं।

☞ सोते समय शिर पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए।

☞ दिन में उत्तर या रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुख करके मौन होकर मलोत्सर्ग करना चाहिए।

☞ ऋतुचर्या अध्याय (चतुर्थ अध्याय) में काल को भगवान् कहा गया है, इसका आदि अन्त नहीं होता।

☞ काल को मात्रा, काष्ठा, कला, नड़िका, मुहूर्त, याम, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन तथा वर्ष से 12 विभागों में विभक्त किया हैं।

☞ ह्रत्तौजस (सन्निपातज्वर) का वर्णन अ. स. रोगनुत्पादनीय अध्याय में किया गया हैं।

☞ अ. स. ने मधु के 4 भेद माने हैं - 1. भ्रामर, 2. पौत्तिक, 3. क्षौद्र, 4. माक्षिक- इनमें क्षौद्र व माक्षिक नामक मधु का प्रयोग करना चाहिए। (NIA LEC 2020)

☞ मधु परम् योगवाही होता हैं।

☞ मूत्र वर्ग का अलग से वर्णन किया गया हैं।

☞ मनुष्य के मूत्र को विषघ्न होता हैं।

☞ जीवन अगद का वर्णन अन्नरक्षाविधि अध्याय में किया गया हैं। यह सभी विषों की उत्तम औषध हैं।

☞ महानस व महानसाध्यक्ष का वर्णन अन्नरक्षाविधि में किया गया हैं।

☞ विषकन्या का वर्णन अन्नरक्षाविधि में किया गया हैं।

☞ मूषिका का अजरूहा नामक औषधि हाथ पर बांधने से विष का नाश होता हैं।

☞ त्र्यूषणादि योग, विषघ्न धूप, हरिद्रादिउपलेप, ताम्र व स्वर्ण भस्म का प्रयोग अन्नरक्षाविधि अध्याय में किया गया हैं।

☞ विष दूषित वायु शीत ऋतु में उष्ण व उष्ण ऋतु में अति शीतल होती हैं व श्रम, मूर्च्छा, छर्दि उत्पन्न करती हैं।

☞ त्रय उपस्तम्भ का वर्णन विरूद्धान्नविज्ञानीयम् अध्याय में किया गया हैं। (आहार, निद्रा, अब्रह्मचर्य)

☞ पादांशिक क्रम, तन्द्रा, जनपदोध्वंस, मृत्यु भेद, काल-अकाल मृत्यु आदि का वर्णन विरूद्धान्नविज्ञानीयम् अध्याय में किया गया हैं।

☞ निद्रा के 7 भेद (कालस्वभावज, आमयज, चित्तस्वेदज, देहस्वेदज, श्लेष्मप्रभवा, आगन्तुक व तमोभवा) माने गयें हैं। (BHU2007)

☞ वेदवादी 101 प्रकार की मृत्यु मानते हैं - (1 काल व 100 अकाल मृत्यु)

☞ बौद्धानुसार (सौगात) 4 प्रकार की मृत्यु मानी गयी हैं।

1. आयु क्षय से, 2. हृदय आदि का कार्य रूक जाना, 3. आयु एवं प्रारब्ध क्षय होने से, 4. उपच्छेद-शस्त्रादि आघात एवं मारण-मोहन आदि से।

☞ अ. स. के सूत्रस्थान अन्नपानविधि अध्याय में सप्तविध आहार कल्पना भी हैं।

☞ महर्षि वाग्भट्ट ने उपयोग संस्था व उपभोक्ता को उपयोग व्यवस्था एक मानकर सप्तविध आहार कल्पना की हैं।

☞ सात्म्य, अनुपान, समशन, अध्यशन, अमात्रा अशन, विषमाशन, आहार परिणामकर भाव, अन्न सेवन प्रमाण विरूद्धाहार परिभाषा का वर्णन अन्नपान विधि अध्याय में किया गया हैं।

☞ आहार परिणामकर भाव 6 माने हैं।

(I) उष्मा – पाचन

(II) वायु – अपकर्षण

(III) क्लेद – शैथिल्यता

(IV) स्नेह – मार्दव

(V) काल – सर्व शरीर में व्याप्ति

(VI) समयोग – अन्न परिणाम से उत्पन्न साम्यता पैदा करता हैं।

☞ स्वभाव मात्रायोगादि परस्पर विपर्ययैः भोजनानि विरूधयन्ते।

☞ अन्न सेवन प्रमाण – 2 भाग कुक्षि का अन्न से पूर्ण

1 भाग कुक्षि का पेय के पूर्ण

1 भाग कुक्षि का वायु संचरण हेतु

☞ अति स्थिर आहार – मूत्र व पुरीष का विबन्ध

आतृप्तिकारक

शीघ्र व्याप्ति नहीं होती

शीघ्र पाक नहीं होता

☞ अति द्रव आहार सेवन – प्रतिश्याय, प्रमेह, कास, अभिष्यन्द, अग्निबल नष्ट करता हैं।

☞ अति मधुर आहार सेवन – अग्निमाद्यं, शरीर को पुष्टि नहीं करता।

☞ अति लवण रस सेवन – अचक्षुष्यं

☞ अति तीक्ष्ण व अति अम्ल रस सेवन – वृद्धावस्था का कारण

☞ अ. स. में एकादश अध्याय मात्राशितीय हैं।

☞ मात्राशितीय अध्याय में मात्रा पूर्वक आहार सेवन, आमदोष, अलसक, विसूचिका, दण्डालसक, अजीर्ण, अन्न व औषध पाचन काल, जीर्णाहार, अजीर्णाहार लक्षण, विलिम्बिका आदि का वर्णन किया गया हैं।

☞ मात्राशितीय अध्याय में हिंग्वादि चूर्ण, मुस्तादि क्वाथ, अमृता – कदम्बादि क्वाथ, लेपन, उद्वर्तन, धूपन आदि का वर्णन किया गया हैं।

☞ सम्यक् अग्नि रहने पर आहार पाक – 4 याम

☞ औषध पाक – 2 याम

☞ अजीर्ण

भेद – आमाजीर्ण (कफ)	विष्टब्धाजीर्ण (वात)	विदग्धजीर्ण (पित्त)
चिकित्सा – लंघन	स्वेदन	वमन

विलिम्बका – वात व कफ दोष युक्त – चिकित्सा आमाजीर्ण समान

रसशेषा – रस शेष आहार – दिवा स्वप्न व भूख लगने पर अल्प भोजन

☞ **जीर्णोहार लक्षण :-**

उद्गारशुद्धिरूत्साहो वेगोत्सर्गो यथोस्थितः लघुता क्षुत्पिपासा च जीर्णाहारस्य लक्षणम्।

(अ. स. सू.)

अजीर्णाहार लक्षण :-

दोषोपनद्धं यदि लीनमन्नं पित्रोल्बणस्या वृणुयान्न वह्निम। जायते दुष्टा तु ततो बुभुक्षा या मन्दबुद्धीन्विषनिहन्ति। (अ. स. सू.)

अर्थ -

(पित्तोल्बण, पुरूष में वातकफ दोषो से अवरूद्ध अन्न कोष्ठ के कारण अग्नि को अधिक प्रचण्ड कर देता है इससे दूषित खाने की इच्छा उत्पन्न होती हैं इस भूख में खाया अन्न मन्दबुद्धि पुरूष को विष की तरह मार डालता हैं।

☞ द्विविध औषध, स्वर्ण, रूप्यं, ताम्रं, काँस्य, त्रपु, सीसा, कृष्ण लौह, तीक्ष्ण लौह, मणियां, शंख, समुद्रफेन, वंशलोचन, हरताल, अंजन, तुत्थ, गैरिक मैनसिल, यवक्षार आदि का वर्णन विविधौषधविज्ञानीय अध्याय में किया गया हैं।

☞ औषध भेद

(I) ऊर्जस्कर - रसायन — (II) रोगघ्न रोमशामक

वाजीकरण — रोग अपुर्नभवकर

2. (i) द्रव्य-भौम - स्वर्ण से लवण आदि।

औद्भिद - वनस्पति, वानस्पत्य, वीरूद्ध, औषधि

जांङ्गम - मधु, घृत आदि।

(ii) अद्रव्य - उपवास, वायु, आतप, छाया, मन्त्र आदि।

3. (i) दैवव्यपाश्रय - मन्त्र, बलि, उपहार आदि

(ii) युक्ति व्यपाश्रय - आहार व औषध योजना

(iii) सत्वावजय - अहित विषयों से मन का निग्रह

4. (i) अपकर्षण - 1. बाह्य अपकर्षण 2. अभ्यान्तर अपकर्षण

(ii) प्रकृति विघात - 1. बाह्य प्रतिघात 2. अभ्यान्तर प्रतिघात

(iii) निदान परिवर्जन

5. (i) हेतु विपरीत

(ii) व्याधि विपरीत

(iii) उभयार्थकारी

☞ त्रास, संक्षोभ, हर्षण, स्वप्न, जागरण, संवाहन आदि चिकित्सा का भाग हैं। (अद्रव्य औषध)

☞ सभी अञ्जनों में श्रेष्ठ - स्त्रोतांजन

☞ सप्त पंचमूल का वर्णन किया हैं।

☞ जीवन व मध्यम पचंमूल वृद्ध वाग्भट्ट की देन हैं।

☞ बलात्रय (अतिबला, बला, नागबला) का वर्णन हैं। (वृद्ध वाग्भट्ट की देन है)

☞ दक्षिण वायु - चक्षुष्य (श्रेष्ठ)

☞ पश्चिम वायु – विषघ्न (शीतल)

☞ पूर्वी वायु – विषविकार (अभिष्यन्दि, उष्ण)

☞ उत्तरी वायु – दोषाणामप्रकोप (मधुर)

☞ अनौषध चिकित्सा – आस्या, अध्व, चक्रमण, विभिन्न वायु, आतप, अन्धकार व चांदनी के गुण बताये हैं।

☞ अ. स. के सूत्रस्थान के अग्रय संग्रहो अध्याय में 155 अग्रयो का वर्णन किया हैं।

☞ अग्रय का अर्थ हैं श्रेष्ठ वचन

☞ शोधनादिगणसङ्ग्रहमध्यायं में वमन, विरेचन निरूह वस्ति, शिरोविरेचन, प्रयोगिक धूम, स्नैहिक धूम तीक्ष्ण धूम, वात, पित, कफशामक द्रव्यों का संग्रह किया गया हैं।

☞ 15 वें अध्याय महाकषायसङ्ग्रह में 45 महाकषाय का वर्णन किया हैं। एक महाकषाय में 10 कषाय हैं।

☞ कुल महाकषाय में द्रव्य – 450

–प्रथम महाकषाय – जीवनीय

–अन्तिम महाकषाय – वयः स्थापन

☞ चरकोक्त वमनोपग, विरेचनोपग, आस्थपनोपग, अनुवासनोपग, शिरोविरेचनोपग का वर्णन अ. स. में नहीं किया गया।

☞ विविध गण संङ्ग्रहमध्यायं में

–प्रथम गण – विदार्यादिगण

–अन्तिम गण – पिप्पल्यादि गण

☞ अ. स में 25 गणों का वर्णन हैं। (वर्णन में 26 आयें हैं)

संग्रहणीय, दीपनीय, पाचनीय औषधि = मुस्ता (UPSC MO 2010)

☞ द्रव्यादिविज्ञानीयमध्यायं में द्रव्यों का पंचभौतिकत्व, द्रव्यों का औषधत्व, रस, गुण, वीर्य, विपाक आदि का वर्णन किया हैं।

☞ द्रव्य का अधिष्ठान – पृथ्वी

द्रव्य की योनि – जल

द्रव्य की निवृति – ख, अनिल, अनल की विशेषता में कारण

व्यपदेश भूयसा का वर्णन द्रव्यादिविज्ञानीय अध्याय में किया गया हैं।

☞ इत्थं च नानौषधभूतं जगति किञ्चिद् द्रव्यमस्ति विविधार्थप्रयोगवशात। (इस विश्व में कोई भी द्रव्य ऐसा नहीं है जो अनौषध हो क्योंकि अनेक प्रकार का अर्थ (प्रयोजन) और प्रयोग (उपयोग) होने से सभी द्रव्य औषध है।

☞ **शोधन द्रव्य की पंचभौतिकता**

- उर्ध्वगमन (वामक द्रव्य) – अग्नि + वायु
- अधोगमन (विरेचन द्रव्य) – पृथ्वी + जल
- व्यामिश्रात्मक (उभयगामी) – पृथ्वी + जल + अग्नि + वायु

☞ **शामक द्रव्यों की पंचभौतिकता**

- ग्राही – वायु प्रधान

- दीपन – पाचन → अग्नि प्रधान
- लेखन – अग्नि + वायु प्रधान
- बृहंण – पृथ्वी + जल प्रधान
- तिक्त, कषाय, मधुर – उत्तरोत्तर शीतवीर्य
- कटु, अम्ल, उष्ण – उत्तरोत्तर उष्ण वीर्य

☞ तिक्त, कटु कषाय – रूक्ष बद्धविण्मूत्रमारूत
लवण, अम्ल, मधुर – स्निग्ध सृष्टविण्मूत्रमारूता

☞ लवण, कषाय, मधुर – गुरू
अम्ल, कटु, तिक्त – लघु

☞ वीर्यं द्रव्यस्य तज्ज्ञेय यद्योगात्क्रियते क्रिया (द्रव्य का वीर्य वह शक्ति है जिसके संयोग से द्रव्य कार्य करने में समर्थ होते हैं।

☞ अ. स. अष्टविध वीर्य (गुरू लघु स्निग्ध रूक्ष तीक्ष्ण मन्द शीत उष्ण)

☞ द्विविध वीर्य (शीत व उष्ण)
उष्ण वीर्य – दहन पाचन स्वेदन विलयनानिलकफाशमनानि
शीत वीर्य – ह्लादन स्तम्भन जीवन रक्त पित्त प्रसादनानि

☞ विपाक – 3 प्रकार

- मधुर व लवण – मधुर विपाक
- अम्ल – अम्ल विपाक
- कटु, तिक्त, कषाय – कटु विपाक

☞ महर्षि पराशर – 3 विपाक (UK 2014)

- अम्ल रस – अम्ल विपाक
- कटु रस – कटु विपाक
- शेष चार रस – मधुर विपाक
- दूध (रस व विपाक – मधुर व वीर्य – शीत) – मधुर रस के समान श्लेष्म प्रकोपक व वात – पित्त शामक
- मदिरा (रस व विपाक – अम्ल व वीर्य – उष्ण) – अम्ल रस के समान वातशामक व पित्तश्लेष्मक प्रकोपक

☞ द्रव्य अपने रस, गुण, वीर्य, विपाक या प्रभाव से कार्य कर सकता हैं। जो भी इनमें से बलवान होकर दूसरे को अभिभूत करके अपना कर्म करता हैं वहीं कर्म का कारण बन जाता हैं।

☞ द्रव्य में रस, वीर्य, विपाक आदि कार्य में परस्पर सादृश्य व विसादृश्य का कारण पृथ्वी आदि महाभूतों का उत्कर्ष व अपकर्ष होता हैं।

☞ द्रव्य के विपाक का ज्ञान शरीर में दोष की वृद्धि व क्षय से जान सकते है।

☞ द्रव्य के रस का ज्ञान – जिह्वा के द्वारा स्पर्श

☞ द्रव्य के वीर्य का ज्ञान – जिह्वा निपात (स्पर्श), अधिवास (शरीर में रहने पर)

☞ रस छः (6) माने गये हैं।

☞ रसों को विचित्र अर्थों में – असंख्य/एक
- जब गुरू आदि (गुरू, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण, मन्द, शीत उष्ण) गुण उत्कृष्ट शक्ति रूप में रहते हैं वीर्य
- अन्य 12 गुण – सामान्य गुण

☞ द्रव्यों में रस, गुण, वीर्य, विपाक के समान होने पर भी जो विशिष्ट कर्म देखा जाता हैं वह प्रभाव कहलाता है।
☞ द्रव्य के रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव में से प्रभाव को श्रेष्ठ माना गया हैं।
☞ रस की उत्पत्ति में कारण – जल महाभूत
☞ सर्वरसप्रत्यनिक रस – लवण
☞ स्त्रोतस विशोधन – लवण रस
☞ स्तन्यकण्ठशोधन – तिक्त रस
☞ स्त्रोतस विवृणोति – कटु रस
☞ छिनत्ति बन्धान – कटु रस
☞ प्रीणन कर्म – कषाय रस
☞ अति रूक्ष व गुरू – कषाय रस
☞ श्रेष्ठ द्रव्य
- मधुर रस – घृत
- अम्ल रस – आंवला
- लवण – सैंधव
- तिक्त – पटोल
- कटु – शुण्ठी
- कषाय – हरीतकी

☞ देशानुसार रस उत्पत्ति
- आनूप देश – मधुर रस प्रधान द्रव्य
- जांगल देश – कटु रस प्रधान द्रव्य
- साधारण देश – (I) आनूप साधारण देश – अम्ल, लवण रस प्रधान (BHU MD 2011)
  (II) जांगल साधारण देश – तिक्त, कषाय रस प्रधान

☞ दोष धातुमलमूलो हि देहः। (अ. स. सू. 1/19)
(ये सूत्र दोषादिवज्ञानीय एकोनविंशोऽध्याय में वर्णन किया गया हैं)

☞ प्राकृत कर्म
- अभिलाषा – पित्त दोष
- देहधारण – अस्थि धातु
- अस्थि पूरण – मज्जा धातु

- अन्न क्लेदनिर्वाहण – मूत्र
- क्लेद धारण – स्वेद
- संधि शैथिल्य – कफ क्षय
- धमनी शैथिल्य – मांस क्षय
- संधि स्फोटन – मांस क्षय (Lec. Screeniny test. Balrog 2008)
- तमो दर्शन – मज्जा क्षय
- तिमिर दर्शन – शुक्र क्षय
- अगंसाद – कफ वृद्धि & वात क्षय
- संधि शून्यता – मेद क्षय
- आस्य शोष – शुक्र क्षय
- मुख शोष – मूत्र क्षय

☞ **धातुस्थ दोषों के लक्षण**

दोष	**त्वक्**	**रक्त**	**मांस**	**मेद**
वात	त्वक् स्फुटन रूक्षता	तीव्र वेदना, संज्ञानाश ताप, लालिमा, विर्वणता अरूषिका, विष्टम्भ अरूचि, कृश भ्रम	तोद बहुल व कर्कश ग्रंन्थि, भ्रम, अंग गौरवता, अति वेदना, स्तम्भन मुष्टिवत् प्रहार वेदना	मांसस्थ लक्षण
पित्त	विस्फोट मसूरिका	विसर्प, दाह	कोथ	दाहयुक्त ग्रंथियां, स्वेदन आधिक्य, तृषा & छर्दि
कफ	स्तम्भन श्वेताभास	पाण्डु रोग	अर्बुद, अपची आर्द्रचर्मावनद्धाभ गात्रता	स्थूलता व प्रमेह
दोष	**अस्थि**	**मज्जा**	**शुक्र**	
वात	पाद, संधि अस्थि तीव्र वेदना बलक्षय	अस्थि सौषिर्य अनिद्रा, स्तब्धता वेदना	शुक्र शीघ्र क्षरण शुक्र संङ्ग व शुक्र विकार	
पित्त	अति दाह	नख व नेत्र में हरिद्रा वर्ण	पूति शुक्र पित वर्ण शुक्र	
कफ	स्तब्धता	नेत्र श्वेत अभासता	शुक्र अतिवृद्धि	
दोष	**शिरा**	**स्नायु**	**कोष्ठ**	

वात	आध्मान	गृध्रसी, आयाम	–
	रिक्तता	कुबड़ापन	
पित्त	क्रोध, सन्ताप	–	मद, पिपासा, दाह
	असम्बद्ध, प्रलाप		सर्वशरीर में रक्तपित्त
कफ	विबंध, गौरवता	सन्धि शून्यता	उदर वृद्धि, अरूचि
	शरीर स्तब्धता		अविपाक, कफज रोग

☞ सर्व धातुओं का परम – ओज

ओज – मृदु, सौम्य, रक्तमीषत्सपीतकम

☞ ओज – गर्भ की प्रथम धातु का प्रसाद भाग

☞ ओज – सर्वप्रथम हृदय में स्थित, तत्पश्चात सर्वशरीर में

☞ ओज – शरीर के स्नेह भाग जिसमें प्राण प्रतिष्ठित रहते हैं।

☞ ओज – जीवन का आश्रय

☞ यथाबलं यथास्वं च दोषा वृद्धा वितन्वते। रूपाणि जहति क्षीणा: समा: स्वं कर्म कुर्वते ये सूत्र दोषादिविज्ञानीय अध्याय में कहा गया हैं। (अ. स.सू.)

☞ दोष	विशेष स्थान
वात	पक्वाशय
पित्त	नाभि
कफ	उर

☞ दोषा देहस्य स्थेमानमानयन्त: स्थूणा इत्युच्यते।

(त्रिदोष देह को स्थिर रखते है इसलिए त्रिस्थूण कहते हैं)

☞ दोष – धारणाद्धातव

● मलिनीकरणादाहर मलत्वाच्च मला

● दूषण स्वभावाद्दोषा

☞ दोषो का पचंभौतिकत्व

वात – वायु + आकाश

पित्त – अग्नि महाभूत

कफ – जल + पृथ्वी महाभूत

☞ अन्न प्रवेश करने में वायु – प्राण वायु

☞ धी, धृति, स्मृति, मनोविबोधन स्त्रोतस प्रणीन – उदान वायु – स्त्रोतस प्रणीन

☞ स्त्रोतस शोधन, स्वेद, रक्त स्त्रावण क्रिया व योनि में शुक्र प्रतिपादन – व्यान वायु

☞ अन्न का धारण, पाचन, विवेचन– समान वायु

☞ शुक्र, गर्भ, आर्तव निष्क्रमण – अपान वायु

वात प्राणवायु उदान व्यान समान अपान वायु

स्थान	मूर्धा	उर:	हृदय	अन्तराग्नि समीप	
विचरण	कण्ठ व उर:	कण्ठ व नाभि	सर्वशरीर	–	वस्ति, श्रोणि, मेढ्र, वृषण, वंक्षण ऊरू

पित्त

	पाचक पित्त	**रञ्जक**	**साधक**	**आलोचक**	**भ्राजक**
स्थान	आमशय व पक्वाशय मध्य	आमाशय	हृदय	दृष्टि	त्वक्

कफ

कफ	**अवलम्बक कफ**	**क्लेदक**	**बोधक**	**तर्पक**	**श्लेषक**
स्थान	उर:	आमाशय	जिह्वा	मूर्धा	पर्व

प्रधान
वातजन्य रोग – 80
पित्तजन्य रोग – 40
कफ जन्य रोग – 20

☞ वातज रोग – दन्त शैथिल्य

घ्राण नाश	● घ्राण नाश
मूकत्व	● मूकत्व
तिमिर	● तिमिर
अस्वप्न	● अस्वप्न
भ्रव्युदास	● भ्रव्युदास

☞ पित्तज रोग – धूमक

● दव
● चर्मदरण
● कक्ष्या
● तम: प्रवेश
● अतृप्ति
● नीलिका

☞ कफज रोग – तृप्ति
धमनी प्रतिचय
बलास

☞ दाह – सर्वाङ्ग शरीर में तीव्र संताप

● ओष – स्वेदन व अरति के साथ दाह
● प्लोष – अंग विशेष में स्वेद रहित अग्नि ज्वाला के समान दाह

- दव – मुख, ओष्ठ व तालु में दाह
- दवथु – चक्षु आदि इन्द्रियो में दाह
- विदाह – हस्त –पाद व अंसफलक में विविध प्रकार का संताप
- अर्न्तदाह – कोष्ठ में होने वाला दाह
- धूमक – शिर, ग्रीवा, कण्ठ व तालु में धूम प्रतीति
- अम्लक – अर्न्तदाह + दाहशूलं + अम्लोद्गार
- शोणितक्लेद – रक्त की कृष्णता, दुर्गन्ध व तनुत्व
- मांसक्लेद – मांस की कृष्णता व दुर्गन्ध
- चर्मकोथ – सम्पूर्ण बाह्य त्वचा का संहित (सिकुड़कर एकत्रित होना)
- तृप्ति – कोष्ठ गौरवता से भोजन के प्रति अनिच्छा
- आरोचक – अन्न अभिलाषा न होने पर तृप्ति के समान अनुभव
- तन्द्रा – निद्रा से पीड़ित होने के समान शब्द–स्पर्श आदि विषयों को न ग्रहण करना
- उपलेप – दीवाल पर लेप करने के समान प्रतीति
- स्तैमित्य/प्रमीलक
- धमनी प्रतिचय – उपलेप की अधिकता अर्थात धमनी का अत्यंत पूरित होना
- अग्निशैत्य – अग्नि की अतिमन्दता
- उदर्द – उर: में होने वाला अभिष्यन्द शीतल जल का स्पर्श होने से विशेषत: शीत ऋतु में सराग व कण्डू युक्त शोफ

कफ प्रधान

☞ क्लेद कर्म – प्रकुपित पित्त का कर्म
कोथ कर्म – प्रकुपित पित्त का कर्म
उपदेह कर्म – प्रकुपित कफ का कर्म

☞ रसो द्वारा दोषों को अनुमान
वात दोष – कषाय, तिक्त, कटु रसों से
पित्त दोष – कटु, अम्ल, लवण
कफ दोष – मधुर, अम्ल, लवण

☞ सुश्रुत – पित्त विदग्ध होकर अम्ल बनता
- श्लेष्मा विदग्ध होकर लवण बनता

☞ वात की चिकित्सा – विस्मरण (किसी बात को विस्मृत करना या भुलाना), विध्मापन (धमकाना) सुरा व आसव सेवन, पीड़न, हेमन्त ऋतुचर्या का सेवन)

☞ पित्त की चिकित्सा – ग्रीष्म ऋतुचर्या का पालन

☞ कफ की चिकित्सा – वसन्त ऋतुचर्या का पालन

- जागरण
- नियुद्ध
- प्लवन
- नियुद्ध

☞ दोषों की चिकित्सा में युक्ति

● तीनो दोष प्रकुपित – जो बलवान हो उसकी चिकित्सा (बाकी दोष के विरोध चिकित्सा नहीं हो)

● तीनों दोष समान रूप से प्रकुपित – क्रमशः वात – पित्त – कफ चिकित्सा

☞ वात दोष सबसे बलवान व पित्त उससे कम व कफ सबसे कम बलवान होता हैं।

☞ महर्षि पराशर – वायु सबसे प्रबल – प्रथमतः उसी की चिकित्सा करना चाहिए।

☞ अन्य आचार्य के अनुसार – शरीर में दोषों के स्थान के अनुसार कफ को प्रथमत – पित्त – वात की चिकित्सा

☞ ज्वर व अतिसार में चिकित्सा क्रम – पित्त – कफ वात

☞ सन्निपात दोष – विषम सन्निपातज– बलवान दोष की चिकित्सा
सम सन्निपातज

☞ आम दोष लक्षण, आम– निराम दोष का लक्षण, आमदोष, चिकित्सा का वर्णन दोषोपक्रमणीय अध्याय में किया गया हैं।

☞ रोगभेदीय अध्याय में रोग के 7 भेद बताए गये हैं।

1. सहजजन्य – पितृजन्य शुक्र दुष्टि व मातृजन्य आर्तव दुष्टि कुष्ठ, अर्श, मेह आदि
2. गर्भजन्य रोग – मातृज अभिचार से कौब्जय, पाङ्गुल्य, पैङ्गल्य, किलास
दो प्रकार के – (i) गर्भिणी के दूषित आहार रस से, (ii) दौहृद के विमान से
3. जात जन्य रोग – अपचार से उत्पन्न
दो प्रकार – सन्तर्पण जन्य, अपतर्पण जन्य
4. पीड़ाकृत – क्षत भङ्ग प्रहार कोध, भय, शोक आदि
दो प्रकार – शारीरिक, मानसिक
5. कालज – शीत, गर्मी आदि से उत्पन्न
दो प्रकार ● व्यापन्न – शीत से दूषित अन्न से

● असंरक्षण – शरीर का शीत आदि से रक्षण न करना।

6. प्रभावजन्य – देवता तथा गुरू की आज्ञा उल्लघंन से ज्वर आदि तथा पिश्चादि से उत्पन्न उन्माद।
7. स्वभावजन्य – क्षुत् पिपासा जरा आदि।
दो प्रकार ● कालज रोग – शरीर रक्षा करने पर भी उत्पन्न रोग।

● अकालज रोग – शरीर की रक्षा न करने पर उत्पन्न

☞ रोग के द्विविध भेद –

1. प्रत्युत्पन्नकर्मजा – इस शरीर द्वारा किये गये कर्मों से उत्पन्न रोग
2. पूर्व कर्मज – पूर्व जन्मकृत कर्मों से उत्पन्न रोग

☞ त्रिविध व्याधि

● मृदु रोग – अल्प लक्षण

● मध्यम रोग – मध्यम लक्षण

● अधिमात्र रोग – सम्पूर्ण लक्षण

☞ दोषा एवं हि सर्वरोगौककारणम्। ये सूत्र द्वाविशोध्याय रोगभेदीय नामक में किया हैं।

☞ विसर्प, शोथ, अर्श, विद्रधि, गुल्म अभ्यान्तर व बाह्य दोनों मार्ग में उत्पन्न होते हैं।

☞ पुरोगामी (रोगोत्पत्ति से आगे चलने वाले रोग) – पूर्वरूप
अनुगामी (रोग के बाद उत्पन्न होने वाले रोग) – उपद्रव

☞ रोग परीक्षा विधि – रोगभेदीय अध्याय में वर्णन

● आप्तोपदेश

● प्रत्यक्ष

● अनुमान

☞ अधः काय बलनार्थ औषधि सेवन – प्राग्भक्त (BHU PG 2011)

☞ ज्ञानबुद्धिप्रदीपेन यो नाविशति योगिवत् आतुरस्यान्तरात्मानं न स रोगांश्चिकित्सत। (अ. स. सू. 22/18)

● (आगन्तुज विकार प्रवृद्ध होकर निज विकार तथा निज विकार प्रवृद्ध होकर आगन्तुक विकार का अनुसरण करता हैं)

स्थान विशेष कीअपेक्षा करे औषध का निरूपण करना चाहिए।

(औषध – सशंमन (शोधन – सौम्य – आप्य + नाभस + पार्थिव महाभूत) (असौम्य – आग्नेय + वायव्य महाभूत प्रधान)

☞ बसन्त, प्रावृट व शरद ऋतुओं में संशोधन करते हैं।

☞ अ. स. के अनुसार भैषज्य काल– 11 (NIA LEC 2020) BHU 2001

☞ रोगमादौ परीक्षेत तदनन्तरमौषधम्। ये सूत्र भेषजावचरीणीयों अध्याय में वर्णन किया गया हैं।

☞ रोग शमन के लिए प्रयुक्त किया 7 दिन प्रयोग करने के बाद दूसरी अन्य बदलनी चाहिए।

☞ उचितो यस्य यो देशस्तज्ज्ञ तस्यौषध हितम् (अ. स. सू. 23/35)

● जो व्यक्ति जिस देश में उत्पन्न होता है, उसके लिए उसी देश की औषधि हितकर होती हैं।

☞ शमन औषध – 7 प्रकार (पाचन, दीपन, क्षुत, तृट, व्यायाम, आतप, मारूत) (NIA LEC 2020)

☞ ग्रीष्म ऋतु – सभी का बृंहण

☞ शिशिर ऋतु – सभी का लंघन

☞ अति स्थौल्य लक्षण – अल्पायु, अल्पबल, अल्पवेग, गद्गद्त्वं आदि।

☞ स्थूल व्यक्ति की जठराग्नि – तीक्ष्णाग्नि

☞ कार्श्यमेव वरं स्थौल्यं – (अ. स. सू. 24/51)

☞ स्थौल्य – दुश्चिकित्सय

☞ कार्श्य – वृष्य औषधियां हितकर

● श्रेष्ठ बृहंण – मांस (नहि मांससमं किंचितदन्यदेहबृहत्वकृत)

☞ तत्काल संतर्पण – मधुर व अम्ल द्रव्यों से जल में बनाया स्नेह युक्त अथवा रूक्ष मन्थ।

☞ कृश व स्थूल दोनों के श्रेष्ठ – यव व गोधूम

☞ सर्वोतम स्नेह – घृत

☞ स्नेह का आशय (योनि) दधि, क्षीर, मांस, अस्थि, फल, दारू – काष्ठ

☞ वसा व मज्जा – अत्याग्नि

☞ तैल – क्रूरकोष्ठ
☞ वसा – कोष्ठ रूजा
☞ ग्रंथि नाड़ी कृमि श्लेष्म मारूतरोगिषु – तैल
☞ दग्धाहतभ्रष्टयोनिकर्णशिरोरूजा – वसा
☞ स्नेह विचारणाएं – 64
☞ अज्ञात कोष्ठ में सर्वप्रथम स्नेह की मात्रा – ह्रसीयसी मात्रा
☞ स्नेहपान श्रेष्ठ कल्प – अच्छपेय (स्नेहन कर्म को शीघ्र सम्पादित करता हैं)
☞ ह्रस्व मात्रा – रिक्त कोष्ठ को (अपथ्य सेवन से)
● मन्दाग्नि ● परिहार की आवश्यकता नहीं होती
● परिहार की आवश्यकता नहीं होती
☞ मध्यम मात्रा – मृदु कोष्ठ
● प्रमेह, उरूस्तम्भ, पिटिका, वातरक्त में प्रयोग
☞ महत्ती मात्रा – तीक्ष्णाग्नि
● गुल्म, उदावर्त, विसर्प, सर्प दंश पीडित में प्रयोग
☞

	स्नेहपान
वात	घृत + लवण
पित्त	शुद्ध घृत
कफ	यवक्षार + त्रिकटु + घृत

☞ अच्छपेय – उष्ण जल अनुपान
☞ तुवरक व भिलावा – शीतल जल अनुपान
☞ स्नेहपान से पूर्व/दिन/पश्चात – द्रव, उष्ण, अनभिष्यदि, नातिस्निग्ध, असंकर आहार का सेवन न करें।
☞ अकाल में आमात्रास्नेहपान लक्षण – उरूस्तम्भ, वाग्ग्रह, आमदोष, इन्द्रिय दौर्बल्य आदि।
☞ स्नेहपान से अजीर्ण में तृष्णा उत्पन्न होने पर शीतल जल से शिर व मुख धोना व स्नेह का वमन
पित्त प्रधान व्यक्ति – अच्छस्नेह पान नहीं करना चाहिए (सामपित्त में – अच्छ स्नेह पान से संज्ञानाश)
☞ विरेचन – स्नेहन के 3 दिन बाद करना चाहिए।
वमन – स्नेहन के 1 दिन बाद करना चाहिए।
☞ स्वेदायाध्याय में 4 प्रकार के स्वेद बताये गये हैं – (ताप, उपनाह, द्रव, उष्म स्वेद)
☞ द्रव स्वेद – 2 प्रकार (परिषेक & अवगाह)
☞ उष्म स्वेद – 8 प्रकार (पिण्ड, संस्तर, नाडी, घनश्म, कुम्भी, कूप, कुटी, जेन्ताक)
● पिण्ड स्वेद को संकर स्वेद भी कहते हैं।
☞ पिण्ड स्वेद वातज रोगों में प्रयोग करते हैं।
☞ घनाश्म स्वेद – शिला/अश्मघन स्वेद
☞ वायु जनित रोग – उपनाह स्वेद
☞ कफ जनित रोग – ताप व उष्म स्वेद
☞ कफ या वायु पित्त संसृष्ट दोष – द्रव स्वेद

☞ अनाग्नेय स्वेद – 11 प्रकार
निवात, गुरूप्रावरण, मुहुर्मुहः मद्यपान, क्षुधा, आतप, नियुद्ध, अध्व, भारहरण, अर्मष, भय, अनाग्नेय स्वेद
☞ मेदोधातु कफ व वात से आवृत रहती है।
☞ आमाश्यगत वात – सर्वप्रथम रूक्ष स्वेद तत्पश्चात स्निग्ध स्वेद
☞ पक्वाशयगत कफ – सर्वप्रथम स्निग्ध स्वेद तत्पश्चात रूक्ष स्वेद
☞ स्वेदन व स्तम्भन द्रव्य में द्रव व स्थिर गुण
☞ वमन कर्म – उदान वायु सहायक
☞ त्रिविध कुष्ठ का वर्णन वमनविरेचन विधि नाम अध्याय में किया हैं।
● मृदु कोष्ठ – पित्त प्रधान
● क्रूर कोष्ठ – वात प्रधान
● मध्य कोष्ठ – कफ प्रधान/सम दोष
☞ वमन में सर्वप्रथम – कफ निकलता
☞ विरेचन में सर्वप्रथम – पित्त निकलता
☞ सम्यक् स्नेहन के 10 दिन बाद विरेचन औषध सेवन
☞ तीक्ष्ण संशोधन – तीक्ष्ण विरेचन/तीक्ष्ण निरूह करना चाहिए।
☞ रोगी निर्बल व तीक्ष्ण व्याधि – मृदु औषध प्रयोग
☞ वमन/विरेचन देते समय सात्म्य द्रव्यों का प्रयोग नहीं क्योंकि सात्म्य द्रव्य मलों को बाहर निकाले बिना जीर्ण हो जाते हैं।
☞ सर्वोपक्रमाणां प्रधानतमः – बस्ति
☞ अनिलो हि दोषाणां नेता स्वतन्त्रः सर्वशरीरचेष्टैककारण। (अ. स. सू. 28/3)
☞ त्रिविधि बस्ति :– (आस्थापन, अनुवासन, उत्तर बस्ति)
☞ तद्वयः स्थापना दोषस्थापनाद्वाऽस्थापनमित्युच्यते।
☞ मात्रा बस्ति – अनुवासन बस्ति का भेद
● स्नेहपान की ह्रस्वमात्रा
☞ अजीर्ण – मात्रा व अनुवासन बस्ति निषेध
☞ बस्ति पुटक के पीड़न अवधि – 30 मात्रा
☞ उत्तर बस्ति मात्रा – 1 शुक्ति
☞ वमन कराने के – 15 दिन पश्चात विरेचन
☞ 15 दिन पश्चात् निरूह – तत्काल अनुवासन
☞ विरेचन के बाद निरूह की आवश्यकता न हो – 7 दिन बाद अनुवासन देवे
☞ नासा हि शिरसो द्वारम् (अ. स. सू. 29/3)
☞ अणु तैल निर्माण में कल्क से 8 गुना तिल का तैल लेना हैं।
☞ अणुतैल निर्माण में – गोदुग्ध (तैल से 6 गुना)
☞ व्याधि पित्त प्रधान तो तिल तैल के स्थान पर – घृत (अणु तैल निर्माण)
☞ द्वितीय अणुतैल निर्माण विधि – चरकोक्त (परन्तु तैल में एला, अभया 2 द्रव्य अधिक प्रयोग करने है)
☞ पित्त व रक्तजन्य व्याधियों में धूमपान – निषेध

☞ धूमपान काल – 1. प्रायोगिक धूमपान – 8

(i) रात्रि में (ii) मूत्र – विसर्जन पश्चात, (iii) शकृत विसर्जन

(iv) दंतधावन पश्चात, (v) स्वेदन पश्चात्, (vi) नस्य पश्चात्, (vii) आहार ग्रहण पश्चात, (viii) शस्त्रकर्म पश्चात

2. मृदु (बृहंण) धूमपान सेवन काल – 11 (DSRRAU 2015)

(i) क्षुत्, (ii) व्यवाय, (iii) हास्य, (iv) चिरासित, (v) जृम्भित, (vi) मूत्र, (vii) शकृत, (viii) दन्तधावन, (ix) तर्पण, (x) पुटपाक, (xi) शस्त्रकर्म (इन सबके बाद)

3. तीक्ष्ण (विरेचन) धूमपान सेवन काल – 5

(i) नस्य, (ii) अंजन, (iii) वमन, (iv) स्नान, (v) दिवास्वप्न के पश्चात

☞ कासघ्नं और वामक धूमनेत्र लंबाई – 10 अंगुल

☞ व्रण धूपन धूमनेत्र लंबाई – 8 अंगुल

☞ धूमवर्ति निर्माण में 5 बार औषध लेप

☞ धूमवर्ति लंबाई – 12 अंगुल

☞ धूमवर्ति के 9 अंगुल भाग तक औषध लेप करें।

☞ धूम को भीतर ग्रहण करने की क्रिया – आक्षेप

☞ धूम को बाहर निकालने की क्रिया – विसर्ग

● आक्षेप + विसर्ग – आपान

☞ गण्डूष की 3 मात्राएं

● उत्तम मात्रा – मुख को अर्ध भरना

● मध्यम मात्रा – मुख को 1/3 भरना

● हीन मात्रा – मुख को 1/4 भरना

☞ कल्क मात्रा (गण्डूष) – 1 कोल

☞ मुखालेप, मूर्ध तैल, कर्णपूरण, शिरोबस्ति आदि का वर्णन गण्डूषादिविधि अध्याय में किया हैं।

☞ शिरोबस्ति बस्ति पुटक की ऊंचाई – 12 अंगुल

☞ शिरोबस्ति करते वक्त उड़द वाले वस्त्र को शिर पर केश अन्त तक लपेटते हैं – 2 अंगुल

☞ शिरो बस्ति में तैल ऊपर तक भरना चाहिए – 1 अंगुल

☞ 3, 5, 7 दिन तक शिरोबस्ति करनी चाहिए।

☞ विडालक का वर्णन अ. स. में किया गया हैं।

☞ सुगन्धि तैल से अभ्यङ्गं का वर्णन अ.स. ने किया (Delhi Tibbia)

☞ नेत्रों रोगों में प्रथम उपक्रम – आश्च्योतन

☞ पक्ष्म को बचाकर जो नेत्र पर लेप किया जाता हैं – विडालक

☞ चतुर्विध अञ्जन – 4 (लेखन, रोपण, स्नेहन, प्रसादन)

I स्नेहन अंजन – सर्प आदि वसा से स्नेहन अंजन बनाता हैं।

● वातजन्य रोग व तिमिर रोग

II लेखन अजंन = मधुर इस द्रव्य नहीं होता शुक्र एवं अर्म रोगों में प्रयोग

III रोपण अजंन = तिक्त और कषायं स्नेह साथ मिश्रण नेत्राभिष्यन्द

IV प्रसादन अजंन = मधुर, शीतल द्रव्य व स्नेहं मिश्रण

- सूर्योपराग, विधुत सम्पात्, भूत, पिशाच आदि अद्भुत वस्तु के दर्शन से दृष्टिनाश
- स्वस्थवृत में

☞ रसों के अजंन के प्रकार = 6

☞ विधि भेद से अजंन = 2 (तीक्ष्ण व मृदु)

☞ **अंजन पात्र:-**

मधु रस अजंन = स्वर्ण पात्र
अम्ल रस अजंन = रजत पात्र
लवण रस अजंन = मेषश्रृङ्ग
कटु रस अजंन = वैडूर्यमणि / पाषाण पात्र
तिक्त रस अजंन = कास्य पत्र
कषाय रस अजंन = ताम्र/लौह पात्र
शीतवीर्य अंजन - नल, प्लक्ष, पद्यम्, स्फटिक, शंख की अंजनदानी

☞ अंजन घिसने की शिला की - ल. - 5 अंगुल
चौ. - 3 अंगुल

☞ अंजन शलाका - 5

☞ स्वर्ण व रजत शलाका - प्रसादन व स्नेह अंजन
ताम्र शलाका - लेखन अंजन
लौह शलाका व अंगुल - रोपण अंजन

अष्टांग हदय

❖ अष्टांङ्ग हदय- लघु वागभट्ट की मौलिक देन है

❖ अष्टांङ्ग हदय पर 44 संस्कृत टीकायें है।

❖ प्रमुख टीकायें

❖ पदार्थ चन्द्रिका	-	टीकाकार	काल
❖ अल्पबुद्धिप्रबोधन	-	चन्दनन्दन	10 वीं शताब्दी
❖ सर्वांग सुन्दरी	-	अरूणदत्त	12 वीं सदी
❖ आयुर्वेद रसायन	-	हेमान्द्री	13-14 वीं शताब्दी
इन्दुमती	-	इन्दु	13 वीं शताब्दी (NA)
❖ त्तत्वबोध व्याख्या	-	शिवदास सेना	15 वीं शताब्दी
❖ मनोज्ञ / चिन्तामवि	-	वैद्य टोडरमल	
❖ हदय बोधिका	-	दास पण्डित	
❖ वाग्भटार्थकौमुदी	-	श्रीकृष्ण सेमलिक	
❖ संकेत मञ्जरी	-	दामोदर	
❖ प्रदीपाख्या	-	यशोदानन्दन सरकार	
❖ वागभट्ट खण्डन मण्डन	-	भट्टनहरि	

❖ वैदूर्यकभाष्य – वाग्भट्ट

☞ हिन्दी टीकायें

❖ अत्रिदेव गुप्त एवं यदुनन्दन उपाध्याय

❖ प. शिव शर्मा – शिव प्रदीपिका

❖ प्रो. बनवारी लाल गौड़

❖ रविदत्त त्रिपाठी – सरोज हिन्दी व्याख्या

❖ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

☞ अरबी अनुवाद– अष्टांकर नाम से 8 वीं शताब्दी में

☞ तिब्बती अनुवाद– 7 वीं सदी में

☞ जर्मन अनुवाद – 1941 में

☞ अष्टाङ्गं संग्रह – वृद्ध वाग्भट्ट की देन है

☞ संस्कृत टीकाएं

शशिलेखा टीका – इन्दुकृत

☞ हिन्दी टीकाएं

– अत्रिदेव विद्यालंकार वृत

– गौवर्धन शर्मा एवं लालचन्द्र वैद्य कृत (सूत्रस्थान)

☞ विषय वस्तु अष्टांग संग्रह

स्थान		अध्याय संख्या
❖ सूत्र स्थान	–	40
निदान स्थान	–	16
शारीर स्थान	–	12
चिकित्सा स्थान	–	24
कल्प स्थान	–	8
उत्तर तंत्र	–	50
अष्टांग हृदय	–	150
स्थान		अध्याय संख्या
सूत्र स्थान	–	30
निदान स्थान	–	16
शारीर स्थान	–	6
चिकित्सा स्थान	–	22
कल्प स्थान	–	6
उत्तर तन्त्र	–	40
		120 अध्याय

☞ तीक्ष्णांजन के पश्चात् हिम प्रत्यंजन का प्रयोग करें (UDAIPUR 2007)

☞ श्रेष्ठ शलाका – अंगुली (मृदु होने पर)

- ☞ अंजन शलाका की ल. – 10 अंगुल
- ☞ अंजन प्रयोग – 2 बार (प्रातः व सायं)
- ☞ तीक्ष्ण अंजन का प्रयोग करने के बाद – धूमपान
- ☞ अंजन से अतिविरेक होने पर – शीतल आश्च्योतन/प्रत्यञ्जन
- ☞ अंजन से हीनयेाग होने पर – तीक्ष्ण अंजन/धूमपान
- ☞ स्वस्थ व्यक्ति, शुक्लगत रोग, कफज रोगों में तर्पण धारण – 500 मात्रा
- ☞ तर्पण के बाद कफ शांत करने के लिए – विरेचैनिक धूमपान
- ☞ पुटपाक निर्माण विधि के पत्र
- ● स्नेहन – एरण्ड पत्र
- ● लेखन – वट पत्र
- ● प्रसादन – उत्पल पत्र
- ☞ प्रसादन पुटपाक में धूमपान नहीं करना चाहिए।
- ☞ प्रसादन व पुटपाक में परिहार काल – 2 गुने दिनों तक
- ☞ यन्त्रों की संख्या – 101
- ☞ यन्त्रों के प्रकार – 6
  संदशं यन्त्र – 4
  ताल यन्त्र – 2
- ☞ सिंहमुख, व्याघ्रमुख, भुजङ्गमुख, मकरमुख आदि स्वस्तिकयन्त्र हैं।
- ☞ अर्शोयन्त्र – 3 प्रकार
- ☞ सुश्रुत के उपयन्त्र को अनुयन्त्र अ. स. ने कहा हैं।
- ☞ वाग्भट्ट ने काल, पाक, आंत्र, भय सुश्रुत से अधिक अनुयत्रं बताये हैं।
- ☞ यन्त्रों के कर्म – 24, यन्त्र दोष – 8
- ☞ शस्त्र कर्म – 12
- ☞ समस्त यंत्रों में प्रधान – कंकमुख, प्रधानतम यंत्र – हस्त
- ☞ शस्त्र के प्रकार – 26
- ☞ दंतलेखन व मण्डलाग्र शस्त्र – लेखन
- ☞ वृद्धिपत्र, उत्पलपत्र, अध्यर्धधार – पाटन कर्म
- ☞ वृद्धिपत्र, उत्पलपत्र, अध्यर्धधार, मुद्रिका – भेदन कर्म
- ☞ मण्डलाग्र, वृद्धिपत्र, उत्पल, अध्यर्धधार, मुद्रिका, कर्तरी, सर्पवक्र, करपत्र – छेदन कर्म
- ☞ कुशपत्र, आटामुख, अंतर्मुख, शरारिमुख, त्रिकूर्च – प्रच्छान कर्म।
- ☞ कुठारिका, ब्रीहिमुख, आरा और व्रीहिमुख, शलाका, वेतसपत्र, कर्णव्यधन – वेधन कर्म
- ☞ आरा व व्रीहिमुख – भेदन व छेदन
- ☞ सूची – सीवन कर्म
- ☞ सूचीकूर्च – कुट्टन कर्म
- ☞ खज – मंथन कर्म

☞ एषणी – एषण कर्म व भेदन कर्म
☞ बडिश – ग्रहण कर्म
☞ नख शस्त्र – उद्धरण, छेदन, भेदन, लेखन, प्रच्छान
☞ अंगुली शस्त्र – प्रदेशनी अंगुली के प्रथम पर्व प्रमाण
❖ ● कण्ठ रोगों में प्रयोग
❖ ● सुश्रुत ने इसे मुद्रिका शस्त्र कहा हैं।
☞ कर्तरी व सर्पवक्त्र का वर्णन सुश्रुत ने नहीं किया।
❖ सर्पवक्त्र – 1/2 अंगुल चौडा
❖ नासार्श, कर्णार्श व अर्बुद के विच्छेदनार्थ
☞ कर्तरी – त्रिभागपाशा
❖ व्रण, स्नायु, केश व सूत्र छेदनार्थ
☞ एषणी – 2 प्रकार
❖ एक एषण – 8 अंगुल लंबी – नाड़ी व्रण की गति कोथ व शल्य स्त्राव्र वाले व्रण में सुषिरता का अन्वेषण
❖ दूसरी एषणी – नाड़ी व भगन्दर भेदन में
☞ नख शस्त्र – 8 अंगुल लंबा – सूक्ष्म शल्य निकालने हेतु
☞ शस्त्र पायना – 3 प्रकार
1. क्षार पायना – शस्त्र शर, शल्य व अस्थि छेदन में प्रयुक्त
2. जल पायना – शस्त्र मांस–छेदन में प्रयुक्त
3. तैल पायना – शस्त्र पाटन, भेदन, शिराव्यधन, स्नायु–छेदन में प्रयुक्त
☞ छेदन शस्त्र की धार – मासुरी, लेखन शस्त्र की धार – अर्धमासूरी
☞ वेधन व विस्त्रावण शस्त्र की धार – कैशकी
☞ शस्त्र तेज करने की शिला – सुश्रलक्ष्ण शिला, माष/मुद्ग प्रभा समान शाल्मली फलक का प्रयोग
☞ शव परीक्षण का वर्णन यन्त्र शस्त्र विधि अध्याय में वर्णन किया गया हैं।
☞ जलौका की लंबाई का अधिकतम प्रमाण – 18 अंगुल
❖ मनुष्य में प्रयुक्त जलौका लंबाई – 4, 5, 6 अंगुल
☞ नर जलौका – अर्धचन्द्राकार
☞ मादा जालौका – अल्प शिर व बृहदधर
☞ बहुदोष व चिरोत्थितेषुचामयेषु – नर जलौका का प्रयोग
☞ सिराव्यधचिकित्सार्ध सम्पूर्ण वा चिकित्सम्। (अ. स. 36/4)
☞ सभी विकारों का आश्रय – रक्त
☞ रक्त – आहार के सारभूत रस नामक अविकृत धातु के प्राकृत तेज से रञ्जित होने पर बनता हैं।
❖ इन्द्रगोप, शशक शोणित, गुञ्जाफल, आलक्तक, पद्यम्, समान व सुवर्ण सादृश वर्ण
❖ वस्त्र पर लगने पर दाग छूटता नहीं हैं।
☞ रक्त की प्रकृति – सौम्याग्नेय
☞ रक्त, पित्त के समान संचय, प्रकोप, शमन

☞ यह मधुर, किञ्चित लवण, स्निग्ध, न शीत, न उष्ण, गुरू होता हैं।
☞ उपदंश एवं शुक्र व्यापद – मेढ्र स्थित सिरावेधन
☞ श्वास – कास – बाहु सिरा वेधन
☞ उदरशूल/प्रवाहिका – श्रोणी के चारो और 2 अंगुल पर सिरावेधन
☞ सिरावेधन से पहले – जागलं प्राणी मासंरस व यवागू
☞ यवागू आदि पान के बाद सिरावेधन की प्रतीक्षा – 1 मुहूर्त
☞ सम्यक् रक्त स्त्राव प्रमाण – 1 प्रस्थ
☞ शल्य की गति – 3 (उर्ध्व, अधो, तिर्यक)
☞ आकृति के अनुसार शल्य – 4 प्रकार
(वृत, द्विकोण, त्रिकोण, चतुष्कोण)
☞ मन्या, कण्ठ – तिर्यक छेदन
☞ अर्जीण होने कारण वातादि दोष का बलवान विभ्रम होता हैं जिससे शोफ, पीड़ा, दाह, आनाह उत्पन्न होते हैं।
☞ व्यम्ल (अर्धपक्व) व्रण के पाटिल (फटना) शोफ–पाचन औषधियों से चिकित्सा
❖ अविरोधी अन्नपान व उपनाह
☞ सीवन की 4 विधियाँ
1. गोष्फणिका 2. वेल्लितक
3. तुन्न सेवनी 4. ग्रंथि बन्धन
☞ कक्षा में स्थित व्रण – असीव्य व्रण
☞ कृकाटिका – सीव्य व्रण
☞ नासा, ओष्ठ, चिबुक, सक्थि – गोष्फणां बन्ध
☞ व्रण में परिहार काल– 6 या 7 मास
☞ व्रण में परिहार – अजीर्ण, व्यायाम, व्यवाय आदि
☞ नानौषधसमवायनिर्वृत्ते सर्वरसाधिष्ठानं – क्षार
☞ गर विष – क्षार अन्तः परिमार्जन
☞ क्षार निर्माण में वृक्ष को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर काटकर गिरायें।
☞ मृदु क्षार का रोगी व रोगबल के अनुसार 7 दिनों के अन्तर पर करना चाहिए।
☞ स्नेह से हुआ दाह – कष्टकारी, स्नेह, सूक्ष्ममार्गानुसारी – दाह भी सूक्ष्म स्त्रोतस में
☞ दुर्दग्ध चिकित्सा – पहले शीत उपक्रम – उष्ण उपक्रम – घृत लेप, परिषेक आदि शीतल उपक्रम
☞ अ. स. तन्त्र का हृदय – सूत्रस्थान
☞ अ. स. अन्तिम अध्याय नाम – अग्निकर्म (BHU 2006)
* चतुर्विध अञ्जन
लेखन अंजन – मधुर रस द्रव्य नहीं होता
शुक्र एवं अर्म रोगों में प्रयोग
रोपण अंजन – तिक्त और कषायं स्नेह साथ मिश्रण नेत्राभिष्यन्द

प्रसादन अंजन – मुधर, शीतल द्रव्य व स्नेह मिश्रण

सूर्योपराग, विधुत सम्पात्, भूत, पिशा आदि अद्भुत वस्तु के दर्शन से दृष्टि – स्वस्थवृत में

* रसो के अंजन के प्रकार – 6
* विधि भेद से अंजन – 2 (तीक्ष्ण एवं मृदु)
* अजंन पात्र :–

मधुर रस अजंन – स्वर्ण पात्र

अम्ल रस अजंन – रजत पात्र

लवण रस अजंन – मेषश्रृङ्ग

कटु रस अजंन – वैडूर्य मणि/पाषाण पात्र

तिक्त रस अजंन – कास्य पत्र

कषाय रस अजंन – ताम्र/ लौह पात्र

अध्याय - 1

प्र. 1. रागादिरोगान् का क्या अर्थ हैं। (अ. हृ. सू. 1/1)

(a) जो रोग सदैव मनुष्य के पीछे लगे रहते हैं। (b) मनुष्य को अक्रान्त करते रहते हैं।
(c) A & B (d) अत्याधिक मोह से उत्पन्न रोग।

प्र. 2. अ. ह. के सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय का नाम क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/1)

(a) वेदोत्पत्ति (b) आयुष्कामीय
(c) दीर्घजीवितीय (d) दिनचर्या

प्र. 3. धर्म, अर्थ तथा सुख का साधन क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/2)

(a) मोक्ष (b) आयु
(c) मन (d) आत्मा

प्र. 4. आयु की कामना करने वाले पुरूष के साधन क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/2)

(a) धर्म, अर्थ, काम (b) धर्म, अर्थ, मोक्ष
(c) धर्म, अर्थ, सुख (d) धर्म, काम, मोक्ष

प्र. 5. अष्टांगहृदयकार के अनुसार सर्वप्रथम आयुर्वेद का अविर्भाव कैसे हुआ। (अ. हृ. सू. 1/3)

(a) ब्राह्मणां हि याथाप्रोक्तमायुर्वेद प्रजापति
(b) ब्रह्मा स्मृत्वाऽऽयुषो वेदं प्रजापतिमजिग्रहत्।
(c) ब्रह्म प्रोवाच ततः प्रजापतिरधिजगे।
(d) सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकांन्मुनीन्।

प्र. 6. सहस्त्राक्षं ने आयुर्वेद का ज्ञान किससे प्राप्त किया था। (अ. हृ. सू. 1/3)

(a) अश्विनी कुमार (b) अत्रि पुत्र
(c) दक्ष (d) ब्रह्म जी

प्र. 7. आयुर्वेदातरण का क्रम क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/3)

(a) ब्रह्मा - दक्ष प्रजापति - अश्विनी कुमारो - इन्द्र - भारद्वाज आदि
(b) ब्रह्मा - अश्विनी कुमारो - दक्ष प्रजापति - इन्द्र - भारद्वाज आदि
(c) ब्रह्मा - अश्विनी कुमारों - इन्द्र - दक्ष प्रजापति - भारद्वाज आदि
(d) ब्रह्मा - दक्ष प्रजापति - अश्विनी कुमारों - भारद्वाज - इन्द्र

प्र. 8. अष्टांगहृदय ग्रंथ का स्वरूप कैसा हैं। (अ. हृ. सू. 1/4)

(a) ग्रंथों के अति विस्तृत व प्रकीर्ण स्वरूप में से सार भाग का संग्रह
(b) विषय या अति संक्षिप्त ना अति विस्तार पूर्वक वर्णन
(c) Both A & B

(d) विषयो का अति विस्तृत वर्णन

प्र. 9. अष्टांगहृदय के अनुसार अष्टाङ्ग आयुर्वेद में प्रथम स्थान किसका हैं। (अ. हृ. सू. 1/5)

(a) शल्य (b) काय

(c) बाल (d) उर्ध्वाङ्ग

प्र. 10. अष्टांगहृदय के अनुसार अष्टाङ्ग आयुर्वेद में बाल तंत्र का कौनसा स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 1/5)

(a) चौथा (b) तीसरा

(c) दूसरा (d) आंठवा

प्र. 11. कौन से आचार्य ने अष्टाङ्ग आयुर्वेद में ग्रह चिकित्सा का वर्णन किया हैं। (अ. हृ. सू. 1/5)

(a) चरक (b) वागभट्ट

(c) सुश्रुत (d) भेल

प्र. 12. अष्टांगहृदय के अनुसार अष्टांग आयुर्वेद में सातवां व आठवां स्थान किसका हैं। (अ. हृ. सू. 1/5)

(a) दंष्ट्रा–जरा (b) जरा–वृष चिकित्सा

(c) शल्य–उर्ध्वाङ्ग (d) ग्रह–जरा

प्र. 13. अष्टांगहृदय के अनुसार विष चिकित्सा का वर्णन अष्टाङ्ग आयुर्वेद ने किस नाम से किया हैं। (अ. हृ. सू. 1/5)

(a) विषगरविरोधिक चिकित्सा (b) अगदतंत्र

(c) दंष्ट्रा चिकित्सा (d) विष चिकित्सा

प्र. 14. अष्टांगहृदय ..... चिकित्सा प्रधान ग्रंथ हैं। (अ. ह. सू. 1/5)

(a) शल्य (b) काय

(c) Both A & B (d) उर्ध्वाङ्ग

प्र. 15. ..... चेति त्रयो दोषाः समासत। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 1/6)

(a) वात–पित्त कफ (b) सत्व रज तम

(c) वात पित्त रक्त (d) पित्त कफ रक्त

प्र. 16. विकृताविकृता देहं घ्नन्ति ते वर्तयन्ति च। इस सूत्र में वर्तन का क्या अर्थ हैं। (अ. हृ. सू. 1/6) (BHU PGET 2014)

(a) विनष्ट करना (b) नाश करना

(c) यापन करना (d) उत्क्लेशन करना

प्र. 17. दोष व स्थान के विषय में उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 1/7)

दोष	**स्थान**
अ. वात	**1. हृदय व नाभि मध्य**
ब. पित्त	**2. हृदय व नाभि के ऊपर**

स.	**कफ**	**3.**	**हृदय व नाभि के नीचे**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 1 (b) अ – 3, ब – 1, स – 2

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 2, ब – 1, स – 3

प्र. 18. वय के अनुसार दोष प्रधानता के उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 1/7)

अ.	**वात**	**1.**	**वृद्धावस्था**
ब.	**पित्त**	**2.**	**युवावस्था**
स.	**कफ**	**3.**	**बाल्यवस्था**

(a) अ – 2, ब – 1, स – 3 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 3, ब – 2, स – 1 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 19. दिन व रात्रि के प्रथम प्रहर तथा भोजन पाचन के अन्त में किस दोष की वृद्धि होती है क्रमशः। (अ. हृ. सू. 1/7)

(a) वात, कफ (b) कफ, वात

(c) पित्त, वात (d) वात, वात

प्र. 20. भोजन करने के तुरन्त बाद व दिन रात्रि के अन्तिम प्रहर में कौन-2 से दोष की वृद्धि होती हैं। (अ. हृ. सू. 1/7)

(a) कफ, वात (b) वात, कफ

(c) कफ, कफ (d) वात, वात

प्र. 21. उचित मिलान करें । (अ. हृ. सू. 1/8)

	दोष		**अग्नि**
अ.	**वात**	**1.**	**तीक्ष्णाग्नि**
ब.	**पित्त**	**2.**	**मन्दाग्नि**
स.	**कफ**	**3.**	**विषमाग्नि**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 2, ब – 1, स – 3 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 22. क्रूर कोष्ठ व मध्य कोष्ठ में किस-2 दोष की प्रधानता होती हैं। (अ. हृ. सू. 1/8) (NIA LEC 2010)

(a) वात, कफ (b) कफ, वात

(c) वात, पित्त (d) कफ, पित्त

प्र. 23. पित्त दोष की प्रधानता के कैसा कोष्ठ होता हैं। (अ. हृ. सू. 1/8)

(a) मध्यम (b) मृदु

(c) अति मृदु (d) क्रूर

प्र. 24. शारीरिक प्रकृति के विषय में निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 1/9-10)

(a) गर्भाधान के समय शुक्र व आर्तव में स्थित तीनों दोषों से मनुष्य की तीन प्रकृतियां बनती हैं।

(b) ये प्रकृतिया क्रमशः वात के कारण हीन, पित्त के कारण मध्यम व कफ के कारण उत्तम होती हैं।

(c) तीनो दोषों के समावस्था से निन्दित प्रकृति बनती हैं।

(d) तीनो दोषो के समावस्था से श्रेष्ठ प्रकृति होती हैं।

प्र. 25. निन्दित प्रकृतियां मानी गयी हैं (अ. हृ. सू. 1/10)

(a) सन्निपातज (b) द्वन्दज

(c) वातज (d) कफज

प्र. 26. सूक्ष्म गुण किस दोष का माना गया है। (अ. हृ. सू. 1/11)

(a) कफ (b) वात

(c) रक्त (d) पित्त

प्र. 27. विस्र्त्र व मृत्स्न गुण निम्न में से किस दोष के है क्रमशः (अ. हृ. सू. 1/11)

(a) पित्त, पित्त (b) कफ, पित्त

(c) पित्त, कफ (d) कफ, कफ

प्र. 28. सर गुण किस दोष का है। (अ. हृ. सू. 1/11) (RPSC 2011)

(a) वात (b) पित्त

(c) कफ (d) रक्त

प्र. 29. निम्न में से कौनसा गुण पित्त का नहीं है। (अ. हृ. सू. 1/11)

(a) द्रव (b) चल

(c) सस्नेह (d) तीक्ष्ण

प्र. 30. निम्न में से कौनसा गुण है जो वात व पित्त दोनों दोष में पाया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 1/11) (BHU 2007)

(a) सूक्ष्म (b) लघु

(c) उष्ण (d) चल

प्र. 31. निम्न में से कौनसा गुण कफ दोष में नहीं मिलता। (अ. हृ. सू. 1/11)

(a) श्लक्ष्ण (b) द्रव

(c) मन्द (d) स्निग्ध

प्र. 32. अ. ह. के अनुसार दूष्य कितने कहे गये हैं। (अ. हृ. सू. 1/13)

(a) 3 (b) 8

(c) 7 (d) 13

प्र. 33. निम्न में से कौनसा मल नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 1/13)

(a) रक्त (b) स्वेद

(c) शकृत (d) मूत्र

प्र. 34. अ. ह. के अनुसार रस कितने माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 1/14)

(a) 63 (b) 6

(c) 5 (d) 3

प्र. 35. सबसे अधिक बलवर्धक रस कौन सा है। (अ. ह्र. सू. 1/14)

(a) कषाय (b) अम्ल

(c) मधुर (d) लवण

प्र. 36. षड्रस किस पर आश्रित रहते हैं। (अ. ह्र. सू. 1/14)

(a) द्रव्य (b) गुण

(c) Both A & B (d) कर्म

प्र. 37. अम्ल, लवण, कटुरस कौनसे दोष को प्रकुपित करते हैं। (अ. ह्र. सू. 1/15)

(a) वात (b) पित्त

(c) कफ (d) Both A & B

प्र. 38. एक व्यक्ति को कफज व्याधि हैं उसे कौनसे रस वाले आहार द्रव्यों का प्रधान रूप से सेवन करना चाहिए। (अ. ह्र. सू. 1/15)

(a) कटु (b) तिक्त

(c) कषाय (d) All

प्र. 39. एक व्यक्ति अपने आहार में प्रधान रूप से कटु तिक्त कषाय द्रव्यों का सेवन करता हैं। उसे कौन से दोष की व्याधि अधिक होने की संभावना हैं। (अ. ह्र. सू. 1/15)

(a) पित्त (b) रक्त

(c) वात (d) कफ

प्र. 40. शमनं कोपनं स्वस्थहितं ..... इति त्रिधा। सूत्र को पूरा करें। (अ. ह्र. सू. 1/16)

(a) द्रव्य (b) गुण

(c) दोष (d) रस

प्र. 41. अ. ह. ने वीर्य कितने प्रकार का माना है। (अ. ह्र. सू. 1/16)

(a) 3 (b) 8

(c) 2 (d) 5

प्र. 42. अ. ह. ने विपाक के कितने भेद माने हैं। (अ. ह्र. सू. 1/17)

(a) 3 (b) 5

(c) 2 (d) 8

प्र. 43. अ. ह. के अनुसार विपाक हैं। (अ. ह्र. सू. 1/17)

(a) स्वादु (b) अम्ल

(c) कटु (d) All

प्र. 44. विपाक की परिभाषा सर्वप्रथम किस आचार्य ने दी। (अ. ह्र. सू. 1/17)

(a) चरक (b) वाग्भट्ट

(c) भेल (d) सुश्रुत

प्र. 45. गुर्वादि गुण कितने माने गये हैं। (अ. ह्र. सू. 1/18)

(a) 10 (b) 5

(c) 20 (d) 8

प्र. 46. निम्न में से गुर्वादि गुण नहीं है। (अ. हृ. सू. 1/18)

(a) सान्द्र (b) पर

(c) विशद (d) सूक्ष्म

प्र. 47. किसका हीन योग, मिथ्या योग व अतियोग रोगों का एक मात्र कारण हैं। (अ. हृ. सू. 1/19)

(a) काल (b) अर्थ

(c) कर्म (d) All

प्र. 48. रोगस्तु दोष वैषम्य, दोषसाम्यमारोगता ये सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/19)

(a) च. अ. हृ. सू. 9/4 (b) अ. हृ. सू. 1/19

(c) च. अ. हृ. सू. 16/5 (d) अ. हृ. सू. 3/4

प्र. 49. अ. ह. के अनुसार निम्न में से किसके 2 भेद माने हैं। (अ. हृ. सू. 1/20 - 21)

(a) रोग (b) रोग के अधिष्ठान

(c) मानसिक दोष (d) All

प्र. 50. दर्शन स्पर्शन प्रश्नैः इस सूत्र में किसकी परीक्षा का वर्णन हैं। (अ. हृ. सू. 1/21)

(a) रोग (b) रोगी

(c) Both A & B (d) दोष

प्र. 51. निदान प्रागूप लक्षणोपश्याप्तिभिः ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 1/22)

(a) रोगी परीक्षा (b) दोष परीक्षा

(c) रोग परीक्षा (d) देश परीक्षा

प्र. 52. उचित मिलान करे (देश व दोष) (अ. हृ. सू. 1/23)

देश	**दोष**
अ. जागंल	**1. त्रिदोष साम्य**
ब. आनूप	**2. कफोल्वण**
स. साधारण	**3. वातभूयिष्ठ**

(a) अ- 1, ब - 3, स - 2 (b) अ - 3, ब - 2, स - 1

(c) अ - 3, ब - 1, स - 2 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3

प्र. 53. अ. ह. के अनुसार काल के कितने भेद माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 1/24)

(a) 3 (b) 2

(c) 1 (d) 7

प्र. 54. किसके अनुसार भेषज का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 1/24)

(a) दोष (b) व्याधि

(c) काल (d) रोगी

प्र. 55. शोधन व शमन किसके भेद माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 1/24)

(a) औषध (b) द्रव्य

(c) रस (d) व्याधि

प्र. 56. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 1/25) (BHU 2007) (MPMO 2014)

	शमन औषध		दोष
अ.	**घृत**	**1.**	**कफ**
ब.	**तैल**	**2.**	**पित्त**
स.	**मधु**	**3.**	**वात**

(a) अ – 2, ब – 1, स – 3 (b) अ – 2, ब – 3, स – 1
(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 3, ब – 2, स – 1

प्र. 57. कफ दोष के लिए श्रेष्ठ शोधन औषध क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/25)

(a) विरेचन (b) वस्ति
(c) वमन (d) रक्तमोक्षण

प्र. 58. मानस दोषो की परम् औषध क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/26) (NIA LEC 2020)

(a) सुखावह क्रिया (b) धार्मिक कार्य
(c) धीधैर्यात्मादि विज्ञान (d) शास्त्र ज्ञान

प्र. 59. चिकित्सा के चतुष्पाद का वर्णन कहाँ किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 1/27)

(a) अ. हृ. सू. 1 (b) च. स. सू. 9
(c) Both a & b (d) अ. हृ. सू. 27

प्र. 60. चिकित्सा के चतुष्पाद के वर्णन में प्रत्येक पाद के कितने गुण बताए गये है। (अ. हृ. सू. 1/27)

(a) 2 (b) 4
(c) 16 (d) 8

प्र. 61. शुचि व दक्ष गुण किसका हैं। (अ. हृ. सू. 1/27)

(a) औषध (b) भिषक्
(c) परिचारक (d) B & C

प्र. 62. तीर्थात्तशास्त्रार्थो वैद्य के गुण माना गया हैं। इसका अर्थ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 1/27)

(a) जिस वैद्य ने तीर्थ किया हो
(b) जिस वैद्य ने तीर्थ पर शास्त्र अध्ययन किया हो
(c) जिस वैद्य ने तीर्थ अर्थात् गुरू से शास्त्रार्थ ग्रहण किया हो
(d) All

प्र. 63. निम्न में से वैघ का गुण है। (अ. हृ. सू. 1/27)

(a) दक्ष (b) दृष्टकर्मा
(c) Both A & B (d) बुद्धिमान

प्र. 64. बहुकल्पं बहुगुणं सम्पन्नं योग्य औषधम् के सदंर्भ में सत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 1/28)

(a) बहुकल्पं का अर्थ है – बहुत सी कल्पना के योग्य हो
(b) सम्पन्न का अर्थ है – रोग नाश की क्षमता से युक्त हो
(c) योग्य का अर्थ है – रोगी, देश, काल के अनुरूप हो

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 65. परिचारक के गुण में ''अनुरक्त'' का क्या अर्थ हैं। (अ. हृ. सू. 1/28)

(a) रोगी से प्रेम करने वाला हो (b) रोगी से द्वेष करने वाला हो

(c) रोगी को खुश रखता हो (d) अपने कर्मों में कुशल हो

प्र. 66. निम्न में से कौनसा गुण परिचारक का हैं। (अ. हृ. सू. 1/28)

(a) अभीरूत्व (b) बुद्धिमान

(c) ज्ञापक (d) दृष्टकर्मा

प्र. 67. निम्न में से कौनसा गुण रोगी का है। (अ. हृ. सू. 1/29) (JAM 2005)

(a) भिषग्वश (b) ज्ञापक

(c) सत्ववान (d) All

प्र. 68. रोगी के गुणों में आढ़यो रोगी का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं। (अ. हृ. सू. 1/29)

(a) वाग्भट्ट (b) चरक

(c) सुश्रुत (d) भेल

प्र. 69. अमर्मगोऽल्पहेतु कौन सी व्याधि के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 1/30)

(a) कृच्छ्र साध्य (b) याप्य

(c) सुख साध्य (d) अनुपक्रम

प्र. 70. सुख साध्य व्याधि के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 1/30-31)

(a) अतुल्य दूष्य देश प्रकृति (b) पाद सम्पदि

(c) ग्रहेष्वनुगुणेऽष्वेकदोष मार्ग (d) All

प्र. 71. सुख साध्य रोग किसमें माने गये है। (अ. हृ. सू. 1/30)

(a) पुरूष (b) बाल

(c) स्त्रियों (d) All

प्र. 72. शस्त्रादि साधनः ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 1/31) (PGET 2019)

(a) सुख साध्य (b) कृच्छ्र साध्य

(c) याप्य (d) अनुपक्रम

प्र. 73. एक व्यक्ति की आयु शेष है व पथ्य आदि के अभ्यास से उसकी व्याधि के लक्षण कम दिखाई देते हैं। उसे किस प्रकार की व्याधि हैं। (अ. हृ. सू. 1/32)

(a) अनुपक्रम (b) याप्य

(c) Both A & B (d) कृच्छ्र साध्य

प्र. 74. औतसुक्यमोहारतिकृद् दृष्टरिष्टोऽक्षनाशनः। ये सूत्र किस व्याधि के संर्दभ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 1/33)

(a) अनुपक्रम (b) याप्य

(c) Both A & B (d) कृच्छ्र साध्य

प्र. 75. त्याज्य रोगी के संदर्भ में अविधेय का अर्थ है। (अ. हृ. सू. 1/34) (NIA LEC 2020)

(a) जो राजा से द्वेष करता हो।
(b) जो वैद्य की आज्ञा का अनुसरण नहीं करता।
(c) वैद्य न होते हुए भी स्वयं को वैघ मानता हो।
(d) जो स्वयं से द्वेष करता हो।

प्र. 76. निम्न में से कौन से रोगी त्याज्य होते हैं। (अ. हृ. सू. 1/34)

(a) वैद्यमानी (b) भिषग्भूपैर्दिष्टं
(c) व्यग्र (d) All

प्र. 77. अ. ह. ने अध्यायों की विषय सूची का वर्णन कहाँ किया हैं। (अ. हृ. सू. 1/35)

(a) अ. हृ. सू. 1 (b) अ. हृ. सू. 3
(c) अ. हृ. सू. 30 (d) अ. हृ. सू. 2

प्र. 78. उचित मिलन करें। (स्थान व अध्याय) (अ. हृ. सू. 1/36-48)

अ.	**सूत्रस्थान**	**1.**	**40**
ब.	**शारीर स्थान**	**2.**	**6**
स.	**निदान स्थान**	**3.**	**30**
द.	**चिकित्सा स्थान**	**4.**	**16**
न.	**उत्तर स्थान**	**5.**	**24 (MH PGET 2010)**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4, न - 5
(b) अ - 3, ब - 2, स - 4, द - 5, न - 1
(c) अ - 3, ब - 2, स- 5, द - 4, न - 1
(d) अ - 1, ब - 2, स - 5, द - 6, न - 3

प्र. 79. अ. ह. के कल्पसिद्धि स्थान में कितने अध्याय हैं। (अ. हृ. सू. 1/44)

(a) 16 (b) 6
(c) 8 (d) 30

प्र. 80. अ. ह. में कितने स्थान व कितने अध्याय है। क्रमशः (अ. हृ. सू. 1/48)

(a) 8, 120 (b) 120, 6
(c) 6, 120 (d) 6, 124

प्र. 81. आचार्य वागभट्ट ने दूष्य शब्द से किसका ज्ञान किया हैं। (अ. हृ. सू. 1/13)

(a) रक्त (b) दोष
(c) धातु (d) मल

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(b)	3.	(b)	4.	(c)	5.	(b)	6.	(a)
7.	(a)	8.	(c)	9.	(b)	10.	(c)	11.	(b)	12.	(b)
13.	(c)	14.	(a)	15.	(a)	16.	(c)	17.	(b)	18.	(b)

19.	(b)	20.	(a)	21.	(a)	22.	(a)	23.	(b)	24.	(c)
25.	(b)	26.	(b)	27.	(c)	28.	(b)	29.	(b)	30.	(b)
31.	(b)	32.	(c)	33.	(a)	34.	(b)	35.	(c)	36.	(a)
37.	(b)	38.	(d)	39.	(c)	40.	(a)	41.	(c)	42.	(a)
43.	(d)	44.	(b)	45.	(c)	46.	(b)	47.	(d)	48.	(b)
49.	(d)	50.	(b)	51.	(c)	52.	(b)	53.	(b)	54.	(c)
55.	(a)	56.	(b)	57.	(c)	58.	(c)	59.	(c)	60.	(b)
61.	(d)	62.	(c)	63.	(c)	64.	(d)	65.	(a)	66.	(b)
67.	(d)	68.	(a)	69.	(c)	70.	(a)	71.	(d)	72.	(b)
73.	(b)	74.	(a)	75.	(b)	76.	(d)	77.	(a)	78.	(b)
79.	(b)	80.	(c)	81.	(c)						

अध्याय - 2

प्र. 1. अ. ह. सूत्रस्थान द्वितीय अध्याय कौन सा है। (अ. ह. सू. 2/1)

(a) दिनचर्याध्याय (b) ऋतुचर्याध्याय
(c) रोगानुत्पादनीयाध्याय (d) द्रवद्रव्याविज्ञानीयाध्याय

प्र. 2. आयु की रक्षा के लिए क्या करना चाहिए। (अ. ह. सू 2/1) (TPGET 2009)

(a) ब्राह्मो मुहूर्तं निद्रास्वस्थो।
(b) ब्राह्मो मुहूर्तं उत्तिष्ठेत्स्वस्थो
(c) सौवीरमञ्जनं नित्यं हितमक्ष्वोस्तो भजेत।
(d) शिर, श्रवणपादेषु तं विशेषत शीलयेत्।

प्र. 3. ब्रह्म मुहूर्त किसे माना गया हैं। (अ. ह. सू. 2/1)

(a) सूर्योदय से 1 मुहुर्त पूर्व (b) सूर्योदय से 30 मिनट पूर्व
(c) सूर्योदय से 2 मुहुर्त पूर्व (d) सूर्योदय का वक्त

प्र. 4. दन्तधावन कितनी बार करनी चाहिए। (अ. ह. सू. 2/1) (NIA PG 2013) (BHU 2006)

(a) 3 (b) 2
(c) 4 (d) 1

प्र. 5. दन्तपवनं के लिए प्रयुक्त रस कौन से हैं। (अ. ह. सू. 2/2)

(a) कषाय (b) कटु
(c) तिक्त (d) All

प्र. 6. दन्तपवनं की लम्बाई कितनी हैं। (अ. ह. सू. 2/3) (GPSC LEC 2018)

(a) 10 अंगुल (b) 12 अंगुल
(c) 8 अंगुल (d) 16 अंगुल

प्र. 7. दन्तपवनं हेतु द्रव्य कौन से है। (अ. ह. सू. 2/2) (BHU 2007)

(a) अर्क (b) न्यग्रोध
(c) खदिर (d) All

प्र. 8. ..... आसनं दन्तधावनं पादुके त्यजेत्। सूत्र को पूरा करें। (अ. ह. सू. 2/3)

(a) अर्जुन (b) पलाश
(c) करञ्ज (d) खदिर

प्र. 9. प्रतिदिन नेत्र के लिए हितकारी अञ्जन कौन सा हैं। (अ. ह. सू. 2/4)

(a) सौवीरमञ्जन (b) रसाञ्जन
(c) पुष्पाञ्जन (d) नीलाञ्जन

प्र. 10. दन्तधावन का निषेध किसमें है। (अ. हृ. सू. 2/4)

(a) अजीर्ण (b) वमथु

(c) श्वास-कास (d) All

प्र. 11. दन्तधावन का निषेध किसमें नहीं है। (अ. हृ. सू. 2/4)

(a) ज्वर (b) स्वस्थ

(c) तृष्णा (d) आस्यपाक

प्र. 12. नेत्र से कफ से स्त्रावण के लिए रसाञ्जन का प्रयोग कितने दिन में करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 2/5)

(a) 5 (b) 7

(c) 10 (d) 6

प्र. 13. चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषात् ..... भयम्। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 2/5)

(a) वातम् (b) अञ्जनं

(c) श्लेष्मतो (d) आलोचक

प्र. 14. अञ्जन के पश्चात किसका सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 2/6)

(a) नस्य (b) गण्डूष

(c) धूमपान-ताम्बूल (d) All

प्र. 15. ताम्बूल सेवन निषेध किसमें हैं। (अ. हृ. सू. 2/7)

(a) क्षत (b) चक्षुरोग

(c) मद-मूर्च्छा (d) All

प्र. 16. ..... आचरेन्नित्यं स जराश्रमवातहा दृष्टिप्रसादपुष्ट्यायुः स्वप्नसुत्वकत्वदाढर्यकृत। इस सूत्र किसके लिए आया है। (अ. हृ. सू. 2/8)

(a) व्यायाम (b) अभ्यङ्ग

(c) शरीर मर्दन (d) उदवर्तन

प्र. 17. विशेष रूप से कहां का अभ्यंग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 2/8) (UPPSC MO 2015)

(a) शिर (b) कर्ण

(c) पाद (d) All

प्र. 18. अभ्यङ्ग का निषेध किन में किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 2/9)

(a) कफज विकार (b) संशोधन किये हुए

(c) अजीर्ण (d) All

प्र. 19. व्यायाम करने से क्या लाभ नहीं होता है। (अ. हृ. सू. 2/10)

(a) कफमेदोविलायनम् (b) लाघवं कर्मसामर्थ्यं

(c) दीप्तोऽग्निर्मेदसः क्षय (d) विभक्तघनगात्रत्वं

प्र. 20. व्यायाम का निषेध किस व्यक्ति में नहीं किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 2/11)

(a) वात-पित्तज रोगी (b) बाल-वृद्ध

(c) मेदज रोगी (d) अजीर्ण

प्र. 21. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 2/11-12-13)

(a) बलवान व स्निग्ध भोजी व्यक्ति को शीतलकाल व बसन्त ऋतु में अर्द्धशक्ति व्यायाम करना चाहिए

(b) शीत व बसन्त के अलावा अन्य ऋतुओं में अर्द्धशक्ति से अधिक व्यायाम करना चाहिए।

(c) व्यायाम के बाद समन्तत: सुखकारी अनुलोम मर्दन करना चाहिए।

(d) अतिव्यायाम से तृष्णा, श्रम, क्लम, क्षय, ज्वर, छर्दि, आदि व्याधियां हो जाती हैं।

प्र. 22. अति व्यायाम से कौन सी व्याधि उत्पन्न होती हैं। (अ. हृ. सू. 2/13) (NIA PG 2015)

(a) प्रतमक (b) रक्तपित्त

(c) कास (d) All

प्र. 23. निम्न में से अति साहसिक कार्यों का निषेध किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 2/14) (TRIVENDRUMPGET 2005)

(a) अध्व (b) हास्य-भाष्य

(c) जागरण (d) All

प्र. 24. निम्न से उद्वर्तन का लाभ नहीं है। (अ. हृ. सू. 2/15) (HARIDWAR PG 2013) & (LULKNOW PG & 2016) (BHU MD 2017)

(a) कफकरं मेदस: प्रविलायनम् (b) कफहरं मेदस: प्रविलायनम्

(c) स्थिरीकरणमङ्गना (d) त्वक् प्रसादकरमं

प्र. 25. स्नान के लाभ निम्न में से हैं। (अ. हृ. सू. 2/16)

(a) वृष्यंमायुष्य दीपन (b) ऊर्जाबलप्रदम्

(c) कण्डू मल श्रम स्वेद तृड़दाहपाप्मजित (d) All

प्र. 26. एक व्यक्ति उष्ण जल से अध: काय स्नान करता हैं। उसे उत्तमाङ्ग में किस प्रकार के जल से स्नान करना चाहिए की उसके चक्षु व केश के बल का नाश नहीं हो। (अ. हृ. सू. 2/18) (TPGET 2009)

(a) उष्ण जल (b) शीतल जल

(c) शीतोष्ण जल (d) अति शीतल जल

प्र. 27. ''आध्मान पीनसाजीर्णभुक्तवत्सु'' च द्वारा निषिद्ध हैं। (अ. हृ. सू. 2/19)

(a) ताम्बूल सेवन (b) अञ्जन

(c) स्नान (d) व्यायाम

प्र. 28. स्नान निम्न में से किस रोग में नहीं करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 2/18)

(a) अर्दित (b) नेत्र आस्य कर्ण रोग

(c) अतिसार (d) All

प्र. 29. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 2/19-20)

(a) पूर्व में किये गये भोजन के पाक होने पर मात्रापूर्वक (मित) हितकर आहार का सेवन करना

चाहिए।

(b) वेगों कों बलपूर्वक उदीर्ण करना चाहिए

(c) यदि वेग उदीर्ण हो तो अन्य कार्य में नहीं लगना चाहिए

(d) कल्याण चाहने वाले मित्रों का भक्तिपूर्वक सेवन करना चाहिए इतर मित्रो का दूर से त्याग करना चाहिए।

प्र. 30. सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वा प्रवृतयः। सुखं च न विना धर्मात्तस्ताद्धर्मपरो भवेतः। यह सूत्र कहां का संदर्भ है। (अ. ह्र. सू. 2/20)

(a) अ. ह्र. सू. 16 (b) अ. ह्र. सू. 10

(c) अ. ह्र. सू. 2 (d) अ. ह्र. सू. 3

प्र. 31. अ. ह. ने कितने पापकर्मों का वर्णन किया हैं। (अ. ह. सू. 2/21)

(a) 16 (b) 10

(c) 8 (d) 12

प्र. 32. निम्न में से कौनसा कायिक पाप कर्म नहीं है। (अ. ह्र. सू. 2/21)

(a) पैशुन्य (b) हिंसा

(c) स्तेय (d) अन्यथा काम

प्र. 33. निम्न में से कौनसा वाचिक कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 2/22)

(a) पैशुन्य (b) परूष वाक्य व अनृत

(c) सम्भिन्न आलाप (d) All

प्र. 34. निम्न में से कौनसा मानसिक पाप कर्म नहीं हैं। (अ. ह. के अनुसार) (अ. ह्र. सू. 2/22)

(a) क्रोध (b) व्यापाद्म

(c) अभिध्या (d) दृग्विपर्यय

प्र. 35. निम्न में से पापकर्म व उनके अर्थ का उचित मिलान करें। (अ. ह्र. सू. 2/21-22)

अ.	**स्तेय**	**1.**	**नास्तिक्य बुद्धि**
ब.	**पैशुन्य**	**2.**	**दूसरे के अनिष्ट हेतु चिंता करना**
स.	**अनृत**	**3.**	**किसी की हत्या करने की योजना**
द.	**व्यापाद्म**	**4.**	**चोरी करना**
न.	**अभिध्या**	**5.**	**चुगली करना**
र.	**दृग्विपयर्य**	**6.**	**झूठ बोलना**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2, द - 4, न - 5 , र - 6

(b) अ - 5, ब - 4, स - 6, द - 3, न - 2, र - 1

(c) अ - 4, ब - 5, स - 6, द - 3, न - 2, र - 1

(d) अ - 4, ब - 5, स - 3, द - 6, न - 1, र - 2

प्र. 36. काले हितं मितं ब्रूयादविसंवादि पेशलम्। इस सूत्र में पेशलम् का क्या अर्थ हैं।

(अ. ह्र. सू. 2/25)

(a) समान भाव रखना (b) मधुर बोलना

(c) युक्तियुक्त बोलना (d) विरोध रहित बोलना

प्र. 37. त्रिवर्ग क्या हैं। (अ. ह. सू. 2/29)

(a) हेतू, लिंग, औषध (b) वात पित्त कफ

(c) धर्म, अर्थ, काम (d) सत्व रज तम

प्र. 38. अनुयायात्प्रतिपदं सर्वधर्मेषु मध्यमाम्। इस सूत्र में मध्यम मार्ग का क्या अर्थ हैं। (अ. ह्र. सू. 2/30)

(a) मन (b) बीच का मार्ग

(c) बुद्धि (d) मोह

प्र. 39. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. ह्र. सू. 2/30-34-35-39)

(a) सब धर्मों से मध्यम मार्ग का अनुसरण करना चाहिए

(b) नदी को बाहुबल से तैर कर पार करना चाहिए

(c) मुख को बिना संवृत किये क्षूत्, हास्य व जृम्भा नहीं लेना चाहिए

(d) सूर्य को एकटक नहीं देखना चाहिए

प्र. 40. आचार्यः सर्वचेष्टासु लोक एवं हि धीमतः। इस सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. ह्र. सू. 2/45)

(a) अ. ह्र. सू. 2 (b) अ. ह्र. सू. 3

(c) च. सू.10 (d) च. स. वि. 8

प्र. 41. सद्व्रत के संदर्भ में सत्य वचन है। (अ. ह्र. सू. 2/46)

(a) आर्द्रसन्तानता (b) कायवाक्चेतसां दम

(c) स्वार्थ बुद्धि परार्थेषु (d) All

उत्तरमाला

1.	(a)	2.	(b)	3.	(c)	4.	(b)	5.	(d)	6.	(b)
7.	(d)	8.	(b)	9.	(a)	10.	(d)	11.	(b)	12.	(b)
13.	(c)	14.	(d)	15.	(d)	16.	(b)	17.	(d)	18.	(d)
19.	(a)	20.	(c)	21.	(b)	22.	(d)	23.	(d)	24.	(a)
25.	(d)	26.	(b)	27.	(c)	28.	(d)	29.	(b)	30.	(c)
31.	(b)	32.	(a)	33.	(d)	34.	(a)	35.	(c)	36.	(b)
37.	(c)	38.	(c)	39.	(b)	40.	(a)	41.	(d)		

अध्याय - 3

प्र. 1. अष्टांगहृदयकार ने ऋतुचर्या का वर्णन किस अध्याय नाम से किया हैं। (अ. हृ. सू. 3/1)

(a) तस्याशितीयाध्याय (b) ऋतुचर्याध्याय

(c) मात्राशितीयाध्याय (d) None

प्र. 2. निम्न का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 3/1)

ऋतु	**मास**
अ. शिशिर	**1. चैत्र - वैशाख**
ब. बसन्त	**2. अश्विन - कार्तिक**
स. ग्रीष्म	**3. माद्य फाल्गुन**
द. वर्षा	**4. श्रावण - भाद्रपद**
न. शरद	**5. ज्येष्ठ - आषाढ**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 5, द - 4, न - 2

(b) अ - 3, ब - 5, स - 1, द - 4, न - 2

(c) अ - 5, ब - 3, स - 5, द - 4, न - 2

(d) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4, न - 5

प्र. 3. हेमन्त ऋतु में वाग्भट्ट के मतानुसार कौनसे मास माने गये हैं- (अ. हृ. सू. 3/1)

(a) चैत्र - वैशाख (b) मार्गशीर्ष - पौष

(c) अश्विन - कार्तिक (d) माद्य - फाल्गुन

प्र. 4. उत्तरायण या आदान काल की निम्न में से कौन सी ऋतु नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 3/2)

(a) वर्षा (b) शिशिर

(c) वसन्त (d) ग्रीष्म

प्र. 5. निम्न में से असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 3/2, 3, 4, 5, 6)

(a) आदान काल में ऋतुओं के मार्ग के स्वभाव के कारण सूर्य तथा वायु अत्यन्त तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष होते हैं जिससे वे पृथ्वी के सौम्याशं का क्षपण करते हैं।

(b) आदानकाल में सूर्य प्रतिदिन मनुष्यों को बल प्रदान करता हैं।

(c) दक्षिणायन या विसर्गकाल में बल का विसर्ग होता हैं।

(d) दक्षिणायन में सोम बलवान व सूर्य का तेज कम होता हैं। बादल, वृष्टि, शीतवायु से भूमि का ताप शान्त होता हैं।

प्र. 6. दक्षिणायन की ऋतुएं हैं (अ. हृ. सू. 3/4)

(a) वर्षा (b) शरद

(c) हेमन्त (d) All

प्र. 7. आदानकाल की ऋतुओं में क्रमशः किन रसों की वृद्धि होती हैं। (अ. हृ. सू. 3/3)

(a) कषाय तिक्त कटु (b) कटु तिक्त कषाय

(c) तिक्त कषाय कटु (d) तिक्त कटु कषाय

प्र. 8. विसर्गकाल में क्रमशः किन रसों की वृद्धि होती हैं। (अ. हृ. सू. 3/6)

(a) अम्ल लवण मधुर (b) लवण अम्ल मधुर

(c) मधुर अम्ल लवण (d) अम्ल मधुर लवण

प्र. 9. किन दो ऋतुओं में श्रेष्ठ बल रहता हैं। (अ. हृ. सू. 3/6)

(a) हेमन्त-शिशिर (b) शिशिर-बसन्त

(c) हेमन्त-वसन्त (d) वसन्त-वर्षा

प्र. 10. शरद व वसन्त ऋतु में कैसा बल रहता हैं। (अ. हृ. सू. 3/6)

(a) श्रेष्ठ (b) मध्यम

(c) हीन (d) उपरोक्त सभी

प्र. 11. हेमन्त ऋतु में जठराग्नि वृद्धि में क्या मुख्य कारण हैं। (अ. हृ. सू. 3/7)

(a) बाह्य वातावरण की शीतता (b) अन्तः शरीर शीतता

(c) कोष्ठ की शीतता (d) उपरोक्त सभी

प्र. 12. हेमन्त ऋतु में कौन से रस का मुख्यतः सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/8) (UKPG 2014)

(a) स्वादु (b) अम्ल

(c) लवण (d) सभी

प्र. 13. हेमन्त ऋतु में बढ़े हुए अग्नि बल को देखते हुए किस प्रकार का आहार लेना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/ 8)

(a) स्वभावतः गुरू गुण वाले द्रव्य

(b) स्वभावतः लघु गुण वाले द्रव्य अधिक परिमाण में

(c) स्वभावतः गुरू गुण वाले द्रव्य अधिक परिमाण में

(d) अधिक परिमाण में द्रव्य

प्र. 14. हेमन्त ऋतु कौन सा विहार करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/10)

(a) नियुद्धं कुशलै (b) युक्तियुक्त पादाघात

(c) विमर्दनम् (d) All

प्र. 15. मूर्ध्नि तैल का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/10)

(a) वसन्त (b) हेमन्त

(c) शरद (d) वर्षा

प्र. 16. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3/11-12-13)

(a) हेमन्त ऋतु में सदर्प कुकुंम का शरीर पर लेप करके अगुरू से धूपन करना चाहिए

(b) हेमन्त ऋतु में स्निग्ध मांसरस और मेदुर मांस भोजन में ले व गुड़ से बनी मद्य, सुरामण्ड या सुरा का पान करें।

(c) हेमन्त ऋतु शरीर शोधन के लिए शीतोदक का प्रयोग करें।
(d) हेमन्त ऋतु में गोधूम, पिष्ट, उड़द, इक्षुरस, नवीन अन्न, वसा तैल का प्रयोग करें।

प्र. 17. दक्षिणायन की किस ऋतु में हेमन्त ऋतु से अधिक शीत व रूक्षता होती हैं। (अ. हृ. सू. 3/17)

(a) शिशिर (b) वसन्त
(c) ग्रीष्म (d) वर्षा

प्र. 18. वसन्त ऋतु के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3) (3/18, 19, 20)

(a) शिशिर ऋतु में संचित कफ बसन्त ऋतु में सूर्य की किरणों से सन्तप्त होकर अग्नि को मन्द करता हुआ रोगों को उत्पन्न करता हैं।
(b) वसन्त ऋतु में गुरू, स्निग्ध, द्रव आहार का सेवन करना चाहिए।
(c) वसन्त ऋतु में लघु, रूक्ष भोजन, व्यायाम, उद्वर्तन और आघात से प्रकुपित कफ को जीतना चाहिए।
(d) वसन्त ऋतु में पुराण यव, गोधूम, क्षौद्र आदि का प्रयोग करना चाहिए।

प्र. 19. वसन्त ऋतु में कफज विकारों की क्या चिकित्सा करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/19)

(a) तीक्ष्ण वमन (b) तीक्ष्ण नस्य
(c) Both A & B (d) विरेचन

प्र. 20. वसन्त ऋतु में किस प्रकार के अंबु का सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/22)

(a) श्रृङ्गबेराम्बु (b) साराम्बु
(c) मध्वम्बु व जलदाम्बु (d) All

प्र. 21. वसन्त ऋतु में मध्याह्न में किस दिशा की वायु से शीतल उपवन में बैठना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/23)

(a) पश्चिम (b) दक्षिण
(c) पूर्व (d) उत्तर

प्र. 22. गुरू शीत दिवास्वप्नस्निग्धाम्लमधुरांस्त्यजेत्। ये सूत्र किस ऋतु के संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 3/25)

(a) वर्षा (b) शरद
(c) वसन्त (d) हेमन्त

प्र. 23. ग्रीष्म ऋतु के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3/26, 27, 28)

(a) ग्रीष्म ऋतु में सूर्य अपनी तीक्ष्ण किरणों से संसार के जलीयांश का शोषण कर लेता है जिससे जलीयांश कफ धातु का क्षय होने लगता है। परिणाम स्वरूप वात वृद्धि होती हैं।
(b) ग्रीष्म ऋतु में मधुर अन्न का बहुल मात्रा में सेवन करना चाहिए।
(c) ग्रीष्म ऋतु में लघु स्निग्ध, शीतल व द्रव पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए
(d) इस ऋतु में मद्य पान नहीं करना चाहिए या पीना हैं तो अल्प मात्रा में या बहुत अधिक पानी मिलाकर पीये।

प्र. 24. पटुकटुअम्ल व्यायामार्क आदि का सेवन किस ऋतु में निषेध किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 3/27)(ESI MO EXAM 2008)

(a) वर्षा (b) ग्रीष्म
(c) शिशिर (d) बसन्त

प्र. 25. ग्रीष्म ऋतु में अति मद्यपान करने से क्या हानि होती हैं। (अ. हृ. सू. 3/29)

(a) शोष-शैथिल्य (b) दाह
(c) मोह (d) All

प्र. 26. ग्रीष्म ऋतु में किसके दुग्ध का पान करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/32)

(a) गो (b) माहिष
(c) अजा (d) All

प्र. 27. निशाकरकराकीर्णे सौधपृष्ठे निशाचु च आसना। ये सूत्र किस ऋतु के संदर्भ में हैं। (अ. हृ. सू. 3/27)

(a) शरद (b) वसन्त
(c) ग्रीष्म (d) वर्षा

प्र. 28. शर्करामिश्रित सत्तू का लेह की तरह सेवन किस ऋतु में करते हैं। (अ. हृ. सू. 3/28)

(a) वर्षा (b) ग्रीष्म
(c) वसन्त (d) हेमन्त

प्र. 29. वर्षा ऋतु के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3/42-43-44-45)

(a) आदानकाल प्रभाव से दुर्बल शरीर के प्राणियों की पहले से मन्द हुई अग्नि इस ऋतु में वातादि दोषों के दूषित होने से और मन्द हो जाती हैं।
(b) इस ऋतु में अम्बुलम्बाम्बुदेऽम्बरे, सहसा तुषार युक्त शीतल वायु, भूवाष्प से, जल के अम्ल विपाकी व मलिन होने से वातादि दोष एक दूसरे को प्रकुपित करते हैं।
(c) इस ऋतु में अग्नि को मन्द करने वाली वस्तुओं का सेवन करना चाहिए
(d) इस ऋतु में पुराण धान्य, संस्कारित मास, जांगल पशुओं का मांस, मुद्ग यूष आदि का सेवन करना चाहिए।

प्र. 30. संशोधन करवाकर आस्थापन वस्ति लेने का विधान किस ऋतु में हैं। (अ. हृ. सू. 3/45)

(a) वर्षा (b) बसन्त
(c) हेमन्त (d) ग्रीष्म

प्र. 31. वर्षा ऋतु में किस प्रकार का मस्तु का पान करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/46) (PGET 2019)

(a) सौवर्चल लवण मिश्रित मस्तु (b) पंचकोल मिश्रित मस्तु
(c) Both A & B (d) धान्याम्ल मिश्रित मस्तु

प्र. 32. वर्षा ऋतु में कौन से जल का सेवन नहीं करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/46)

(a) दिव्य जल (b) नदी का जल
(c) कौप जल (d) श्रृत जल

प्र. 33. वर्षा ऋतु में दुर्दिन में किस प्रकार का भोजन लेना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/46)

(a) अम्ल, लवण स्नेह युक्त (b) शुष्क आहार
(c) क्षौद्र व लघु आहार (d) All

प्र. 34. वर्षा ऋतु में कैसा विहार होना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/47)

(a) अपादचारी (b) सततं धूपिताम्बर

(c) हर्म्यपृष्ठे वसेद्वाष्प शीत शीकर वर्जिते (d) All

प्र. 35. नदी जलोदमन्थाहः स्वप्नायासातपांस्त्यजेत। ये सूत्र किस ऋतु के संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 3/48)

(a) वर्षा (b) शरद

(c) ग्रीष्म (d) हेमन्त

प्र. 36. वर्षा शीतोचिताङ्गना सहसैवार्करश्मिभि। तप्तानां सञ्चितं वृष्टौ शरदि कुप्यति। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 3/49)

(a) कफ (b) पित्त

(c) वात (d) त्रिदोष

प्र. 37. शरद ऋतु में पित्त दोष प्रकुपित होता है इसकी चिकित्सा क्या है। (अ. हृ. सू. 3/49)

(a) तिक्त औषध सिद्ध घृत (b) विरेचन

(c) रक्तमोक्षण (d) All

प्र. 38. शरद ऋतु के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3/50 - 53 - 54)

(a) इस ऋतु में भूख लगने पर तिक्त, स्वादु, कषाय रस वाले लघु अन्न का सेवन करें।

(b) शालि, मुद्ग, सिता, धात्री, पटोल, परवल, मधु आदि का सेवन इस ऋतु में करना चाहिए।

(c) रजनी मुख में चन्दन, खस, कर्पूर, मुक्ता की माला आदि का सेवन करना चाहिए।

(d) ओस, क्षार, दही, तैल, वसा, आतप आदि का सेवन इस ऋतु में करना चाहिए।

प्र. 39. शरद ऋतु में प्रयोग किया जाने वाला हंसोदक जल किस तारे के उदय होने कारण निर्विष होता हैं। (अ. हृ. सू. 3/52)

(a) ध्रुव (b) धूमकेतू

(c) अगस्त्य (d) सोम

प्र. 40. शुचि..... निर्मल मलजिज्जलम् नाभिष्यन्दि न वा रूक्षं पानादिष्वमृतोपमम्। ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 3/52) (ONIA JAMNAGAR 2009)

(a) दिव्य जल (b) हंसोदक

(c) गो दुग्ध (d) नारिकेल जल

प्र. 41. शरद ऋतु में निम्न में से क्या त्याज्य हैं। (अ. हृ. सू. 3/54)

(a) दिवास्वप्न (b) सौहित्य

(c) पुरोवातान् (d) All

प्र. 42. मधुर, अम्ल, लवण रस का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/55)

(a) हेमन्त (b) शिशिर

(c) वर्षा (d) All

प्र. 43. कटु तिक्त कषाय रसो का विशेषतः किस ऋतु में सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/55)

(a) शरद (b) वसन्त

(c) वर्षा (d) ग्रीष्म

प्र. 44. ग्रीष्म ऋतु में विशेषतः किस रस का सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/56)

(a) मधुर (b) अम्ल

(c) लवण (d) All

प्र. 45. शरद ऋतु में विशेषतः किस रस का सेवन करना चाहिए। (अ. ह. सू 3/56)

(a) मधुर (b) तिक्त

(c) कषाय (d) All

प्र. 46. उचित मिलान करें (ऋतु व अन्न सेवन) (अ. ह. सू. 3/56)

	ऋतु		**अन्नपान**
अ.	**शरद व वसन्त**	**1.**	**रूक्ष प्रधान**
ब.	**ग्रीष्म व शरद**	**2.**	**शीत प्रधान**
स.	**हेमन्त व वर्षा**	**3.**	**स्निग्ध उष्ण अन्नपान**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3 (b) अ – 2, ब – 1, स – 3

(c) अ – 2, ब – 3, स – 1 (d) अ – 3, ब – 1, स – 2

प्र. 47. ऋतुसंधि का वर्णन किस आचार्य ने किया हैं। (अ. हृ. सू. 3/58)

(a) चरक (b) वाग्भट्ट

(c) शांङ्गर्धर (d) All

प्र. 48. ऋतु संधि के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 3/58)

(a) प्रथम ऋतु का अन्तिम सप्ताह व आने वाली ऋतु का प्रथम सप्ताह का समय ऋतुसंधि कहलाता हैं।

(b) ऋतु संधि में पूर्व ऋतु की चर्या का क्रमशः त्याग करना चाहिए।

(c) ऋतु संधि में आने वाली ऋतु चर्या का क्रमशः अभ्यास करना चाहिए।

(d) उपरोक्त सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 49. ऋतु संधि कितने दिन की होती हैं। (अ. हृ. सू. 3/58) (BHU PGET 2014)

(a) 15 (b) 14

(c) 10 (d) 30

प्र. 50. ..... हि रोगाः स्यु सहसा त्यागशीलनात्। ऋतु संधि के संदर्भ में आये इस सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 3/58)

(a) असाध्य (b) असात्म्यज

(c) सुखसाध्य (d) ज्वर

प्र. 51. अ. हृ . के अनुसार पञ्चसार पानक किस ऋतु में लेना चाहिए। (अ. हृ. सू. 3/31)

(a) वर्षा (b) वसन्त

(c) ग्रीष्म (d) हेमन्त

प्र. 52. अ. ह . अनुसार मेद्यवृष्ट्यनिलैः शीतैः शान्ततापे महीतले यह लक्षण है- (PHD NIA 2018)

(a) वर्षा ऋतु (b) हेमन्त ऋतु

(c) विसर्ग काल (d) आदान काल

प्र. 53. अ. ह . अनुसार शूल्यभुक् का सेवन किस ऋतु में करना चाहिए?

(c) हेमन्त (c) वसन्त

(c) शिशिर (c) ग्रीष्म

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(a)	3.	(b)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(d)
7.	(c)	8.	(a)	9.	(a)	10.	(b)	11.	(a)	12.	(d)
13.	(c)	14.	(d)	15.	(b)	16.	(c)	17.	(a)	18.	(b)
19.	(c)	20.	(d)	21.	(b)	22.	(c)	23.	(c)	24.	(b)
25.	(d)	26.	(b)	27.	(c)	28.	(b)	29.	(c)	30.	(a)
31.	(c)	32.	(b)	33.	(d)	34.	(d)	35.	(a)	36.	(b)
37.	(d)	38.	(d)	39.	(c)	40.	(b)	41.	(d)	42.	(d)
43.	(b)	44.	(a)	45.	(d)	46.	(a)	47.	(b)	48.	(d)
49.	(b)	50.	(b)	51.	(c)	52.	(c)	53.	(b)		

अध्याय - 4

प्र. 1. अ. ह्. के सूत्रस्थान के चतुर्थ अध्याय का क्या नाम हैं। (अ. ह्. सू. 4/1)

(a) नवेगानधारणीयाध्याय (b) रोगानुत्पादनीयाध्याय

(c) द्रवद्रव्यविज्ञानीयाध्याय (d) अन्नस्वरूपविज्ञानीयाध्याय

प्र. 2. अ. ह. के अनुसार कौन से वेग धारणीय माने हैं। (अ. ह्. सू. 4/1)

(a) अपान वायु (b) क्षवथु

(c) ईर्ष्या (d) निद्रा

प्र. 3. अ. ह. के अनुसार अधारणीय वेग माने गये हैं। (अ. ह्. सू. 4/1) (CHATTISGARH MO 2009)

(a) कास (b) श्रमजन्य श्वास

(c) जृम्भा (d) All

प्र. 4. वातमूत्र शकृतसंङ्ग व जठराग्नि नाश किस वेग के रोकने से होता हैं। (अ. ह्. सू. 4/2) (NIA PHD 2018)

(a) अपानवायु (b) मूत्र

(c) पुरीष (d) All

प्र. 5. दृष्टि हानि किस वेग रोध से होती हैं। (अ. ह्. सू. 4/2) (NIA PHD 2018)

(a) पुरीष (b) अपानवायु

(c) मूत्र (d) क्षुधा

प्र. 6. गुल्मोदावर्तरूक् क्लमाः ये सूत्र किस वेग रोध से उत्पन्न लक्षण हैं। (अ. ह्. सू. 4/2)

(a) अपानवायु (b) पुरीष

(c) मूत्र (d) क्षुधा

प्र. 7. पिण्डिको द्वेष्टन किस वेग रोध से उत्पन्न होता हैं। (अ. ह्. सू. 4/3)

(a) पुरीष (b) अपानवायु

(c) क्षुधा (d) उद्गार

प्र. 8. एक व्यक्ति को प्रतिश्याय, शिरोरूजा की शिकायत रहती है और साथ में उसे परिकर्तिका भी हैं एवम् कभी-2 उसके मुख से मल की प्रवृति होती है संभवतया उसने कौनसे वेग को रोकने का सेवन किया होगा। (अ. ह्. सू. 4/3)

(a) अपानवायु (b) पुरीष

(c) मूत्र (d) पिपासा

प्र. 9. मूत्र वेग रोध से कौन से विकार की उत्पत्ति होती हैं। (अ. ह्. सू. 4/4) (BHU MD 2016)

(a) अंगभङ्ग (b) अश्मरी
(c) बस्ति मेढ्र वंक्षण वेदना (d) All

प्र. 10. वर्त्यभ्ङ्गावगाहाश्च स्वेदनं बस्ति कर्म। ये किस वेग रोध की चिकित्सा है। (अ. हृ. सू. 4/5)

(a) अपान (b) मूत्र
(c) पुरीष (d) All

प्र. 11. मलभेदक अन्नपान का सेवन विशेषतः किस वेगरोध की चिकित्सा है। (अ. हृ. सू. 4/5)

(a) अपान (b) पुरीष
(c) A & B (d) None

प्र. 12. मूत्रवेग रोध की चिकित्सा में विशेषतः प्रातः काल भोजन के जीर्ण होने अल्प मात्रा व रात्रि में पश्चात ..... मात्रा में घृतपान करायें। इन दोनों योजनाओं को अवपीड़क घृत कहते हैं। रिक्त स्थान को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 4/5-7)

(a) मध्यम (b) हीन
(c) उत्तम (d) All

प्र. 13. अरूचि कम्पो विबन्धो हृदयोरसोः। आध्मान कास हिध्यमाश्च इस सूत्र में किस वेग के धारण करने से उत्पन्न लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 4/8)

(a) उद्गार (b) हिक्का
(c) छर्दि (d) क्षुधा

प्र. 14. उद्गार वेगरोध की चिकित्सा किसके समान करते हैं। (अ. हृ. सू. 4/8) (UK PG 2014)

(a) कास (b) क्षुधा
(c) हिक्का (d) पिपासा

प्र. 15. क्षवथु वेग धारण के लक्षण कौन से नहीं है। (अ. हृ. सू. 4/9)

(a) शिरोऽर्ति व इन्द्रिय दौर्बल्य (b) हनुस्तम्भ
(c) मन्यास्तम्भ (d) अर्दित

प्र. 16. क्षवथु वेगरोध की चिकित्सा क्या हैं। (अ. हृ. सू. 4/9)

(a) तीक्ष्ण धूम नस्य - अञ्जन (b) स्नेहन - स्वेदन
(c) सूर्यावलोकन (d) All

प्र. 17. बाधिर्य किस वेग को धारण करने से होता हैं। (अ. हृ. सू. 4/10)

(a) क्षवथु (b) क्षुधा
(c) तृष्णा (d) निद्रा

प्र. 18. पिपासा वेग धारण करने से कौन सा लक्षण उत्पन्न नहीं होता हैं। (अ. हृ. सू. 4/10)

(a) मुख शोष-अंगसाद (b) अरूचि

(c) सम्मोह (d) भ्रम

प्र. 19. किस वेग रोध की चिकित्सा में शीतल द्रव्यों का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 4/10)

(a) पिपासा (b) क्षुधा

(c) निद्रा (d) All

प्र. 20. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 4/11-12)

(a) क्षुधा के वेग को रोकने से अरूचि, ग्लानि, कार्श्य, शूल व भ्रम आदि विकार उत्पन्न होते हैं।

(b) क्षुधा वेग रोग में लघु, स्निग्ध, उष्ण व अल्प भोजन करना चाहिए।

(c) निद्रा वेग रोकने से मोह, मूर्धा व अक्षि में गौरवता, आलस्य, जृम्भा व अंगमर्द आदि विकार उत्पन्न होते हैं। इसमें नींद लेना व संवाहन उपयुक्त हैं।

(d) उपरोक्त सभी कथन सथ्य है।

प्र. 21. श्वास वृद्धि किस वेग रोध से उत्पन्न विकार हैं। (अ. हृ. सू. 4/13)

(a) श्रम जन्य श्वास (b) कास

(c) जृम्भा (d) छर्दि

प्र. 22. अरूचि हृदामया शोष हिध्मा आदि विकार किस वेगरोध के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 4/13)

(a) श्रम जन्य श्वास (b) क्षुधा

(c) कास (d) All

प्र. 23. श्रमजन्य श्वास वेग को धारण करने से कौनसे विकार उत्पन्न होते हैं। (अ. हृ. सू. 4/14)

(a) गुल्म (b) हृदय रोग

(c) सम्मोह (d) All

प्र. 24. विश्राम करना व वातनाशक चिकित्सा किस वेगराध की चिकित्सा हैं। (अ. हृ. सू. 4/14)

(a) श्रमजन्य श्वास (b) कास

(c) अश्रु (d) छर्दि

प्र. 25. क्षवथु वेग रोध के समान किस वेग रोध के लक्षण है व चिकित्सा क्या करनी चाहिए। क्रमशः (अ. हृ. सू. 4/15)

(a) अश्रु, शीतल चिकित्सा (b) जृम्भा, शीतल चिकित्सा

(c) जृम्भा, वातनाशक चिकित्सा (d) अश्रु, वातनाशक चिकित्सा

प्र. 26. पीनसाक्षिशिराहृद्धुड़मन्यास्तम्भारूचि भ्रमाः स गुल्म आदि विकारों की उत्पत्ति किस वेगरोध से होती हैं। (अ. हृ. सू. 4/16)

(a) जृम्भा (b) वाष्प

(c) छर्दि (d) शुक्र

प्र. 27. वाष्प वेग रोध की चिकित्सा क्या है। (अ. हृ. सू. 4/16)

(a) स्वप्न (b) मद्य सेवन

(c) प्रिय कथा सेवन (d) All

प्र. 28. निम्न में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 4/17 - 18 - 19)

(a) छर्दि के वेग को धारण करने से विसर्प, कोठ, कुष्ठ, अक्षिकण्डू, ज्वर, कास, श्वास, व्यङ्ग व शोथ आदि रोग होते हैं।

(b) छर्दि में उपस्थित वेग धारण से उत्पन्न विकारों में गण्डूष, धूमपान, भोजन करके तत्काल वमन, व्यायाम करना चाहिए।

(c) शुक्र वेग धारण करने से शुक्र स्त्रवण, गुह्य प्रदेश वेदना, श्वयथु, ज्वर, मूत्रसंग, अङ्गभग वृद्धि, अश्मरी, षण्ढता आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

(d) उपरोक्त सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 29. रूक्ष अन्नपान सेवन, रक्तमोक्षण, विरेचन, क्षार व लवण युक्त तैल से अभ्यङ्ग किस वेग रोध की चिकित्सा हैं। (अ. हृ. सू. 4/18) (NIA PHD 2008)

(a) शुक्र (b) छर्दि

(c) अश्रु (d) कास

प्र. 30. अंगभङ्ग किस वेगरोध से उत्पन्न होता हैं। (अ. हृ. सू. 4/3 - 11 - 19) (UPSC 2002)

(a) मूत्र (b) क्षुधा

(c) शुक्र (d) All

प्र. 31. ताम्र चूड़ रस का सेवन किस वेगरोध की चिकित्सा में करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 4/20)

(a) छर्दि (b) शुक्र

(c) अश्रु (d) क्षुधा

प्र. 32. उचित मिलान करें। (व्याधि व वेगरोध) (अ. हृ. सू. 4/2 - 3 - 10 - 13 - 14 - 15)

अ. हृदयगदा	**1. कास**
ब. हृदय रोग	**2. श्रम जन्य श्वास**
स. हृदय स्योपरोधन	**3. वाष्प**
द. हृदय विबंध	**4. तृष्णा**
न. हृदामया	**5. अपान वायु**
	6. पुरीष
	7. उद्‌गार

(a) अ - 4, 5 ब - 2, 3, स - 6, द - 7, न - 1

(b) अ - 4, ब - 2, 3, 5 स - 7 द - 7, न - 1

(c) अ - 5, 2, ब - 3, स - 2, 6, द - 1, न - 7

(d) अ – 2, ब – 3, स – 4, द – 5, न – 1

प्र. 33. गुल्म की उत्पत्ति किस वेग रोध से होती हैं। (अ. हृ. सू. 4/2-14-16)

(a) अपान वायु (b) श्रमजन्य श्वास

(c) वाष्प (d) All

प्र. 34. मन्यास्तम्भ की उत्पत्ति किस वेग धारण से होती हैं। (अ. हृ. सू. 4/9-16)

(a) क्षवथु (b) वाष्प

(c) जृम्भा (d) All

प्र. 35. हृदयव्यथा किस वेगरोध से उत्पन्न व्याधि है। (अ. हृ. सू. 4/19)

(a) अपानवायु (b) पुरीष

(c) वाष्प (d) शुक्र

प्र. 36. किस वेगरोधी रोगी की चिकित्सा नहीं करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 4/21)

(a) तृट् व शूल से ग्रस्त (b) धातु क्षीण

(c) विड् का वमन करे (d) All

प्र. 37. रोगाः सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदीरण धारणैः। ये सूत्र कहा का संदर्भ है। (अ. हृ. सू. 4/21)

(a) च. सू. 7 (b) अ. हृ. सू. 4

(c) अ. हृ. सू 5 (d) च. सू. 5

प्र. 38. निम्न में असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 4/24-24-27)

(a) वेगों को धारण करने व उदीरण करने वो वायु अनेक प्रकार से प्रायः कुपित होता है जो अनेक विकारों को उत्पन्न करता हैं।

(b) व्यक्ति को सदैव लोभ, ईर्ष्या, मात्सर्य, राग-द्वेष आदि वेगों का धारण नहीं करना चाहिए।

(c) मलो के शोधन के लिए यथासमय प्रयत्न करते रहना चाहिए क्योंकि ये मल अतिशय संचित होकर जीवन का नाश करने वाले होते हैं।

(d) संशोधन के उपरान्त युक्ति से सिद्ध रसायनों व वृष्य योगों का प्रयोग करना चाहिए।

प्र. 39. दोषज्ञः कदाचित्कुप्यन्ति जिता लंघन पाचनै ..... इस सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 4/26)

(a) अ. हृ. सू. 4/26 (b) अ. हृ. सू. 5/25

(c) च. सू. 16/9 (d) None

प्र. 40. एक व्यक्ति अत्याधिक औषध सेवन करने से क्षीण हो गया है उसे क्या करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 4/28-29)

(a) शालि, गोधूम आदि आहार से बृंहण

(b) हृद्य अग्निदीपन रूचिकर व पाचक औषध सेवन

(c) अभ्यङ्ग, निरूह स्नेह वस्तिया, स्नान से बृहणं

(d) उपरोक्त सभी

प्र. 41. ये भूतविषवाय्वग्निक्षत भङ्गादि सम्भवा। राग द्वेषभयाद्याश्च ते स्यु ..... गदा। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 4/31)

(a) निज (b) असाध्य

(c) आगन्तुज (d) कृच्छ्रसाध्य

प्र. 42. निज व आगन्तुज रोगों की शान्ति या अनुत्पत्ति के लिए क्या-2 उपक्रम करने चाहिए। (अ. हृ. सू. 4/32-33)

(a) सद्वृत पालन (b) देश, काल, आत्म का सम्यक् ज्ञान

(c) अथर्ववेद विहित शान्ति उपाय (d) All

प्र. 43. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 4/35)

दोष	**शोधन**
अ. शीत (हेमन्त, शिशिर) में संचित कफ	**1. अभ्रकाल (प्रावृट) में शोधन**
ब. ग्रीष्म में संचित वात	**2. घनात्यय (शरद में शोधन)**
स. वर्षा में संचित पित्त	**3. बसन्त में शोधन**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 2 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ - 2, ब - 1, स - 3 (d) अ - 3, ब - 2, स - 1

प्र. 44. नित्यं हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः। सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 4/36) (ESI MO EXAM 2008)

(a) च. शा. 4 (b) अ. हृ. सू. 4

c) च. सू. 4 (d) अ. हृ. शा. 4

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(d)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(a)
7.	(a)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(d)	11.	(b)	12.	(c)
13.	(a)	14.	(c)	15.	(b)	16.	(d)	17.	(c)	18.	(b)
19.	(a)	20.	(d)	21.	(b)	22.	(c)	23.	(d)	24.	(a)
25.	(c)	26.	(b)	27.	(d)	28.	(d)	29.	(b)	30.	(d)
31.	(b)	32.	(a)	33.	(d)	34.	(d)	35.	(d)	36.	(d)
37.	(b)	38.	(b)	39.	(a)	40.	(d)	41.	(c)	42.	(d)
43.	(a)	44.	(b)								

अध्याय - 5

प्र. 1. गङ्गोदक में रस प्रधानता है। (अ. हृ. सू. 5/1)

(a) मधुर रस (b) अम्ल रस
(c) अव्यक्त रस (d) कषाय रस

प्र. 2. जीवनं तर्पणं हृद्यं ह्लादि बुद्धिप्रबोधनम् - किसके लिए प्रयुक्त हुआ। (अ. हृ. सू. 5/1)

(a) गोदुग्ध (b) इक्षुरस
(c) गाङ्ग जल (d) मधु

प्र. 3. हिताहितत्वे तद्भूयो देशकालावपेक्षते - किस संदर्भ में प्रयोग हुआ - (अ. हृ. सू. 5/2)

(a) सामुद्र जल (b) गाङ्ग जल
(c) कूप जल (d) नदी जल

प्र. 4. गाङ्ग जल परीक्षा हेतु प्रयुक्त पात्र होता है। (अ. हृ. सू. 5/3)

(a) स्वर्ण (b) रजत
(c) लौह (d) ताम्र

प्र. 5 . उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 5/11-12)

नदीजल	**रोग कारकता**
4. अवन्ती से पूर्व व पश्चिम देश-4	**1. बल पौरूषकारि, दोषघ्न**
1. पारियात्र पर्वत-1	**2. कुष्ठ, पाण्डु, शिरोरोग**
3. महेन्द्र पर्वत -3	**3. उदर, श्लीपद**
2. विन्ध्याचल पर्वत -2	**4. अर्श रोग**
5. सामुद्र जल -5	**5. त्रिदोष कारक**

(a) अ - 4, ब - 3, स - 1, द - 2, न - 4
(b) अ - 4, ब - 1, स - 3, द - 2, न - 5
(c) अ - 2, ब - 3, स - 5, द - 4, न - 1
(d) अ - 4, ब - 2, स - 3, द - 1, न - 5

प्र. 6. निम्न सभी रोगों में जल अपेय है। सिवाय - (अ. हृ. सू. 5/14)

(a) उदर रोग (b) रक्त पित्त रोग
(c) पाण्डु रोग (d) अतिसार रोग

प्र. 7. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 5/14)

जलपान	**गुण/अवगुण**
अ. भोजन के मध्य	**1. स्थूलता**

ब.	**भोजन के अंत**	**2.**	**कृशता**
स.	**भोजन के प्रारम्भ**	**3.**	**समता**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3 (b) अ – 3, ब – 2, स – 1

(c) अ – 3, ब – 1, स – 2 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 8. स्वस्थोऽपि चाल्पशः पिबेत् – इस सूत्र में अम्बुपान के संदर्भ में वर्ज्य ऋतु (अ. ह. सू. 5/14) कौन सी है?

(a) वर्षा, वसन्त (b) शरद, ग्रीष्म

(c) हेमन्त, वर्षा (d) वसन्त, शिशिर

प्र. 9. विष व मदात्यय में हितकर (अ. ह. सू. 5/15)

(a) उष्ण जल (b) दुग्ध

(c) क्वथित शीतल जल (d) शीतल जल

प्र. 10. बस्तिशोधनम गुण है। (अ. ह. सू. 5/16, 19) (NIA PHD 2018) (UK PG 2014)

(a) नारिकेलोदक (b) उष्ण जल

(c) Both A & B (d) None

प्र. 11. क्वथित शीतल जल व्युषित होने पर। (अ. ह. सू. 5/18)

(a) त्रिदोषकारक (b) अभिष्यन्दी

(c) पित्तकारक (d) पित्तशामक

प्र. 12. वृष्य जल है। (अ. ह. सू. 5/19)

(a) श्रृतशीत जल (b) नारिकेल जल

(c) शीतल जल (d) उष्ण जल

प्र. 13. स्निग्धमोजस्यं धातुवर्धनम् – किसका कर्म हैं। (अ. ह. सू. 5/20)

(a) मधु (b) दुग्ध

(c) गाङ्ग जल (d) नारिकेलोदक

प्र. 14. दुग्ध का लक्षण नहीं है। (अ. ह. सू. 5/20)

(a) मधुर रस, मधुर विपाक (b) वृष्य

(c) त्रिदोषहर (d) वातपित्तहरं श्लेष्मल

प्र. 15. गोदुग्ध के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. ह. सू. 5/12)

(a) जीवनीय (b) रसायनम्

(c) Both A & B (d) None

प्र. 16. उचित मिलान करें – (अ. ह. सू. 5/24-27)

	दुग्ध		**गुण**
अ.	**अवि दुग्ध**	**1.**	**शस्तं शोफोदरअर्शशाम्**
ब.	**हस्तिनी दुग्ध**	**2.**	**रक्तपित्तातिसाराजित्**
स.	**अजा दुग्ध**	**3.**	**स्थैर्यकृत्**

द. ऊंटनी दुग्ध **4. शाखावातहरं**

न. एक शफ दुग्ध **5. हिध्माश्वासपित्तकफप्रदम्**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 4, द – 5, न – 1

(b) अ – 5, ब – 2, स – 3, द – 1, न – 4

(c) अ – 2, ब – 3, स – 5, द – 4, न – 1

(d) अ – 5, ब – 3, स – 2, द – 1, न – 4

प्र. 17. अक्षिरोगजित् गुण वाला क्षीर है। (अ. हृ. सू. 5/25)

(a) अजा क्षीर (b) माहिष क्षीर

(c) मानुष क्षीर (d) उष्ट्र क्षीर

प्र. 18. बाढ़मुष्णं क्षीर हैं। (अ. हृ. सू. 5/27)

(a) उष्ट्र क्षीर (b) गव्य क्षीर

(c) अजा क्षीर (d) एक शफ क्षीर

प्र. 19. अमृतोपमम् किसके लिए कहा गया – (अ. हृ. सू. 5/28)

(a) अतिश्रृत दुग्ध (b) धारोष्ण दुग्ध

(c) Both (d) None

प्र. 20. दधि के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 5/31)

(a) मधुर रस, अम्ल विपाक (b) अम्ल रस, अम्ल विपाक

(c) मधुर रस, मधुर विपाक (d) अम्ल रस, मधुर विपाक

प्र. 22. ग्रहणी रोग में दधिसेवन की विधि (अ. हृ. सू. 5/31)

(a) घृत सिता युक्त (b) क्षौद्र युक्त

(c) रूक्ष दधि (d) None

प्र. 23. स्रोतोशोधन कर्म है। – (अ. हृ. सू. 5/34)

(a) दधिमस्तु (b) तक्र

(c) दधि (d) नवनीत

प्र. 24. घृत व्यापद् की औषध हैं। (अ. हृ. सू. 5/34)

(a) दधि (b) तक्र

(c) क्षीर (d) कट्वर

प्र. 25. नवनीत के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 5/35-36)

(a) संग्राहि (b) अवृष्य

(c) वर्णबलाग्निकृत (d) Both A & C

प्र. 26. उचित मिलान करें – (अ. हृ . सू. 5/35-36)

अ. नवनीत **1. गुरू, उष्ण, शोफकृत**

ब. दधि **2. गुरू, वृष्य, वातपितहरं**

स. दुग्ध **3. क्षयाशोऽर्दित**

द. तक्र **4. गरपाण्डूवामय जयेत्**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 1, द – 4 (b) अ – 3, ब – 1, स – 2, द – 4

(c) अ – 2, ब – 3, स – 1, द – 4 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4

प्र. 27. वयसः स्थापनं परम् किसके लिए प्रयुक्त हुआ। (अ. हृ. सू. 5/39)

(a) नवनीत (b) दधि

(c) दुग्ध (d) घृत

प्र. 28. स्नेहानामुत्तमं किसके लिए कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 5/39)

(a) तैल (b) घृत

(c) वसा (d) मज्जा

प्र. 29. व्रणशोधन रोपण कर्म है । (अ. हृ. सू. 5/40)

(a) घृत (b) घृत मण्ड

(c) पुराण घृत (d) नवनीत

प्र. 30. श्रेष्ठ व निन्दित क्षीर व घृत क्रमशः है। (अ. हृ. सू. 5/41)

(a) गो व अवि (b) गो व अजा

(c) अवि व गो (d) गो व हस्तिनी

प्र. 31. इक्षु का अग्र भाग में रस होता हैं। (अ. हृ. सू. 5/43)

(a) लवण (b) अम्ल

(c) कषाय (d) कटु

प्र. 32. इक्षु में श्रेष्ठता का क्रम – (अ. हृ. सू. 5/45-46)

(a) वांशिक – पौण्ड्रक – शतपर्वक – कान्तार – नैपाल

(b) पौण्ड्रक – शतपर्वक – कान्तार – वांशिक – नैपाल

(c) पौण्ड्रक – वांशिक – शतपर्वक – कान्तार – नैपाल

(d) शतपर्वक – कान्तार – पौण्ड्रक – नैपाल – वांशिक

प्र. 33. फाणित है – (अ. हृ. सू. 5/46)

(a) मधु प्रकार (b) दधि विकृति

(c) क्षीर विकृति (d) इक्षु विकृति

प्र. 34. मूत्रशोधन गुण है – (अ. हृ. सू. 5/46)

(a) फाणित (b) पुराण गुड़

(c) यांत्रिक रस (d) धान्याम्ल

प्र. 35. नव व पुराण गुड़ के संदर्भ में सत्य कथन (अ. हृ. सू. 5/48)

(a) नवः श्लेष्माग्निसादकृत, पुराण – पथ्य, हृद्य

(b) नवः पथ्य हृद्य, पुराणः श्लेष्माग्निसादकृत्
(c) नवः श्लेष्महर अग्नि वर्धक, पुराणः अहृद्य, अपथ्य
(d) Both B & C

प्र. 36. उत्तरोत्तर श्रेष्ठता का क्रम सही है - (अ. हृ. सू. 5/49)

(a) खण्ड - सिता - मत्स्याण्डिका (b) मत्स्यण्डिका - सिता - खण्ड
(c) सिता - खण्ड - मत्स्याण्डिका (d) मत्स्यण्डिका - खण्ड - सिता

प्र. 37. यासशर्करा में रस (अ. हृ. सू. 5/49)

(a) मधुर तिक्त कषाय (b) मधुर अम्ल लवण
(c) मधुर अम्ल कटु (d) कषाय अम्ल लवण

प्र. 38. इक्षुविकारों में श्रेष्ठ है - (सू 5/50)

(a) राब (फाणित) (b) गुड़
(c) शर्करा (d) None

प्र. 39. व्रणशोधन सन्धान रोपणं किसका कर्म है। (अ. हृ. सू. 5/52)

(a) शर्करा (b) नवनीत
(c) मधु (d) दुग्ध

प्र. 40. मधु के गुण है - (अ. हृ. सू. 5/52)

(a) अरूक्षं, तिक्त मधुर, (b) रूक्ष, कषाय, मधुरं
(c) रूक्ष, तिक्त, मधुर (d) अरूक्ष कषाय मधुर

प्र. 41. उष्ण मधु का प्रयोग किस कर्म में हानिकारक नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 5/54)

(a) वमन (b) विरेचन
(c) निरूह वस्ति (d) Both A & C

प्र. 42. उष्णमुष्णार्तमुष्णे च युक्तं चौष्णेर्निहन्ति तत् किस संदर्भ में वर्णित हैं। (अ. हृ. सू. 5/54)

(a) दधि (b) मधु
(c) मद्य (d) तैल

प्र. 43. संस्कारात सर्वरोगजित् - कथन किसके लिए है। (अ. हृ. सू. 5/56)

(a) तैल (b) घृत
(c) दुग्ध (d) मधु

प्र. 44. कृशानां बृंहणायाल स्थूलानां कर्शनाय च ये सूत्र किसके लिए आया हैं। (अ. हृ. सू. 5/56) (NIA PHD 2018)

(a) दूध (b) तैल
(c) घृत (d) मधु

प्र. 45. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 5/57-60)

	तैल		गुण
अ.	अतसी तैल	1.	कृमिकुष्ठकफप्रणुत
ब.	एरण्ड तैल	2.	अनिलापहम्
स.	अक्ष (बहेड़ा) तैल	3.	कोठकुष्ठार्शोव्रणजन्तुजित
द.	नीम तैल	4.	वर्ध्मगुल्मानिलकफानुदरं
न.	सरसों तैल	5.	त्वग्दोष कफ पित्तकृत

(a) अ – 1, ब – 3, स – 5, द – 2, न – 4

(b) अ – 5, ब – 2, स – 4, द – 3, न – 1

(c) अ – 3, ब – 1, स – 3, द – 2, न – 5

(d) अ – 5, ब – 4, स – 2, द – 1, न – 3

प्र. 46. स्वादु हिमं केश्यं – किस तैल के संदर्भ में कहा गया है– (अ. हृ. सू. 5/59)

(a) सर्षप तैल (b) एरंड तैल

(c) अक्ष तैल (d) नीम तैल

प्र. 47. मद्य के संदर्भ में सत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 5/62-64)

(a) तुष्टिपुष्टिदम् (b) कृशस्थूलहितम्

(c) स्रोतोविशोधनम् (d) सभी सत्य हैं।

प्र. 48. नष्टनिद्राऽतिनिद्रेभ्यो हितं किसके लिये कहा गया – (अ. हृ. सू. 5/64)

(a) तक्र (b) मद्य

(c) क्षीर (d) मूत्र

प्र. 49. वातश्लेष्महरं युक्तया पीतं विषवदन्यथा ये कथन किस संदर्भ में कहा गया– (अ. हृ. सू. 5/64)

(a) मूत्र (b) कांजी

(c) तक्र (d) मद्य

प्र. 50. मद्यपान निषेध हैं। (अ. हृ. सू. 5/66)

(a) विरिक्त (b) क्षुधा लगने पर

(c) Both (d) None

प्र. 51. गुल्मोदरर्शोग्रहणीशोषहृत स्नेहनी गुरू – किसके लिये प्रयुक्त हुआ। (अ. हृ. सू. 5/67)

(a) सुरा (b) वारूणी

(c) एरण्ड तैल (d) अरिष्ट

प्र. 52. सर्वमद्यगुणाधिकं किसके लिए कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 5/70)

(a) अरिष्ट (b) सुरा

(c) आसव (d) वारूणी

प्र. 53. मिलान करें। (अ. हृ. सू. 5/71 – 76)

अ.	**शुक्त**	**1.**	**मेदः शोफोदरार्शोघ्न**
ब.	**सीधु**	**2.**	**गुल्म कृमिप्लीहघ्न**
स.	**अरिष्ट**	**3.**	**वातानुलोमनम्**
द.	**मध्वासव**	**4.**	**मेहपीनसकासजित्**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2, द – 4 (b) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2
(c) अ – 1, ब – 3, स – 2, द – 4 (d) अ – 1, ब – 3, स – 4, द – 2

प्र. 54. स्नेहजनित व्यापत् व कफजन्य रोगों को नष्ट करता हैं। (अ. ह्र. सू. 5/74)

(a) वारूणी (b) सीधु
(c) सुरा (d) माद्वीक

प्र. 55. दीपनं शिशिरस्पर्श गुण किसका हैं। (अ. ह्र. सू. 5/76)

(a) शुक्त (b) धान्याम्ल
(c) सीधु (d) मध्वासव

प्र. 56. 'लघु यथोत्तरम्' शुक्त् के संदर्भ में क्रम (अ. ह्र. सू. 5/77)

(a) गुड़ – मद्य – माद्वीक – इक्षु (b) इक्षु – मद्य गुड़ – माद्वीक
(c) गुड़ – मद्य – इक्षु – माद्वीक (d) गुड़ – इक्षु – मद्य – माद्वीक

प्र. 57. कन्दमूलफलाद्यं च तद्वाद्विद्यात् .... ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. ह्र. सू. 5/77)

(a) शाण्डकी (b) आसुत
(c) सीधु (d) मध्वासव

प्र. 58. ..... भेदि तीक्ष्णोष्णं पित्तकृत्स्पर्श शीतलम् – ये सूत्र किसके लिए आया है। (अ. ह्र. सू. 5/79)

(a) मध्वासव (b) शुक्त
(c) मूत्र (d) धान्याम्ल

प्र. 59. कांजी के गुण (अ. ह्र. सू. 5/79)

(a) लघु (b) वस्तिशूलनुत्
(c) वातकफापहम् (d) उपरोक्त सभी

प्र. 60. शस्तं आस्थापने ह्द्यं हैं। (अ. ह्र. सू. 5/80)

(a) सीधु (b) कांजी
(c) मूत्र (d) तैल

प्र. 61. वा. अनुसार मूत्र के गुण धर्म है – (अ. ह्र. सू. 5/82)

(a) रूक्ष व मृदु (b) स्निग्ध व मृदु
(c) रूक्ष व तीक्ष्ण (d) स्निग्ध व तीक्ष्ण

प्र. 62. मूत्र के रस – (अ. ह्र. सू. 5/82-83)

(a) कटु रस, लवण अनुरस (b) लवण रस, कटु, अनुरस
(c) कटु रस, तिक्त, अनुरस (d) तिक्त रस, लवण अनुरस

प्र. 63. अ. ह. व अ. संग्रह में क्रमशः कितने द्रव वर्गो का वर्णन हैं। (अ. ह्र. सू. 5/84)

(a) 6 व 5 (b) 5 व 4
(c) 5 व 6 (d) 4 व 5

प्र. 64. अ. हृ. अनुसार कृश स्थूल उभय हित है- (अ. हृ. सू. 56/64)

(a) यव (b) मद्य
(c) तिल तैल (d) Both A & C

प्र. 65. कौन सा क्षीर अभिष्यन्दि गुण वाला है- (अ. हृ. सू. 5/28) (NIA PG 2016)

(a) अपक्व क्षीर (b) अतिपक्व क्षीर
(c) धारोष्ण क्षीर (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(c)	3.	(b)	4.	(b)	5.	(b)	6.	(a)
7.	(c)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(c)	11.	(a)	12.	(b)
13.	(b)	14.	(c)	15.	(c)	16.	(d)	17.	(c)	18.	(d)
19.	(b)	20.	(b)	21.	(a)	22.	(c)	23.	(a)	24.	(b)
25.	(d)	26.	(b)	27.	(d)	28.	(b)	29.	(c)	30.	(a)
31.	(a)	32.	(c)	33.	(d)	34.	(a)	35.	(a)	36.	(d)
37.	(a)	38.	(c)	39.	(c)	40.	(b)	41.	(d)	42.	(b)
43.	(a)	44.	(b)	45.	(d)	46.	(c)	47.	(d)	48.	(b)
49.	(d)	50.	(c)	51.	(a)	52.	(a)	53.	(a)	54.	(b)
55.	(a)	56.	(d)	57.	(b)	58.	(d)	59.	(d)	60.	(b)
61.	(c)	62.	(a)	63.	(c)	64.	(d)	65.	(a)		

अध्याय - 6

प्र. 1. शालि चावल के गुण (अ. हृ. सू. 6/4)

(a) स्वादुपाक रसा, तिक्तानुरसा (b) तिक्तपाक रसा, स्वादु अनुरसा
(c) स्वादुपाकरसा, कषायानुरसा (d) तिक्तपाकरसा, कषयानुरसा

प्र. 2. रक्तशालि के गुण (अ. हृ. सू. 6/4)

(a) पित्तकारक (b) वात कारक
(c) श्लेष्मकारक (d) त्रिदोष शामक

प्र. 3. त्रिदोषहर है - (अ. हृ. सू. 6/4, 7)

(a) षष्टिक व्रीहि (c) Both a & b
(b) रक्त शालि (d) मुद्ग

प्र. 4. षष्टिक व्रीहि के भेद वा. अनुसार हैं - (अ. हृ. सू. 6/7)

(a) गौर (b) आसित
(c) कृष्ण (d) Both A & B

प्र. 5. भग्नसंधान कृत - कर्म किसका हैं - (अ. हृ. सू. 6/12)

(a) प्रियङ्गु (b) कोरदूष
(c) यव (d) वंशज यव

प्र. 6. मिलान करें (अ. हृ. सू. 6/12-14)

अ. यव	**1. सन्धानकारी, स्थैर्यकृत**
ब. कोरदूष	**2. बृहंणी गुरू**
स. गोधूम	**3. पीनस श्वास कास जयेत्**
द. प्रियङ्गु	**4. स्पर्शे शीतो विषापहः**

(a) अ - 2, ब - 3, स - 1, द - 4 (b) अ - 3, ब - 2, स - 1, द - 4
(c) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 2 (d) अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3

प्र. 7. असत्य कथन है - (अ. हृ. सू. 6/19-22)

(a) कुलत्थ - पित्तास्रदा परम् (b) माष - शुक्रवृद्धि विरेककृत
(c) आत्मगुप्ता - शुक्र कफ शोफ विषापहः (d) Both A & B

प्र. 8. तिल के गुण हैं - (अ. हृ. सू. 6/23)

(a) हिम, उष्ण स्पर्शे (c) Both A & B

(b) उष्ण, हिम स्पर्शे (d) None

प्र. 9. मेधाग्निकफपित्तकृत - (अ. हृ. सू. 6/23) है

(a) माष (b) तिल

(c) कुसुम (d) निष्पाव

प्र. 10. शिम्बी धान्य व शूक धान्य में क्रमशः अवर हैं - (अ. हृ. सू. 6/24)

(a) माष व यवक (b) निष्पाव व कोरदूष

(c) कुलत्थ व यव (d) मूंग व गोधूम

प्र. 11. किस अन्नवर्ग को सूप्य भी कहा गया हैं - (अ. हृ. सू. 6/25)

(a) शाक वर्ग (b) शूक धान्य

(c) शिम्बी धान्य (d) मांस वर्ग

प्र. 12. अतिवातल गुण है - (अ. हृ. सू. 6/18)

(a) माष (b) कलाय

(c) कुलत्थ (d) निष्पाव

प्र. 13. क्रमशः लघुता निम्न प्रकार से हैं - (अ. हृ. सू. 6/27)

(a) पेया-मण्ड-विलेपी-ओदन (b) मण्ड-पेया-विलेपी-ओदन

(c) विलेपी-मण्ड-पेया-ओदन (d) मण्ड-विलेपी-ओदन-पेया

प्र. 14. मलानुलोमनी किसका गुण हैं - (अ. हृ. सू. 6/28)

(a) विलेपी (b) ओदन

(c) पेया (d) All

प्र. 15. मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/28-32)

अ. मांसरस	**1. व्रणकण्ठाक्षिरोगिणाम् पथ्यः**
ब. विलेपी	**2. वृष्यश्चक्षुष्य**
स. पेया	**3. कुक्षिरोगज्वरापहा**
द. मूंग यूष	**4. ग्राहिणी हृद्या**

(a) अ - 2, ब - 4, स - 3, द - 1 (b) अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3

(c) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4 (d) अ - 2, ब - 3, स - 4, द - 1

प्र. 16. गुल्मतूनीप्रतूनिजित् किसके लिए कहा गया है - (अ. हृ. सू. 6/33)

(a) मुद्ग यूष (c) Both A & B

(b) कुलथी यूष (d) None

प्र. 17. तृट्छर्द्यतीसार मेहमेद कफाच्छिदः किसके लिए कहा गया - (अ. हृ. सू. 6/36)

(a) रसाला (b) लाजा

(c) पृथुका (d) सत्तू

प्र. 18. निम्न में असत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 6/37-40)

(a) पृथुका - कफविष्टभकारिण (b) वेसवार - स्निग्धो बलोपचयवर्धनः

(c) पिण्याक – ग्लपनो रूक्षो विष्टम्भी दृष्टिदूषण (d) None

प्र. 19. सत्तु सेवन के संदर्भ में सत्य कथन हैं – (अ. हृ. सू. 6/38-39)

(a) सत्तु के बीच में जल सेवन निषिद्ध हैं। (b) रात्रि में सत्तु सेवन निषेध हैं।

(c) भोजन पश्चात् सत्तु सेवन निषिद्ध हैं। (d) सभी सत्य हैं।

प्र. 20. मिलान करें – (अ. हृ. सू. 6/56-60)

	मांस		**गुणकर्म**
अ.	**शशक**	**1.**	**पथ्यः श्रोत्रस्वरवयोदृशाम्**
ब.	**चटक**	**2.**	**सलवणः सर्वदोषकृत**
स.	**काणकपोत**	**3.**	**ग्राही रूक्षो हिम**
द.	**मयूर**	**4.**	**शुक्रलाः परम्**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2 (b) अ – 3, ब – 4, स – 2, द – 1

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4 (d) अ – 4, ब – 2, स – 3, द – 1

प्र. 21. विषमज्वरःपीनसान् काश्यं केवलवाताश्च ..... नियच्छति किसके संदर्भ में कहा – (अ. हृ. सू. 6/65)

(a) अजा मांस (b) वराह मांस

(c) गोमांस (d) आवि मांस

प्र. 22. मिलान करें – (अ. हृ. सू. 6/63-66)

	मांस		**गुण**
अ.	**माहिष**	**1.**	**रूचिशुक्रबलप्रदः**
ब.	**वराह**	**2.**	**शरीरधातुसामान्यात्**
स.	**मत्स्य**	**3.**	**स्वप्नदाढर्यबृहत्वकृत्**
द.	**अजा मांस**	**4.**	**परं कफकृत**

(a) अ – 4, ब – 1, स – 2, द – 3 (b) अ – 3, ब – 4, स – 1, द – 2

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4 (d) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2

प्र. 23. मिलान करें (सर्वोत्तम मांस) (अ. हृ. सू. 6/65-68)

अ.	**विष्किर**	**1.**	**रोहित**
ब.	**मत्स्य**	**2.**	**गोधा**
स.	**बिलेशय**	**3.**	**एण**
द.	**मृग**	**4.**	**बटेर (लावा)**

(a) अ – 4, ब – 1, स – 2, द – 3 (b) अ – 4, ब – 2, स – 1, द – 3

(c) अ – 1, ब – 3, स – 2, द – 4 (d) अ – 2, ब – 4, स – 1, द – 3

प्र. 24. मांस की गुरूता के संदर्भ में सत्य कथन है – (अ. हृ. सू. 6/69-71)

(a) पुमान् (नर) का नाभि से पीछे का भाग

(b) स्त्री (मादा) का नाभि से पूर्व का भाग

(c) Both A & B

(d) None

प्र. 25. मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/77-88)

	शाक		गुण
अ.	अडूसा	1.	बस्तिशुद्धिकरं
ब.	मकोय	2.	रक्तपित्तहरं परम्
स.	जीवन्ती	3.	चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी
द.	कूष्माण्ड	4.	मदघ्नी
न.	उपोदिका	5.	रसायनी

(a) अ - 3, ब - 5, स - 4, द - 1, न - 2
(b) अ - 2, ब - 4, स - 1, द - 5, द - 3
(c) अ - 2, ब - 5, स - 3, द - 1, न - 4
(d) अ - 2, ब - 5, स - 4, द - 1, न - 3

प्र. 26. मदपित्तविषास्रघ्न किस शाक का गुण हैं - (अ. हृ. सू. 6/82)

(a) वार्ताक (b) तण्डुलीय
(c) पालक (d) पटोल

प्र. 27. अष्ठीला व आनाह में प्रयोग होने वाला उत्तम् शाक है - (अ. हृ. सू. 6/90)

(a) तुम्बी (b) कुसुम
(c) शीर्णवृन्त कूष्माण्ड (d) मूली

प्र. 28. सर्षप शाक में दोष कार्मूकता क्या है। - (अ. हृ. सू. 6/101)

(a) त्रिदोषहर (b) सर्वदोषकृत
(c) वातपित्तहर (d) श्लेष्महर

प्र. 29. बाल मूली का रस कौन सा होता है। (अ. हृ. सू. 6/102)

(a) अव्यक्त रस (b) किञ्चित क्षार
(c) तिक्त (d) All

प्र. 30. मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/108 - 113)

अ.	तुलसी	1.	विशेषाद अर्शसां पथ्य
ब.	प्लाण्डु	2.	हिध्माकासविषहा
स.	सूरण	3.	भग्नसन्धानकृत
द.	लशुन	4.	श्लेष्मलो नातिपित्तलः

(a) अ - 2, ब - 4, स - 1, द - 3 (b) अ - 4, ब - 2, स - 1, द - 3
(c) अ - 1, ब - 4, स - 2, द - 3 (d) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 2

प्र. 31. लशुन के संदर्भ में असत्य हैं - (अ. हृ. सू. 6/109-111)

(a) रक्तपित्त प्रदूषण (b) केश्य
(c) रसायन (d) None

प्र. 32. शाक के संदर्भ में क्रमशः गुरूता का सही क्रम हैं - (अ. हृ. सू. 6/114)

(a) कन्द - नाल - पत्र - पुष्प - फल
(b) पत्र - पुष्प - फल - नाल - कन्द
(c) पुष्प - फल - नाल - कन्द - पत्र
(d) पत्र - नाल - पुष्प - कन्द - फल

प्र. 33. वा. अनुसार फल वर्ग में श्रेष्ठ - (अ. हृ. सू. 6/115)

(a) आमलक (b) कदली
(c) द्राक्षा (d) तालफल

प्र. 34. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/126-134)

अ.	**आमकपित्थ**	**1.**	**हिध्मावमथुजित्**
ब.	**पीलु**	**2.**	**कफवातहरं परम्**
स.	**भल्लातक**	**3.**	**कण्ठघ्न**
द.	**पक्व कपित्थ**	**4.**	**प्लीहार्शः कृमिगुल्मनुत्**

(a) अ - 3, ब - 4, स - 2, द - 1
(b) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 2
(c) अ - 2, ब - 4, स - 3, द - 1
(d) अ - 3, ब - 2, स - 4, द - 1

प्र. 35. लवण का वर्णन वा. ने किस वर्ग अन्तर्गत किया हैं। - (अ. हृ. सू. 6/143)

(a) शाक वर्ग (b) फल वर्ग
(c) अन्न वर्ग (d) औषध वर्ग

प्र. 36. उद्गार शोधनम् किस लवण के संदर्भ में कहा गया हैं - (अ. हृ. सू. 6/145)

(a) सैंधव (b) सौवर्चल
(c) विड (d) उद्भिद्

प्र. 37. सौवर्चल गुणा गन्ध वर्जिता - किस लवण के लिए कहा गया - (अ. हृ. सू. 6/148)

(a) सामुद्र लवण (b) रोमक लवण
(c) कृष्ण लवण (d) उद्भिद् लवण

प्र. 38. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/143-148)

	लवण		**गुण**
अ.	**सामुद्र लवण**	**1.**	**तीक्ष्णमुत्क्लेदि**
ब.	**सैंधव लवण**	**2.**	**श्लेष्म विवर्धन**
स.	**उद्भिद् लवण**	**3.**	**त्रिदोषनुत्**
द.	**विड लवण**	**4.**	**विबंधानाहविष्टम्भ नाशनम्**

(a) अ – 2, ब – 3, स – 1, द – 4 (b) अ – 2, ब – 1, स – 3, द – 4
(c) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4 (d) अ – 2, ब – 4, स – 1, द – 3

प्र. 39. हरीतकी के संदर्भ में सत्य कथन हैं- (अ. हृ. सू. 6/153-157)

(a) कफवातजान् (b) बुद्धिन्द्रियबलप्रदा
(c) उष्णवीर्या (d) सभी सत्य हैं

प्र. 40. वयसः स्थापनी परम् – किस संदर्भ में कहा गया – (अ. हृ. सू. 6/154)

(a) हिंङ्गु (b) हरीतकी
(c) आमलकी (d) पिप्पली

प्र. 41. केश व चक्षु के लिए क्षार अपथ्य हैं – (अ. हृ. सू. 6/151)

(a) अम्ल, कटु होने से (b) कटु, लवण होने से
(c) अम्ल कटु होने से (d) अम्ल, लवण होने से

प्र. 42. केश्य गुण किस औषध में पाया जाता हैं – (अ. हृ. सू. 6/158)

(a) आमलकी (b) हरीतकी
(c) विभीतकी (d) शुण्ठी

प्र. 43. त्रिजात में किस द्रव्य को सम्मिलित नहीं किया गया। (अ. हृ. सू. 6/160)

(a) नागकेशर (b) त्वक् (दालचीनी)
(c) तेजपत्र (d) एला (इलायची)

प्र. 44. आर्द्र पिप्पली के गुण सभी है सिवाय – (अ. हृ. सू. 6/162)

(a) श्लेष्मला (b) गुरू
(c) रूक्ष (d) मधुर

प्र. 45. न तामत्युपमुञ्जीत रसायनविधि बिना, (रसायन विधि बिना अधिक उपयोग) किस द्रव्य का वर्ज्य हैं :- (अ. हृ. सू. 6/162)

(a) मरिच (b) शुण्ठी
(c) चित्रक (d) पिप्पली

प्र. 46. श्लीपद नाशक कर्म किस द्रव्य में वर्णित हैं – (अ. हृ. सू. 6/164)

(a) त्रिकुट (b) चतुर्जात
(c) त्रिजात (d) त्रिफला

प्र. 47. शोफार्शः कृमिकुष्ठहा निम्न में से किस द्रव्य के लिए कहा गया हैं – (अ. हृ. सू. 6/165)

(a) शुण्ठी (b) आर्द्रक
(c) चित्रक (d) चव्य

प्र. 48. पञ्चकोलमेतश्च ..... विना स्मृतम् – (अ. हृ. सू. 6/166)

(a) पिप्पली (b) मरिच
(c) पिप्पलीमूल (d) चित्रक

प्र. 49. शुण्ठी में सभी गुण पाये जाते सिवाय – (अ. हृ. सू. 6/162)

(a) दीपन (b) ग्राहि
(c) अवृष्य (d) हृद्यं

प्र. 50. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 6/197-171)

	पंचमूल		दोष कार्मुकता
अ.	बृहत् पंचमूत	1.	पित्तानिलापहम्
ब.	लघु पंचमूल	2.	कफानिलहर
स.	जीवन पंचमूल	3.	पित्तनाशक
द.	तृण पंचमूल	4.	सर्वदोषजित

(a) अ - 2, ब - 4, स - 1, द - 3 (b) अ - 2, ब -1, स - 4, द - 3
(c) अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3 (d) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 2

प्र. 51. लघु पंचमूल का वीर्य हैं - (अ. हृ. सू. 6/168)

(a) शीत (b) उष्ण
(c) नातिशीतोष्ण (d) कोई भी नहीं

प्र. 52. जीवनीय पंचमूल का द्रव्य हैं - (अ. हृ. सू. 6/170)

(a) अभीरू (b) बृहती
(c) वीरा (d) Both A & C

प्र. 53. शूर्पपर्णीद्वय किसमें सम्मिलित हैं - (अ. हृ. सू. 6/169)

(a) लघु पंचमूल (b) मध्यम पंचमूल
(c) बृहत पंचमूल (d) जीवनीय पंचमूल

प्र. 54. अ. हृदयकार वर्णित पंचमूल नहीं हैं - (अ. हृ. सू. 6/167-171)

(a) कंटक पंचमूल (b) मध्यम पंचमूल
(c) जीवनीय पंचमूल (d) लघु पंचमूल

प्र. 55. चक्षुष्य व वृष्य कौन सा पंचमूल हैं - (अ. हृ. सू. 6/170)

(a) मध्यम पंचमूल (b) जीवनीय पंचमूल
(c) तृण पंचमूल (d) लघु पंचमूल

प्र. 56. ..... ऽग्निसम पाके किस द्रव्य संदर्भ में वर्णित हैं - (अ. हृ. सू. 6/165)

(a) शुण्ठी (b) पिप्पली
(c) चित्रक (d) चव्य

प्र. 57. निम्न में सत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 6/161-162)

(a) आर्द्र पिप्पली श्लेष्मल, स्वादु, शीतवीर्य, स्निग्ध व गुरू होती हैं।
(b) शुष्क पिप्पली स्निग्ध व वृष्य, कटुरस व मधुर विपाक होती हैं।
(c) उपरोक्त दोनों A & B
(d) षडूंषण में मरिच सम्मिलित नहीं हैं।

प्र. 58. चतुर्जात है - (अ. हृ. सू. 6/160)

(a) त्रिजात + मरिच (b) त्रिजात + आमलकी
(c) त्रिजात + पिप्पली (d) त्रिजात + नागकेशर

प्र. 59. सर्वश्च परम तीक्ष्णौष्ण है - (अ. ह्र. सू. 6/151)

(a) मद्य (b) क्षार
(c) मूत्र (d) लवण

प्र. 60. निम्न द्रव्य शुष्क अवस्था में सेवनीय हैं - (अ. ह्र. सू. 6/142)

(a) मूलक (b) लकुच
(c) सर्षप (d) बिल्व

प्र. 61. फलवर्ग में अवर हैं - (अ. ह्र. सू. 6/140)

(a) परूषक (b) ऐरावत
(c) लकुच (d) दंतशठ

प्र. 62. पक्वामल आम्र के गुण हैं - (अ. ह्र. सू. 6/128)

(a) वातहर (b) कफपित्तकर
(c) वातपित्तकर (d) कफशुक्रकर

प्र. 63. पूतिकरंज किसका पर्याय है - (अ. ह्र. सू. 6/98)

(a) वरूण (b) करंज
(c) चिरबिल्व (d) करवीर

प्र. 64. यथापूर्व मांस में गुरूता का सही क्रम हैं - (अ. ह्र. सू. 6/70)

(a) पृष्ठ > उरू > स्कन्ध > कटि > शिर > सक्थि
(b) स्कन्ध > उरू > शिर > कटि > पृष्ठ > सक्थि
(c) शिर > स्कन्ध > उरू > पृष्ठ > कटि > सक्थि
(d) उरू > स्कन्ध > कटि > शिर > पृष्ठ > सक्थि

प्र. 65. 'सद्यबलप्रदा' हैं - (अ. ह्र. सू. 6/88)

(a) सक्तु (b) मांसरस
(c) वेसवार (d) गण्ड

प्र. 66. औषध वर्ग किस आचार्य की मौलिक देन हैं।

(a) सुश्रुत (b) चरक
(c) हारीत (d) वाग्भट्ट

प्र. 67. निम्न फल को छोड़कर सभी कच्चे फल त्याज्य है। (अ. ह्र. सू. 6/142)

(a) आम (b) बिल्ब
(c) जामुन (d) द्राक्षा

उत्तरमाला

1. (c) 2. (d) 3. (c) 4. (d) 5. (a) 6. (c)

7.	(c)	8.	(b)	9.	(b)	10.	(a)	11.	(c)	12.	(b)
13.	(b)	14.	(c)	15.	(a)	16.	(b)	17.	(b)	18.	(d)
19.	(d)	20.	(b)	21.	(c)	22.	(d)	23.	(a)	24.	(d)
25.	(c)	26.	(b)	27.	(c)	28.	(b)	29.	(d)	30.	(a)
31.	(d)	32.	(b)	33.	(c)	34.	(a)	35.	(d)	36.	(b)
37.	(c)	38.	(a)	39.	(d)	40.	(b)	41.	(b)	42.	(c)
43.	(a)	44.	(c)	45.	(d)	46.	(a)	47.	(c)	48.	(b)
49.	(c)	50.	(a)	51.	(c)	52.	(d)	53.	(b)	54.	(a)
55.	(b)	56.	(c)	57.	(c)	58.	(d)	59.	(b)	60.	(a)
61.	(c)	62.	(d)	63.	(c)	64.	(c)	65.	(a)	66.	(d)
67.	(b)										

अध्याय - 7

प्र. 1. प्राणाचार्य का निवास स्थान कहा निर्देशित हैं - (अ. हृ. सू. 7/1)

(a) महानस में (b) राजगृहासन्ने

(c) आतुरालय में (d) राजगृह में

प्र. 2. विषयुक्त भात के निम्न लक्षण सत्य हैं - सिवाय (अ. हृ. सू. 7/3-4)

(a) चिरेण पच्यते (b) पक्को भवेत् पर्युषितोपम

(c) मयूर कण्ठतुल्योष्मा (d) सभी सत्य कथन हैं

प्र. 3. विषाक्त व्यंजन के क्वथित होने पर जल का वर्ण कैसा हो जाता है? (अ. हृ. सू. 7/5)

(a) हरित (b) श्याम

(c) नील (d) पीत

प्र. 4. फेनोर्ध्वराजीसीमन्त तन्तु बुद्बुद् संभव - किसके विषायुक्त होने का लक्षण हैं- (अ. हृ. सू. 7/6)

(a) मांसरस (b) भात

(c) क्षीर (d) व्यंजन

प्र. 5. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 7/7-8)

विषाक्त द्रव्य	**रेखा**
अ. मांसरस	**1. ताम्र**
ब. क्षीर	**2. पानीय सन्निभा**
स. दधि	**3. नील**
द. घृत	**4. श्याव**
न. तैल	**5. अरूण**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 4, द - 2, न - 5

(b) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 5, न - 2

(c) अ - 2, ब - 5, स - 3, द - 4, न - 1

(d) अ - 2, ब - 4, स - 5, द - 3, न - 1

प्र. 6. उचित मिलान करें (विषाक्त द्रव्य रेखा) (अ. हृ. सू. 7/7-8)

अ. तक्र	**1. काली**
ब. मस्तु	**2. असित**
स. तुषोदक	**3. कृष्ण**
द. मद्य व अम्भ	**4. कपोताभ**

(a) अ - 4, ब - 2, स - 3, द - 1 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1, द - 4

(c) अ – 2, ब – 4, स – 3, द – 1 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2, द – 4

प्र. 7. विषाक्तता के सभी लक्षण सत्य हैं – सिवाय – (अ. हृ. सू. 7/9)

(a) आम फल का पक्व होना (b) पक्व फल का कोथ (सड़ना)

(c) Both a & b (d) शुष्क द्रव्य में आर्द्रता होना

प्र. 8. विषदाता के लक्षण हैं – (अ. हृ. सू. 7/12)

(a) श्याव शुष्क मुख (b) स्वेद

(c) वेपथु (d) All

प्र. 9. विषाक्त अन्न की अग्नि में परीक्षा करने पर ज्वाला/धूम का वर्ण हो जाता है?– (अ. हृ. सू. 7/13)

(a) कपोताभं (b) धूसर

(c) शिखिकण्ठाभ (d) सभी

प्र. 10. उचित मिलान करें – विषाक्त अन्न की पशु/पक्षी द्वारा परीक्षा – (अ. हृ. सू. 7/14-15)

पशु/पक्षी	**प्रभाव**
अ. मक्षिका	**1. प्रस्खलति**
ब. काक	**2. क्षामस्वर**
स. शुक	**3. म्रियते**
द. हंस	**4. ग्लानि**
न. जीवञ्जीव	**5. उत्क्रोशन्ति**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 1, द – 4, न – 5

(b) अ – 1, ब – 3, स – 2, द – 5, न – 4

(c) अ – 2, ब – 1, स – 4, द – 3, न – 5

(d) अ – 3, ब – 2, स – 5, द – 1, न – 4

प्र. 11. अक्षिवैराग्यं लक्षण किस पशु/पक्षी में विषाक्त अन्न होने पर पाया जाता है – (अ. हृ. सू. 7/16)

(a) मार्जार (b) वानर

(c) चकोर (d) मयूर

प्र. 12. विषाक्त अन्न के स्पर्श करने से सभी लक्षण पाये जाते सिवाय – (अ. हृ. सू. 7/19-20)

(a) नखरोमच्युति (b) कण्डू

(c) दाह (d) सभी लक्षण मिलते

प्र. 13. मुखस्थित विष का लक्षण नहीं है – (अ. हृ. सू. 7/21)

(a) रोमहर्ष (b) चिमचिमायन

(c) हनुस्तम्भ (d) रसाज्ञत्वं

प्र. 14. बिन्दुभिश्चाचयोऽङ्गानां किस स्थानगत विष का लक्षण हैं – (अ. हृ. सू. 7/23)

(a) मुखगत विष (b) पक्वाशयगत विष
(c) आमाशयगत विष (d) None

प्र. 15. अनेक वर्ण का वमन होना लक्षण हैं- (अ. ह. सू. 7/24)

(a) मुखागत विष (c) Both A & B
(b) आमाशयगत विष (d) पक्वाशयगत विष

प्र. 16. आमाशयगत व पक्वाशयगत विष की क्रमशः चिकित्सा हैं - (अ. ह. सू. 7/26)

(a) विरेचन, वमन (b) वमन, वमन
(c) वमन, विरेचन (d) विरेचन, विरेचन

प्र. 17. विषयुक्त में हृदय के शोधन पश्चात् देय औषध - (अ. ह. सू. 7/27)

(a) 1 शाण हेमचूर्ण (b) 1 कर्ष हेमचूर्ण
(c) 1 शाण रजतचूर्ण (d) 1 कर्ष रजतचूर्ण

प्र. 18. विषमुक्त में हृद्विशोधनम् हेतु देय औषध (अ. ह. सू. 7/27)

(a) रजत भस्म व क्षौद्र (b) ताम्र भस्म व क्षौद्र
(c) रजत भस्म व घृत (d) स्वर्ण भस्म व घृत

प्र. 19. दुग्ध के साथ किस मत्स्य का सेवन विशेष वैरोधिक है - (अ. हृ. सू. 7/30)

(a) रोहित (b) चिलीचिम
(c) चुलूकी (d) शकरी

प्र. 20. आनूप मांस के साथ असेवनीय हैं - (अ. हृ. सू. 7/30)

(a) माष (b) क्षीर
(c) क्षौद्र (d) सभी

प्र. 21. दुग्ध के साथ विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/31)

(a) सर्व अम्ल द्रव्य (c) Both a & b
(b) मकुष्ठक (d) None

प्र. 22. वराह मांस के साथ कौन सा मांस विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/32)

(a) सेह मांस (b) Both
(c) पृसत मांस (d) None

प्र. 23. पृषत व कुक्कुट मांस किसके साथ सेवन करने पर विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/33)

(a) तक्र (b) दूध
(c) दधि (d) फल

प्र. 24. माषसूपेन ..... सह त्यजेत् रिक्त स्थान पूर्ति करें- (अ. हृ. सू. 7/34)

(a) गाजर (b) पालक
(c) मूलक (d) सभी

प्र. 25. अविमांस सेवन किसके साथ विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/34)

(a) कुसुम्भ शाक (b) कदली फल
(c) तालफल (d) सर्षप

प्र. 26. विस के साथ असेवनीय है - (अ. हृ. सू. 7/34)

(a) शूक धान्य (b) शिम्बी धान्य
(c) विरूढ़ धान्य (d) सभी

प्र. 27. लकुच फल के साथ किसका सेवन विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/34)

(a) माषसूप (b) गुड़
(c) क्षीर (d) All

प्र. 28. फलं ..... तक्रेण दध्ना तालफलेन वां किसके संदर्भ में विरूद्ध कहा गया। (अ. हृ. सू. 7/35)

(a) लकुच फल (b) माषसूप
(c) कदली फल (d) विष

प्र. 29. काकमाची किसके साथ असेवनीय हैं - (अ. हृ. सू. 7/35)

(a) कणा (पिप्पली) (c) Both a & b
(b) उषणा (मरिच) (d) दधि

प्र. 30. किस पात्र में 10 दिन तक रखा घृत त्याज्य हैं - (अ. हृ. सू. 7/37)

(a) ताम्र (b) लौह
(c) रजत (d) कांस्य

प्र. 31. कम्पिल्लक ..... साधित - विरूद्ध के सदंर्भ में रिक्त स्थान पूर्ति करें - (अ. हृ. सू. 7/37)

(a) तक्र साधित (b) दधि साधित
(c) क्षीर साधित (d) घृत साधित

प्र. 32. मधु के साथ सम भाग में विरूद्ध हैं - (अ. हृ. सू. 7/39)

(a) सर्पि (b) वसा, तैल
(c) जल (d) सभी

प्र. 33. मधु - घृत भिन्न मात्रा में होने पर भी किसके साथ असेवनीय हैं - (अ. हृ. सू. 7/40)

(a) आंतरिक्ष जल (b) कौप जल
(c) सारस जल (d) सभी

प्र. 34. तिल कल्क साधित्व उपोदिका के सेवन से उत्पन्न होता हैं - (अ. हृ. सू. 7/41)

(a) ज्वर (b) अतिसार
(c) छर्दि (d) रक्तपित्त

प्र. 35. यत्किञ्चितदोषमुत्कलेश्य न हरेत्तत्समासतः किसके सन्दर्भ में कहा गया हैं - (अ. हृ. सू. 7/45)

(a) आमविष (b) अध्यशन

(c) विरूद्ध आहार (d) गरविष

प्र. 36. विरूद्धाहार सेवन की चिकित्सा हैं - (अ. हृ. सू. 7/45)

(a) संशोधन (c) Both a & b

(b) विरोधी द्रव्यों का प्रयोग (d) None

प्र. 37. विरूद्ध भोजन किसके लिए पीडादायक नहीं हैं - (अ. हृ. सू. 7/47)

(a) नित्य व्यायामशील (b) स्निग्धभोजी

(c) दीप्ताग्नि (d) All

प्र. 38. पादेन ..... अभ्यस्तं पाद पादेन वा त्यजेत् किसके सेवन विधि हेतु वर्णित हैं - (अ. हृ. सू. 7/48)

(a) अपथ्य (b) भल्लातक सेवन

(c) पिप्पली सेवन (d) All

प्र. 39. क्रमोणापचिता दोषा : क्रमेणोपचिता गुणा : सूत्र किससे संबंधित हैं - (अ. हृ. सू. 7/50)

(a) वैरोधिक आहार (b) पादांशिक क्रम

(c) सात्म्य (d) प्रकृति

प्र. 40. वा. द्वारा त्रयस्तम्भ में वर्णित नहीं हैं - (अ. हृ. सू. 7/92) (CHAITSGARH MO 2009)

(a) आहार (b) ब्रह्मचर्य

(c) शयन (निद्रा) (d) अब्रह्मचर्य

प्र. 41. ..... ऽऽयतं सुखं दुखं पुष्टिः काश्र्य बलाबलम् सूत्र किस उपस्तम्भ के लिए कहा गया हैं - (अ. हृ. सू. 7/53)

(a) आहार (b) ब्रह्मचर्य

(c) निद्रा (d) Both A & B

प्र. 42. कालरात्रि समान कौन सी निद्रा को माना गया हैं - (अ. हृ. सू. 7/54)

(a) अकाल में निद्रा (b) निद्रा सेवन न करना

(c) अतिनिद्रा (d) सभी

प्र. 43. रात्रौ जागरण ..... दिवा स्वप्नं रिक्त स्थान पूर्ति करे। (अ. हृ. सू. 7/55)

(a) रूक्ष, स्निग्ध (b) रूक्ष, रूक्ष

(c) स्निग्ध, रूक्ष (d) None

प्र. 44. ..... त्वासीनप्रचलायितम्। रिक्त स्थान की पूर्ति करें - (अ. हृ. सू. 7/55)

(a) रूक्षं (b) अरूक्षमनभिष्यन्दि

(c) स्निग्ध (d) अभिष्यान्दि

प्र. 45. ग्रीष्म ऋतु के अतिरिक्त दिवास्वपन की दोष कार्मूकता हैं - (अ. हृ. सू. 7/57) (NIA LEC. 2010)

(a) कफपित्तकर (b) वातपित्तकर

(c) त्रिदोषकर (d) वातकफहर

प्र. 46. ग्रीष्म ऋतु में भी दिवाशयन किसे निषेध हैं - (अ. हृ. सू. 7/60)

(a) बहुः मेद कफाः (c) Both a & b
(b) नित्य स्नेही (d) None

प्र. 47. रात्रि में भी निद्रा सेवन वर्ज्य हैं - (अ. हृ. सू. 7/60)

(a) स्निग्धभोजी (b) कण्ठ रोगी
(c) विष रोगी (d) Both a & c

प्र. 48. अकाल शयन के उत्पन्न रोग हैं - (अ. हृ. सू. 7/61)

(a) शिरोरूक् (b) पीनस
(c) ज्वर (d) सभी

प्र. 49. अकाल शयन जनित रोगों में चिकित्सा कर्म हैं - (अ. हृ. सू. 7/62)

(a) वमन (b) विरेचन
(c) नावन (d) Both a & b

प्र. 50. निद्रानाश से जनित विकार हैं - (अ. हृ. सू. 7/64)

(a) वातज रोग (b) Both a & b
(c) पित्तज रोग (d) None

प्र. 51. अतिनिद्रा में निर्देशित कर्म हैं - (अ. हृ. सू. 7/65)

(a) लंघन (b) चिंता
(c) विरेचन (d) Both A & C

प्र. 52. रात्रि जागरण असात्म्य होने पर दिन में शयन कितना निर्देशित हैं - (अ. हृ. सू. 7/65)

(a) रात्रि का अर्ध समय (b) रात्रि के समान समय
(c) रात्रि का चौथाई समय (d) दिवाशयन वर्ज्य हैं

प्र. 53. अनिद्रा में हितकर हैं - (अ. हृ. सू. 7/66-67)

(a) मनोऽनुकूल विषय (b) मद्य
(c) क्षीर (d) सभी

प्र. 54. स्त्री सेवन के संदर्भ में सत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 7/73)

(a) वसन्त व शरद ऋतु में 3 दिन छोड़कर स्त्री सेवन करना चाहिए।
(b) वर्षा व ग्रीष्म में 25 दिन छोड़कर स्त्री सेवन करना चाहिए।
(c) दोनों कथन सत्य हैं
(d) दोनों कथन असत्य हैं

प्र. 55. शीतकाल में स्त्री सेवन निर्देशित हैं - (अ. हृ. सू. 7/73)

(a) वाजीकरण से तृप्त होने पर इच्छानुसार स्त्री सेवन करना चाहिए।
(b) 2 दिन कें अतंराल पर स्त्री सेवन करना चाहिए।
(c) Both
(d) None

प्र. 56. स्त्री सेवन विधि का पालन न करने से उत्पन्न होता हैं। (अ. हृ. सू. 7/74)

(a) धातु क्षय (c) Both a & b

(b) अपर्व मरण (d) None

प्र. 57. नियमित स्त्री सेवन से लाभ होते हैं। (अ. हृ. सू. 7/75)

(a) स्मृति (b) आरोग्य

(c) पुष्टि (d) सभी

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(d)	3.	(b)	4.	(d)	5.	(a)	6.	(c)
7.	(d)	8.	(d)	9.	(c)	10.	(d)	11.	(c)	12.	(d)
13.	(a)	14.	(c)	15.	(d)	16.	(c)	17.	(a)	18.	(b)
19.	(b)	20.	(d)	21.	(c)	22.	(a)	23.	(c)	24.	(c)
25.	(a)	26.	(c)	27.	(d)	28.	(c)	29.	(c)	30.	(d)
31.	(a)	32.	(d)	33.	(a)	34.	(b)	35.	(c)	36.	(c)
37.	(d)	38.	(a)	39.	(b)	40.	(b)	41.	(c)	42.	(d)
43.	(a)	44.	(b)	45.	(a)	46.	(c)	47.	(d)	48.	(d)
49.	(d)	50.	(a)	51.	(d)	52.	(a)	53.	(d)	54.	(c)
55.	(a)	56.	(c)	57.	(d)						

अध्याय - 8

प्र. 1. ..... सर्वकालं स्यात् ..... ह्यग्रेः प्रवर्तिका रिक्त स्थान पूर्ति करें। (अ. हृ. सू. 8/1)

(a) हिताशी, काल (b) हिताशी, मात्रा

(c) मात्राशी, ऋतु (d) मात्राशी, मात्रा

प्र. 2. गुरू द्रव्यों को कितनी मात्रा तक सेवन का विधान अ. हृ. में मिलता हैं। (अ. हृ. सू. 8/2)

(a) अर्धसौहित्यं पर्यन्त (b) सौहित्य पर्यन्त

(c) नातितृप्तता पर्यन्त (d) None

प्र. 3. अति अल्प भोजन सेवन से उत्पन्न हानि हैं। (अ. हृ. सू. 8/3)

(a) वात रोग (b) ओज हानि

(c) बल हानि (d) सभी

प्र. 4. अति भोजन सेवन से दोष कार्मुकता निम्न हैं। (अ. हृ. सू. 8/4)

(a) श्लेष्म प्रकोपक (b) पित्त प्रकोपक

(c) सर्वदोष प्रकोपक (d) None

प्र. 5. आम दोष द्वारा दूषित अन्न का उर्ध्व - अधो से प्रवृत्ति होना कहलाता हैं। (अ. हृ. सू. 8/5)

(a) अलसक (b) विसूचिका

(c) दण्डालसक (d) Both A & B

प्र. 6. आहारो न च पच्यते आमाशयेऽलसीभूतेन सो ..... स्मृतः सूत्र पूरा करें। (अ. हृ. सू. 8/6)

(a) अलसक (b) Both

(c) विसूचिका (d) None

प्र. 7. सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति ..... पूरा करें। (अ. हृ. सू. 8/7)

(a) अलसक (b) दण्डालसक

(c) विसूचिका (d) None

प्र. 8. विसूचिका के उपद्रव के संदर्भ में उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 8/9)

दोष	**उपद्रव**
अ. वात	**1. वाक्सङ्ग**
ब. पित्त	**2. आनाह**
स. कफ	**3. अतिसार**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1

(c) अ - 2, ब - 1, स - 3 (d) अ - 3, ब - 1, स - 2

प्र. 9. मात्रा ..... अपेक्षन्ते? रिक्त स्थान को पूरा करें। - (अ. हृ. सू. 8/1)

(a) कर्म (b) द्रव्य
(c) काल (d) अग्नि

प्र. 10. लघु द्रव्यों का सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 8/2)

(a) नातितृप्त (b) सौहित्य पर्यत
(c) अर्ध सौहित्य पर्यत (d) अतृप्त

प्र. 11. अतिमात्रा में भोजन सेवन करने से त्रिदोष प्रकोप के फलस्वरूप उत्पन्न होना हैं - (अ. हृ. सू. 8/6, 7)

(a) अलसक (c) प्रमेह
(b) विसूचिका (d) Both a & b

प्र. 12. प्रयाति नोर्ध्व नाद्यस्तादाहारो न च पच्यते लक्षण हैं - (अ. हृ. सू. 8/6)

(a) आनाह (b) अलसक
(c) आध्मान (d) अजीर्ण

प्र. 13. शूलादीन् कुरूते तीवृांश्छर्धतीव्रास्छर्धतीसारर्वर्जितान् लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 8/11)

(a) आध्मान (b) विसूचिका
(c) अलसक (d) आनाह

प्र. 14. निम्न में आशुकारी व त्यजेत् हैं - (अ. हृ. सू. 8/12)

(a) अलसक (b) दण्डालसक
(c) विसूचिका (d) Both A & C

प्र. 15. निम्न में कौन विरूद्धोपक्रम होने से अचिकित्स्य हैं। - (अ. हृ. सू. 8/14)

(a) अलसक (b) सर्पविष
(c) आमविष (d) ग्रहणी

प्र. 16. अलसक में चिकित्सा का क्रम हैं - (अ. हृ. सू. 8/15-16)

(a) वमन - स्वेदन - फलवर्ति - स्विन्न अंगो का वेष्टन
(b) स्वेदन - वमन - फलवर्ति - स्विन्न अंगों को वेष्टन
(c) स्वेदन - स्विन्न अंगों को वेष्टन - फलवर्ति - वमन
(d) फलवर्ति - स्वेदन - वमन - स्विन्न अंगो का वेष्टन

प्र. 17. पार्ष्णिदाह किस व्याधि में निर्दिष्ट हैं - (अ. हृ. सू. 8/17)

(a) गृध्रसी (b) जानुभेद
(c) पक्षाघात (d) विसूचिका

प्र. 18. विसूचिका का उपचार किसके समान करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 8/17)

(a) स्वेदवत् (b) विरिक्तवत्
(c) वमनवत् (d) स्नेहवत्

प्र. 19. तीव्र पीड़ा होने पर भी शूलघ्न औषध किस व्याधि में वर्जित हैं। (अ. हृ. सू. 8/18)

(a) अजीर्ण (b) दण्डालसक

(c) विसूचिका (d) आम विष

प्र. 20. अजीर्ण में औषध सेवन का काल निर्दिष्टि हैं। (अ. हृ. सू. 8/19)

(a) आहार के प्रथम ग्रास में (b) अभक्त

(c) आहार के जीर्ण होने पर (d) आहार के मध्य

प्र. 21. आमजन्य विकृति में निर्दिष्ट उपक्रम हैं। (अ. हृ. सू. 8/20)

(a) संतर्पण (b) अपतर्पण

(c) शोधन (d) सभी

प्र. 22. तत्राल्पे ..... पथ्यं, मध्ये ..... प्रभूते ..... आम दोष चिकित्सा के संदर्भ में रिक्त स्थान में सही क्रम हैं - (अ. हृ. सू. 8/21)

(a) शोधन, लंघन, पाचन (b) लंघनपाचन, शोधन, लंघन

(c) लंघन, लंघनपाचन, शोधन (d) शेधन, पाचन, लंघन

प्र. 23. आमदोष की चिकित्सा में हेतु विपर्यय से दोष पूर्णशमन न होने पर निर्दिष्ट चिकित्सा हैं - (अ. हृ. सू. 8/23)

(a) स्वेदन (b) व्याधिविपर्यय

(c) वस्ति (d) व्याधिविपरीतार्थकारि

प्र. 24. शोफोऽक्षिगण्डयो लक्षण हैं - (अ. हृ. सू. 8/25)

(a) आमाजीर्ण (b) विष्टब्धाजीर्ण

(c) विदग्धाजीर्ण (d) None

प्र. 25. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 8/25-26)

अजीर्ण	**उद्‌गार**
अ. आमाजीर्ण	**1. शुद्ध उद्‌गार**
ब. विदग्धाजीर्ण	**2. सद्योभक्त दिवा उद्‌गार**
स. रसशोषाजीर्ण	**3. अम्ल उद्‌गार**

(a) अ - 3, ब - 2, स - 1 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ - 3, ब - 1, स - 2 (d) अ - 2, ब - 3, स - 1

प्र. 26. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 8/27)

अजीर्ण	**चिकित्सा**
अ. आमाजीर्ण	**1. अभक्त दिवा शयन (BHU 2007)**
ब. विष्टब्धाजीर्ण	**2. लंघन (RPSC MO 2011)**
स. विदग्धाजीर्ण	**3. वमन**
द. रसशेषाजीर्ण	**4. स्वेदन**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 2, द - 4 (b) अ - 1, ब - 2, स - 4, द - 3

(c) अ - 2, ब - 4, स - 3, द - 1 (d) अ - 4, ब - 3, स - 2, द - 1

प्र. 27. अतिशय रूप से लीन हुए आमदोष से उत्पन्न व्याधि - (अ. हृ. सू. 8/28)

(a) अलसक (b) विसूचिका

(c) विलम्बिका (d) दण्डालसक

प्र. 28. विलम्बिका में दोष - (अ. हृ. सू. 8/28)

(a) त्रिदोष अनुबंध (b) कफवात अनुबंध

(c) कफपित्त अनुबंध (d) पित्तवात अनुबंध

प्र. 29. अश्रृद्धा ह्वयथा शुद्धेऽप्युद्गारे - लक्षण हैं - (अ. हृ. सू. 8/29)

(a) रसशेषाजीर्ण (b) विदग्धाजीर्ण

(c) आमाजीर्ण (d) विष्टब्धाजीर्ण

प्र. 30. विबन्धोऽतिप्रवृतिर्वा किस व्याधि का लक्षण हैं - (अ. हृ. सू. 8/30)

(a) अजीर्ण (b) ग्रहणी

(c) आनाह (d) आमविष

प्र. 31. अजीर्ण का सामान्य लक्षण नहीं हैं - (अ. हृ. सू. 8/30)

(a) विष्टम्भ (b) शिरोरूजा

(c) ग्लानि (d) मारूत मूढ़ता

प्र. 32. मिश्रं पथ्यमपथ्यं च भुक्तं ..... मतम् पूरा करें - (अ. हृ. सू. 8/31)

(a) अध्यशन (b) विषमाशन

(c) समशन (d) Both A & B

प्र. 33. अकाले बहु चाल्पं वा भुक्तं सूत्र पूरा करें - (अ. हृ. सू. 8/34)

(a) समशन (b) विषमाशन

(c) अध्यशन (d) None

प्र. 34. भुक्तस्योपरि भोजनम् - (अ. हृ. सू. 8/34) सूत्र पूरा करे।

(a) अध्यशन (b) समशन

(c) विषमाशन (d) सभी

प्र. 35. आचार्य वा. ने भोजन के विधान में कहा हैं - (अ. हृ. सू. 8/36)

(a) षड्रसं लवणप्रायं (b) षड्रसं अम्लप्रायं

(c) षड्रसं तिक्तप्रायं (d) षड्रसं मधुरप्रायं

प्र. 36. त्रिव्यप्येतानि मृत्युं वां घोरान् व्याधीन् सृजन्ति वा किसके संदर्भ में कहा गया - (अ. हृ. सू. 8/34)

(a) मद, मोह, मूर्च्छा

(b) समशन, अध्यशन, विषमाशन

(c) अलसक, विसूचिका, विलम्बिका

(d) आमाजीर्ण, विष्टब्धाजीर्ण, विदग्धाजीर्ण

प्र. 37. निम्न में किसका अधिक अभ्यास नहीं करना चाहिए- (अ. हृ. सू. 8/40-41)

(a) दधि (b) मांस

(c) बिस (d) सभी

प्र. 38. निरंतर सेवनीय हैं - (अ. हृ. सू. 8/42-43)

(a) किलाट (b) यवक
(c) यव (d) क्षार

प्र. 39. सभी नित्य सेवनीय हैं सिवाय - (अ. हृ. सू. 8/44)

(a) शुक्त (b) सुनिषण्णक
(c) पटोल (d) वास्तुक

प्र. 40. नेत्रबल हेतु निर्दिष्ट स्वस्थानुवर्तन योग हैं - (अ. हृ. सू. 8/44)

(a) रात्रि में मधुघृत + त्रिफला चूर्ण (b) प्रातः में मधुघृत + त्रिफला चूर्ण
(c) प्रातः में घृत + त्रिफला चूर्ण (d) रात्रि में मधु + त्रिफला चूर्ण

प्र. 41. वा. अनुसार भोजन को आदि, मध्यम व अंत का सही क्रम हैं - (अ. हृ. सू. 8/45)

(a) लघु - रूक्ष - कटु लवण - मधुर अम्ल गुरू
(b) अम्ल लवण - गुरू, मधुर - लघु कटु
(c) गुरू स्निग्ध, स्वादु - अम्ल लवण - लघु रूक्ष कटु
(d) गुरू स्निग्ध - लघु रूक्ष - अम्ल लवण

प्र. 42. भोजन प्रमाण के संदर्भ में सत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 8/46)

(a) अन्न - कुक्षि 2 भाग (b) द्रव - कुक्षि 1 भाग
(c) दोषादि - कुक्षि 1 भाग (d) सभी सत्य हैं

प्र. 43. चतुर्विध कुक्षि भाग किस आचार्य की देन हैं - (अ. हृ. सू. 8/46)

(a) सुश्रुत (b) वाग्भट्ट
(c) चक्रपाणि (d) None

प्र. 44. मधु सेवन पश्चात अनुपान हैं - (अ. हृ. सू. 8/48)

(a) कोष्ण जल (b) कांजी
(c) शीतल जल (d) मस्तु

प्र. 45. ..... कृशानां पुष्टयर्थ रिक्त स्थान पूर्ति करें - (अ. हृ. सू. 8/49)

(a) मांसरस (b) पयः
(c) मद्य (d) सुरा

प्र. 46. उचित मिलान करें- (अ. हृ. सू. 8/47-50)

पदार्थ/स्थिति	**अनुपान**
अ. दधि	**1. कोष्ण जल**
ब. पिष्टमय पदार्थ	**2. मांसरस**
स. शाक	**3. शीतल जल**
द. अग्निमाद्यं	**4. मद्य**
न. शोषी	**5. मस्तु**

(a) अ - 1, ब - 5, स - 3, द - 2, न - 4
(b) अ - 3, ब - 5, स - 4, द - 1, न - 2
(c) अ - 3, ब - 1, स - 5, द - 4, न - 2

(d) अ – 2, ब – 3, स – 5, द – 1, न – 4

प्र. 47. स्थूलानां तु ..... किस अनुपान का वर्णन हैं – (अ. हृ. सू. 8/49)

(a) मधूदकं (b) त्रिफला जल
(c) सारोदकं (d) लवणोदक

प्र. 48. क्षीणेवृद्धे च वाले च पथ्यं यथाऽमृतं रिक्त स्थान पूर्ति करें – (अ. हृ. सू. 8/50)

(a) मद्यं (b) तक्रं
(c) घृत (d) पयं

प्र. 49. प्रशस्त अुनपान हैं – (अ. हृ. सू. 8/51)

(a) अन्न के विपरीत गुण परंतु विरोधि
(b) अन्न के समान गुण परन्तु अविरोधि
(c) अन्न के विपरीत गुण परन्तु अविरोधि
(d) अन्न के सम गुण परन्तु विरोधि

प्र. 50. ..... करोति ऊर्जा तृप्ति व्याप्तिं दृढाङ्गताम् स्थित स्थान पूर्ति करें – (अ. हृ. सू. 8/52)

(a) व्यायाम (b) मांसरस
(c) घृतपान (d) अनुपान

प्र. 51. अनुपान के उपयोगी नहीं हैं – (अ. हृ. सू. 8/53) (AIIA LEC 2021)

(a) कास – श्वास (b) उर्ध्वजत्रुगत रोगी
(c) हिक्का (d) सभी

प्र. 52. पान के अयोग्य रोगी हैं – (अ. हृ. सू. 8/53)

(a) अक्षि रोगी (b) मेहरोगी
(c) व्रण रोगी (d) सभी

प्र. 53. अनुपान पश्चात् त्याज्य हैं – (अ. हृ. सू. 8/54)

(a) अध्वगमन (b) शयन
(c) भाष्य (d) सभी

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(a)	3.	(d)	4.	(c)	5.	(b)	6.	(a)
7.	(c)	8.	(b)	9.	(b)	10.	(a)	11.	(d)	12.	(b)
13.	(c)	14.	(b)	15.	(c)	16.	(a)	17.	(d)	18.	(b)
19.	(a)	20.	(c)	21.	(b)	22.	(c)	23.	(b)	24.	(a)
25.	(d)	26.	(c)	27.	(c)	28.	(b)	29.	(a)	30.	(a)
31.	(b)	32.	(c)	33.	(b)	34.	(a)	35.	(b)	36.	(d)
37.	(d)	38.	(c)	39.	(a)	40.	(a)	41.	(c)	42.	(d)
43.	(b)	44.	(c)	45.	(d)	46.	(c)	47.	(a)	48.	(d)
49.	(c)	50.	(d)	51.	(d)	52.	(d)	53.	(d)		

अध्याय - 9

प्र. 1. ..... रसादीनां श्रेष्ठं ते हि तदाश्रयाः। रिक्त स्थान पूर्ति करें - (अ. हृ. सू. 9/1)

(a) गुण (b) वीर्य

(c) द्रव्य (d) विपाक

प्र. 2. पंचभूतात्मकं तत्तु क्ष्मायाधिष्ठाय जायते में क्ष्म से अभिप्राय हैं - (अ. हृ. सू. 9/1) (GPSC LEC 2018)

(a) जल (b) पृथ्वी

(c) आकाश (d) अग्नि

प्र. 3. वा. अनुसार द्रव्य की योनि हैं - (अ. हृ. सू. 9/1) (NIA LEC 2020)

(a) अग्नि (b) अम्बु

(c) पृथ्वी (d) आकाश

प्र. 4. द्रव्य की निर्वृत्ति विशेष में कारणभूत महाभूत हैं - (अ. हृ. सू. 9/1)

(a) अग्नि, जल, आकाश (b) पृथ्वी जल अग्नि

(c) पवन, अग्नि, जल (d) अग्नि वायु आकाश

प्र. 5. व्यपेदशस्तु भूयसा का संदर्भ हैं - (अ. हृ. सू. 9/2)

(a) अ. हृ. सू. 9/2 (b) अ. हृ. सू. 15/6

(c) अ. हृ. सू. 6/5 (d) अ. हृ. सू. 12/9

प्र. 6. अव्यक्तो ..... किञ्चिदन्ते व्यक्तोऽपि चेष्यते। किसके संदर्भ में कहा गया - (अ. हृ. सू. 9/3)

(a) रस (b) गुण

(c) अनुरस (d) वीर्य

प्र. 7. निम्न में से भूतसंघात सम्भवात् हैं - (अ. हृ. सू. 9/3)

(a) रस (b) वीर्य

(c) द्रव्य (d) विपाक

प्र. 8. 'संघातोपचयावहं' यह कर्म किस द्रव्य का हैं - (अ. हृ. सू. 9/5)

(a) पार्थिव द्रव्य (b) जलीय द्रव्य

(c) आकाशीय द्रव्य (d) सभी द्रव्य

प्र. 9. किस द्रव्य में द्रव व सांद्र दोनो गुण पाये जाते हैं- (अ. हृ. सू. 9/6)

(a) आकाशीय द्रव्य (b) जलीय द्रव्य

(c) आग्नेय द्रव्य (d) पार्थिक द्रव्य

प्र. 10. जगत्येवमनौषधम् संदर्भ हैं - (अ. हृ. सू. 9/10)

(a) अ. ह. सू. 10 (b) अ. ह. सू. 8
(c) अ. ह. सू. 9 (d) अ. ह. सू. 11

प्र. 11. संसार का प्रत्येक द्रव्य किस प्रकार से औषध रूप हैं - (अ. ह. सू. 9/10)

(a) प्रत्यक्ष व युक्ति (b) प्रत्यक्ष व अर्थ (प्रयोजन)
(c) स्वभाव व प्रत्यक्ष (d) युक्ति व अर्थ (प्रयोजन)

प्र. 12. तत् क्रियते येन या क्रिया - किस संदर्भ में कहा गया हैं - (अ. ह. सू. 9/13)

(a) गुण (b) रस
(c) वीर्य (d) प्रभाव

प्र. 13. शीतवीर्य का कर्म इसमें से नहीं हैं - (अ. ह. सू. 9/19)

(a) ग्लानि (b) प्रसादं
(c) जीवनं (d) स्तम्भं

प्र. 14. जाठरेणग्निना योगद्यदुदेति रसान्तरम् रसानां परिणामान्ते स ..... इति स्मृत पूरा करें। (अ. ह. सू. 9/20)

(a) द्रव्य (b) विपाक
(c) अग्नि (d) वीर्य

प्र. 15. वा. ने कितने विपाक का वर्णन किया - (अ. ह. सू. 9/21)

(a) 2 (b) 4
(c) 3 (d) 1

प्र. 16. लवणरस का विपाक होता हैं - (अ. ह. सू. 9/21) (NIA LEC 2020)

(a) तिक्त (b) अम्ल
(c) कटु (d) मधुर

प्र. 17. निम्न में किस विपाक का वर्णन वा. ने नहीं किया हैं - (अ. ह. सू. 9/21)

(a) तिक्त (b) अम्ल
(c) मधुर (d) कटु

प्र. 18. 'रसैरसो तुल्यफलस्तत्र द्रव्यं शुभाशुभम्' द्रव्यं शुभाशुभम् किसके लिये वर्णित हैं - (अ. ह. सू. 9/21)

(a) रस (b) विपाक
(c) गुण (d) वीर्य

प्र. 19. रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् ..... किसका संदर्भ हैं - (अ. ह. सू. 9/25)

(a) विपाक (b) रस
(c) प्रभाव (d) द्रव्य

प्र. 20. विचित्र प्रत्यायरब्ध अवधारणा किसकी प्रथम देन हैं - (अ. ह. सू. 9/27)

(a) चरक संहिता (b) अष्टांग हृदय

(c) सुश्रुत संहिता (d) भाव प्रकाश

प्र. 21. बलसात्म्य होने पर द्रव्य के रस, विपाक, वीर्य, प्रभाव की पराभूत का सही क्रम हैं - (अ. ह्र. सू. 9/25)

(a) रस < विपाक < प्रभाव < वीर्य (b) रस < विपाक < वीर्य < प्रभाव

(c) वीर्य < रस < प्रभाव < विपाक (d) रस < वीर्य < विपाक < प्रभाव

प्र. 22. विचित्र प्रत्यायारब्ध द्रव्य हैं - (अ. ह्र. सू. 9/28)

(a) यव (b) गोधूम

(c) मत्स्य (d) Both a & b

प्र. 23. निम्न में से विचित्र प्रत्यायारब्ध द्रव्य है। (अ. ह्र. सू. 9/28)

(a) सिंह (b) गोधूम

(c) दूध (d) प्रियंगु

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(b)	3.	(b)	4.	(d)	5.	(a)	6.	(c)
7.	(c)	8.	(a)	9.	(b)	10.	(c)	11.	(d)	12.	(c)
13.	(b)	14.	(a)	15.	(c)	16.	(d)	17.	(a)	18.	(b)
19.	(c)	20.	(b)	21.	(b)	22.	(d)	23.	(a)		

अध्याय - 10

प्र. 1. मधुर रस के संदर्भ में असत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 10/2)

(a) वक्त्रमनुलिम्पति (b) अक्षप्रसादन
(c) दन्तहर्ष (d) पिपीलिका प्रिय

प्र. 2. मुख क्षालन कर्म किस रस का हैं - (अ. हृ. सू. 10/3)

(a) मधुर रस (b) अम्ल रस
(c) लवण रस (d) तिक्त रस

प्र. 3. कपोलगलदाहकृत - कर्म निम्न रस का हैं - (अ. हृ. सू. 10/3) (BHU MD 2017)

(a) लवण रस (b) अम्ल रस
(c) Both a & b (d) कषाय रस

प्र. 4. रसनं प्रतिहन्ति - किस रस का कर्म हैं - (अ. हृ. सू. 10/4)

(a) लवण रस (b) कषाय रस
(c) अम्ल रस (d) तिक्त रस

प्र. 5. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 10/2-5)

रस		कर्म
अ. मधुर रस	**1.**	**स्रावयत्याक्षिनासास्यं कपोलौ दहतीवं च**
ब. अम्ल रस	**2.**	**स्यन्दयत्यास्यं**
स. लवण रस	**3.**	**वक्त्रमनुलिम्पति**
द. कषाय रस	**4.**	**अक्षिभ्रुवनिकोचन**
न. कटु रस	**5.**	**जड़योज्जिह्वां**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2, द - 5, न - 4
(b) अ - 3, ब - 4, स - 1, द - 5, न - 2
(c) अ - 3, ब - 4, स - 2, द - 5, न - 1
(d) अ - 2, ब - 4, स - 3, द - 1, न - 5

प्र. 6. स्तन्यसन्धानकृद् रस हैं - (अ. हृ. सू. 10/8)

(a) लवण रस (b) कटु रस
(c) मधुर रस (d) तिक्त रस

प्र. 7. उष्णवीर्यो हिमस्पर्श - किस रस के संदर्भ में कथन हैं - (अ. हृ. सू. 10/10)

(a) मधुर रस (b) कटु रस
(c) तिक्त रस (d) अम्ल रस

प्र. 8. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 10/2-6)

	रस		व्याधि
अ.	मधुर रस	1.	धातुक्षया निलव्याधीन करोति
ब.	अम्ल रस	2.	कार्श्यपौरूषभ्रंश
स.	लवण रस	3.	मेदः श्लेष्मजान् गदान्
द.	तिक्त रस	4.	कुष्ठविषविसर्प जनयेत्
न.	कषाय रस	5.	कुर्यात् शैथिल्यं तिमिरं भ्रमम्

(a) अ - 3, ब - 5, स - 4, द - 1, न - 2
(b) अ - 3, ब - 5, स - 1, द - 4, न - 2
(c) अ - 5, ब - 1, स - 3, द - 2, न - 3
(d) अ - 3, ब - 1, स - 5, द - 4, न - 2

प्र. 9. कटु रस के संदर्भ में सत्य नहीं हैं - (अ. हृ. सू. 10/17 - 19)

(a) दीपन-पाचन (b) खलति पलितं वालिम्
(c) शुक्रबलक्षय (d) Both a & b

प्र. 10. ग्राही कर्म किस रस का हैं- (अ. हृ. सू. 10/21)

(a) मधुर रस (b) अम्ल रस
(c) लवण रस (d) कषाय रस

प्र. 11. शोथ कारक व शोथनाशक रस हैं क्रमशः (अ. हृ. सू. 10/10 - 17)

(a) कटु, अम्ल (b) लवण, अम्ल
(c) अम्ल, कटु (d) अम्ल, लवण

प्र. 12. हृद्य रस हैं - (अ. हृ. सू. 10/10)

(a) मधुर रस (b) अम्ल रस
(c) तिक्त रस (d) कषाय रस

प्र. 13. त्वकप्रसादन कर्म किस रस का हैं - (अ. हृ. सू. 10/21)

(a) तिक्त (b) मधुर
(c) कषाय (d) Both b & c

प्र. 14. छिनन्ति बंधान् स्रोतांसि विवृणोति कफापहः किस रस का कर्म हैं - (अ. हृ. सू. 10/18) (NIA LEC 2020)

(a) कटु रस (b) कषाय रस
(c) तिक्त रस (d) None

प्र. 15. उदर्द नाशक रस हैं - (अ. हृ. सू. 10/17)

(a) कषाय रस (b) कटु रस

(c) तिक्त रस (d) लवण रस

प्र. 16. उचित मिलान करें – (अ. हृ. सू. 10/10-21)

	रस		कर्म
अ.	**कषाय रस**	**1.**	**मूढवातानुलोमन**
ब.	**कटु रस**	**2.**	**स्वयमरोचिष्णुररूचिं**
स.	**अम्ल रस**	**3.**	**स्रोतोरोधमल ग्रहान्**
द.	**तिक्त रस**	**4.**	**कटिपृष्ठादिषु व्यथाम्**

(a) अ – 1, ब – 3, स – 4, द – 2 (b) अ – 3, ब – 4, स – 1, द – 2
(c) अ – 4, ब – 1, स – 3, द – 2 (d) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2

प्र. 17. क्लेद व मेद शोषण कर्म किस रस का हैं – (अ. हृ. सू. 10/15, 17, 20)
(a) तिक्त रस (b) कषाय रस
(c) कटु रस (d) सभी

प्र. 18. अम्ल वर्ग में निम्न में किस धातु का वर्णन हैं – (अ. हृ. सू. 10/26) (PGET 2019)
(a) स्वर्ण (b) यशद
(c) रजत (d) नाग

प्र. 19. रसों की उत्तरोत्तर लघुता के आधिक्य का सही क्रम हैं – (अ. हृ. सू. 10/38)
(a) अम्ल < कटु < तिक्त (b) तिक्त < अम्ल < कटु
(c) तिक्त < कटु < अम्ल (d) कटु < तिक्त < अम्ल

प्र. 20. मधुर रस होते हुए भी श्लेष्मल नहीं हैं – (अ. हृ. सू. 10/33)
(a) मधु (b) जांगल माँस
(c) सिता (d) सभी

प्र. 21. अम्ल द्रव्य जो पितवर्धक नहीं हैं – (अ. हृ. सू. 10/33)
(a) दाडिम (c) आमलकी
(b) बिजौरा (d) Both a & c

प्र. 22. अक्षि के लिए पथ्य लवण हैं – (अ. हृ. सू. 10/34)
(a) पांसुज (b) रोमक
(c) सैंधव (d) सौवर्चल

प्र. 23. तिक्त द्रव्य होते हुए भी अवृष्य व वातप्रकोपक नहीं हैं – (अ. हृ. सू. 10/35)
(a) गुडुची (c) Both a & b
(b) परवल (d) कुटकी

प्र. 24. कटु व तिक्त द्रव्य अवृष्य व वातप्रकोपक होते हैं सिवाय – (अ. हृ. सू. 10/35)
(a) अमृता (b) शुण्ठी
(c) रसोन (d) सभी

प्र. 25. कषाय रस होने पर कभी निम्न द्रव्य शीत स्तम्भन नहीं करता – (अ. हृ. सू. 10/35)
(a) खदिर (b) विभीतक

(c) शिरीष (d) हरीतकी

प्र. 26. रसों के संयोग व कल्पना क्रमशः हैं - (अ. हृ. सू. 10/39) (NIA LEC 2020)

(a) 63, 57 (b) 57, 57

(c) 57, 63 (d) 58, 63

प्र. 27. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 10/40 - 42)

	रस		संयोग
अ.	**लवण रस द्विक संयोग**	**1.**	**1**
ब.	**अम्ल रस त्रिक संयोग**	**2.**	**10**
स.	**मधुर रस चतुष्क संयोग**	**3.**	**6**
द.	**लवण रस चतुष्क संयोग**	**4.**	**3**

(a) अ - 4, ब - 3, स - 1, द - 2 (b) अ - 3, ब - 1, स - 2, द - 4

(c) अ - 4, ब - 3, स - 2, द - 1 (d) अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 2

प्र. 28. 'दोषभेषजवशादुपयोज्याः' किसके संदर्भ में कहा गया हैं - (अ. हृ. सू. 10/44)

(a) रस (b) देश

(c) द्रव्य (d) काल

प्र. 29. कुरूते सोडतियोगेन तृष्णां शुक्रबलक्षयम्। मूर्च्छामाकुञ्चनं कम्पं कटिपृष्ठादिषु व्याथाम्। उपरोक्त श्लोक में रस के अतिसेवन के परिणामों का वर्णन है - (अ. हृ. सू. 10/19) (BHU MD 2016)

(a) तिक्त (b) कटु

(c) कषाय (d) लवण

प्र. 30. हृच्छूल में कषाय रस द्रव्यों का ऐकान्तिक प्रयोग करने से - (अ. हृ. सू. 10/21) (CCRAS 2016)

(a) हृच्छूल बढ जाता है (b) हृच्छूल कम होता है

(c) हृच्छूल कम होता है (d) हृच्छूल अप्रभावित रहता है

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(b)	3.	(a)	4.	(d)	5.	(c)	6.	(c)
7.	(d)	8.	(a)	9.	(b)	10.	(d)	11.	(c)	12.	(b)
13.	(c)	14.	(a)	15.	(b)	16.	(b)	17.	(d)	18.	(c)
19.	(a)	20.	(d)	21.	(d)	22.	(c)	23.	(c)	24.	(d)
25.	(d)	26.	(c)	27.	(c)	28.	(a)	29.	(b)	30.	(a)

अध्याय - 11

प्र. 1. दोषधातुमलामूलं सदा देहस्य ..... सूत्र कहाँ से लिया गया है। (अ. ह्र. सू. 11/1)

(a) च. सू. 17/4 (b) सु. सू. 15/1

(c) अ. ह्र. सू. 11/1 (d) अ. ह्र. सू. 10/2

प्र. 2. देह के मूल कहे गये हैं। (अ. ह्र. सू. 11/1)

(a) दोष (b) धातु

(c) मल (d) सभी

प्र. 3. चेष्टा एवम् वेग प्रवर्तनैः किसका कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/1)

(a) विकृत कफ (b) प्राकृत वात

(c) विकृत वात (d) प्राकृत कफ

प्र. 4. उत्साह किसका कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/1)

(a) विकृत कफ (b) प्राकृत वात

(c) प्राकृत कफ (d) Both b & c Both

प्र. 5. सम्यगत्या च धातूनाम कर्म हैं- (अ. ह्र. सू. 11/1)

(a) प्राकृत वात (b) प्राकृत पित्त

(c) विकृत पित्त (d) प्राकृत कफ

प्र. 6. अक्षाणां पाटवेन किसका कर्म हैं- (अ. ह्र. सू. 11/1) (NEIAH LEC 2016)

(a) अविकृत वात (b) अविकृत कफ

(c) अविकृत पित्त (d) सभी

प्र. 7. पक्ति व दर्शन किसका कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/2)

(a) अविकृत पित्त (b) अविकृत वात

(c) अविकृत कफ (d) विकृत पित्त

प्र. 8. क्षुत, तृड्, रूचिः प्रभा मेधा धी शौर्य तनु मार्दवैः किसका कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/2)

(a) अविकृत वात (b) अविकृत पित्त

(c) अविकृत कफ (d) विकृत पित्त

प्र. 9. स्थिरत्वं स्निग्धत्व संधिबन्ध किसके कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/3)

(a) अविकृत वात (b) अविकृत कफ

(c) अविकृत पित्त (d) दोनों

प्र. 10. क्षमादि किसके कर्म हैं। (अ. ह्र. सू. 11/3)

(a) प्राकृत वात (b) प्राकृत पित्त

(c) प्राकृत कफ (d) सभी

प्र. 11. उचित मिलान करें - (अ. हृ सू. 11/4)

अ.	**जीवनं**	**1.**	**मेद**
ब.	**प्रीणनं**	**2.**	**रक्त**
स.	**स्नेह**	**3.**	**मांस**
द.	**लेप**	**4.**	**रस**

(a) अ - 4, ब - 2, स - 1, द - 3 (b) अ - 2, ब - 4, स - 3, द - 1
(c) अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3 (d) अ - 3, ब - 2, स - 4, द - 1

प्र. 12. धारण व पूरण कर्म क्रमशः कौनसी अविकृत धातुओं के हैं। (अ. हृ सू. 11/4)

(a) अस्थि एवम् मेद (b) रस एवम् रक्त
(c) मेद एवम् मज्जा (d) अस्थि एवम् मज्जा

प्र. 13. उचित मिलान करें - (अ. हृ सू. 11/4) (BHU MD 2018)

	कर्म		**मल**
अ.	**अवष्टम्भ**	**1.**	**स्वेद (अविकृत)**
ब.	**क्लेद वाहन**	**2.**	**पुरीष (अविकृत)**
स.	**क्लेद विधृति**	**3.**	**मूत्र (अविकृत)**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1
(c) अ - 1, ब - 3, स - 2 (d) अ - 2, ब - 1, स - 3

प्र. 14. उष्णकामत्व व शकृदग्रहान किसका कर्म हैं। (अ. ह. 11/6)

(a) वृद्ध वात (b) वृद्ध कफ
(c) क्षीण वात (d) A & B

प्र. 15. बलनिद्रेन्द्रिय भ्रंश प्रलाप भ्रम दीनता किसके कर्म हैं। (अ. हृ सू. 11/6)

(a) वृद्ध पित्त (b) वृद्ध वात
(c) अविकृत वात (d) अविकृत पित्त

प्र. 16. कम्पानाह किसका कर्म है। (अ. हृ सू. 11/6)

(a) वृद्ध वात (b) अविकृत वात
(c) वृद्ध पित्त (d) विकृत कफ

प्र. 17. पीत विण् मूत्र नेत्र त्वक् किसके कर्म हैं। (अ. हृ सू. 11/6)

(a) वृद्धि वात (b) वृद्ध कफ
(c) वृद्ध पित्त (d) अविकृत पित्त

प्र. 18. अल्पनिद्रता किसका कर्म है। (अ. हृ सू. 11/6)

(a) वृद्ध वात (b) वृद्ध पित्त
(c) वृद्ध कफ (d) B & C

प्र. 19. अग्निसदनं प्रसेकालस्य गौरवम् ..... किसका कर्म हैं। (अ. हृ सू. 11/7)

(a) विकृत वात (b) वृद्ध पित्त
(c) वृद्ध वात (d) वृद्ध कफ

प्र. 20. श्लथाङ्गत्वं श्वास कासातिनिद्रता ..... किसका कर्म है। (अ. हृ. सू. 11/7)

(a) विकृत वात (b) वृद्ध कफ
(c) वृद्ध पित्त (d) वृद्ध वात

प्र. 21. वृद्ध रस धातु के लक्षण किसके समान होते हैं। (अ. हृ. सू. 11/7)

(a) वृद्ध श्लेष्म (b) वृद्ध रक्त
(c) वृद्ध वात (d) वृद्ध पित्त

प्र. 22. विसर्प प्लीह विद्रधीन् कुष्ठ वातास्त्र पित्तास्त्र गुल्म उपकुश कामला व्यङ्ग आदि रोग किस धातु वृद्धि से होते हैं। (अ. हृ. सू. 11/8)

(a) वृद्ध रस (b) वृद्ध मेद
(c) वृद्ध रक्त (d) वृद्ध मांस

प्र. 23. अग्निनाश किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/9)

(a) रस (b) मेद
(c) मांस (d) रक्त

प्र. 24. संमोह रक्त त्वड् नेत्र मूत्रता किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/9)

(a) रस (b) रक्त
(c) मेद (d) शुक्र

प्र. 25. गण्डोरूदर वृद्धिता किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 11/9)

(a) वृद्ध रक्त (b) वृद्ध मेद
(c) वृद्ध मांस (d) वृद्ध मज्जा

प्र. 26. गण्डार्बुद ग्रन्थि कण्ठादिषु अधिमांस च किसके लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/9)

(a) वृद्ध मांस (b) वृद्ध मेद
(c) वृद्ध रक्त (d) वृद्ध मज्जा

प्र. 27. श्रम व अल्प चेष्टा से श्वास होना किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं । (अ. हृ. सू. 11/10)

(a) मांस (b) मेद
(c) रक्त (d) रस

प्र. 28. स्फिक्स्तनोदरलम्बनम् किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/10)

(a) मांस (b) अस्थि
(c) मेद (d) मज्जा

प्र. 29. अध्यस्थि अधिदन्ताश्च ..... किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/10)

(a) वृद्ध मांस (b) वृद्ध मेद
(c) वृद्ध कफ (d) वृद्ध अस्थि

प्र. 30. नेत्र गौरव किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/11)

(a) वृद्ध मेद (b) वृद्ध रस
(c) वृद्धि मांस (d) वृद्ध मज्जा

प्र. 31. पर्वसु स्थूलमूलानि कुर्यात कृच्छ्राणि अरूंषि च किस धातु वृद्धि का कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 11/11)

(a) रस (b) मेद
(c) रक्त (d) मज्जा

प्र. 32. अतिस्त्री कामता किस धातु वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/12)

(a) रस (b) मज्जा
(c) शुक्र (d) मेद

प्र. 33. कुक्षावाध्मान् आटोप गौरवं वेदना ..... किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 11/12)

(a) विकृत वात (b) पुरीष वृद्धि
(c) विकृत रस (d) मूत्र वृद्धि

प्र. 34. कृतेऽप्यकृतसंज्ञताम् किसकी वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/13)

(a) पुरीष वृद्धि (b) मूत्र वृद्धि
(c) वृद्ध शुक्र (d) सभी

प्र. 35. दौर्गन्ध्य कण्डू ..... किसकी वृद्धि का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/13)

(a) स्वेद वृद्ध (b) मूत्र वृद्ध
(c) वृद्ध मेद (d) वृद्ध कफ

प्र. 36. अंगसाद, अल्पभाषण, संज्ञा, मोह आदि किस दोष के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/15)

(a) क्षीण कफ (b) क्षीण वात
(c) वृद्ध वात (d) वृद्ध कफ

प्र. 37. मन्दोऽनलः शीतं प्रभा हानि किसके लिए कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 11/15)

(a) क्षीण कफ (b) क्षीण वात
(c) क्षीण पित्त (d) वृद्ध वात

प्र. 38. श्लेष्माशयानां शून्यत्वं श्लेष्मा क्षय का लक्षण हैं। इसमें श्लेष्माशय से क्या तात्पर्य हैं। (अ. हृ. सू. 11/16)

(a) उरः (b) संधि
(c) शिर (d) All

प्र. 39. हृदद्रव व श्लथसंधिता किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 11/16) (BHU PGET 2015)

(a) वृद्ध रस (b) वृद्ध रक्त
(c) कफ क्षय (d) वात वृद्ध

प्र. 40. श्रमः किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/16)

(a) मेद वृद्धि (b) रस क्षय
(c) शुक्र क्षय (d) Both a & b

प्र. 41. शोष, ग्लानि किस धातु का क्षय का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/16)

(a) मांस (b) मेद

(c) रस (d) रक्त

प्र. 42. शब्दासहिष्णुता किस धातु का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/16)

(a) वात वृद्धि (b) रस क्षय

(c) रस वृद्धि (d) मेद वृद्धि

प्र. 43. अम्लशिशिरप्रीति शिरा शैथिल्य इस धातु का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/17)

(a) रक्तक्षय (b) रसक्षय

(c) वात क्षय (d) मांस क्षय

प्र. 44. संधि वेदना इस धातु क्षय का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/17)

(a) रस क्षय (b) मांस क्षय

(c) मेद क्षय (d) शुक्र क्षय

प्र. 45. अक्षग्लानि इस धातु क्षय का लक्षण (अ. हृ. सू. 11/17)

(a) रसक्षय (b) रक्त क्षय

(c) मेदक्षय (d) मांस क्षय

प्र. 46. गण्डस्फिक् शुष्कता किस धातु क्षय का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/17)

(a) रक्त (b) मेद

(c) मांस (d) रस

प्र. 47. प्लीहा वृद्धि लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/18) (UK PG 2016)

(a) रक्त वृद्धि (b) मेद क्षय

(c) मांस क्षय (d) वात वृद्धि

प्र. 48. कृशाङ्गता व दन्त केश नखादि का पतन क्रमशः किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/18)

(a) मेद क्षय व वात क्षय (b) मेदक्षय व रसक्षय

(c) वातक्षय व मेदक्षय (d) मेदक्षय व अस्थिक्षय

प्र. 49. अस्थि सौषिर्य किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/19)

(a) मेद क्षय (b) अस्थि क्षय

(c) मज्जा क्षय (d) वात क्षय

प्र. 50. तिमिर दर्शन लक्षण है- (अ. हृ. सू. 11/19)

(a) वात क्षय (b) पित्त क्षय

(c) मज्जा क्षय (d) रस क्षय

प्र. 51. तोदोऽत्यर्थं वृषणयोः मेढ्रं धूमायतीव च किसके संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 11/20)

(a) शुक्र क्षय (b) रसक्षय

(c) मूत्र क्षय (d) पित्त वृद्धि

प्र. 52. उर्ध्व हृत्पार्श्व पीडयन् किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/21)

(a) वात वृद्धि (b) पुरीष क्षय

(c) वात क्षय (d) मूत्र क्षय

प्र. 53. वायुरन्त्राणि सशब्दो वेष्टन्निव कुक्षौ भ्रमति किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/21)

(a) पुरीष क्षय (b) वात वृद्धि

(c) वात क्षय (d) मेद क्षय

प्र. 54. मूत्रयेत् कृच्छ्राद् विवर्ण सास्त्रम् ..... किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 11/21)

(a) पुरीष क्षय (b) मूत्र क्षय

(c) मूत्र वृद्धि (d) वात क्षय

प्र. 55. रोमच्युतिः स्तब्धरोमता स्फुटन त्वचः किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/22)

(a) स्वेद वृद्धि (b) स्वेद क्षय

(c) वातक्षय (d) मांसक्षय

प्र. 56. दोषादीनां यथास्वं च विद्यादं वृद्धिक्षयो भिषक् ..... कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. हृ. सू. 11/24)

(a) अ. हृ. सू. 1 (b) अ. हृ. सू. 11

(c) अ. हृ. सू. 12 (d) अ. हृ. सू. 5

प्र. 57. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 11/28)

आश्रयी	**आश्रय**
अ. वात	**1. रस, मांस अादि धातु व पुरीष मूत्र**
ब. पित्त	**2. स्वेद व रक्त**
स. श्लेष्मा	**3. अस्थि**

(a) अ - 3, ब - 2, स - 1 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ - 1, ब - 3, स - 2 (d) अ - 2, ब - 3, स - 1

प्र. 58. आश्रय-आश्रयी की चिकित्सा समान होती हैं। किन्तु अपवाद हैं। (अ. हृ. सू. 11/27)

(a) वात (b) पित्त

(c) कफ (d) A & B

प्र. 59. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 11/31)

विकार	**चिकित्सा**
अ. रसवृद्धि	**1. विरेचन**
ब. मांस वृद्धि	**2. शस्त्र, क्षार अग्निकर्म**
स. रक्त वृद्धि	**3. मेदज रोग वत्**
द. अस्थि वृद्धि	**4. श्लेष्मवत्**
न. मेद वृद्धि	**5. तिक्त द्रव्यों संयुक्त बस्ति**

(a) अ - 4, ब - 3, स - 1, द - 2, न - 5

(b) अ - 4, ब - 1, स - 3, द - 4, न - 2

(c) अ – 4, ब – 2, स – 1, द – 5, न – 3

(d) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2, न – 5

प्र. 60. उचित मिलान करें (अ. हृ. सू. 11/32-33)

	क्षय-वृद्धि		चिकित्सा
अ.	पुरीषवृद्धि	1.	अतिसार नाशक चिकित्सा
ब.	पुरीष क्षय	2.	प्रमेहनाशक क्रिया
स.	मूत्र क्षय	3.	व्यायाम, अभ्यङ्ग अदिक्रिया
द.	मूत्र वृद्धि	4.	मूत्रकृच्छ्रनाशक क्रिया
न.	स्वेद क्षय	5.	कुल्माष यव माषद्वय योग

(a) अ – 1, ब – 5, स – 4, द – 2, न – 3

(b) अ – 1, ब – 5, स – 2, द – 4, न – 3

(c) अ – 3, ब – 1, स – 4, द – 2, न – 5

(d) अ – 5, ब – 3, स – 3, द – 2, न – 1

प्र. 61. ओजस्तु तेजो धातुनां शुक्रान्तानां परं स्मृतम्। किस आचार्य का कथन हैं। (अ. ह. 11/37)

(a) चरक (b) वाग्भट्ट

(c) सुश्रुत (d) भेल

प्र. 62. ओज का वर्ण कैसा होता हैं। (अ. हृ. सू. 11/38) (AIIA MD 2016) & (UK 2015) (BHU 2007)

(a) इन्द्रगोप संकाश (b) लोहितकम्

(c) ईषत्लोहितपीतकम् (d) मधु वर्णी

प्र. 63. यन्नाशें नियतं नाशे यस्मिस्तिष्ठति तिष्ठति किसके संदर्भ में कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 11/38)

(a) ओज (b) अन्न

(c) वायु (d) रक्त

प्र. 64. ओज क्षय का कारण है – (अ. हृ. सू. 11/39)

(a) कोप (b) शोक

(c) श्रम (d) सभी

प्र. 65. विभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रियः। किस संदर्भ में कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 11/40)

(a) ओज वृद्धि (b) ओज क्षय

(c) वात क्षय (d) रक्त क्षय

प्र. 66. ओज क्षय के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 11/40)

(a) दुश्छाया (b) दुर्मना

(c) रूक्षता (d) All

प्र. 67. ओज क्षय की चिकित्सा है। (अ. हृ. सू. 11/40)

(a) जीवनीय औषध (b) दूध

(c) मांसरस (d) सभी

प्र. 68. ओजोवृद्धि के लक्षण। (अ. ह. सू 11/41)

(a) देह तुष्टि (b) देह पुष्टि

(c) देह बल (d) सभी

प्र. 69. यथा बलं यथास्वं च दोषा वृद्ध वितन्वते। रूपाणि, जहति क्षीणा समाः स्व कर्म कुर्वते। कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. ह. सू. 11/44)

(a) चरक (b) अ. ह.

(c) अ. स. (d) भेल

प्र. 70. देहस्य समा विवृद्धयै त एव दोषा विषमा वधाय कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. ह. सू. 11/45)

(a) अ. ह. सू. 1 (b) अ. ह. सू. 12

(c) अ. ह. सू. 11 (d) अ. ह. सू. 13

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(d)	3.	(b)	4.	(b)	5.	(a)	6.	(a)
7.	(a)	8.	(c)	9.	(b)	10.	(c)	11.	(a)	12.	(d)
13.	(b)	14.	(a)	15.	(b)	16.	(a)	17.	(b)	18.	(b)
19.	(d)	20.	(b)	21.	(a)	22.	(c)	23.	(d)	24.	(b)
25.	(c)	26.	(a)	27.	(b)	28.	(c)	29.	(d)	30.	(d)
31.	(d)	32.	(c)	33.	(b)	34.	(b)	35.	(a)	36.	(b)
37.	(c)	38.	(d)	39.	(c)	40.	(d)	41.	(c)	42.	(b)
43.	(a)	44.	(b)	45.	(d)	46.	(c)	47.	(b)	48.	(d)
49.	(c)	50.	(c)	51.	(a)	52.	(b)	53.	(a)	54.	(b)
55.	(b)	56.	(b)	57.	(a)	58.	(a)	59.	(c)	60.	(a)
61.	(b)	62.	(c)	63.	(a)	64.	(d)	65.	(b)	66.	(d)
67.	(d)	68.	(d)	69.	(b)	70.	(c)				

अध्याय - 12

प्र. 1. वात दोष के स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/1) (PGET 2019)

(a) पक्वाशय (b) कटि

(c) सक्थि (d) All

प्र. 2. पित्त दोष के स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/2)

(a) आमाशय (b) लसीका

(c) रस (d) All

प्र. 3. कफ दोष का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/3)

(a) कण्ठ (b) क्लोम

(c) पर्व (d) All

प्र. 4. आमाशय कौन-से दोष का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/2,3)

(a) वात (b) पित्त

(c) कफ (d) b & c

प्र. 5. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 12/1, 2, 3)

दोष	**विशेष स्थान**
अ. वात	**1. नाभि**
ब. पित्त	**2. पक्वाधान**
स. कफ	**3. उर**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3

(c) अ - 2, ब - 3, स - 1 (d) अ - 3, ब - 1, स - 2

प्र. 6. प्राणवायु का स्थान माना गया हैं। (अ. हृ. सू. 12/4)

(a) मूर्धा (b) उर

(c) कण्ठ (d) All

प्र. 7. प्राण वायु का कार्य कहे गये है। (अ. हृ. सू. 12/4) (BHU 2017)

(a) बुद्धिहृदयेन्द्रिय चित्त धृक (b) ष्ठीवनक्षवथूद्गारनिः श्वास प्रवेश

(c) a & b (d) None

प्र. 8. अन्न प्रवेश करवाने का कार्य कौनसी वायु करती हैं। (अ. हृ. सू. 12/4)

(a) प्राणवायु (b) उदानवायु

(c) व्यानवायु (d) समानवायु

प्र. 9. उदानवायु का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/5)

(a) उर (b) हृदय

(c) सर्वशरीर (d) All

प्र. 10. उदानवायु का विचरण स्थान है। (अ. हृ. सू. 12/5)

(a) नासा (b) नाभि

(c) गल प्रदेश (d) All

प्र. 11. वाक् प्रवृत्ति प्रत्यनोर्जाबल वर्ण स्मृतिक्रियः किस वायु के लिए कहा गया है। (अ. हृ. सू. 12/5)

(a) प्राणवायु (b) उदानवायु

(c) व्यानवायु (d) समानवायु

प्र. 12. व्यानवायु का स्थान है। (अ. हृ. सू. 12/6)

(a) हृदय (b) सम्पूर्ण शरीर

(c) उर (d) All

प्र. 13. व्यानवायु का विचरण स्थल हैं। (अ. हृ. सू. 12/6) (BHU 2007)

(a) हृदय (b) सम्पूर्ण शरीर

(c) कण्ठ (d) All

प्र. 14. व्यान वायु का कार्य हैं। (अ. हृ. सू. 11/7)

(a) गति (b) अपक्षेपण, उत्क्षेपण

(c) निमेष, उन्मेष (d) All

प्र. 15. समान वायु का स्थान व विचरण स्थल हैं। (अ. हृ. सू. 12/8)

(a) जठराग्नि के समीप व कोष्ठ (b) हृदय व सम्पूर्ण शरीर

(c) उर व हृदय (d) मूर्धा व कण्ठ

प्र. 16. समान वायु का कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/8)

(a) अन्न पचति (b) अन्न विवेचयति

(c) अन्न मुञ्चति (d) All

प्र. 17. अन्न को ग्रहण (अन्नं गृह्णति) किस वायु का कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/8)

(a) व्यान वायु (b) प्राण वायु

(c) समान वायु (d) उदान वायु

प्र. 18. ..... श्रोणि बस्ति मेढ्रोरूगोचर। सूत्र में रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (अ. हृ. सू. 12/9)

(a) व्यानवायु (b) प्राणवायु

(c) अपान वायु (d) समान वायु

प्र. 19. शुक्रार्तव शकृन्मूत्र गर्भनिष्क्रमणक्रियः किस वायु का कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/9)

(a) व्यान वायु (b) अपान वायु

(c) समान वायु (d) उदान वायु

प्र. 20. पाचक पित्त का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/10)

(a) पक्वाशय व अमाशय का मध्य (b) आमाशय

(c) हृदय (d) उर

प्र. 21. पाचक पित्त में किस महाभूत की अधिकता होती हैं। (अ. हृ. सू. 12/10)

(a) तैजस (b) वायव्य

(c) आग्नेय (d) All

प्र. 22. पचति अन्न विभजते सार किट्टौ पृथक। किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/11)

(a) समान वायु (b) पाचक पित्त

(c) प्राण वायु (d) All

प्र. 23. रञ्जकं पित्त का स्थान हैं। (अ. ह. 12/12) (BHU MD 2017) (CHATTISHGARH 2011) (BHU 2003)

(a) आमाशय (b) यकृत

(c) प्लीहा (d) हृदय

प्र. 24. साधक पित्त का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/13) (BHU MD 2016)

(a) आमाशय (b) मूर्धा

(c) हृदय (d) यकृत

प्र. 25. बुद्धि मेधाभिमानद्यैः अभिप्रेतार्थसाधनात् किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/13)

(a) प्राणवायु (b) तर्पक कफ

(c) आलोचक पित्त (d) साधक पित्त

प्र. 26. आलोचक पित्त का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/13)

(a) हृदय (b) दृक

(c) मूर्धा (d) कण्ठ

प्र. 27. भ्राजक पित्त का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/14)

(a) यकृत (b) आमाशय

(c) त्वचा (d) हृदय

प्र. 28. अवलम्बक कफ का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/15) (BHU 2003)

(a) आमाशय (b) हृदय

(c) उरःप्रदेश (d) All

प्र. 29. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 12/15)

स्थान	**अवलम्बन**
अ. हृदय	**1. स्ववीर्य**
ब. त्रिक प्रदेश	**2. अन्न वीर्य**
स. शेष कफ स्थान	**3. अम्बु कर्म**

(a) अ – 2, ब – 1, स – 3 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 3, ब – 1, स – 2 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 30. क्लेदक कफ का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/16)

(a) हृदय (b) आमाशय

(c) पक्वाशय (d) यकृत

प्र. 31. सोऽन्न संघात क्लेदनात् किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/16)

(a) पाचक पित्त (b) समान वायु

(c) क्लेदक कफ (d) All

प्र. 32. बोधक कफ का स्थान हैं। (अ. हृ. सू. 12/16)

(a) रसन (b) दृक

(c) आमाशय (d) All

प्र. 33. तर्पक कफ का स्थान – (अ. हृ. सू. 12/17) (MPMO 2014)

(a) रसना (b) मूर्धा

(c) यकृत (d) सन्धि बंधन

प्र. 34. अक्षतर्पणात् किसका कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/17)

(a) तर्पक कफ (b) बोधक कफ

(c) अवलम्बक कफ (d) All

प्र. 35. संधियों में कौन से कफ का स्थान है। (सू 12/17)

(a) श्लेष्मक कफ (b) अवलम्बक कफ

(c) बोधक कफ (d) तर्पक कफ

प्र. 36. उचित मिलान करे (अ. हृ. सू. 12/19, 20, 21,)

संचय	**गुण**
अ. वात दोष	**1. शीत + तीक्ष्ण**
ब. पित्त दोष	**2. शीत + स्निग्ध (UKPG 2012)**
स. कफ दोष	**3. उष्ण + रूक्ष**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 3, ब – 2, स – 1

प्र. 37. उचित मिलान करे (अ. हृ. सू. 12/19, 20, 21)

प्रकोप	**गुण**
अ. वात	**1. उष्ण + तीक्ष्ण**
ब. पित्त	**2. उष्ण + स्निग्ध**
स. कफ	**3. शीत + रूक्ष**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 2, ब – 1, स – 3 (d) अ – 3, ब – 2, स – 1

प्र. 38. उचित मिलान करें – (अ. ह्र. सू. 12/19,20,21)

	शमन		**गुण**
अ.	**वात**	**1.**	**उष्ण + रूक्ष**
ब.	**पित्त**	**2.**	**उष्ण + स्निग्ध**
स.	**कफ**	**3.**	**शीत + मन्द**

(a) अ – 2, ब – 1, स – 3 (b) अ – 2, ब – 3, स – 1

(c) अ – 3, ब – 2, स – 1 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3

प्र. 39. ..... उन्मार्गगमिता सूत्र पूरा करें – (अ. ह्र. सू. 12/23)

(a) दोष शम (b) दोष कोप

(c) Both (d) None

प्र. 40. उचित मिलान करें – (अ. ह्र. सू. 12/24)

	दोष प्रकोप		**ऋतु**
अ.	**वात**	**1.**	**वसन्त**
ब.	**पित्त**	**2.**	**वर्षा**
स.	**कफ**	**3.**	**शरद**

(a) अ – 2, ब – 3, स – 1 (b) अ – 1, ब – 3, स – 2

(c) अ – 3, ब – 2, स – 1 (d) अ – 3, ब – 1, स – 3

प्र. 41. उचित मिलान करें – (अ. ह्र. सू. 12/24)

	ऋतु		**दोष चय**
अ.	**हेमन्त**	**1.**	**वात**
ब.	**वर्षा**	**2.**	**पित्त (MPMO 2014)**
स.	**ग्रीष्म**	**3.**	**कफ**

(a) अ – 2, ब – 3, स – 1 (b) अ – 3, ब – 2, स – 1

(c) अ – 3, ब – 1, स – 2 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3

प्र. 42. वर्षा ऋतु में जल का पाक होता हैं। (अ. ह्र. सू. 12/26)

(a) अम्ल पाक (b) कटु पाक

(c) कषाय पाक (d) मधुर पाक

प्र. 43. नानारूपैरसंख्येयर्विकारैः कुपिता मलाः। कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. ह्र. सू. 12/30)

(a) अ. ह्र. सू. 12 (b) अ. ह्र. सू. 13

(c) च. सू. 18 (d) च. सू. 11

प्र. 44. ..... एव हि सर्वेषां रोगाणाम् एक कारणम् सूत्र पूरा करें। (अ. हृ. सू. 12/32)

(a) धातु (b) दोष

(c) काल (d) वात

प्र. 45. अ. ह. के अनुसार दोष प्रकोप के कारण (अ. हृ. सू. 12/35)

(a) हीन योग (b) अतियोग

(c) मिथ्यायोग (d) All

प्र. 46. काय वाक् चित्तभेदेन ..... विभजेत् त्रिधा रिक्त स्थान की पूर्ति करें। (अ. हृ. सू. 12/40)

(a) काल (b) कर्म

(c) दोष (d) धातु

प्र. 47. भाषणं सामिभुक्तस्य (भोजन के बीच में बोलना) क्या हैं। (अ. हृ. सू. 12/42)

(a) वाचिक अतियोग (b) वाचिक मिथ्या योग

(c) कायिक मिथ्या योग (d) कायिक अतियोग

प्र. 48. समस्तोऽसाविह वाऽमुत्र वा कृतम। किसके संदर्भ में कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 12/42)

(a) मानसिक मिथ्यायोग (b) कायिक मिथ्यायोग

(c) वाचिक मिथ्यायोग (d) मानसिक हीनयोग

प्र. 49. शाखाश्रित रोग (बाह्यरोगायन) इसमें शाखा से तात्पर्य हैं। (अ. हृ. सू. 12/44)

(a) हस्त-पाद (b) रक्तादि धातु

(c) त्वचा (d) Both b & c

प्र. 50. बाह्य रोग मार्ग के रोग हैं। (अ. हृ. सू. 12/45)

(a) मष (b) व्यङ्ग

(c) अर्बुद (d) All

प्र. 51. अन्तः रोगमार्ग कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 12/46)

(a) कोष्ठ (b) महास्त्रोत

(c) आमाशय पक्वाशयाश्रय (d) All

प्र. 52. अन्त रोगमार्ग की व्याधियां हैं। (अ. हृ. सू. 12/46)

(a) कास (b) ज्वर

(c) छर्दि (d) All

प्र. 53. अर्श, गुल्म शोफ आदि व्याधियां है। (अ. हृ. सू. 12/45-46)

(a) बाह्य रोग मार्ग (b) मध्यम रोग मार्ग

(c) अन्त रोग मार्ग (d) Both a & c

प्र. 54. शिरो हृदय बस्ति आदि मर्माणि अस्थ्नां च सन्धयः किस रोगमार्ग के लिए आया हैं। (अ. हृ. सू. 12/47)

(a) बाह्य रोग मार्ग (b) मध्यम रोग मार्ग

(c) अन्त रोग मार्ग (d) All

प्र. 55. मध्यम रोग मार्ग की व्याधियां कौन सी हैं। (अ. हृ. सू. 12/48)

(a) यक्ष्मा (b) त्रिक ग्रह

(c) अर्दित (d) All

प्र. 56. स्त्रसं व व्यास कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/49)

(a) वात (b) प्रकुपित वात

(c) प्रकुपित पित्त (d) पित्त

प्र. 57. स्त्रुति कोथ कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 12/51)

(a) प्रकुपित पित्त (b) सम्यक् पित्त

(c) प्रकुपित कफ (d) कफ

प्र. 58. अभ्यासात् प्राप्यते दृष्टिः कर्मसिद्धिप्रकाशिनी। रत्नादिसद् सज्ज्ञानं न शास्त्राद् एवं जायते। कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. हृ. सू. 12/56)

(a) च. सू. 5/30 (b) च. सू. 5/28

(c) अ. हृ. सू. 11/30 (d) अ. हृ. सू. 12/56

प्र. 59. ..... हेतुभिर्विना पूरा करें - (अ. ह. 12/58)

(a) दृष्टापचारज व्याधि (b) कर्मज व्याधि

(c) दोष कर्मज व्याधि (d) All

प्र. 60. ''यथास्वजन्मोपशयाः ..... स्पष्ट लक्षणा'' सूत्र पूरा करें। (अ. हृ. सू. 12/61)

(a) परतंत्र व्याधि (b) स्वतन्त्र व्याधि

(c) उपद्रव (d) कर्मज व्याधि

प्र. 61. व्याधिक्लिष्टशरीरस्य पीड़ाकरतरौ हि सं: किस संदर्भ में कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 12/63)

(a) कर्मज व्याधि (b) व्याधि संकर

(c) उपद्रव (d) पूर्वरूप

प्र. 62. विकारनामाकुशलो न जिह्वीयात् कदाचन ..... कहां का संदर्भ हैं। (अ. हृ. सू. 12/64)

(a) अ. हृ. सू. 12/64 (b) च. अ. हृ. सू. 11/15

(c) अ. हृ. सू. 13/50 (d) None

प्र. 63. गुरू व्याधित व लघु व्याधित का वर्णन किया गया हैं - (अ. हृ. सू. 12/70)

(a) अ. हृ. सू. 12 (b) च. स. वि. 7

(c) Both a & b (d) अ. हृ. सू. 13

प्र. 64. अ. ह. के अनुसार दोषो के क्षय वृद्धि के कितने भेद हैं। (अ. हृ. सू. 12/77)

(a) 62 (b) 63

(c) 56 (d) 25

प्र. 65. अ. हृ. मतानुसार शीत ऋतु में कफ का प्रकोप निम्नलिखित से नहीं होता है। (अ. हृ. सू. 12/28) (BHU MD 2016)

(a) कफस्य स्कन्नत्वात (a) कालस्य मंदत्वात

(a) कालस्य रूक्षत्वात्

(a) कफस्य सांद्रत्वात

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(d)	3.	(d)	4.	(d)	5.	(b)	6.	(d)
7.	(c)	8.	(a)	9.	(a)	10.	(d)	11.	(b)	12.	(a)
13.	(b)	14.	(d)	15.	(a)	16.	(d)	17.	(c)	18.	(c)
19.	(b)	20.	(a)	21.	(a)	22.	(b)	23.	(a)	24.	(c)
25.	(d)	26.	(b)	27.	(c)	28.	(c)	29.	(a)	30.	(b)
31.	(c)	32.	(a)	33.	(b)	34.	(a)	35.	(a)	36.	(a)
37.	(a)	38.	(b)	39.	(b)	40.	(a)	41.	(b)	42.	(a)
43.	(a)	44.	(b)	45.	(d)	46.	(b)	47.	(b)	48.	(a)
49.	(d)	50.	(d)	51.	(d)	52.	(d)	53.	(d)	54.	(b)
55.	(d)	56.	(b)	57.	(a)	58.	(d)	59.	(b)	60.	(b)
61.	(a)	62.	(a)	63.	(c)	64.	(a)	65.	(a)		

अध्याय - 13

प्र. 1. उचित मिलान करें - (अ. ह्र. सू. 13/2, 6, 10)

	उपक्रम		दोष
1.	वेष्टन	अ.	कफ
2.	गीत	ब.	पित्त
3.	मद्य	स.	वात

(a) अ - 2, ब - 3, स - 1 (b) अ - 3, ब - 2, स - 1

(c) अ - 1, ब - 2, स - 3 (d) अ - 3, ब - 1, स - 2

प्र. 2. वायु को योगवाही कहा गया है- (अ. ह्र. सू. 13/14)

(a) अ. ह्र. सू. 13 (b) च. चि. 3

(c) A & B (d) अ. ह्र. सू. 1

प्र. 3. उचित मिलान करे - (अ. ह्र. सू. 13/14) (GPSC LEC 2018)

	दोष संसर्ग		ऋतु में उपयोगी उपक्रम
अ.	वात - पित्त	1.	शरद ऋतु
ब.	कफ - पित्त	2.	ग्रीष्म ऋतु
स.	कफ - वात	3.	बसन्त ऋतु

(a) अ - 2, ब - 1, स - 3 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ - 1, ब - 3, स - 2 (d) अ - 2, ब - 3, स - 1

प्र. 4. सत्य कथन बताइए - (अ. ह्र. सू. 13/15)

(a) दोषो को उनके संचय काल में ही शान्त करना चाहिए

(b) दोषो को कुपित अवस्था में बिना विरोध के शान्ति करना चाहिए

(c) तीनो दोषो के कुपित होने पर बलवान् दोष को शेष दोषो का विरोध न करते हुए शान्ति करें

(d) All

प्र. 5. नाऽसौ विशुद्ध शुद्धस्तु शमयेद् यो न कोपयेत। इस सूत्र का संदर्भ बताए। (अ. ह्र. सू. 13/16)

(a) अ. ह्र. सू. 1 (b) अ. ह्र. सू. 2

(c) अ. ह्र. सू. 13 (d) अ. ह्र. सू. 11

प्र. 6. दोष का कोष्ठ से शाखा में जाने का कारण हैं। (अ. ह्र. सू. 13/17)

(a) व्यायाम (b) तीक्ष्ण जठराग्नि

(c) अहित आचरण (d) All

प्र. 7. दोषो का शाखा से कोष्ठ में जाने का कारण (अ. हृ. सू. 13/18) (NIA LEC 2020)

(a) स्त्रोतो मुख विशोधन (b) स्त्रोतो वृद्धि
(c) स्त्रोतो अभिष्यन्द (d) All

प्र. 8. असत्य कथन बताए - (अ. हृ. सू. 13/20)

(a) दोष अन्य स्थानगत होकर दुर्बल होतो स्थान विशेष सबंधी दोष की चिकित्सा करनी चाहिए।
(b) दोष अन्य स्थागत होकर बलवान हो तो उस दोष विशेष की पहले चिकित्सा करनी चाहिए।
(c) दोष का अभिनव करके स्थित हो तो उस स्थानिक दोष की चिकित्सा करके आगन्तुज दोष की चिकित्सा करनी चाहिए।
(d) दोष अन्य स्थानगत होकर उस स्थान विशेष के उस बलवान दोष की चिकित्सा नहीं करनी चाहिए।

प्र. 9. तियर्गगत दोषों के लिए उपयोगी उपक्रम हैं - (अ. हृ. सू. 13/22)

(a) शमन चिकित्सा (b) सुखपूर्वक दोषो को कोष्ठ में लाना
(c) यथा संभव संशोधन (d) All

प्र. 10. ऊष्मणोऽल्पबलत्वेन धातुम् आद्यम् अपाचितम्। दुष्टम् आमाशयगतं रसम् ..... प्रचक्षते। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 13/25)

(a) साम (b) आम
(c) अलसक (d) A & B

प्र. 11. आमेन तेन संपृक्ता दोषा द्वष्याश्च दूषिताः। ..... इति उपदिश्यन्ते - (अ. हृ. सू. 13/27)

(a) साम (b) आम
(c) निराम (d) अलसक

प्र. 12. असत्य कथन बताइए - (अ. हृ. 13/28, 29, 30)

(a) सम्पूर्ण देह में प्रविसृतान दोष एवं अनुत्क्लिष्ट समादोषो का निर्हरण न करें।
(b) धातुओं में लीन दोषो को तीक्ष्ण संशोधन से निकालना चाहिए।
(c) अनुत्क्लिष्ट दोषो को पाचन, दीपन, स्नेहन एवं स्वेदन से परिष्कृत करते हुए उचित काल में यथास्थान को प्राप्त होने पर शोधन द्वारा यथाबल शुद्ध करना चाहिए।
(d) मुख में लिया गया द्रव्य आमाशय - स्थित मलों को बाहर निकालता हैं।

प्र. 13. असत्य कथन बताइए - (अ. हृ. सू. 13/31-32)

(a) उत्क्लिष्ट हुये स्वयं प्रवृत दोषो को स्तम्भन औषधियों से रोकना नहीं चाहिए।
(b) स्वयं प्रवृत दोषो की हितकारी भोजन लेते हुए प्रारम्भ में उपेक्षा कर देनी चाहिए।
(c) स्वयं प्रवृत दोषो को स्तम्भन औषध में रोक लेना चाहिए।
(d) जो दोष विबद्ध है (थोड़ी मात्रा में प्रवृत है) उन्हें उन - उन पाचन द्रव्यों द्वारा पाचन करें।

प्र. 14. उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 13/33)

दोष	**मास**
अ. कफ	**1. चैत्र**
ब. वात	**2. श्रावण**

स. पित्त **3. कार्तिक**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3 (b) अ – 2, ब – 1, स – 3

(c) अ – 3, ब – 2, स – 1 (d) अ –1, ब – 3, स – 2

प्र. 15. किस ऋतु में शोधन निषेध किया गया है। (अ. हृ. सू. 13/34)

(a) ग्रीष्म (b) वर्षा

(c) हेमन्त (d) All

प्र. 16. उचित मिलान करे – (औषध सेवन काल) (अ. हृ. सू. 13/38, 39) (AIIA MD 2016)

अ. निरन्न **1. अपान वायु दुष्टि**

ब. भोजन आदौ **2. समान वायु दुष्टि**

स. भोजन मध्य **3. व्यान वायु दुष्टि**

द. भोजन अन्त **4. कफ वृद्धि व रोगी व रोग बलवान**

न. कवलान्तर **5. प्राण वायु दुष्टि**

(a) अ – 4, ब – 2, स – 3, द – 1, न – 5

(b) अ – 4, ब – 1, स – 2, द – 3, न – 5

(c) अ – 2, ब – 3, स – 1, द – 5, न – 4

(d) अ – 2, ब – 3, स – 5, द – 4, न – 1

प्र. 17. उचित मिलान करे (औषध सेवन काल) (अ. हृ. सू. 13/40) (GPSC LEC 2018)

अ. सग्रास **1. उर्ध्वजत्रुगत विकार**

ब. मुहुर्मुहु **2. हिक्का रोगों में**

स. सअन्न **3. श्वास कास रोगों में**

द. सामुद्ग **4. प्राण वायु दुष्टि**

न. निशि **5. आरोचक**

(a) अ – 3, ब – 4, स – 5, द – 2, न –1

(b) अ – 4, ब – 3, स – 5, द – 2, न – 1

(c) अ – 5, ब – 3, स – 2, द – 4, न – 1

(d) अ – 2, ब – 5, स – 3, द – 1, न – 4

प्र. 18. अ. हृ . व अ.सं के अनुसार क्रमशः औषध सेवन काल कितने है। (अ. हृ. सू. 13/37) (NIA LEC 2020)

(a) 11, 10 (b) 10, 11

(c) 9, 10 (d) 3, 5

प्र. 19. वाग्भट्ट अनुसार उर्ध्वजत्रुगत व्याधियों में औषधि सेवन काल..... (अ. हृ . सू . 13/41)

(a) भोजन पूर्व (b) भोजन मध्य

(c) भोजन पश्चात् (d) स्वप्नकाले

प्र. 20. वाग्भट्ट मतानुसार वातिक पुरूष को कौन सा मद्य पीना चाहिए (अ. हृ . सू . 13/2) (BHU MD 2016)

(a) पौष्टिक एवं गौडीक
(b) माध्वीक एवं गौडीक
(c) पौष्टिक एवं सांभ
(d) वारूणी एवं पौष्टिक

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(a)	4.	(d)	5.	(c)	6.	(d)
7.	(d)	8.	(d)	9.	(d)	10.	(b)	11.	(a)	12.	(b)
13.	(c)	14.	(a)	15.	(d)	16.	(b)	17.	(b)	18.	(b)
19.	(d)	20.	(a)								

अध्याय - 14

प्र. 1. द्विविधोपक्रमणीय अध्याय में द्विविध का क्या अर्थ है - (अ. हृ. सू. 14/1, 2)

(a) संतर्पण अपतर्पण (b) स्तम्भन लंघन
(c) बृहंण लंघन (d) Both a & c

प्र. 2. बृहंण प्रधान द्रव्यों में महाभूत प्रधानता। (अ. हृ. सू. 14/2)

(a) पृथ्वी + जल (b) पृथ्वी + जल + अग्नि
(c) पृथ्वी + जल + वायु (d) अग्नि + वायु

प्र. 3. लंघन उपक्रम में प्रयोग किये जाने वाले द्रव्यों में प्रधान महाभूत कौनसे है (अ. हृ. सू. 14/2)

(a) अग्नि + वायु (b) अग्नि + वायु + आकाश
(c) वायु + आकाश (d) अग्नि + जल + पृथ्वी

प्र. 4. लंघन कितने प्रकार का कहा गया है - (अ. हृ. सू. 14/4)

(a) 2 (b) 5
(c) 3 (d) 7

प्र. 5. शोधन उपक्रम में किसे नहीं सम्मलित किया गया है। (अ. हृ. सू. 14/5)

(a) निरूह बस्ति (b) वमन
(c) अनुवासन बस्ति (d) शिरोविरेचन

प्र. 6. न शोधयति यद् दोषान् समान नोदीरयति अपि समी करोति विषमान् उक्त सूत्र किस संदर्भ में कहा गया हैं। (अ. हृ. सू. 14/6)

(a) शमन औषध (b) लंघन औषध
(c) स्वस्थवृत कर औषध (d) All

प्र. 7. ..... शमन त्वेव वासोः पित्तानिलस्य च सूत्र पूरा करें। - (अ. हृ. सू. 14/6)

(a) स्तम्भन (b) बृहंण
(c) लंघन (d) रूक्षण

प्र. 8. बृहंण योग्य है (अ. हृ. सू. 14/8)

(a) उरः क्षत रोग (b) सूतिका
(c) ग्रीष्म ऋतु काल (d) All

प्र. 9. बृहंण उपक्रम के लिए द्रव्य हैं - (अ. हृ. सू. 14/9)

(a) निर्वृति (b) हर्षण
(c) स्नान (d) All

प्र. 10. लंघन योग्य कौन-2 है - (अ. हृ. सू. 14/10, 11) (GPSC LEC 2018)

(a) प्रमेह (b) प्लीह रोग
(c) स्थूल (d) All

प्र. 11. निम्न में से सत्य कथन बताये (अ. हृ. सू. 14/12, 13, 14)

(a) स्थौल्य व बलवान में व्यक्तियों को संशोधन से लंघन करावें।
(b) मध्य स्थौल्य व मध्य बल की स्थिति में दीपन-पाचन उपक्रम से लंघन करावें।
(c) अल्प स्थूल व अल्पबल होने पर क्षुत् व तृट से लंघन करावयें।
(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 12. सम्यक् लंघन के लक्षण है - (अ. हृ. सू. 14/17)

(a) विमलेन्द्रिय (b) क्षुतृट्सहोदय
(c) शुद्धहृदयोद्गारकण्ठता (d) All

प्र. 13. अति बृहंण से होने वाले रोग कौन - से है। (अ. हृ. सू. 14/20)

(a) भगन्दर (b) संन्यास
(c) Both a & b (d) भ्रम

प्र. 14. व्योषादि मन्थ का प्रयोग किया जाता है - (अ. हृ. सू. 14/28)

(a) अति स्थौल्य (b) श्वित्र
(c) कामला (d) All

प्र. 15. अतिलंघनजन्य दोष कौन-2 से है - (अ. हृ. सू. 14/29, 30)

(a) अरोचक (b) पर्वभेद
(c) प्रलाप (d) All

प्र. 16. काश्र्यम् एवं वरं स्थौल्यान कहाँ का संदर्भ हैं। (अ. हृ. सू. 14/31)

(a) अ. हृ. सू. 14/31 (b) अ. हृ. सू. 13/12
(c) च. सू. 21/15 (d) Both a & c

प्र. 17. न हि ..... समं किच्चिद् अन्यदेहबृहत्त्वकृत रिक्त स्थान पूरा करें। (अ. हृ. सू. 14/35)

(a) माष (b) क्षीर
(c) मांस (d) दधि

प्र. 18. ..... स्थूले विपरीतं हित कृशे। सूत्र को पूरा करे - (अ. हृ. सू. 14/36)

(a) गुरू, संतपर्ण (b) गुरू, अपतपर्ण
(c) लघु, अपतर्पण (d) लघु, संतर्पण

प्र. 19. निम्न में कौनसा शमन का भेद नहीं है? (अ. हृ. सू. 14/6)

(a) पाचन (b) क्षीरपान
(c) दीपन (d) क्षुधा

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(a)	3.	(b)	4.	(a)	5.	(c)	6.	(a)
7.	(b)	8.	(d)	9.	(d)	10.	(d)	11.	(d)	12.	(d)

13. (c) 14. (d) 15. (d) 16. (a) 17. (c) 18. (b)
19. (b)

अध्याय - 15

प्र. 1. शोधनदिगण संग्रहाध्याय में कुल कितने गणो का वर्णन किया गया है। (अ. हृ. सू. 15/46)

(a) 50 (b) 37
(c) 33 (d) 26

प्र. 2. छर्दन गण का द्रव्य नहीं है। (अ. हृ. सू. 15/1)

(a) वायविडङ्ग (b) चित्रक
(c) करञ्ज (d) अतिबला

प्र. 3. वमन गण व निरूह गण दोनो में आये द्रव्य का नाम हैं। (अ. हृ. सू. 15/1, 3)

(a) पिप्पली (b) लवण
(c) मदनफल (d) Both b & c

प्र. 4. कौनसा द्रव्य वमनगण व नस्यगण दोनों में आता हैं - (अ. हृ. सू. 15/1, 4)

(a) एला (b) शिरीष
(c) पिप्पली (d) रसपात

प्र. 5. पित्त नाशक गण है - (अ. हृ. सू. 15/6)

(a) न्यग्रोधादि गण (b) सारिवादि गण
(c) पद्मकादि गण (d) All

प्र. 6. जीवनीय गण का वर्णन किया है - (अ. हृ. सू. 15/8)

(a) अष्टांगहृदय (b) भेल
(c) चरक (d) A & B

प्र. 7. हृद्य कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/10)

(a) विदार्यादिगण (b) सारिवादि गण
(c) A & B (d) पटोलादि गण

प्र. 8. स्तन्यकर प्रीणनजीवन बृहंणवृष्य कौन सा गण है - (अ. हृ. सू. 15/12)

(a) विदर्यादिगण (b) पद्यमकादि गण
(c) पटोलादिगण (d) आरग्वधादि गण

प्र. 9. तृणमूत्रामयवातजित् कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/13)

(a) सारिवादि गण (b) परूषकादि गण
(c) पटोलादि गण (d) गुडूच्यादि गण

प्र. 10. विषातर्न्दाहपित्तनुत कौनसा गण है - (अ. ह. सू 15/14)

(a) परूषकादि गण (b) आरग्बधादि गण

(c) अञ्जनादि गण (d) विदर्यादि गण

प्र. 11. कामला में कौनसे गण के द्रव्य प्रयोग किये जाते हैं। (अ. हृ. सू. 15/15)

(a) पटोलादिगण (b) विदर्यादि गण

(c) गुडूच्यादि गण (d) All

प्र. 12. ज्वरच्छर्दिदाहतृष्णाघ्नमग्निकृत कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/16)

(a) अञ्जनादि गण (b) गुडूच्यादि गण

(c) विदार्यादि गण (d) आरग्बधादि गण

प्र. 13. प्रमेह च दुष्टव्रणविशोधन में कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/18)

(a) आरग्वधादि गुण (b) पटोलादि गण

(c) पद्मकादि गण (d) सारिवादी गण

प्र. 14. प्रमेह च मेदोदोष निबर्हण कौन सा गण है - (अ. हृ. सू. 15/20)

(a) आरग्वधादि गण (b) पद्मकादि गण

(c) असनादि गण (d) वरूणादि गण

प्र. 15. आढ्यवात व अन्तः विद्रधि में कौनसा गण प्रयोग किया जाता हैं- (अ. हृ. सू. 15/22)

(a) आरग्वधादि गण (b) ऊषकादिगण

(c) सारिवादि गण (d) वरूणादिगण

प्र. 16. मेदः कफापहम व अश्मरी नाशक कौनसा गण हैं - (अ. हृ. सू. 15/23) (PGET 2019)

(a) वरूणादि गण (b) ऊषकादिगण

(c) आरग्वधादि गण (d) सारिवादि गण

प्र. 17. योनिदोष हर, वर्ण्यो व विषनाशन कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/27)

(a) वेल्लतरादि गण (b) अञ्जनादि गण

(c) रोध्रादि गण (d) अषकादि गण

प्र. 18. व्रणशोधन कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/29, 31)

(a) अर्कादि गण (b) वरूणादि गण

(c) सुरसादि गण (d) Both a & c

प्र. 19. वत्सकादि गण में द्रव्य नहीं है। (अ. हृ. सू. 15/34)

(a) पंचकोल (b) मुण्डी

(c) एला (d) गण्डीर

प्र. 20. आढ्यवात में कौनसा गण प्रयोग किया जाता हैं - (अ. ह. सू 15/36, 22)

(a) वचादि गण (b) वरूणादि गण

(c) हरिद्रादिगण (d) All

प्र. 21. स्तन्यदोषनिबर्हण कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/36)

(a) वचादि गण (c) Both a & b

(b) हरिद्रादिगण (d) पटोलादिगण

प्र. 22. आमातिसारनाशन कौन सा गण है - (अ. हृ. सू. 15/36)

(a) वचादि गण (b) वरूणादि गण

(c) हरिद्रादि गण (d) Both a & c

प्र. 23. व्रणरोपण में कौनसा गण हैं - (अ. हृ. सू. 15/38)

(a) वचादि गण (b) हरिद्रादिगण

(c) Both a & b (d) अर्कादिगण

प्र. 24. योनिस्तन्यामयघ्ना व मलपाचन कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/40)

(a) अर्कादि गण (b) पटोलादि गण

(c) मुस्तादि गण (d) A & B

प्र. 25. व्रण्य, भग्नसंधान व योनिरोगनिबर्हण कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/42)

(a) मुस्तादि गण (c) A & B

(b) न्यग्रोधादि गण (d) एलादिगण

प्र. 26. वर्णप्रसादन कण्डूपिटिकाकोठनाश के लिए कौनसा गण है - (अ. हृ. सू. 15/44)

(a) एलादिगण (b) श्यामादि गण

(c) मुस्तादि गण (d) हरिद्रादि गण

प्र. 27. हृदयरूजा में कौनसा गण प्रयोग किया जाता हैं-(अ. हृ. सू. 15/45)

(a) श्यामादि गण (b) हरिद्रादि गण

(c) जीवनीय गण (d) मुस्तादि गण

प्र. 28. अन्तिम शोधनगण कौनसा हैं - (अ. हृ. सू. 15/45)

(a) मुस्तादि गण (b) श्यामादि गण

(c) एलादिगण (d) हरिद्रादि गण

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(d)	3.	(d)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(d)
7.	(a)	8.	(b)	9.	(b)	10.	(c)	11.	(a)	12.	(b)
13.	(a)	14.	(c)	15.	(d)	16.	(b)	17.	(c)	18.	(d)
19.	(b)	20.	(d)	21.	(c)	22.	(d)	23.	(c)	24.	(c)
25.	(b)	26.	(a)	27.	(a)	28.	(b)				

अध्याय - 16

प्र. 1. घृत को सर्वश्रेष्ठ स्नेह माना गया हैं क्यों - (अ. हृ. सू. 16/2)

(a) संस्कारनुवर्तन गुण के कारण (b) अविदाही होने के कारण
(c) जन्म से ही सात्म्य होता हैं। (d) All

प्र. 2. निम्न में से सत्य कथन। (अ. हृ. सू. 16/3)

(a) घृत < तैल < वसा < मज्जा (गुरूता का क्रम)
(b) सर्पि < मज्जा < वसा < तैल (वात कफ शामकता)
(c) सर्पि > मज्जा > वसा > तैल (पित्त शामकता)
(d) उपरोक्त सभी सत्य कथन

प्र. 3. निम्न में से सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 16/4)

(a) दो स्नेह एकत्र करके लिए जाये तो यमक कहलाता हैं।
(b) तीन स्नेहो का संयोग त्रिवृत कहलाता हैं।
(c) चार स्नेहो को महान की संज्ञा दी गयी है।
(d) सभी कथन सत्य

प्र. 4. स्नेहन के योग्य कौन हैं। (अ. हृ. सू. 16/5)

(a) दुर्बल (b) कृश
(c) A & B (d) उदररोग

प्र. 5. स्नेहन के अयोग्य कौन हैं - (अ. हृ. सू. 16/6, 7)

(a) मूर्च्छा (b) अपप्रसूता
(c) तृष्णा (d) All

प्र. 6. धीस्मृतिमेधादिकाङ्क्षिणां शस्यते ..... सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 16/8)

(a) घी (b) तैल
(c) वसा (d) मज्जा

प्र. 7. तैल का प्रयोग किया जाता है। (अ. हृ. सू. 16/9)

(a) ग्रन्थि रोग (b) नाडी व श्लेष्मा रोग
(c) कृमि रोग (d) All

प्र. 8. ..... लाघवदाढर्यार्थि - क्रुरकोष्ठेसु देहिषु। सूत्र को पूरा करें - (अ. हृ. सू. 16/9)

(a) तैल (b) वसा
(c) घृत (d) मज्जा

प्र. 9. वातातपाध्व भार स्त्री व्यायाम क्षीण धातुषु। रूक्ष क्लेशक्षयात्यग्नि वातावृतपथेषु च। ये इस सूत्र किस संदर्भ हैं - (अ. ह्र. सू. 16/10)

(a) वसा (b) मज्जा
(c) घृत (d) A &B

प्र. 10. वसा का प्रयोग किया जाता है - (अ. ह्र. सू. 16/11)

(a) संधि अस्थि मर्म कोष्ठ रूजा (b) दग्धाहत भ्रष्टयोनि
(c) कर्ण शिरो रूजा (d) All

प्र. 11. उचित मिलान करे - (अ. ह्र. सू. 16/11)

	काल		**स्नेह**
अ.	**प्रावृट**	**1.**	**वसा व मज्जा**
ब.	**शरद**	**2.**	**तैल**
स.	**बसन्त**	**3.**	**घृत**

(a) अ - 3, ब - 2, स - 1 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1
(c) अ - 1, ब - 2, स - 3 (d) अ - 2, ब - 1, स - 3

प्र. 12. सत्य कथन बताइए - (अ. ह. सू 16/13)

(a) आत्ययिक स्थिति हो तो शीत काल में तैल का प्रयोग दिन में करना चाहिए
(b) आत्ययिक स्थिति में ग्रीष्म ऋतु में घृत का प्रयोग रात्रि में करना चाहिए
(c) शीतकाल में रात में घृत (ग्रीष्म ऋतु के आलावा) प्रयोग से वातकफज विकार व ग्रीष्मकाल में दिन प्रयोग से पित्त जन्य विकार उत्पन्न होते हैं।
(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 13. अ. ह. में कितनी स्नेह विचारणायें का वर्णन किया गया हैं। - (अ. ह्र. सू. 16/15)

(a) 63 (b) 64
(c) 52 (d) 28

प्र. 14. उचित मिलान करे - (अ. ह्र. सू. 16/17, 18)

	स्नेह मात्रा		**पाचन**
अ.	**ह्रस्व**	**1.**	**2 याम**
ब.	**मध्यम**	**2.**	**8 याम**
स.	**उत्तम**	**3.**	**4 याम**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3
(c) अ - 3, ब - 2, स - 1 (d) अ - 2, ब - 3, स - 1

प्र. 15. उचित मिलान करे - (अ. ह्र. सू. 16/19)

अ.	**शोधनार्थ स्नेह**	**1.**	**ह्रस्व मात्रा**
ब.	**शमनार्थ स्नेह**	**2.**	**मध्यम मात्रा**
स.	**बृंहणार्थ स्नेह**	**3.**	**उत्तम मात्रा**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 1 (b) अ – 2, ब – 3, स – 1
(c) अ – 3, ब – 1, स – 2 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3

प्र. 16. बृंहण स्नेह के योग्य कौन है – (अ. ह्र. सू. 16/21)

(a) मन्दाग्नि (b) क्लेशभीरू
(c) मृदु कोष्ठ (d) All

प्र. 17. बृंहण स्नेह के संदर्भ में व्याधियों के अनुसार फल का उचित मिलान करे – (अ. ह्र. सू. 16/22)

अ. भोजन से पहले	**1. मध्य देह व्याधि**
ब. भोजन के बाद	**2. उर्ध्व देह व्याधि**
स. भोजन के मध्य	**3. अधो देह व्याधि**

(a) अ – 3, ब – 2, स – 1 (b) अ – 3, ब – 1, स – 2
(c) अ – 2, ब – 3, स – 1 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3

प्र. 18. किन 2 स्नेह के प्रयोग के बाद उष्णोदक का पान नहीं करना चाहिए। (अ. ह्र. सू. 16/23)

(a) भल्लातक व एरण्ड तैल (b) एरण्ड तैल व विभीतक तैल
(c) भल्लातक व तुवरक (d) तिल व सर्षप तैल

प्र. 19. स्नेहपान करने के बाद कौन – 2 विहार से करने चाहिए। (अ. ह्र. सू. 16/26, 27)

(a) क्षपाशय (b) ब्रह्मचारी
(c) उष्णोदकोपचारी (d) All

प्र. 20. स्नेह प्रयोग काल के संदर्भ में सत्य कथन बताइए। (अ. ह्र. सू. 16/29)

(a) मृदुकोष्ठी को 3 दिन तक अच्छस्नेह पान करावे।
(b) क्रूर कोष्ठ वाले को 7 दिन तक स्नेहपान करावे।
(c) जब तक सम्यक् स्निग्ध न हो जाये तब तक स्नपान करावे।
(d) All

प्र. 21. सम्यक् स्निग्ध लक्षण कौन से है – (अ. ह्र. सू. 16/30)

(a) वातानुलोमन (b) स्निग्ध अंसहतम् वर्च प्रवृति
(c) अग्नि दीप्त होना (d) All

प्र. 22. अति स्निग्ध लक्षण कौन से है – (अ. ह्र. सू. 16/31)

(a) पाण्डुत्वं (b) घ्राणवक्त्र स्त्राव
(c) गुदस्त्राव (d) All

प्र. 23. अमात्रा व अहित काल में स्नेहपान करने से कौन से रोग होते है। (अ. ह्र. सू. 16/32)

(a) कुष्ठ (b) ज्वर
(c) अर्श (d) All

प्र. 24. स्नेहव्यापद् चिकित्सा में क्या करते हैं – (अ. ह्र. सू. 16/33, 34) (HARIDWAR PG 2013)

(a) तक्रारिष्ट का प्रयोग (b) उल्लेखन
(c) गोमूत्र व गुग्गुलु का प्रयोग (d) All

प्र. 25. स्नेहपान करने के कितने दिन बाद वमन अथवा विरेचन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 16/36)

(a) 1, 7 (b) 3, 5

(c) 1, 3 (d) 1, 1

प्र. 26. सद्यः स्नेहन योग कौन - 2 से है - (अ. हृ. सू. 16/41, 42)

(a) लवणोल्वण स्नेह (b) स्नेहभर्जित पेया

(c) पाञ्चप्रसृति पेया (d) All

प्र. 27. तद्धयभिष्यन्द्यरूक्ष च सूक्ष्मम् उष्णं व्यवायि च। ये सूत्र किस संदर्भ में कहा गया है। (अ. हृ. सू. 16/42)

(a) सर्षप तैल (b) लवण के गुण

(c) भल्लातक तैल (d) तुवरक तैल

प्र. 28. निम्न में से सत्य कथन बताइए - (अ. हृ. सू. 16/44, 45)

(a) गुड़, आनूप मांस, तिल तथा दही इनको कुष्ठ, शोफ व प्रमेह में स्नेहन करवाने हेतु प्रयुक्त नहीं करना चाहिए।

(b) इन कुष्ठादि विकारों में स्नेहन करवाने हेतु त्रिफला, पिप्पली, पथ्या व गुग्गुलु आदि सिद्ध स्नेह यथास्व प्रयुक्त करें।

(c) व्याधि से क्षीण व्यक्तियों में अग्नि संधुक्षण करने व देह संवर्धन करने के लिए समर्थ स्नेहों का प्रयोग करें।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 29. स्नेह प्रयोग से लाभ क्या - 2 है - (अ. हृ. सू. 16/46)

(a) दीप्तान्ताग्नि (b) दृढेन्द्रिया

(c) परिशुद्धकोष्ठ (d) All

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(d)	3.	(d)	4.	(c)	5.	(d)	6.	(a)
7.	(d)	8.	(a)	9.	(d)	10.	(d)	11.	(b)	12.	(d)
13.	(b)	14.	(a)	15.	(a)	16.	(d)	17.	(a)	18.	(c)
19.	(d)	20.	(d)	21.	(d)	22.	(d)	23.	(d)	24.	(d)
25.	(c)	26.	(d)	27.	(b)	28.	(d)	29.	(d)		

अध्याय - 17

प्र. 1. स्वेद के अ. ह. के अनुसार कितने भेद है। (अ. ह. सू. 17/1)

(a) 13 (b) 4

(c) 10 (d) 2

प्र. 2. उपनाह स्वेद के संदर्भ में उचित मिलान करे - (अ. ह. सू. 17/2, 3)

अ. रास्ना आदि द्रव्य	**1. वात के साथ कफ विकार**
ब. सुरसादि गण के द्रव्य	**2. वात के साथ पित्त विकार**
स. पद्मकादि गण के द्रव्य	**3. शुद्ध वात विकार**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 2 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1

(c) अ - 2, ब - 1, स - 3 (d) अ - 3, ब - 2, स - 1

प्र. 3. सत्य कथन बताइए - (अ. ह. सू. 17/4, 5)

(a) उपनाह द्रव्यों को स्निग्ध, उष्णवीर्य वाली मृदु चर्मपट्ट जो पूतिरहित हो उसमें बांधना चाहिए।

(b) चर्मपट्ट की अनुपलब्धता में वातनाशक एरण्डादि पत्रो का प्रयोग करना चाहिए।

(c) दिन में बांधे गये बंधन को रात्रि में तथा रात्रि में बांधे गये बन्धन को दिन में खोल देना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 4. अवगाह स्वेद का प्रयोग किया जाता हैं - (अ. ह. सू. 17/11)

(a) सर्वाङ्गवात दोष (b) अर्श

(c) Both a & b (d) मूर्च्छा

प्र. 5. निम्न में से सत्य कथन बताइए - (अ. ह. सू. 17/12, 11)

(a) कफ से पिड़ित व्यक्ति बिना स्नेहन के रूक्ष स्वेदन करें।

(b) कफ एवम वात संसृष्ट रोगो में रूक्ष व्यक्ति का स्निग्ध स्वेदन करें।

(c) वात के आमाशयगत होने पर रूक्ष पूर्वक स्वेदन तथा कफ के पक्वाश्याश्रित होने पर स्नेहपूर्वक स्वेदन करना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 6. सत्य कथन बताइए - (अ. ह. सू. 17/14)

(a) वक्षंण प्रदेश पर अल्प स्वेदन करें।

(b) दृष्टि मुष्क हृदय पर स्वल्प स्वेदन या स्वेदन नहीं करें।

(c) दोनों सत्य हैं।

(d) वक्षंण प्रदेश पर तीक्ष्ण स्वेदन करना चाहिए।

प्र. 7. स्वेद के अतियोग के कौन-2 से लक्षण है - (अ. हृ सू. 17/16)

(a) संधि पीडा (b) छर्दि

(c) श्याव रक्त मण्डल दर्शनम् (d) उपरोक्त सभी

प्र. 8. सत्य कथन बताइए - (अ. हृ सू. 17/17, 18, 19)

(a) अतिस्वेदन की चिकित्सा में स्तम्भन औषध का प्रयोग करें।

(b) सम्यक् स्वेद होने पर बल प्राप्ति और विकारों का शमन होता हैं।

(c) स्वेदन द्रव्य प्राय गुरू, उष्ण, तीक्ष्ण होते हैं।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 9. स्तम्भ त्वक स्नायु संकोच कम्प हृद्वाग्हनुग्रहैः पादौष्ठ, त्वक् करैः श्यावै। ये सूत्र किस संदर्भ में आया है - (अ. हृ सू. 17/20)

(a) अति स्वेदन (b) अतिस्तम्भन

(c) अतिरूक्षण (d) अति लंघन

प्र. 10. स्वेदन के अयोग्य हैं। (अ. हृ सू. 17/22, 24)

(a) आढ्यरोगी (b) कामला

(c) मद्यविकारी (d) All

प्र. 11. स्वेदन के योग्य कौन - 2 है। (अ. हृ सू. 17/25, 21)

(a) हिक्का (b) आमदोष

(c) खल्ली (d) All

प्र. 12. निम्न में से सत्य कथन बताइए - (अ. हृ सू. 17/21, 29)

(a) वात मेद : कफावृते में आग्नेय स्वेद हितकर होता हैं।

(b) कोष्ठगत, धातु में व्याप्त, स्त्रोतस में लीन दोष स्वेदन से द्रवीभूत होकर कोष्ठ में आ जाते हैं।

(c) पुष्पिता व प्रसूता स्त्रियों में स्वेदन नहीं करना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य है।

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(a)	3.	(d)	4.	(c)	5.	(d)	6.	(c)
7.	(d)	8.	(d)	9.	(b)	10.	(d)	11.	(d)	12.	(d)

अध्याय - 18

प्र. 1. निम्न में से सत्य कथन बताइए - (अ. हृ. सू. 18/1, 2)

(a) कफ में या कफ संसृष्ट दोषो में वमन करवाना चाहिये।
(b) पित्त में या पित्त प्रधान संसृष्ट दोषो में विरेचन करवाना चाहिए।
(c) उपरोक्त दोनो कथन सत्य हैं।
(d) पित्त प्रधान दोषो में वमन करवाना चाहिए।

प्र. 2. कौन सी व्याधि वमन के योग्य व विरेचन के अयोग्य है - (अ. हृ. सू. 18/2)

(a) जीर्ण ज्वर (b) हलीमक
(c) नवज्वर (d) श्लीपद

प्र. 3. वमन के योग्य कौन - 2 है - (अ. हृ. सू. 18/2)

(a) कुष्ठ (b) उन्माद
(c) कास (d) सभी योग्य है

प्र. 4. वमन के अयोग्य है - (अ. हृ. सू. 18/4, 5)

(a) अर्श रोगी (b) गुल्म
(c) मूत्राघात (d) All

प्र. 5. निम्न में से सत्य कथन है - (अ. हृ. सू. 18/7, 8)

(a) अजीर्ण में वमन से लेकर गण्डूष तक सभी कर्म निषिद्ध है।
(b) आमज्वर में वमन के साथ-2 विरेचन से लेकर धूमपान पर्यन्त सभी कर्म निषिद्ध हैं।
(c) शुक्र विकार में विरेचन करवाना चाहिए
(d) All

प्र. 6. वमन कर्म करने के लिए औषध देने के बाद कितने मुहूर्त तक प्रतीक्षा करनी चाहिए वेग की। (अ. हृ. सू. 18/18)

(a) 2 मुहूर्त (b) 1 मुहूर्त
(c) 3 याम (d) 1 प्रहर

प्र. 7. दोषानुसार वमन द्रव्य का उचित मिलान करें - (अ. हृ. सू. 18/21, 22)

अ. वात दोष	**1. तीक्ष्ण, उष्ण व कटु द्रव्य**
ब. पित्त दोष	**2. स्निग्ध, अम्ल, लवण द्रव्य**
स. कफ दोष से संसृष्ट वात	**3. मधुर व शीत द्रव्य**

(a) अ - 2, ब - 3, स - 1 (b) अ - 3, ब - 2, स - 1
(c) अ - 1, ब - 2, स - 3 (d) अ - 2, ब - 1, स - 3

प्र. 8. वमन का हीन वेग होने पर क्या चिकित्सा करनी चाहिए। - (अ. हृ. सू. 18/22) (NIA PG 2016)

(a) षड़्गपानीय (b) कणाधात्री सिद्ध लवणोदक
(c) धान्यक सिद्ध लवणोदक (d) लवणोदक

प्र. 9. वमन के हीनयोग के लक्षण क्या हैं। - (अ. हृ. सू. 18/23, 24)

(a) केवल वमन औषध का बाहर आना (b) निष्ठीवन, कण्डू कोठ की उत्पत्ति
(c) ज्वर (d) All

प्र. 10. वमन के सम्यक् योग में दोषो में निकलने का क्रम क्या होता है। - (अ. हृ. सू. 18/24)

(a) कफपित्तानिल (b) पित्तकफानिल
(c) अनिलपत्तिकफ (d) पित्त कफानिल

प्र. 11. वमन के सम्यक् लक्षण कौन से है। - (अ. हृ. सू. 18/24)

(a) मनः प्रसाद (b) स्वास्थ्य अनुभूति
(c) वेग का स्वयं रूक जाना (d) All

प्र. 12. वमन के अतियोग लक्षण कौन से है। - (अ. हृ. सू. 18/25)

(a) फेनचन्द्रकर रक्तवत् (b) वात विकार
(c) तम (d) All

प्र. 13. निम्न में से सत्य कथन बताइए। - (अ. हृ. सू. 18/24, 27)

(a) सम्यक् वमन होने पर 1 क्षण तक आश्वासन देकर त्रिविध धूमपान में से कोई एक धूमपान करावें।
(b) तत्पश्चात पथ्यापथ्य पालन करवाये
(c) सायंकाल या प्रातःकालं भूख लगने पर उष्णोदक से स्नान करके रक्तशालि अन्न का सेवन करते हुए पेयादि क्रम का पालन करें।
(d) सभी कथन सत्य

प्र. 14. उचित मिलान करें संसर्जन क्रम के संदर्भ में (अ. हृ. सू. 18/29)

शुद्धि	**दिन**
अ. प्रवर	**1. 3**
ब. मध्य	**2. 5**
स. अवर	**3. 7**

(a) अ - 3, ब - 2, स - 1 (b) अ - 2, ब - 3, स - 1
(c) अ - 3, ब - 1, स - 2 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3

प्र. 15. उचित मिलान करे - (अ. हृ. सू. 18/31)

शुद्धि	**विरेचन (मानिकी)**
अ. प्रवर	**1. 1 प्रस्थ**
ब. मध्य	**2. 2 प्रस्थ**
स. अवर	**3. 4 प्रस्थ**

(a) अ - 3, ब - 2, स - 1 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 2, ब – 3, स – 1

प्र. 16. निम्न में से सत्य कथन बताइए – (अ. हृ. सू. 18/30, 31)

(a) संसर्जन क्रम करने से अन्तराग्नि भुक्त अन्न का पाचन करने में समर्थ हो जाती हैं।

(b) वमन कर्म में जघन्य, मध्य व प्रवर शुद्धि में क्रमशः मान ½, 1, 2 प्रस्थ होना चाहिए।

(c) वमन पितान्त होना चाहिए तथा विरेचन के मान का आधा होना चाहिए व विरेचन कफान्त होना चाहिए

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 17. निम्न में से सत्य कथन बताइए – (अ. हृ. सू. 18/33, 34)

(a) वमन किये हुए व्यक्ति को पुनः – 2 स्नेहन – स्वेदन करवाकर श्लेष्मकाल के बीत जाने पर कोष्ठ का परिज्ञान करके सम्यक् प्रकार से विरेचन करवाना चाहिए।

(b) मृदु कोष्ठ व्यक्ति को दूध से विरेचन हो जाता हैं।

(c) क्रूर कोष्ठ व्यक्ति को श्यामा त्रिवृत आदि से कृच्छ्रतापूर्वक विरेचन होता हैं।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 18. दोषानुसार विरेचन द्रव्य का उचित मिलान करे। – (अ. हृ. सू. 18/34)

अ.	**पित्तज विकार**	**1.**	**कटु द्रव्य**
ब.	**वातानुबन्ध विकार**	**2.**	**कषाय मधुर द्रव्य**
स.	**कफानुबन्ध विकार**	**3.**	**स्निग्ध उष्ण वीर्य, लवण रस द्रव्य**

(a) अ – 2, ब – 3, स – 1 (b) अ – 3, ब – 2, स – 1

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 2, ब – 1, स – 3

प्र. 19. असत्य कथन बताइए। – (अ. हृ. सू. 18/35, 38)

(a) विरेचन की प्रवृति न हो तो उष्णोदक पिलाना चाहिए और उस व्यक्ति के उदर का पाणिताप स्वेदन कराना चाहिए।

(b) हृदय व कुक्षि की अशुद्धि, अरूचि, कण्डू, पीनस आदि विरेचन के अयोग के लक्षण हैं –

(c) विरेचन के अयोग होने पर मांसधोवन तुल्य अथवा मेद खण्डाभ स्त्राव् मल की प्रवृत्ति होती हैं।

(d) विरेचन के अतियोग होने पर मासंधावन तुल्य अथवा मेदखण्डाभ स्त्राव् मल की प्रवृत्ति होती हैं।

प्र. 20. निम्न में से असत्य कथन बताइये – (अ. हृ. सू. 18/40-41)

(a) जो व्यक्ति दुर्बल, जिसका पहले शोधन हो चुका है ऐसे व्यक्ति को मृदु एवं अल्प औषध पिलायें।

(b) असकृत (बार – 2) दी गई औषध चलायमान एवं अधिक दोषो को थोड़ा – 2 करके बार – बार निकाल देती हैं।

(c) दुर्बल व्यक्ति में दोष अल्प हो तो तीक्ष्ण द्रव्यों से संशोधन करवाना चाहिए।

(d) दुर्बल व्यक्ति में दोष अल्प हो तो मृदु द्रव्यों से उनका शमन कर देना चाहिए।

प्र. 21. सम्यक् विरेचन के पश्चात प्रयोग नहीं करना चाहिए। – (अ. हृ. सू. 18/42)

(a) धूमपान (b) उष्णोदक

(c) पेयादि क्रम (d) All

प्र. 22. निम्न में से असत्य कथन बताइये। - (अ. हृ. सू. 18/44, 45)

(a) विरेचन प्रयोग पश्चात यदि अग्निमन्द हो या अजीर्ण लक्षण हो तो ऐसी स्थिति में विरेचन औषध पीये हुए रोगी को लंघन करवाना चाहिए।

(b) संशोधन करने के बाद संसर्जन क्रम करवाना चाहिये।

(c) संशोधन में जिस व्यक्ति में पित्त-कफ मात्रा में निकला हो ऐसी स्थिति में पेया का प्रयोग करवाना चाहिए।

(d) संशोधन में जिस व्यक्ति में पित्त-कफ मात्रा में निकला हो, जो मद्यपान करने वाला हो ऐसी स्थिति में तर्पण आदि का प्रयोग करवाना चाहिए।

प्र. 23. वमन एव विरेचन में क्रमशः औषध का निर्हरण होता है - (अ. हृ. सू. 18/47)

(a) अपक्व, पच्यमान (b) अपक्व, अपक्व

(c) पच्यमान, अपक्व (d) पक्व, पक्व

प्र. 24. निम्न में से किस व्याधि में अल्प स्नेहन करवाकर शोधन करवाना चाहिए - (अ. हृ. सू. 18/56)

(a) विसर्प (b) कामला

(c) प्रमेह (d) All

प्र. 25. बुद्धि प्रसादं बलम् इन्द्रियाणां धातु स्थिरत्वं ज्वलनस्य दीप्तिम् ..... किस के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 18/60)

(a) सम्यक् वमन (b) सम्यक् संशोधन

(c) सम्यक् विरेचन (d) सम्यक् वस्ति

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(c)	3.	(d)	4.	(d)	5.	(d)	6.	(b)
7.	(a)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(a)	11.	(d)	12.	(d)
13.	(d)	14.	(a)	15.	(a)	16.	(d)	17.	(d)	18.	(a)
19.	(c)	20.	(c)	21.	(a)	22.	(c)	23.	(a)	24.	(d)
25.	(b)										

अध्याय - 19

प्र. 1. ..... उल्बणेषु दोषेषु ..... वा बस्तिरिष्यते। (अ. हृ. सू. 19/1)

(a) पित्त, वात (b) वात, वात

(c) पित्त, पित्त (d) वात, कफ

प्र. 2. अ. ह. के अनुसार बस्ति कितने प्रकार की है। (अ. हृ. सू. 19/1)

(a) 2 (b) 5

(c) 3 (d) 4

प्र. 3. बस्ति का प्रयोग किस व्याधि में नहीं करवाना चाहिए। (अ. हृ. सू. 19/2, 3)

(a) जीर्ण ज्वर (b) वर्ध्म

(c) प्रमेह (d) शुद्ध अतिसार

प्र. 4. आस्थापन बस्ति के अयोग्य कौन नहीं है। (अ. हृ. सू. 19/4, 5)

(a) उरः क्षत (b) शुक्रग्रह

(c) अर्श (d) हिक्का

प्र. 5. अनुवासन बस्ति के अयोग्य कौन है। (अ. हृ. सू. 19/7, 8)

(a) प्लीहा दोष (b) कफोदर

(c) कृमिकोष्ठ (d) All

प्र. 6. बस्ति नेत्र परिमाण का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 19/10)

आयु	**नेत्र प्रमाण**
अ. 1 वर्ष	**1. 5 अंगुल**
ब. 7 वर्ष	**2. 8 अंगुल**
स. 12 वर्ष	**3. 7 अंगुल**
द. 16 वर्ष	**4. 12 अंगुल**
न. 20 वर्ष या 20 से अधिक	**5. 9 अंगुल**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2, द - 5, न - 4

(b) अ - 2, ब - 1, स - 3, द - 6, न - 5

(c) अ - 1, ब - 2, स - 6, द - 3, न - 4

(d) अ - 2, ब- 3, स - 1, द - 4, न - 6

प्र. 7. निम्न से असत्य कथन बताइये। (अ. हृ. सू. 19/12, 13, 15)

(a) बस्ति नेत्र का प्रमाण रोगी कें अंगुष्ठ के मूल बराबर मोटाई व आगे की ओर कनिष्ठिका अंगुली के समान मोटाई होनी चाहिए

(b) 1 वर्ष के शिशु के लिए 1 अंगुल प्रमाण का छिद्र मूल भाग में होना चाहिए।

(c) बस्ति यंत्र बनाने के लिए अजा, अवि आदि की बस्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(d) बस्ति यत्र बनाने के लिए अजा आदि की बस्तिया न मिलने पर अङ्कपाद का चर्म या गाढ़ा वस्त्र लेकर बस्तिपुट का निर्माण करें।

प्र. 8. उचित मिलान करे - (निरूह बस्ति द्रव्य की मात्रा) (अ. हृ. सू. 19/18, 19)

	आयु		**मात्रा**
अ.	**1 वर्ष**	**1.**	**6 प्रसृत**
ब.	**12 वर्ष**	**2.**	**1 प्रकुच**
स.	**18-70 वर्ष**	**3.**	**12 प्रसृत**
द.	**70 वर्ष**	**4.**	**10 प्रसृत**

(a) अ - 2, ब - 1, स - 3, द - 4 (b) अ - 4, ब - 2, स - 1, द- 3

(c) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4 (d) अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3

प्र. 9. निम्न में से असत्य कथन बताइये - (अ. हृ. सू. 19/21, 22)

(a) शीतकाल व बसन्त ऋतु में रात्रि तथा वर्षा/प्रावृट में दिन में अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।

(b) शीतकाल व बसन्त ऋतु में दिन तथा उष्णकाल व वर्षा/प्रावृट ऋतु में रात्रि में बस्ति देनी चाहिए।

(c) अनुवासन बस्ति में स्नेह की निवृति के बाद रोगी को अग्नि प्रदीप्त होने पर सायंकाल लघु भोजन देना चाहिए।

(d) स्नेह निवृति नहीं होने पर 1 अहोरात्र तक प्रतीक्षा करने के बाद फलवर्तियों या तीक्ष्ण बस्तियों के द्वारा स्नेह निकलाने का प्रयास करे।

प्र. 10. अनुवासन बस्ति का निवृतिकाल कितना हैं - (अ. हृ. सू. 19/30)

(a) 1 मुहूर्त (b) 1 याम

(c) 3 याम (d) 1 अधोरात्र

प्र. 11. अनुवासन बस्ति देने के बाद अत्याधिक रूक्षता होने पर स्नेहागमन अभाव में क्या प्रयोग करना चाहिए - (अ. हृ. सू. 19/32)

(a) शुण्ठी व धान्यक से सिद्ध कोष्ण जलपान (b) सुखोष्ण जलपान

(c) A & B (d) शीतल जलपान

प्र. 12. प्रतिदिन अनुवासन बस्ति का प्रयोग किसमें कर सकते हैं - (अ. हृ. सू. 19/33, 34)

(a) जिसमें वात प्रधान्य हो (b) नित्य व्यायाम करने वाले

(c) अग्नि दीप्त हो (d) All

प्र. 13. 3 या 4 स्नेह बस्तियों से स्निग्ध हो जाने पर स्त्रोतोशुद्धि के लिए क्या करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 19/35)

(a) धूमपान (b) विरेचन
(c) निरूह बस्ति (d) वमन

प्र. 14. निरूह बस्ति द्रव्य का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 19/38, 39)

दोष	**क्वाथ में स्नेह**
अ. वात	**1. 1/4 स्नेह**
ब. पित्त व स्वस्थ	**2. 1/8 स्नेह**
स. कफ	**3. 1/6 स्नेह**

(a) अ – 1, ब – 3, स – 2 (b) अ – 2, ब – 1, स – 3
(c) अ – 2, ब – 3, स – 1 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3

प्र. 15. निरूह बस्ति सम्मिश्रण में द्रव्यों का क्रम क्या होता हैं – (अ. हृ. सू. 19/45)

(a) माक्षिक – स्नेह – लवण – कल्क – क्वाथ
(b) माक्षिक – लवण – स्नेह – कल्क – क्वाथ
(c) माक्षिक – लवण – स्नेह – क्वाथ – कल्क
(d) लवण – स्नेह – माक्षिक – क्वाथ – कल्क

प्र. 16. निरूह बस्ति के निवृति का समय कितना है। (अ. हृ. सू. 19/47)

(a) 3 याम (b) 1 मुहूर्त
(c) 2 मुहूर्त (d) 1 अहोरात्र

प्र. 17. निम्न में से असत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 19/48, 60, 52)

(a) निरूह बस्ति में निवृति नहीं हेाने पर अनुलोमन करने वाले तैल, यवक्षार, मूत्र द्रव्यों से कल्पित स्निग्ध, उष्ण और तीक्ष्ण बस्ति देनी चाहिए।
(b) निरूह बस्ति में सम्यक् योग होने पर उष्णोदक से स्नान करवाकर पतला मांसरसौदन देना चाहिए।
(c) निरूह बस्ति देने के बाद वात पीड़ित को तत्काल ही वमन देना चाहिए।
(d) निरूह बस्ति देने के बाद वात पीड़ित को तत्काल अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।

प्र. 18. किञ्चित्कालं स्थितो यश्च सपुरीषो निवर्ततें यस्य अनुलोमानिलः, स्नेहस्तत् सिद्धम् .....। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 19/53)

(a) निरूहम् (b) अनुवासनम्
(c) मात्रा बस्ति (d) उत्तरम्

प्र. 19. दोषो के अनुसार अनुवासन बस्ति संख्या का उचित मिलन करे। (अ. हृ. सू. 19/54-55)

दोष	**बस्ति**
अ. कफ	**1. 5 या 7**
ब. पित्त	**2. 1 या 3**
स. वात	**3. 9 या 11**

(a) अ – 2, ब – 1, स– 3 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 1, ब – 3, स – 2 (d) अ – 3, ब – 2, स – 1

प्र. 20. दोषो के अनुसार बस्ति देने के पश्चात भोजन के विधान का उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 19/55) (BHU MD 2017)

अ.	**वात**	**1.**	**यूष**
ब.	**पित्त**	**2.**	**मांसरस**
स.	**कफ**	**3.**	**क्षीर**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3 (b) अ – 2, ब – 3, स – 1

(c) अ – 3, ब – 1, स – 2 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 21. निम्न में से असत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 19/56, 57, 58)

(a) वातज विकार में वातघ्न औषधियों के क्वाथ में न्यग्रोधादि गण तथा पद्यमकादि गण के साथ स्निग्ध द्रव्य से बस्ति देनी चाहिए।

(b) वातज विकार में वातघ्न औषधियों के क्वाथ में निशोथ व सैन्धव आदि मिलाकर मधुर, अम्ल एवं उष्ण मांसरस युक्त बस्ति देनी चाहिए।

(c) पित्तज विकार में न्यग्रोधादि व पद्यमकादि गण के क्वाथ में मिश्री मिलाकर घृत, क्षीर आदि प्रधान बस्ति देनी चाहिए।

(d) कफज विकार में आरग्वधादि गण व वत्सकादि गण के क्वाथ में मधु, गोमूत्र मिलाकर तीक्ष्ण कटु उष्ण प्रधान बस्ति देनी चाहिए–

प्र. 22. कर्म, काल व योग बस्तियाँ क्रमशः कितनी होती है। (अ. हृ. सू. 19/63, 64)

(a) 30, 16, 8 (b) 30, 15, 8

(c) 30, 8, 15 (d) 30, 15, 12

प्र. 23. काल बस्ति व योग बस्ति में कुल कितनी – 2 अनुवासन बस्तियां क्रमशः दी जाती हैं। (अ. हृ. सू. 69/63, 64)

(a) 10, 10 (b) 10, 5

(c) 10, 6 (d) 5, 5

प्र. 24. कर्म बस्ति व योग बस्ति में कुल कितनी – 2 निरूह बस्ति क्रमशः दी जाती हैं। (अ. हृ. सू. 19/63, 64)

(a) 3, 12 (b) 12, 3

(c) 12, 6 (d) 6, 12

प्र. 25. कर्म, काल व योग बस्ति के प्रारम्भ में क्रमशः कितनी – 2 अनुवासन देने का विधान है। (अ. हृ. सू. 19/63, 64)

(a) 1, 3, 5 (b) 1, 3, 2

(c) 1, 1, 1 (d) 1, 5, 3

प्र. 26. कर्म, काल व योग बस्ति के अन्त में क्रमशः कितनी - 2 निरूह बस्ति देने का विधान हैं। (अ. हृ. सू. 19/63, 64)

(a) 1, 1, 1 (b) 1, 3, 5

(c) 0, 0, 0 (d) 1, 2, 1

प्र. 27. कर्म, काल व योग बस्ति के अन्त में क्रमशः कितनी - 2 अनुवासन बस्ति का विधान हैं। (अ. हृ. सू. 19/63, 64)

(a) 5, 3, 1 (b) 0, 0, 0

(c) 1, 3, 5 (d) 2, 2, 2

प्र. 28. निम्न में से सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 19/65-66)

(a) केवल स्नेह बस्ति के प्रयोग से दोषो का उत्कलेश व अग्नि नाश होता हैं।

(b) केवल निरूहबस्ति प्रयोग से वात प्रकोपक होता हैं-

(c) निरूह के बाद स्नेह बस्ति व स्नेह बस्ति के बाद निरूह बस्ति देनी चाहिए।

(d) All

प्र. 29. युक्तिपूर्वक स्नेहन व शोधन के प्रयोग से बस्तिकर्म होता हैं। (अ. हृ. सू. 19/66)

(a) वातघ्न (b) त्रिदोषघ्न

(c) मलनाशक (d) विबंध नाशक

प्र. 30. ..... स्नेह पानस्य मात्रायां योजितः समः मात्रा बस्ति स्मृतः रिक्त स्थान पूरा करें। (अ. हृ. सू. 19/67)

(a) हस्व मात्रा (b) मध्यम मात्रा

(c) उत्तम मात्रा (d) All

प्र. 31. मात्रा बस्ति के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 19/68-72)

(a) मात्रा बस्ति किसी विशेष पथ्यापथ्य के सेवन की अपेक्षा नहीं करती।

(b) मात्रा बस्ति में स्नेहपान की उत्तम मात्रा का प्रयोग करते हैं।

(c) मात्रा बस्ति का व्यायामशील, वातज विकार पीड़ित व्यक्ति को सर्वदा सेवन करना चाहिए।

(d) मात्रा बस्ति मल को सुखपूर्वक निकालने वाली एवं सुखदायिनी होती हैं।

प्र. 32. उत्तर बस्ति नेत्र प्रमाण के संदर्भ में निम्न में से असत्य क्या हैं। (अ. हृ. सू. 19/71, 72)

(a) उत्तर बस्ति नेत्र का प्रमाण 12 अंगुल होना चाहिए।

(b) बस्ति नेत्र आगे से गोल, गोपुच्छ होना चाहिए।

(c) उत्तर बस्ति नेत्र का प्रमाण 10 अंगुल होना चाहिए।

(d) उत्तर बस्ति नेत्र का आगे का छिद्र सर्षप प्रवेश जितना होना चाहिए।

प्र. 33. उत्तर बस्ति में औषध मात्रा कितनी होती है। (अ. हृ. सू. 19/90)

(a) 2 शुक्ति (b) 1 शुक्ति

(c) 2 कर्ष (d) B & C Both

प्र. 34. उत्तर बस्ति देने का स्त्रियों में काल क्या हैं। (अ. हृ. सू. 19/77)

(a) रजोनिवृति (b) गर्भावस्था
(c) ऋतुकाल (d) All

प्र. 35. उत्तर बस्ति के संदर्भ में सत्य कथन क्या हैं - (अ. हृ. सू. 19/77 - 78 - 79)

(a) स्त्रियों में ऋतुकाल में योनि अपावृत (गर्भाशय मार्ग खुला) होने से स्नेह को ग्रहण कर लेती हैं। इसलिए उत्तर बस्ति ऋतुकाल में देते हैं।
(b) आत्ययिक अवस्था में योनि विभ्रंश, योनिप्रदर, योनि व्यापद व रक्तप्रदर में बिना ऋतुकाल के भी उत्तर बस्ति दी जा सकती हैं।
(c) स्त्रियों के मूत्रमार्ग में मूत्रकृच्छ्र आदि विकारों में बस्ति नेत्र को 2 अंगुल ही प्रविष्ट करवाना चाहिए।
(d) All

प्र. 36. स्त्रियों में अपत्यमार्ग के लिए उत्तर बस्ति नेत्र का प्रमाण क्या होता है। (अ. हृ. सू. 19/79) (UPSC MO 2010)

(a) 12 अंगुल (b) 10 अंगुल
(c) 16 अंगुल (d) 15 अंगुल

प्र. 37. स्त्रियों के योनिमार्ग व बालाओं के मूत्रमार्ग में उत्तर बस्ति नेत्र क्रमशः कितना प्रविष्ट करवाते हैं। (अ. हृ. सू. 19/79)

(a) 4 अंगुल, 4 अंगुल (b) 4 अंगुल, 2 अंगुल
(c) 4 अंगुल, 1 अंगुल (d) 1 अंगुल, 1 अंगुल

प्र. 38. स्त्रियों व बालाओं में क्रमशः उत्तर बस्ति की मध्यम मात्रा कितनी है। (अ. हृ. सू. 19/80)

(a) 1 प्रकुञ्च, 1 शुक्ति (b) 2 प्रकुञ्च, 2 प्रकुञ्च
(c) 1 शुक्ति, 1 प्रकुञ्च (d) 1 शुक्ति, 2 शुक्ति

प्र. 39. सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 19/83)

(a) वमित को 15 दिन बाद विरेचन देना चाहिए।
(b) विरेचन के 15 दिन बार निरूह बस्ति देनी चाहिए।
(c) निरूह के तत्काल बाद अनुवासन बस्ति व विरेचन के 7 दिन बाद अनुवासन बस्ति देनी चाहिए।
(d) All

प्र. 40. अष्टांग हृदयकार ने चिकित्सार्ध किसे कहा हैं। (अ. हृ. सू. 19/86)

(a) सिरावेध (b) रक्तमोक्षण
(c) बस्ति (d) वमन

प्र. 41. अष्टांग हृदयकार ने निज व आगन्तुज रोगों को उत्पन्न करने वाले रक्त के औषध रूप में चिकित्सा किसे कहा है । (अ. हृ. सू. 19/87)

(a) विरेचन (b) बस्ति
(c) सिरावेध (d) All

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (c) 4. (b) 5. (d) 6. (a)

7.	(c)	8.	(a)	9.	(a)	10.	(c)	11.	(c)	12.	(d)
13.	(c)	14.	(a)	15.	(b)	16.	(b)	17.	(c)	18.	(b)
19.	(a)	20.	(b)	21.	(a)	22.	(b)	23.	(b)	24.	(b)
25.	(c)	26.	(c)	27.	(a)	28.	(d)	29.	(b)	30.	(a)
31.	(b)	32.	(c)	33.	(d)	34.	(c)	35.	(d)	36.	(b)
37.	(c)	38.	(a)	39.	(d)	40.	(c)	41.	(c)		

अध्याय - 20

प्र. 1. उर्ध्वजत्रुविकारेषु विशेषान् ..... इष्यते। (अ. हृ. सू. 20/1)

(a) धूमपान (b) नस्य

(c) तर्पण (d) पुटपाक

प्र. 2. नासा हि शिरसो द्वार सूत्र का संदर्भ कहाँ का है। (अ. हृ. सू. 20/1)

(a) सुश्रुत (b) अष्टांग हृदय

(c) चरक (d) भेल

प्र. 3. नस्य का कौनसा भेद नहीं माना गया हैं। (अ. हृ. सू. 20/1)

(a) शोधन (b) विरेचन

(c) बृहंण (d) शमन

प्र. 4. अपस्मार में कौनसा नस्य करते हैं। (अ. हृ. सू. 20/2)

(a) विरेचन नस्य (b) शमन नस्य

(c) बृहंण (d) शोधन

प्र. 5. विरेचन नस्य के योग्य कौन - 2 हैं। (अ. हृ. सू. 20/2)

(a) शिर:शूल (b) गलगण्ड

(c) कुष्ठ (d) All

प्र. 6. कृच्छ्रबोध (नेत्र खोलने में कठिनाई) में कौनसा नस्य प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 20/3)

(a) विरेचन (b) शोधन

(c) बृहंण (d) शमन

प्र. 7. बृहंण नस्य के अयोग्य कौन है। (अ. हृ. सू. 20/3)

(a) अभिष्यन्द (b) सूर्यावर्त

(c) अवबाहुक (d) स्वरक्षय

प्र. 8. नीलिका, व्यङ्ग, केशदोष व अक्षिराजि में कौनसा नस्य प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 20/4)

(a) विरेचन (b) शमन

(c) शोधन (d) बृहंण

प्र. 9. नस्य के संदर्भ में सत्य कथन क्या है। (अ. हृ. सू. 20/5-6)

(a) दोषानुसार द्रव्यों से सिद्ध स्नेह व विभिन्न औषधियों के कल्क एवं क्वाथ आदि से सिद्ध स्नेह एवं मधु, आसव आदि से विरेचन नस्य देने चाहिए।

(b) जांगल मासंरस, मोचरस निर्यास तथा बृहंण द्रव्यों से सिद्ध स्नेह से बृहंण नस्य देना चाहिए।

(c) विरेचन नस्य के स्नेह में जल या दूध से शमन नस्य देना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 10. मात्रा की दृष्टि से नस्य के कितने प्रकार हैं। (अ. हृ. सू. 20/7)

(a) 2 (b) 3

(c) 5 (d) 4

प्र. 11. नस्य के प्रकार के संदर्भ से असत्य कथन कौनसा हैं - (अ. हृ. सू. 20/7)

(a) कल्क आदि के अवपीड़न से जो नस्य दिया जाता हैं वह अवपीड़ नस्य कहलाता हैं।

(b) तीक्ष्ण द्रव्यों से दिया गया नस्य शिरोविरेचन कहलाता हैं।

(c) क्वाथ द्रव्यों से दिया गया नस्य ध्मान नस्य कहलाता हैं।

(d) विरेचन चूर्ण को ध्मन करके (फूकं मारकर) जो नस्य दिया जाता हैं वह ध्मान नस्य कहलाता हैं।

प्र. 12. प्रधमन नस्य के संदर्भ में सत्य कथन कौनसा हैं। (अ. हृ. सू. 20/8)

(a) प्रधमन नस्य में चूर्ण को 6 अंगुल लंबी व 2 मुख वाली नाड़ी से भरते हैं।

(b) प्रधमन नस्य नाड़ी में भरे चूर्ण को फूकंमारकर देते हैं।

(c) औषध चूर्ण होने के कारण अधिक मात्रा में दोष का निर्हरण करती हैं।

(d) All

प्र. 13. मर्श नस्य की मात्रा के संदर्भ में उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 20/10) (CCRAS RO 2016)

	मात्रा		**बिन्दु**
अ.	**प्रवर**	**1.**	**6**
ब.	**अवर**	**2.**	**8**
स.	**मध्य**	**3.**	**10**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 2 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ - 2, ब - 1, स - 3 (d) अ - 2, ब - 3, स - 1

प्र. 14. नस्य के अयोग्य कौन - 2 हैं। (अ. हृ. सू. 20/11-12)

(a) भुक्त भक्त (b) शिर:स्नात

(c) सूतिका (d) All

प्र. 15. नस्य के योग्य काल कौन - 2 से हैं। (अ. हृ. सू. 20/14)

(a) श्लेष्मा प्रकोप - प्रात: काल (b) वात प्रकोप - सायंकाल व रात्रि

(c) पित्त प्रकोप - मध्याह्न (d) All

प्र. 16. नस्य के अयोग्य व्याधि कौनसी हैं। (अ. हृ. सू. 20/15)

(a) हिक्का रोग (b) कास

(c) स्वरभ्रंश (d) मन्यास्तम्भ

प्र. 17. नस्य के काल के संदर्भ में उचित मिलान करे - (अ. हृ. सू. 20/15)

	ऋतु		**काल**
अ.	**शरद, बसन्त**	**1.**	**मध्याह्न**

ब.	**शीतकाल**	**2.**	**सायंकाल**
स.	**ग्रीष्म**	**3.**	**पूर्वाह्न**
द.	**वर्षा**	**4.**	**आतप**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2, द – 4 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4

(c) अ – 2, ब – 1, स – 4, द – 3 (d) अ – 2, ब – 4, स – 3, द – 1

प्र. 18. नस्य कितने दिन तक करवाना चाहिए – (अ. ह्र. सू. 20/16)

(a) 5 दिन (b) 7 दिन

(c) 3 दिन (d) 10 दिन

प्र. 19. नस्य के संदर्भ में असत्य कथन कौनसा हैं – (अ. ह्र. सू. 20/21)

(a) नस्य करने पर यदि मूर्च्छा आ जाये तो शिर को छोड़कर शीतल जल से परिषेक करना चाहिए।

(b) नस्य के बाद 100 तक गिनती गिनने तक उत्तान चिन्त लेटना चाहिए।

(c) विरेचन नस्य देने के बाद दोषादि का ध्यान रखते हुए प्रधमन नस्य देना चाहिए।

(d) नस्य के बाद धूमपान करके कण्ठशुद्धि के लिए सुखोष्ण जल से कवल करना चाहिए।

प्र. 20. स्नेहनस्य के हीन योग के लक्षण कौन से हैं। (अ. ह्र. सू. 20/23)

(a) अक्षि स्तब्धता (b) मुख – नासा शोष

(c) मूर्धा शून्यता (d) All

प्र. 21. नस्य के सम्यक् लक्षण कौनसा नहीं हैं। (अ. ह्र. सू. 20/23)

(a) सुखोच्छ्वास (b) मूर्धा शून्यता

(c) सुख स्वप्न बोध (d) अक्ष पटुता

प्र. 22. स्नेह नस्य के अतियोग का लक्षण क्या हैं। (अ. ह्र. सू. 20/24)

(a) कण्डू (b) प्रसेक

(c) पीनस (d) सभी

प्र. 23. विरेचन नस्य के सम्यक् लक्षण कौनसा नहीं हैं। (अ. ह्र. सू. 20/24)

(a) मूर्धा शून्यता (b) अक्षि लघुता

(c) वक्त्र शुद्धि (d) स्वर शुद्धि

प्र. 24. प्रतिमर्श नस्य का निषेध किसमें नहीं किया गया हैं। (अ. ह्र. सू. 20/27)

(a) उरः क्षत (b) दुष्ट पीनस

(c) कर्ण दौर्बल्य (d) कृमिज शिरोरोग

प्र. 25. प्रतिमर्श नस्य के अ. ह. के अनुसार कितने काल है। (अ. ह्र. सू. 20/27)

(a) 14 (b) 8

(c) 15 (d) 10

प्र. 26. प्रतिमर्श नस्य का निम्न में से कौन सा काल नहीं हैं। (अ. ह्र. सू. 20/28)

(a) व्यायाम के बाद (b) अध्वगमनबाद

(c) रेतसाम् (d) शिरोअभ्यङ्ग बाद

प्र. 27. प्रतिमर्श नस्य के संदर्भ में असत्य कथन क्या हैं। (अ. हृ. सू. 20/29)

(a) रात्रि अन्त में प्रतिमर्श करने से स्त्रोतस शुद्धि होती हैं।

(b) अध्वगमन के बाद प्रतिमर्श नस्य लेने से क्लमनाश होता हैं।

(c) मलत्याग के बाद प्रतिमर्श नस्य लेने से दांतों में दृढ़ता आती हैं।

(d) शिरोअभ्यङ्ग के बाद प्रतिमर्श नस्य लेने से दृष्टि को बल मिलता हैं।

प्र. 28. उचित मिलान करे - (अ. हृ. सू. 20/30, 31)

कर्म	**योग्य आयु**
अ. नस्य	**1. > 18**
ब. धूमपान	**2. > 5**
स. कवल	**3. 10 - 70**
द. संशोधन (वमन - विरेचन)	**4. 7 - 80**

(a) अ - 4, ब -1, स - 2, द - 3 (b) अ - 1, ब - 4, स - 2, द - 3

(c) अ - 4, ब - 2, स - 1, द - 3 (d) अ - 4, ब - 3, स - 2, द - 1

प्र. 29. जन्म से मृत्यु पर्यन्त श्रेष्ठ कर्म कौन सा माना गया हैं। (अ. हृ. सू. 20/32)

(a) प्रतिमर्श नस्य (b) बस्ति

(c) A & B (d) वमन

प्र. 30. नस्य के संदर्भ में सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 20/32, 33)

(a) प्रतिदिन सेवन करने से प्रतिमर्श नस्य मर्श नस्य के समान गुणों वाला होता हैं।

(b) प्रतिमर्श नस्य के पथ्यापथ्य का भय नहीं हैं। ना हि मर्श के समान (अयोग अतियोग) किसी व्यापत्ति का भय हैं।

(c) शिर श्लेष्मा का स्थान है इसलिए घृत वसा, मज्जा आदि कफवर्धक होने से स्नेह उपयुक्त नहीं हैं।

(d) सभी सत्य हैं।

प्र. 31. स्वस्थ व्यक्ति के नस्य के नित्याभ्यास हेतु श्रेष्ठ क्या माना गया है। (अ. हृ. सू. 20/33)

(a) वसा (b) तैल

(c) घृत (d) सभी

प्र. 32. नस्य के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 20/35, 36)

(a) मर्श नस्य आशुकारी व गुणों में श्रेष्ठ होता हैं।

(b) प्रतिमर्श नस्य चिरकारी व गुणों में अपकृष्ट होता हैं।

(c) प्रतिमर्श नस्य अनार्तव व दुर्दिन में कर सकते हैं।

(d) प्रतिमर्श नस्य अनार्तव व दुर्दिन में नहीं कर सकते हैं।

प्र. 33. अणु तैल निर्माण विधि में आकाशीय जल क्वाथ द्रव्यों से कितने गुण लेते हैं। (अ. हृ. सू. 20/37)

(a) 10 गुणा (b) 100 गुणा

(c) 21 गुणा (d) 1000 गुणा

प्र. 34. अणु तैल निर्माण में किसका दुग्ध प्रयोग किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 20/32)

(a) छाग (b) गौ

(c) माहिष (d) एकशफ

प्र. 35. नस्य के लाभ कौन-2 से हैं। (अ. हृ. सू. 20/39)

(a) दृढैन्द्रिया (b) अपालित्य

(c) त्वक् स्कन्ध घन (d) All

प्र. 36. मर्श व प्रतिमर्श नस्य में मुख्य अन्तर हैं। (अ. हृ. सू. 20/9-10 & 28)

(a) काल (b) मात्रा

(c) देश (d) सभी

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(b)	3.	(a)	4.	(a)	5.	(d)	6.	(c)
7.	(a)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(a)	11.	(c)	12.	(d)
13.	(a)	14.	(d)	15.	(d)	16.	(a)	17.	(a)	18.	(b)
19.	(c)	20.	(d)	21.	(b)	22.	(d)	23.	(a)	24.	(a)
25.	(c)	26.	(a)	27.	(c)	28.	(a)	29.	(c)	30.	(d)
31.	(b)	32.	(d)	33.	(b)	34.	(a)	35.	(d)	36.	(b)

अध्याय - 21

प्र. 1. धूमपान के संदर्भ में उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 21/1)

	दोष		**धूमपान**
अ.	**वात**	**1.**	**स्निग्ध**
ब.	**वातकफ**	**2.**	**तीक्ष्ण**
स.	**कफ**	**3.**	**मध्यम**

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3

(c) अ - 3, ब - 2, स- 1 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3

प्र. 2. धूमपान के अयोग्य कौन - 2 हैं। (अ. हृ. सू. 21/2-3)

(a) प्रमेह (b) आध्मान

(c) उदावर्त (d) All

प्र. 3. धूमपान के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 21/2-3)

(a) मत्स्य, दूध, दही सेवन के बाद धूमपान करना चाहिए।

(b) पाण्डु रोगी, विषपान, शिराभिघात, रात्रिजागरण के बाद धूमपान नहीं करना चाहिए।

(c) अकाल में व अतिमात्रा में धूमपान से रक्तपित्त जनित विकार बाधिर्य, मूर्च्छा, मद तथा मोह की उत्पत्ति होती हैं।

(d) अकाल व अति धूमपान जन्य विकारों में शीतल उपक्रम का प्रयोग करना चाहिए।

प्र. 4. धूमपान के संदर्भ में सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 21/5-6)

(a) क्षुत, जृम्भा, विण् मूत्र, स्त्रीसेवन, शस्त्रकर्म, हास्य और दन्तधावन के बाद मृदु धूमपान करना चाहिए।

(b) उपरोक्तकाल और रात्रि में, भोजन के बाद, नस्य के बाद मध्यम (प्रायोगिक) धूमपान करना चाहिए।

(c) निद्रा, अञ्जन, स्नान वमन व नस्य के बाद तीक्ष्ण (वैरेचनिक) धूमपान करना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य

प्र. 5. उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 21/8) (AIIA LEC 2021)

	धूमपान		**धूमनेत्र लंबाई**
अ.	**वैरेचनिक**	**1.**	**32**
ब.	**स्नेहिक**	**2.**	**40**
स.	**प्रायोगिक**	**3.**	**24**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 2 (b) अ - 1, ब - 2, स - 3

(c) अ – 2, ब – 3, स – 1 (d) अ –3, ब – 2, स – 1

प्र. 6. धूमपान करते वक्त एक समय में कितने कश एक नासा छिद्र से लेने चाहिए। (अ. हृ. सू. 21/9)

(a) 2 (b) 1

(c) 3 (d) 5

प्र. 7. धूमपान के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 21/10)

(a) घ्राण व शिरोगत उत्क्लिष्ट दोष में पहले नासा से वह बाद में धूमपान मुख से करना चाहिए।

(b) अगर दोष उत्क्लिष्ट नहीं है तो पहले मुख व बाद में नासिका से धूमपान करें।

(c) कण्ठगत दोष उत्क्लेशन के लिए पहले नासिका व बाद में मुखमार्ग से धूमपान करना चाहिए।

(d) सभी सत्य हैं।

प्र. 8. अष्टाङ्गहृदयानुसार धूमपान विधि में नासा द्वारा व मुख द्वारा लिया हुआ धूम कहाँ से निकालना चाहिए। (अ. हृ. सू. 21/11)

(a) नासा (b) मुख

(c) नासा और मुख (d) कर्ण

प्र. 9. धूमपान में आक्षेप (आदान) व मोक्ष (विसर्जन) क्रमशः कितनी बार करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 21/11)

(a) 2 – 2 (b) 5 – 5

(c) 3 – 3 (d) 1 – 1

प्र. 10. धूमपान के संदर्भ में उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 21/12)

धूमपान	**दिन में काल**
अ. स्निग्ध	**1. 2**
ब. मध्यम	**2. 3 – 4**
स. प्रायोगिक	**3. 1**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 2, ब – 1, स – 3 (d) अ – 1, ब – 3, स – 2

प्र. 11. मृदु धूमपान के द्रव्य नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 21/13-14-15)

(a) हरिद्रा (b) मुस्तक

(c) सर्जरस (d) ध्यामक

प्र. 12. शमन धूमपान के द्रव्य है। (अ. हृ. सू. 21/16)

(a) कमल (b) त्वक्

(c) लोध्र (d) All

प्र. 13. तीक्ष्ण धूमपान के द्रव्य नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 21/17)

(a) ज्योतिष्मती (b) लाक्षा

(c) मुलेठी (d) फलत्रय

प्र. 14. धूमवर्ति की लंबाई कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 21/19, 20)

(a) 10 अंगुल (b) 12 अंगुल

(c) 24 अंगुल (d) 16 अंगुल

प्र. 15. तीक्ष्ण धूमपान के काल कितने हैं। (अ. हृ. सू. 21/6) (NIA PG 2015)

(a) 5 (b) 11

(c) 15 (d) 8

प्र. 16. धूमपान के अयोग्य है - (अ. हृ. सू. 21/22)

(a) पूतिगन्ध (b) केश दोष

(c) अक्षिस्त्राव (d) All

उत्तरमाला

1.	(a)	2.	(d)	3.	(a)	4.	(d)	5.	(a)	6.	(c)
7.	(d)	8.	(b)	9.	(c)	10.	(a)	11.	(a)	12.	(d)
13.	(c)	14.	(b)	15.	(a)	16.	(d)				

अध्याय - 22

प्र. 1. गण्डूष के भेद व दोष का उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 22/1)

अ.	**स्निग्ध**	**1.**	**व्रणघ्न**
ब.	**शमन**	**2.**	**पित्त**
स.	**शोधन**	**3.**	**वात**
द.	**रोपण**	**4.**	**कफ (BHUMD 2010)**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4 (b) अ - 3, ब - 2, स - 4, द - 1

(c) अ - 3, ब - 4, स - 2, द - 1 (d) अ - 4, ब - 3, स - 2, द - 1

प्र. 2. निम्न में से असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 22/2)

(a) स्वादु, अम्ल, पटु रस प्रधान द्रव्यों से सिद्ध स्नेह से स्निग्ध गण्डूष करते हैं।

(b) तिक्त, कषाय, मधुर रस प्रधान औषधियों से सिद्ध क्वाथ में शमन गण्डूष करते हैं।

(c) तिक्त, कटु, अम्ल, पटु, उष्णवीर्य द्रव्यों से शोधन गण्डूष नहीं करते हैं।

(d) कषाय - तिक्त रस प्रधान द्रव्यों से रोपण गण्डूष करते हैं।

प्र. 3. दन्तहर्ष, चलदन्त तथा वातजमुखरोग में किसका गण्डूष धारण करते हैं। (अ. हृ. सू. 22/5)

(a) सूखोष्ण तिलकल्कोदक (b) शीत तिलकल्कोदक

(c) उष्ण जल (d) A & B

प्र. 4. निम्न में से असत्य कथन है - (अ. हृ. सू. 22/5, 6, 7, 8) (UK LEC 2018)

(a) स्वस्थ व्यक्ति को तैल या मांसरस से नित्य गण्डूष करना चाहिए।

(b) दाहयुक्त, मुखपाक, क्षत या विष क्षार अग्नि के कारण दाह होने पर सर्पि या शीतल पय का सेवन करना चाहिए।

(c) मुख व्रणों में दाह तृष्णा प्रशमन के लिए मधु का गण्डूष धारण नहीं करना चाहिए।

(d) मुख शोष को दूर करने लिए काञ्जी का शीत व लवणरहित गण्डूष धारण करना चाहिए।

प्र. 5. आस्य वैरस्य, दौर्गन्ध्यानाश के लिए किस गण्डूष का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/8)

(a) काञ्जी (b) धान्याम्ल

(c) क्षाराम्बु (d) सुखोष्णोदक

प्र. 6. मुख में संचित श्लेष्मा व मुख लाघवता के लिए क्रमशः गण्डूष धारण करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/9)

(a) धान्याम्ल, शीतोदक (b) क्षाराम्बु, सुखोष्णोदक

(c) मधु, पय (d) मधु, सर्पि

प्र. 7. निम्न में से सत्य कथन बताइए। (अ. हृ सू. 22/11-12)

(a) गण्डूष को तबतक धारण करना चाहिए जबतक सम्पूर्ण मुख कफ से न भर जाये व अक्षि स्त्राव् नहीं हो।

(b) कवल धारण करने से मन्यास्तम्भ, कर्ण-मुख-अक्षिरोग में लाभ मिलता हैं।

(c) कवल धारण करने से अरूचि, पीनस आदि रोग सुखसाध्य होते हैं।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 8. अंसचार्यों मुखे पूर्णे ..... सूत्र पूरा करें। (अ. हृ सू. 22/11)

(a) कवल (b) गण्डूष

(c) प्रतिसारण (d) All

प्र. 9. प्रतिसारण के कौन-2 से भेद है। (अ. हृ सू. 22/13)

(a) कल्क (b) रसक्रिया

(c) चूर्ण (d) All

प्र. 10. उचित मिलान करें - (मुखालेप व लेप मोटाई) (अ. हृ सू. 22/15)

मुखालेप	**मोटाई**
अ. दोषघ्न	**1. 1/3 अंगुल**
ब. विषघ्न	**2. 1/4 अंगुल**
स. वर्ण्य	**3. 1/2 अंगुल**

(a) अ - 2, ब - 1, स - 3 (b) अ - 1, ब - 3, स - 2

(c) अ - 3, ब - 2, स - 1 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3

प्र. 11. असत्य कथन बताइए। (अ. हृ सू. 22/14)

(a) वातज व कफज विकारों में दोषहा मुखालेप करना चाहिए।

(b) पित्त दोष में उष्ण वीर्य द्रव्यों से मुखालेप करना चाहिए।

(c) पित्त दोष, विषनाशक व वर्णकृत में शीत मुखालेप श्रेष्ठ हैं।

(d) आलेप सूख जाने पर उसे गीला करके उतारना चाहिए व उस स्थान पर अभ्यंग करना चाहिए।

प्र. 12. मुखालेप वर्ज्य किस व्याधि में हैं। (अ. हृ सू. 22/17)

(a) पीनस (b) हनुग्रह

(c) रात्रिजागरण (d) All

प्र. 13. मुखालेप के संदर्भ में असत्य कथन है। (अ. हृ सू. 22/16, 17, 18)

(a) मुखालेप करके दिवास्वप्न, भाष्य, आतप सेवन व क्रोध करना चाहिए।

(b) रात्रिजागरण करने के बाद मुखालेप प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(c) मुखालेप से अकाल पलित, व्यङ्ग, तिमिर व नीलिकारोग आदि नष्ट होते हैं।

(d) आलेप गीला रहता है तो उसे लगा रहने देने चाहिए, सूखने पर आलेप मुख की छवि को दूषित कर देता हैं।

प्र. 14. ऋतुओं के अनुसार मुखालेप का वर्णन कौन से आचार्य ने किया है - (अ. हृ सू. 22/20,21)

(a) अ. हृ . (b) चरक

(c) सुश्रुत (d) भेल

प्र. 15. कुमुदोत्पल कह्लार दूर्वा मधुक चन्दन आदि द्रव्यों का मुखालेप करना किस ऋतु में करना चाहिए- (अ. हृ. सू. 22/20)

(a) हेमन्त (b) ग्रीष्म

(c) बसन्त (d) वर्षा

प्र. 16. दृढं भवति दर्शनम् वदनं चापरिम्लानं श्लक्ष्णं तामरसोपमम् ये सूत्र किस संदर्भ में आया है - (अ. हृ. सू. 22/22)

(a) नित्य गण्डूष धारण (b) नित्य मुखालेप

(c) नित्य कवल धारण (d) शिरोबस्ति धारण

प्र. 17. अष्टांगहृदय के अनुसार मूर्धतैल के कितने भेद हैं। (अ. हृ. सू. 22/23) (BHU 2009)

(a) 5 (b) 3

(c) 4 (d) 2

प्र. 18. शिर: प्रदेश में रूक्षता, कण्डू, मलिनता होने पर किसका प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/24)

(a) अभ्यङ्ग (b) सेक

(c) पिचु (d) शिरोबस्ति

प्र. 19. अरूंषिका शिर:तोद, दाह, पाक तथा व्रण होने पर किसका प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/24)

(a) अभ्यङ्ग (b) सेक

(c) पिचु (d) शिरोबस्ति

प्र. 20. पिचु का प्रयोग करते हैं - (अ. हृ. सू. 22/25)

(a) केश शात (b) स्फुटन

(c) नेत्र स्तम्भन (d) All

प्र. 21. शिर प्रसुप्त्यर्दितजागरे। नासास्य शोष तिमिरे शिरोरोग च दारूणे यह सूत्र किस संदर्भ में हैं। (अ. हृ. सू. 22/26) (BIHAR PSC)

(a) अभ्यङ्ग (b) शिरोबस्ति

(c) पिचु (d) All

प्र. 22. शिरोबस्ति धारणकाल का उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 22/30)

अ. वात दोष	**1. 8000**
ब. पित्त दोष	**2. 6000**
स. कफ दोष	**3. 10000**
द. स्वस्थ	**4. 1000**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 3, द - 4 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3, द - 4

(c) अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3 (d) अ - 4, ब - 2, स - 3, द - 3

प्र. 23. शिरोबस्ति का अधिकतम कितने दिन तक सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/31)

(a) 5 दिन (b) 3 दिन

(c) 7 दिन (d) 10 दिन

प्र. 24. स्वस्थावस्था में कर्णपूरण धारण कितने मात्रा तक करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 22/32) (IPGT& RA 2013) (KARNATKA PG 2011)

(a) 1000 (b) 100

(c) 500 (d) 10000

प्र. 25. यावत् पर्येति हस्ताग्रं दक्षिण जानुमण्डलम्। निमेषोन्मेप कालेन समं ..... तु सा स्मृता। सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 22/33)

(a) कर्णपूरण (b) मात्रा

(c) काष्ठा (d) घड़ी

प्र. 26. नित्य मूर्धतैल निषेवण से लाभ होते हैं। (अ. हृ. सू. 22/34)

(a) इन्द्रिया प्रसाद (b) स्वरहनुमूर्द्धबल

(c) वातज शिरोरोग नाश (d) All

प्र. 27. अ. हृ. के अनुसार गण्डूष का योग्य काल यह है। (अ. हृ. सू. 22/10)

(a) सूर्योदय पूर्व (b) सूर्योदय पश्चात्

(c) भोजन पश्चात् (d) सांयकाल

प्र. 28. अ. हृ. अनुसार 'दाहतृष्णा प्रशमनम्' बताया है। (अ. हृ. सू. 22/8) (DSRRAU PGET 2016)

(a) घृत गण्डूष (b) लवणयुक्त कांजी गण्डूष

(c) लवणरहित कांजी (d) मधु गण्डूष

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(d)	4.	(c)	5.	(b)	6.	(b)
7.	(d)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(a)	11.	(b)	12.	(d)
13.	(a)	14.	(a)	15.	(b)	16.	(b)	17.	(c)	18.	(a)
19.	(b)	20.	(d)	21.	(b)	22.	(a)	23.	(c)	24.	(b)
25.	(b)	26.	(d)	27.	(b)	28.	(d)				

अध्याय - 23

प्र. 1. सर्वप्रथम कौनसा कर्म चक्षु के सभी रोगों में हितकर होता हैं। (अ. हृ. सू. 23/1) (AIIA MD 2016)

(a) तर्पण (b) आश्चोतन

(c) पुटपाक (d) अञ्जन

प्र. 2. रूक्, तोद कण्डू घर्षाश्रु दाहराग निबर्हणम्। ये सूत्र किस संदर्भ में आया है। (अ. हृ. सू. 23/1)

(a) तर्पण (b) पुटपाक

(c) आश्च्योतन (d) अञ्जन

प्र. 3. दोषानुसार आश्चोतन का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 23/1)

रोग	**आश्च्योतन**
अ. वातज नेत्ररोग	**1. उष्ण वीर्य/उष्ण स्पर्श**
ब. कफज नेत्र रोग	**2. कोष्ण/ईषत् उष्ण**
स. पित्तज व रक्तज नेत्ररोग	**3. शीतल**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3

(c) अ - 1, ब - 3, स - 2 (d) अ - 3, ब - 2, स - 1

प्र. 4. आश्च्योतन देते वक्त नेत्र की कनीनिका संधि की ओर कितने अंगुल ऊपर से औषध डालनी व कितने बूंद औषध क्रमशः डालनी हैं। (अ. हृ. सू. 23/3-4)

(a) 4 अंगुल, 10 - 12 बूंद (b) 2 अंगुल, 10 - 12 बूंद

(c) 1 अंगुल - 10 - 14 बूंद (d) 2 अंगुल, 12 - 13 बूंद

प्र. 5. उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 23/5-6)

नेत्र दोष	**आश्च्योतन**
अ. रूक् राग, दृष्टि नाश	**1. अति तीक्ष्ण**
ब. तोद, स्तम्भ, वेदना	**2. अति शीत**
स. वर्त्मरूक्षता, घर्षण, कृच्छ्र उन्मेष	**3. अल्प**
द. नेत्र विकार वृद्धि	**4. अति**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4 (b) अ - 1, ब - 2, स - 4, द- 3

(c) अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4

प्र. 6. आश्चोतन प्रयोग करने पर जलस्त्राव् न होने पर किस रोग की उत्पत्ति होती है। (अ. हृ. सू. 23/6)

(a) नेत्रक्षोभ (b) अक्षिराग

(c) दृष्टि नाश (d) नेत्र वेदना

प्र. 7. गत्वा संधि शिरो घ्राण मुख स्त्रोतांसि भेषजम्। उर्ध्वगान् नयने न्यस्तम् अपवर्तयते मलान्। ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 23/7)

(a) अञ्जन (b) तर्पण

(c) आश्च्योतन (d) पुटपाक

प्र. 8. अ. ह. के अनुसार अञ्जन के कितने भेद है। (अ. हृ. सू. 23/9)

(a) 4 (b) 2

(c) 3 (d) 5

प्र. 9. उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 23/10)

द्रव्य	**अंजन**
अ. कषाय - अम्ल पटु, उष्ण वीर्य	**1. प्रसादन**
ब. तिक्त रस	**2. रोपण**
स. मधुर रस शीत वीर्य	**3. लेखन**

(a) अ - 3, ब - 1, स - 3 (b) अ - 3, ब - 2, स - 1

(c) अ - 1, ब - 2, स - 3 (d) अ - 3, ब - 1, स - 3

प्र. 10. तीक्ष्णाञ्जनाभिसंतप्ते नयते तत् प्रसादनम् प्रयुज्यमानं लभते ..... समाह्वयम। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 23/11)

(a) प्रसादन अंजन (b) रोपण अंजन

(c) प्रत्यञ्जन (d) लेखन अंजन

प्र. 11. अंजन प्रयोगार्थ शलाका की लंबाई कितनी होनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 23/12)

(a) 12 अंगुल (b) 10 अंगुल

(c) 24 अंगुल (d) 16 अंगुल

प्र. 12. उचित मिलान करे। (अंजन व शलाका) (अ. हृ. सू. 23/13)

अ. लेखन	**1. सुवर्ण व रजत**
ब. रोपण	**2. ताम्र व अंगुली**
स. प्रसादन	**3. काल लौह**

(a) अ - 1, ब - 2, स - 3 (b) अ - 1, ब - 3, स - 2

(c) अ - 2, ब - 3, स - 1 (d) अ - 3, ब - 1, स - 2

प्र. 13. उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 23/14) (UK LEC 2018)

अंजन कल्पना	**दोष**
अ. पिण्ड	**1. अल्प**
ब. रसक्रिया	**2. गुरू**
स. चूर्ण	**3. मध्यम**

(a) अ - 2, ब - 3, स - 1 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3

(c) अ – 1, ब – 2, स – 3 (d) अ – 3, ब – 1, स – 2

प्र. 14. निम्न में से सत्य कथन बताइए – (अ. हृ. सू. 23/14, 15) (Ch. Bhramprakash Lect. 2010)

(a) तीक्ष्ण पिण्ड की मात्रा हरेणु के बराबर व तीक्ष्ण रसक्रिया की मात्रा वेल्ल के बराबर मानी गयी हैं।

(b) मृदु द्रव्य से निर्मित अञ्जन की मात्रा तीक्ष्ण से दोगुनी मानी गयी हैं।

(c) तीक्ष्ण चूर्ण की मात्रा 2 श्लाका व मृदु चूर्ण की मात्रा 3 श्लाका मानी गई हैं।

(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 15. तीक्ष्ण अंजन का प्रयोग कब नहीं करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 23/18)

(a) रात्रि (b) दिन

(c) Both (d) None

प्र. 16. विरेक दुर्बल चक्षुरादित्यं प्राप्य सीदति। ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 23/18)

(a) रसांजन (b) तीक्ष्णाजंन

(c) तर्पण (d) आश्च्योतन

प्र. 17. अञ्जन के संदर्भ में असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 23/20, 21, 22)

(a) अति शीतकाल में रात्रि में तीक्ष्णाजन हितकर हैं।

(b) कफ दोष के अत्यन्त उद्रिक्त होने व लेखनीय नेत्र विकारों में अत्यन्त उष्ण होने पर भी दिन में तीक्ष्ण अंजन का प्रयोग कर सकते हैं।

(c) अति शीतकाल में रात्रि में तीक्ष्णाजन का प्रयोग करने से नेत्र स्त्राव् नहीं होता हैं, इससे स्तब्धता, कण्डु, जड़ता उत्पन्न होती हैं।

(d) शिर स्नान करने के बाद अंजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

प्र. 18. अंजन के अयोग्य है। (अ. हृ. सू. 23/23-24)

(a) अजीर्ण (b) भीत

(c) अक्षि-शिरो रूक (d) All

प्र. 19. अंजन प्रयोग के बाद कौनसा कर्म नहीं करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 23/26-27)

(a) सहसा उन्मेष-निमेष (b) अक्षि प्रक्षालन

(c) वर्त्म निष्पीड़न (d) All

प्र. 20. अंजन के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 23/28, 29, 30)

(a) अतितीक्ष्ण, अतिमृदु, अति सान्द्र आदि अंजन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(b) जब अंजन औषध का लगना बदं हो जाए तब यथा रोग, ऋतु शीतल या उष्ण जल से नेत्र प्रक्षालन करना चाहिए।

(c) अंजन प्रयोग के बाद प्रक्षालन नहीं करने से वर्त्म के भीतर शेष रहा अंजन दोषो को कुपित कर

रोगोत्पत्ति कर देता हैं।

(d) नेत्र में कण्डू या जड़ता होने पर पुनः तीक्ष्णाजंन या तीक्ष्ण धूमपान का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(a)	4.	(b)	5.	(b)	6.	(a)
7.	(c)	8.	(c)	9.	(b)	10.	(c)	11.	(b)	12.	(c)
13.	(a)	14.	(d)	15.	(b)	16.	(b)	17.	(a)	18.	(d)
19.	(d)	20.	(d)								

अध्याय - 24

प्र. 1. नेत्र तर्पण का प्रयोग किस विकार में करते हैं। (अ. हृ. सू. 24/2)

(a) अर्जुन (b) अभिष्यन्द

(c) अन्यतोवात (d) All

प्र. 2. नेत्र तर्पण के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 24/2, 3)

(a) आंख के असमर्थ होने पर शुष्क रूक्ष होने पर नेत्रतर्पण करवाना चाहिए।

(b) नेत्र लालिमा, शूल, संरम्भ, दूषिका शान्त होने पर तर्पण करें।

(c) नेत्र तर्पण कृच्छ्रोन्मील में नहीं करते हैं।

(d) नेत्र तर्पण करने से पहले मूर्ध शुद्धि व काय शुद्धि करवाना चाहिए

प्र. 3. नेत्र तर्पण में वसा का प्रयोग किस रोग में करते है। (अ. हृ. सू. 24/4)

(a) नक्तान्ध्य (b) वातज तिमिर

(c) कृच्छ्रबोध (d) All

प्र. 4. रोगानुसार तर्पण धारण काल का उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 24/7, 8)

	रोग		**धारण काल**
अ.	**वर्त्म रोग**	**1.**	**300 मात्रा**
ब.	**सन्धि रोग**	**2.**	**500 मात्रा**
स.	**सित, कफज रोग**	**3.**	**600 मात्रा**
द.	**पित्तज, स्वस्थ**	**4.**	**700 मात्रा**
न.	**असित रोग**	**5.**	**100 मात्रा**
र	**दृष्टि रोग**	**6.**	**800 मात्रा**

(a) अ - 5, ब - 1, स - 2, द - 3, न - 4, र - 6

(b) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4, न - 5, र - 6

(c) अ - 2, ब - 1, स - 3, द - 5, न - 4, र - 6

(d) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4, न - 6, र - 5

प्र. 5. अधिमन्थ व वातजनेत्ररोग में तर्पण धारण काल कितना होता हैं। (अ. हृ. सू. 24/8)

(a) 800 (b) 1000

(c) 700 (d) 100

प्र. 6. दोषो के अनुसार तर्पण प्रयोग का उचित मिलान करे। (अ. हृ. सू. 24/10)

	विकार		**तर्पण प्रयोग**
अ.	**वातज**	**1.**	**एकान्तर से**
ब.	**पित्तज**	**2.**	**2 दिन के अन्तर**
स.	**कफज व स्वस्थ**	**3.**	**प्रतिदिन**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3 (b) अ – 3, ब – 1, स – 2

(c) अ – 1, ब – 3, स – 2 (d) अ – 2, ब – 3, स – 1

प्र. 7. तर्पण के संदर्भ में सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 24/11)

(a) ''प्रकाश क्षमता स्वास्थ्य विशदं लघु लोचनम'' ये सम्यक् तर्पण के लक्षण हैं।

(b) अति तर्पण होने से कफज विकार नेत्र में उत्पन्न होता हो जाते हैं।

(c) नेत्र में तृप्तिपर्यन्त तर्पण करना चाहिए।

(d) All

प्र. 8. नेत्र रोगों में तर्पण से कलान्त व दृष्टि बल की पुनः बल प्राप्त करने के लिए क्या करवाना चाहिए (अ. हृ. सू. 24/12)

(a) अंजन (b) पुटपाक

(c) आश्च्योतन (d) All

प्र. 9. पुटपाक के संदर्भ में उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 24/13) (KERALA PG 2011)

	पुटपाक		**प्रयोग अवस्था**
अ.	**स्नेहन**	**1.**	**कफ - वातज विकार**
ब.	**लेखन**	**2.**	**पित्तज - रक्तज व स्वस्थ**
स.	**प्रसादन**	**3.**	**वातज नेत्र विकार**

(a) अ – 3, ब – 1, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 1, ब – 3, स – 2 (d) अ – 2, ब – 3, स – 1

प्र. 10. प्रसादन पुटपाक में किस क्षीर का प्रयोग होता हैं। (अ. हृ. सू. 24/16)

(a) स्त्री (b) अजा

(c) गाय (d) अवि

प्र. 11. पुटपाक धारण काल का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 24/19)

	पुटपाक		**धारण मात्रा (काल)**
अ.	**स्नेहन**	**1.**	**200**
ब.	**लेखन**	**2.**	**100**
स.	**प्रसादन**	**3.**	**300**

(a) अ – 1, ब – 3, स – 2 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3

(c) अ – 2, ब – 3, स – 1 (d) अ – 3, ब – 2, स – 1

प्र. 12. पुटपाक के संदर्भ में सत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 24/20)

(a) स्नेहन व लेखन पुटपाक का सुखोष्ण प्रयोग करना चाहिए।

(b) प्रसादन पुटपाक का शीत रूप में प्रयोग करना चाहिए।

(c) स्नेहन व लेखन पुटपाक के बाद धूमपान प्रयोग करवाना चाहिए।

(d) All सत्य

प्र. 13. निम्न में से असत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 24/21-22)

(a) जितने दिन तर्पण व पुटपाक का प्रयोग किया जाये उससे दुगुने समय तक पथ्य पालन करना चाहिए।

(b) तर्पण पुटपाक किया हुआ व्यक्ति रात को मालती व मल्लिका के पुष्प आंखों का बांध कर सोये।

(c) यदि दृष्टि नष्ट हो जाती है तो संसार ज्योतिमय हो जाता हैं।

(d) नेत्रों का संरक्षण यत्नपूर्वक नस्य, अंजन व तर्पणादि से करना चाहिए।

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(c)	3.	(d)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(b)
7.	(d)	8.	(b)	9.	(a)	10.	(a)	11.	(b)	12.	(d)
13.	(c)										

अध्याय - 25

प्र. 1. नानाविधानां शल्यानां नानादेश प्रबाधिनाम्। आहर्तुम अभ्युपायो यस्तद् .....। सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 25/1)

(a) शस्त्र (b) यन्त्र

(c) अनुशस्त्र (d) None

प्र. 2. जो शल्य या अर्श भगन्दर आदि रोग दर्शन व शस्त्र, क्षार, अग्नि कर्म के नियोजन में अंगों की परीक्षा में प्रयुक्त किये जाते हैं। उनका नाम क्या हैं। (अ. हृ. सू. 25/2)

(a) शस्त्र (b) क्षार

(c) यत्र (d) All

प्र. 3. निम्न में से यन्त्र हैं - (अ. हृ. सू. 25/2)

(a) घटिका (b) अलाबु-श्रृग

(c) जाम्बवौष्ठ (d) All

प्र. 4. स्वस्तिक यंत्र की लंबाई व ये यन्त्र कौनसी धातु से बने होते हैं। अष्टांगहृदय के अनुसार (अ. हृ. सू. 25/5)

(a) 18 अंगुल, लौह (b) 16 अंगुल, ताम्र

(c) 18 अंगुल, ताम्र (d) 16 अंगुल, लौह

प्र. 5. स्वस्तिक यन्त्र से कहाँ का शल्य आहरण किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 25/6)

(a) मांस (b) अस्थि

(c) स्नायु (d) All

प्र. 6. संदंश यन्त्र कितने प्रकार का होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/7)

(a) 16 (b) 2

(c) 4 (d) 5

प्र. 7. संदशं यन्त्र की लंबाई कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/7)

(a) 16 अंगुल (b) 2 अंगुल

(c) 18 अंगुल (d) 12 अंगुल

प्र. 8. संदंश यन्त्र किस स्थान के शल्य निकालने का काम करता हैं। (अ. हृ. सू. 25/7)

(a) त्वचा (b) सिरा, स्नायु, मांस

(c) A & B (d) अस्थि

प्र. 9. जो संदंश यन्त्र सूक्ष्म शल्य व उपपक्ष्म को निकालने में प्रयुक्त किया जाता हैं उस संदंश यन्त्र की लंबाई होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/8)

(a) 16 अंगुल (b) 6 अंगुल
(c) 18 अंगुल (d) 12 अंगुल

प्र. 10. गम्भीर व्रण से मांस निकालने व काटने के बाद बचे हुए अर्म को निकालने में किस यन्त्र का प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 25/9)

(a) संदंश यन्त्र (b) मुचुण्डी यन्त्र
(c) नाड़ी यन्त्र (d) स्वस्तिक यन्त्र

प्र. 11. ताल यन्त्र कितने प्रकार का होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/10)

(a) 4 (b) 3
(c) 2 (d) 12

प्र. 12. कर्णनाड़ी से शल्य निकालने में किस यंत्र का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 25/10)

(a) स्वस्तिक (b) तालयंत्र
(c) नाड़ी यंत्र (d) मुचुण्डी यन्त्र

प्र. 13. नाड़ी यंत्र के संदर्भ में असत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 25/11-12)

(a) नाड़ी यन्त्र 10 अंगुल का होता हैं।
(b) नाड़ी यन्त्र स्त्रोतोगत शल्य या रोग दर्शन, क्रियाओं में सौकर्य के लिए तथा आचूषण के लिए प्रयोग किये जाते हैं।
(c) नाड़ी यन्त्र का विस्तार, परीणाह, दैर्ध्य जिस स्त्रोतस में प्रयुक्त करना है उसके अनुसार होता हैं।
(d) कण्ठ नाड़ी यन्त्र 10 अंगुल लंबी व 5 अंगुल मोटी होती हैं।

प्र. 14. शल्य निर्घातनी नाड़ी यन्त्र की लंबाई कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/15)

(a) 16 अंगुल (b) 12 अंगुल
(c) 19 अंगुल (d) 10 अंगुल

प्र. 15. अर्शो यन्त्र का आकार कैसा होता व कितने अंगुल लंबा होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/16)

(a) गोस्तनाकार, 4 अंगुल (b) कमल कर्णिका, 4 अंगुल
(c) काक पक्षी, 10 अंगुल (d) गोस्तनाकार, 6 अंगुल

प्र. 16. अर्शो यन्त्र की परीणाह पुरूषो व स्त्रियों में क्रमशः कितनी होती हैं - (अ. हृ. सू. 25/17)

(a) 5 अंगुल, 6 अंगुल (b) 4 अंगुल, 4 अंगुल
(c) 2 अंगुल, 6 अंगुल (d) 4 अंगुल, 6 अंगुल

प्र. 17. अर्शोयन्त्र में 2 छिद्र किस काम के लिए होते हैं। (अ. हृ. सू. 25/17)

(a) रोग दर्शन (b) शस्त्रकर्म
(c) A & B (d) गम्भीर व्रण के लिए

प्र. 18. शमी यंत्र की विशेषताएं क्या हैं- (अ. हृ. सू. 25/18)

(a) इसमें छिद्र नहीं होता (b) अर्श पीड़न में काम आता हैं।
(c) A & B (d) अर्म हटाने के काम आता हैं।

प्र. 19. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 25/19-20)

(a) अर्शोयंत्र में छिद्र के ऊपर की ओर बने ओष्ठ को सर्वथा हटा देने से भगंदर यंत्र बन जाता हैं।

(b) नासा यंत्र भगन्दर यंत्र के समान होता हैं।

(c) घ्राणार्बुद एवं घ्राणार्श में एक छिद्र वाली नाड़ी होनी चाहिए जो 2 अंगुल लंबी व प्रदेशणी अंगुली के बराबर मोटाई होनी चाहिए।

(d) All

प्र. 20. अङ्गुलित्राणक यंत्र के बारे में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 25/21)

(a) यह यंत्र दंत या वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ है।

(b) यह यंत्र 4 अंगुल लंबा, द्विछिद्र युक्त व गोस्तनाकार होता हैं।

(c) यह यंत्र मुख खोलने के काम नहीं होता।

(d) यह यंत्र मुख खोलने के काम आता हैं।

प्र. 21. योनिव्रणेक्षण यंत्र की लंबाई कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/22)

(a) 12 अंगुल (b) 16 अंगुल

(c) 10 अंगुल (d) 12 अंगुल

प्र. 22. योनिव्रणेक्षण यंत्र के मूल के साथ कितनी शलाका लगी हुई होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/22)

(a) 2 (b) 5

(c) 4 (d) 1

प्र. 23. नाड़ी व्रणोपयोग यंत्र कितने प्रकार का हैं। (अ. हृ. सू. 25/23)

(a) 3 (b) 2

(c) 4 (d) 5

प्र. 24. नाड़ी व्रणोपयोग यंत्र के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 25/24)

(a) इसकी लंबाई 6 अंगुल होती है तथा इनकी आकृति बस्तियंत्र के समान होती हैं।

(b) इसका मूल अंगुष्ठ के समान मोटाई का छिद्र व आगे मुख में मटर के आकार का छिद्र होता हैं।

(c) इसके मूल में मृदु चर्म का पुटक बंधा हुआ होता हैं।

(d) All

प्र. 25. दकोदर में किस नाड़ी यंत्र का प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 25/24)

(a) द्वि द्वारा नलिका (b) मयूरपिच्छ नलिका

(c) A & B (d) अलाबु

प्र. 26. शृङ्ग यंत्र की लंबाई कितनी अंगुल होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/26)

(a) 16 (b) 18

(c) 10 (d) 12

प्र. 27. शृङ्ग यंत्र की आकृति कैसी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/26)

(a) गोस्तनाकार (b) स्त्री चूचुकाकृति

(c) ककं पक्षी (d) कमल कर्णिका

प्र. 28. अलाबु यंत्र की लंबाई तथा चौड़ाई कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/27)

(a) 12 अंगुल, 18 अंगुल (b) 18 अंगुल, 12 अंगुल

(c) 12 अंगुल, 16 अंगुल (d) 18 अंगुल, 16 अंगुल

प्र. 29. अलाबु यंत्र से किस दोष का हरण होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/27)

(a) दुष्टकफ (b) दुष्ट रक्त

(c) A & B (d) दुष्टवात

प्र. 30. घटी यंत्र के संदर्भ में सत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 25/27)

(a) अलाबु के समान घटीयंत्र होता हैं।

(b) घटी यंत्र गुल्म का विलयन व उन्नयन करने के काम आता हैं।

(c) Both a & b

(d) घटी यंत्र 20 अंगुल लंबा होता हैं।

प्र. 31. शलाका यंत्र के संदर्भ में असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 25/29)

(a) शलाका यंत्र का प्रमाण आवश्यकतानुसार होता हैं।

(b) एषण कर्म करने वाली 2 शलाकायें गण्डूपद मुख के समान आकृति की होती हैं।

(c) स्त्रोतस् से शल्य निकलने के लिए मसूर दल के समान मुख वाली 2 शलाकायें होती हैं।

(d) स्त्रोतस से शल्य निकालने वाली शलाका 6 अंगुल लंबी होती हैं।

प्र. 32. गण्डूपद व मसूरदाल मुख वाली शलाका कितने अंगुल लंबी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/29)

(a) 8 (b) 10

(c) 12 (d) 16

प्र. 33. शकुं यंत्र कितने होते हैं। (अ. हृ. सू. 25/30)

(a) 8 (b) 6

(c) 10 (d) 4

प्र. 34. शकुं यन्त्र के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 25/31)

(a) 16 अंगुल व 12 अंगुल के शकुं यत्र सर्पफण के आकृति के होते हैं व्यूहन के काम आते हैं।

(b) दो शकुं यंत्र चालन कर्म के लिये होते है जो 10 व 12 अंगुल के होते हैं। इनकी आकृति शरपुखं के समान होती हैं।

(c) आहरण कर्म के लिए बडिश के समान आकृति के दो शकुं होते हैं।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 35. गर्भशकुं की विशेषताएं है। (अ. हृ. सू. 25/32)

(a) यह 8 अंगुल लंबा होता हैं।

(b) आगे से झुका हुआ शकुं के आकार का गर्भ शकुं होता हैं।

(c) स्त्री के मूढ़गर्भ निकालने के काम आता हैं।

(d) All

प्र. 36. सर्पफणा यंत्र किस काम आता है। (अ. हृ. सू. 25/32)

(a) अश्मरी आहरण (b) दन्तपातन
(c) मूढ़गर्भ आहरण (d) कर्ण प्रमार्जन

प्र. 37. शरपुखं आकृति का 4 अंगुल लंबा यंत्र किस काम आता हैं।

(a) दन्तपातन (b) मूढ़गर्भ आहरण
(c) A & B (d) मांस शल्य

प्र. 38. प्रमार्जन शलाकायें कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/34)

(a) 10 (b) 6
(c) 12 (d) 8

प्र. 39. प्रमार्जन शलाका के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 25/34)

(a) 2 प्रमार्जन शलाका पायु के लिए होते हैं जिनमें से 1 आसन्न भाग के लिए 10 अंगुल व दूसरी 12 अंगुल लंबी दूरस्थ भाग के प्रमार्जन के लिए होती हैं।
(b) घ्राण प्रमार्जन के लिए 6 व 7 अंगुल प्रमाण की 2 शलाकायें होती हैं।
(c) 8 व 9 अंगुल प्रमाण की 2 शलाकायें कर्ण प्रमार्जन के लिए होती हैं।
(d) All

प्र. 40. कर्ण शोधन यंत्र किसके समान होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/35)

(a) गण्डूपद (b) अश्वत्थ पत्र
(c) पीपल पत्र (d) B & C

प्र. 41. क्षाराग्निकर्मार्थ शलाकायें कितनी होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/35)

(a) 3 (b) 6
(c) 5 (d) 4

प्र. 42. अन्त्रवर्ध्मोपयोगी शलाका का मूल किस आकृति का होता हैं। (अ. हृ. सू. 25/36)

(a) चन्द्राकृति (b) अर्द्धचद्राकृति
(c) गण्डूपद (d) मसूर वक्त्र

प्र. 43. नासार्श व नासार्बुद में दहन के लिए शलाका किसके समान मुख वाली होती हैं। (अ. हृ. सू. 25/37)

(a) कोल (b) कोलास्थिदल
(c) मसूररक्त्र (d) आमलकी

प्र. 44. क्षारौषधोपयोगी कितनी शलाका होती हैं व कितने अंगुल लंबाई होती हैं क्रमशः (अ. हृ. सू. 25/38)

(a) 4, 8 अंगुल (b) 4, 3 अंगुल
(c) 3, 8 अंगुल (d) 8, 8 अंगुल

प्र. 45. अनुयंत्र निम्न में से है। (अ. हृ. सू. 25/39-40)

(a) अयस्कान्त (b) काल
(c) पाद (d) All

प्र. 46. निम्न में से कौनसा अनुयंत्र नहीं है। (अ. हृ. सू. 25/39-40-41)

(a) कर (b) हर्ष

(c) जलौका (d) भय

प्र. 47. अनुयंत्र है। (अ. हृ. सू. 25/41)

(a) नख (b) द्विज

(c) वध्र (d) All

प्र. 48. निम्न में से यंत्र कर्म हैं। (अ. हृ. सू. 25/41)

(a) निर्घातन उन्मथन (b) मार्ग शुद्धि

(c) पूरण (d) All

प्र. 49. निम्न में से यंत्र कर्म नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 25/41)

(a) आचूषण (b) ऋजुकरण

(c) लेखन (d) चालन

प्र. 50. सभी यन्त्रों में प्रधान यंत्र हैं। (अ. हृ. सू. 25/42)

(a) बडिश (b) शलाका

(c) ककं मुख (d) मुचुण्डी

प्र. 51. ककं मुख आकृति के समान यंत्र कौन सा है। (अ. हृ. सू. 25/6)

(a) संदशं यन्त्र (b) स्वस्तिक यंत्र

(c) मुचुण्डी यंत्र (d) ताल यंत्र

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(c)	3.	(d)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(b)
7.	(a)	8.	(c)	9.	(b)	10.	(b)	11.	(c)	12.	(b)
13.	(a)	14.	(b)	15.	(a)	16.	(a)	17.	(c)	18.	(c)
19.	(d)	20.	(c)	21.	(b)	22.	(c)	23.	(b)	24.	(d)
25.	(c)	26.	(b)	27.	(b)	28.	(a)	29.	(c)	30.	(c)
31.	(d)	32.	(a)	33.	(b)	34.	(d)	35.	(d)	36.	(a)
37.	(a)	38.	(b)	39.	(d)	40.	(d)	41.	(a)	42.	(b)
43.	(b)	44.	(c)	45.	(d)	46.	(c)	47.	(d)	48.	(d)
49.	(c)	50.	(c)	51.	(b)						

अध्याय - 26

प्र. 1. अ. ह. के अनुसार शस्त्र कितने प्रकार के है - (अ. ह. सू. 26/1)

(a) 26 (b) 28

(c) 24 (d) 20

प्र. 2. शस्त्र प्रायः कितने अंगुल लंबे होते है। (अ. ह. सू. 26/1)

(a) 26 (b) 6

(c) 12 (d) 16

प्र. 3. शस्त्र की विशेषताएं होती हैं। (अ. ह. सू. 26/2-3)

(a) सुग्राह्म (b) अकराल

(c) सन्निहित (d) All

प्र. 4. शस्त्र में अपने प्रमाण का कितना भाग फलक होना चाहिए - (अ. ह. सू. 26/4)

(a) षष्टमांश (b) षौडशाशं

(c) अष्टमांश (d) चतुर्थांश

प्र. 5. निम्न में से कौनसा शस्त्र नहीं हैं। (अ. ह. सू. 26/4)

(a) मण्डलाग्र (b) जलौका

(c) कुशपत्र (d) खज

प्र. 6. पोथकी व शुण्डिका आदि रोगों में लेखन व छेदन के लिए किस शस्त्र का प्रयोग करते हैं। (अ. ह. सू. 26/5)

(a) वृद्धिपत्र (b) मण्डलाग्र

(c) एषणी (d) बडिश

प्र. 7. वृद्धिपत्र शस्त्र का कर्म है। (अ. ह. सू. 26/6)

(a) छेदन (b) भेदन

(c) पाटन (d) All

प्र. 8. वृद्धिपत्रक के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. ह. सू. 26/6)

(a) यह शस्त्र तर्जनी कें अर्न्तनख के समान आकृति वाला होता हैं।

(b) यह शस्त्र क्षुराकार होता हैं।

(c) उन्नत शोफ में सीधे फलक वाला वृद्धिपत्रक व गंभीर शोफ में दूसरा वृद्धिपत्रक प्रयोग करते हैं।

(d) दूसरे प्रकार का वृद्धिपत्रक पीछे से आगे की ओर झुका होना चाहिए व आशय या आश्रय के अनुसार लंबे या छोटे मुख वाला होना चाहिए।

प्र. 9. उत्पल व अध्यर्धधार शस्त्र किस कर्म में प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/7)

(a) छेदन (b) भेदन
(c) A & B (d) पाटन

प्र. 10. घ्राण व कर्ण के अर्श के छेदन के लिए किस शस्त्र का प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/7)

(a) उत्पल (b) अध्यर्धधार
(c) सर्पमुख (d) All

प्र. 11. एषणी के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 26/8)

(a) व्रण की गति के अन्वेषण में शलक्ष्ण व गण्डूपद मखु वाली एषणी प्रयोग की जाती हैं।
(b) भेदन के लिए सूचीमुख के समान नुकीली व मूल छिद्र हो ऐसी ऐषणी का प्रयोग करते हैं।
(c) दोनो सत्य हैं।
(d) दोनो कथन असत्य हैं।

प्र. 12. वेधन कर्म के लिए कौनसा शस्त्र प्रयोग करते है। (अ. हृ. सू. 26/8)

(a) एषणी (b) वेतस
(c) मण्डलाग्र (d) सर्पमुख

प्र. 13. विस्त्रावण के लिए कौनसा शस्त्र प्रयोग किया जाता है। (अ. हृ. सू. 26/9)

(a) शरारिमुख (b) त्रिकूर्चक
(c) आटीमुख (d) All

प्र. 14. ऐसे 2 शस्त्र का नाम बताये जो 2 अंगुल लंबे फल वाले हो व विस्त्रावण के लिए प्रयोग किये जाते हैं। (अ. हृ. सू. 26/9)

(a) कुशपत्र (b) आटीमुख
(c) A & B (d) शरारिमुख

प्र. 15 अन्तर्मुख शस्त्र किस कर्म में प्रयोग होता हैं। (अ. हृ. सू. 26/10)

(a) विस्त्रावण (b) छेदन
(c) सीवन (d) पाटन

प्र. 16. अन्तर्मुख शस्त्र की फल कितने अंगुल का होता है व आकृति कैसी होती हैं। (अ. हृ. सू. 26/10)

(a) 1½ अंगुल, चद्रानन (b) 1½ अंगुल, अर्धचन्द्रानन
(c) 2 अंगुल, अर्धचन्द्रानन (d) 2 अंगुल, चन्द्रानन

प्र. 17. शिरावेध व उदरवेधन में किस शस्त्र का प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/11)

(a) कुठारी (b) मण्डलाग्र
(c) एषणी (d) व्रीहिमुख

प्र. 18. अस्थियों के ऊपर सिरा वेधन करने में किस यन्त्र का प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/12)

(a) कुठारी (b) मण्डलाग्र
(c) अङ्गुलि शस्त्र (d) बडिश

प्र. 19. शलाका शस्त्र का मुख किस आकार का होता है। (अ. हृ. सू. 26/12)

(a) गोस्तनाकार (b) कुरूबक

(c) कर्क पक्षी (d) चन्द्रानन

प्र. 20. शलाका शस्त्र का प्रयोग किस कर्म में करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/12)

(a) गल रोग में छेदन भेदन (b) शिरावेध

(c) लिंगनाश का वेधन (d) उदर वेधन

प्र. 21. अङ्गुलि शस्त्रक का प्रयोग किस कर्म में करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/14/15)

(a) गल रोग में छेदन (b) गल रोग में भेदन

(c) शुण्डिका ग्रहण (d) A & B

प्र. 22. वैद्य की तर्जनी अंङ्गुली के अग्रिम पर्व में पहनने जितने प्रमाण की मुद्रिका के रूप में कौन सा शस्त्र होता हैं। (अ. हृ. सू. 26/15)

(a) अंगुलि शस्त्रक (b) बडिश

(c) करपत्र (d) कुठारी

प्र. 23. शुण्डिका व अर्म पकड़ने के काम आता हैं। (अ. हृ. सू. 26/15)

(a) करपत्र (b) बडिश

(c) शलाका (d) करपत्र

प्र. 24. करपत्र शस्त्र किस कर्म में प्रयोग होता हैं। (अ. हृ. सू. 26/16)

(a) अस्थियों पर छेदन (b) शिरा वेध

(c) उदर वेध (d) गल रोग छेदन

प्र. 25. करपत्र शस्त्र कितने अंगुल लंबाई होती हैं। (अ. हृ. सू. 26/16)

(a) 10 (b) 12

(c) 16 (d) 14

प्र. 26. स्नायु सूत्र व कच छेदन के लिए कौन सा शस्त्र प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/17)

(a) एषणी (b) कर्तरी

(c) नख शस्त्र (d) आरा

प्र. 27. नख शस्त्र की लंबाई कितनी होती है। (अ. हृ. सू. 26/18)

(a) 10 अंगुल (b) 9 अंगुल

(c) 16 अंगुल (d) 12 अंगुल

प्र. 28. नख शस्त्र के कर्म क्या - 2 हैं। (अ. हृ. सू. 26/18)

(a) सूक्ष्म शल्य उद्धृति (b) छेदन - भेदन

(c) प्रच्छान - लेखन (d) All

प्र. 29. दन्त शर्करा शोधन के लिए कौनसा शस्त्र प्रयोग करते है। (अ. हृ. सू. 26/19)

(a) दन्तलेखन (b) आरा

(c) कुठारी (d) All

प्र. 30. अष्टांग हृदयकार ने सीवन कर्म के लिए कितने प्रकार की सूची का वर्णन किया है। (अ. हृ. सू. 26/19)

(a) 5 (b) 3

(c) 2 (d) 4

प्र. 31. सूची के बारे में असत्य कथन हैं - (अ. हृ. सू. 26/20-21)

(a) मांसल प्रदेशो में सीवन कर्म के लिए 3 अंगुल लंबी सूची होनी चाहिए।

(b) कम मांसल प्रदेश व अस्थि संधि प्रदेश में स्थित व्रणों के लिए 2 अंगुल लंबी सूची होनी चाहिए।

(c) मांसल प्रदेशो में सीवन कर्म के लिए 4 अंगुल लंबी सूची होनी चाहिए।

(d) पक्वाशय, आमाशय व मर्मस्थलों में काम लेने के लिए 2½ अंगुल लंबी सूची होनी चाहिए।

प्र. 32. पक्वाशय व आमशय मर्मस्थलों में काम आने वाली सूची कैसी होनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 26/21)

(a) व्रहिमुख (b) धनुर्वक्त्रा

(c) Both a & b (d) चन्द्रानन

प्र. 33. नीलिका, व्यङ्ग व केशशातन में कुट्टन कर्म के लिए किस शस्त्र का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 26/22)

(a) सूची (b) कूर्च

(c) खज (d) यूथिका

प्र. 34. घ्राण से असृक हरण के लिए किस शस्त्र का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 26/23)

(a) कूर्च (b) यूथिका

(c) आरा (d) खज

प्र. 35. कर्णपाली वेधन के लिए किस शस्त्र का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 26/24)

(a) यूथिका (b) आरा

(c) खज (d) कूर्च

प्र. 36. पक्व या अपक्व शोफ के संशय होने एवम् बहल कर्णपाली के वेधन कर्म किस शस्त्र से करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/25)

(a) सूची (b) शलाका

(c) आरा (d) कुठारी

प्र. 37. बहल कर्णपाली वेधन के लिए श्रेष्ठ शस्त्र कौनसा हैं व कितना लंबा होता हैं। (अ. हृ. सू. 26/26)

(a) यूथिका, 3 अंगुल (b) कर्णवेधनी, 3 अंगुल

(c) कर्णवेधनी, 4 अंगुल (d) सूची, 6 अंगुल

प्र. 38. निम्न में से अनुशस्त्र हैं। (अ. हृ. सू. 26/27)

(a) जलौका (b) क्षार

(c) अग्नि (d) All

प्र. 39. निम्न में से अनुशस्त्र नहीं है। (अ. हृ. सू. 26/27)

(a) काच (b) संदशं

(c) उपल (d) नख

प्र. 40. शस्त्र कर्म कितने माने है। (अ. हृ. सू. 26/28)

(a) 6 (b) 13
(c) 12 (d) 10

प्र. 41. निम्न में से शस्त्र कर्म नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 26/28)

(a) पाटन (b) बन्धन
(c) व्यधन (d) एषण

प्र. 42. निम्न में से शस्त्र कर्म है। (अ. हृ. सू. 26/28)

(a) लेखन (b) प्रच्छान
(c) ग्रहण (d) All

प्र. 43. शस्त्र दोष की संख्या कितनी हैं। (अ. हृ. सू. 26/29)

(a) 13 (b) 8
(c) 9 (d) 10

प्र. 44. शस्त्र ग्रहण विधि के संदर्भ में उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 26/31-32)

	शस्त्रकर्म		ग्रहण
अ.	छेदन, भेदन, लेखन	1.	वृत्त व फलक के मध्य तर्जन, मध्यमा व अंगुष्ठ से पकड़े
ब.	विस्त्रावण	2.	वृन्त के अग्र भाग को हस्ततल ढकते हुए मुखभाग से पकड़े
स.	ब्रीहिमुख	3.	मूल भाग से पकड़े
द.	आहरण	4.	तर्जनी व अंगुष्ठ से वृन्त आगे से भाग को पकड़े

(a) अ - 1, ब - 4, स - 2, द - 3 (b) अ - 2, ब - 1, स - 3, द - 4
(c) अ - 4, ब - 1, स - 3, द - 2 (d) अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4

प्र. 45. शस्त्र कर्म की लंबाई व चौड़ाई कितने अंगुल होनी चाहिए - (अ. हृ. सू. 26/33)

(a) 9, 12 (b) 12, 9
(c) 16, 16 (d) 9, 9

प्र. 46. सविष जलौका की विशेषताएं क्या हैं। (अ. हृ. सू. 26/36)

(a) इन्द्रायुधा समान (b) रोमश
(c) विचित्र वर्ण व उर्ध्व राजि वाली (d) All

प्र. 47. सविष जलौका प्रयोग से क्या हानि होती हैं। (अ. हृ. सू. 26/36)

(a) कण्डू (b) पाक
(c) ज्वर-भ्रम (d) All

प्र. 48. सविष जलौका की चिकित्सा क्या हैं। (अ. हृ. सू. 26/36)

(a) विषनाशक (b) पित्तनाशक
(c) रक्त विकृतिनाशक (d) All

प्र. 49. निर्विष जलौका का लक्षण नहीं है। (अ. हृ. सू. 26/37-38)

(a) शैवल श्याव (b) नीलोर्ध्वराजि
(c) कृष्णा (d) कषाय पृष्ठवन्त

प्र. 50. जलौकावचारण विधि के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 26/40)

(a) जलौका लगाने से पहल जलौका को हरिद्रा कल्कयुक्ता जल, काञ्जिक, तक्र में पहले डुबोना चाहिए।
(b) जलौका लगाने पूर्व उस स्थान पर घृत, मिट्टी, दूध या रक्त लगाना चाहिए अथवा शस्त्र से खंरोच देना चाहिए।
(c) रक्तपान करती हुई जलौका का स्कन्ध उत्सन्न हो जाता है। उसे मृदु वस्त्र से ढक देना चाहिए।
(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 51. जलौकावचारण निम्न में से किस रोग में प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 26/42) (1)

(a) विसर्प (b) नेत्रविकार
(c) अर्श (d) All

प्र. 52. जलौकावचारण के संदर्भ में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 26/43)

(a) जलौका वमन के लिए लवण और तैल से आक्त करके चावल की श्लक्ष्ण कणिकाओं को जलौका मुख पर लगाना चाहिए।
(b) सम्यक् वमन कराने से जलौका में पूर्ववत् पटुता व दृढ़ता आ जाती हैं।
(c) जलौका का अति वमन कराने से क्लम की उत्पत्ति या मृत्यु हो जाती हैं।
(d) उपरोक्त सभी सत्य हैं।

प्र. 53. जलौका में अतिरक्त सेवन से उत्पन्न व्याधि का नाम है। (अ. हृ. सू. 26/43)

(a) रक्तमद (b) इन्द्रमद
(c) ज्वर (d) इन्द्रयुधा

प्र. 54. जलौका का पुनः प्रयोग कितने दिन बाद करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 26/43)

(a) 5 (b) 7
(c) 10 (d) 12

प्र. 55. दुर्वान्त की स्थिति में जलौका में क्या उत्पन्न हो जाता हैं। (अ. हृ. सू. 26/44)

(a) स्तब्धता (b) मद
(c) Both (d) None

प्र. 56. जलौकावचारण के पश्चात कर्म क्या हैं। (अ. हृ. सू. 26/46)

(a) दशं स्थान पर हरिद्रा, मधु व गुड़ से स्त्रावण (b) शतधौत घृत युक्त पिचु
(c) शीतल वस्तुओं का सेवन (d) उपरोक्त सभी

प्र. 57. निम्न में से असत्य कथन है। (अ. हृ. सू. 26/47)

(a) दुष्ट रक्त स्त्राव् होने से राग व पीड़ा में वृद्धि हो जाती हैं।
(b) अशुद्ध रक्त का पुनः स्त्राव् करना चाहिए क्योंकि अपने स्थान से चला हुआ अशुद्ध रक्त व्रण स्थान में स्थित हो जाने से पर्युषित होकर विदग्ध हो जाता हैं।

(c) पित्त द्वारा दूषित रक्त में रक्तस्त्रावण के लिए अलाबु व घटी यंत्र का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इसमें अग्नि का सबंध रहता है।

(d) कफ से दूषित रक्त में श्रृंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि वह स्कन्धित होता हैं।

प्र. 58. उचित मिलान करे रक्तमोक्षण संदर्भ में (अ. हृ. सू. 26/49-54)

अ.	**पित्त दोष**	**1.**	**अलाबु व घटी**
ब.	**कफ - वात/कफ दोष**	**2.**	**श्रृङ्गं**
स.	**वात-पित्त/वात दोष**	**3.**	**जलौका**
(a)	अ - 1, ब - 2, स - 3	(b)	अ - 3, ब - 1, स - 2
(c)	अ - 2, ब - 1, स - 3	(d)	अ - 1, ब - 3, स - 2

प्र. 59. रक्त की अवस्थानुसार प्रच्छान विधि का उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 26/54)

अ.	**एक देश में रक्त**	**1.**	**जलौका**
ब.	**ग्रथित रक्त**	**2.**	**श्रृंग अलाबू**
स.	**सुप्त रक्त**	**3.**	**सिरावेधन**
द.	**सर्वव्यापि रक्त**	**4.**	**प्रच्छान**
(a)	अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3	(b)	अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4
(c)	अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3	(d)	अ - 1, ब - 2, स - 4, द - 3

प्र. 60. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 26/54)

	रक्त अवस्था		**रक्त विस्त्रावण उपाय**
1.	**पिण्डित रक्त**	**अ.**	**जलौका**
2.	**अवगाढ़ रक्त**	**ब.**	**प्रच्छान**
3.	**त्वक्स्थ दूषित रक्त**	**स.**	**सिरा वेधन**
4.	**सर्व शरीर व्यापी दूषित रक्त**	**द.**	**अलाबू, घटी या श्रृंग**
(a)	अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3	(b)	अ - 2, ब - 4, स - 1, द - 3
(c)	अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3	(d)	अ - 1, ब - 2, स - 3, द - 4

प्र. 61. एक व्यक्ति ने रक्त स्त्राव् के बाद शीत प्रदेह आदि प्रयोग से वात का प्रकोप होकर उसे तोद व कण्डू सहित शोथ हो गया हैं उसे क्या उपचार दिया जा सकता है। (अ. हृ. सू. 26/55)

(a) उष्णोदक (b) उष्ण घृत

(c) घृत + मधु (d) शीतोदक

उत्तरमाला

1.	(a)	2.	(b)	3.	(d)	4.	(c)	5.	(b)	6.	(b)
7.	(d)	8.	(a)	9.	(c)	10.	(c)	11.	(c)	12.	(b)
13.	(d)	14.	(c)	15.	(a)	16.	(b)	17.	(d)	18.	(a)
19.	(b)	20.	(c)	21.	(d)	22.	(a)	23.	(b)	24.	(a)

25.	(a)	26.	(b)	27.	(b)	28.	(d)	29.	(a)	30.	(b)
31.	(c)	32.	(c)	33.	(b)	34.	(d)	35.	(a)	36.	(c)
37.	(b)	38.	(d)	39.	(b)	40.	(b)	41.	(b)	42.	(d)
43.	(b)	44.	(a)	45.	(b)	46.	(d)	47.	(d)	48.	(d)
49.	(c)	50.	(d)	51.	(d)	52.	(d)	53.	(a)	54.	(b)
55.	(a)	56.	(d)	57.	(a)	58.	(b)	59.	(a)	60.	(a)
61.	(b)										

अध्याय - 27

प्र. 1. शुद्ध रक्त का लक्षण नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 27/1)

(a) मधुर (b) किञ्चित लवण

(c) कषाय (d) अशीतोष्ण

प्र. 2. असहंतम् पद्मेन्द्रगोपहेमाविशलोहितलोहितम् ये लक्षण किसके माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 27/1) (NIA LEC 2020)

(a) शुद्ध रक्त (b) ओज

(c) शुद्ध आर्तव (d) अशुद्ध रक्त

प्र. 3. रक्त प्रकोप के हेतु हैं। (अ. हृ. सू. 27/1)

(a) पित्त प्रकोपकनिदान (b) कफ प्रकोपक निदान

(c) A & B (d) वात प्रकोपक निदान

प्र. 4. दूषित रक्तजन्य विकार हैं। (अ. हृ. सू. 27/2)

(a) अग्नि सदन (b) ज्वर

(c) मद (d) All

प्र. 5. दूषित रक्त जन्य विकार निम्न में से नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 27/3)

(a) लवणास्यता (b) भम्र

(c) मधुरास्यता (d) शिरोरोग

प्र. 6. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 27/4, 5, 8)

(a) जो विकार शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष आदि उपक्रमों से सम्यक् प्रकार से उपचार करने पर भी ठीक नहीं होते है तो उन्हे रक्तज विकार मानना चाहिए।

(b) रक्त विकार में उद्रिक्त रक्त के विस्त्रावण के लिए सिरावेध करना चाहिए।

(c) जो सिरा नियंत्रित नहीं की गई हो उसका सिरावेधन नहीं करना चाहिए।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 7. सिरावेधन की आयु सीमा क्या मानी गयी हैं। (अ. हृ. सू. 27/6)

(a) 20 - 70 वर्ष (b) 16 - 60 वर्ष

(c) 16 - 70 वर्ष (d) 5 - 70 वर्ष

प्र. 8. सिरावेधन के अयोग्य हैं। (अ. हृ. सू. 27/7)

(a) अतिसार (b) छर्दि

(c) पाण्डुरोग (d) सभी

प्र. 9. शिरोरोग व नेत्र विकार में सिरावेधन करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/9-10)

(a) ललाट की सिरा (b) अपाङ्ग प्रदेश की सिरा

(c) नासिका प्रदेश की सिरा (d) उपरोक्त सभी

प्र. 10. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 27/10 -11)

	रोग		**सिरावेधन स्थल**
अ.	**कर्ण रोग**	**1.**	**नासाग्रे सिरा**
ब.	**नासा रोग**	**2.**	**नासा व ललाट सिरा**
स.	**पीनस रोग**	**3.**	**जिह्वा, ओष्ठ, हनु, तालु की सिराये**
द.	**मुख रोग**	**4.**	**कर्णजा सिरा**

(a) अ – 4, ब – 1, स – 2, द – 3 (b) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4

(c) अ – 4, ब – 2, स – 1, द – 3 (d) अ –3, ब – 1, स – 2, द – 4

प्र. 11. उरः प्रदेश, अपाङ्ग व ललाट स्थित सिराओं का वेधन किस व्याधि में करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/11)

(a) अपस्मार (b) उन्माद

(c) कास (d) विद्रधि

प्र. 12. जत्रु के उर्ध्व ग्रंथियों में किस स्थान का सिरावेधन करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/11)

(a) ग्रीवा (b) शिर प्रदेश

(c) कर्ण–शख (d) सभी

प्र. 13. अपस्मार में निम्न में से किस स्थान की सिराओं का वेधन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/12)

(a) हनु की सिरा (b) हनु संधि की सिरा

(c) भ्रवों मध्य स्थित भ्रू मध्यगमिनी सिरा (d) उपरोक्त सभी

प्र. 14. उरः प्रदेश या पार्श्व में स्थित विद्रधि व पार्श्वशूल में किस सिरा का वेधन करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/12)

(a) पार्श्वस्थ सिरा (b) कक्षास्थ या स्तन के मध्य स्थित सिरा

(c) Both a & b (d) स्तन स्थित सिरा

प्र. 15. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 27/13-14)

अ.	**तृतीयक ज्वर**	**1.**	**उरू की सिरा**
ब.	**चतुर्थक ज्वर**	**2.**	**मेढ्र में स्थित सिरा**
स.	**शुक्र रोग व मेढ्र रोग**	**3.**	**स्कन्ध के नीचे स्थित सिरा**
द.	**गलगण्ड**	**4.**	**दोनों अंस संधियों के मध्य सिरा**

(a) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4 (b) अ – 4, ब – 3, स – 2, द – 1

(c) अ – 4, ब – 2, स – 3, द – 1 (d) अ –1, ब – 3, स – 2, द – 4

प्र. 16. शूलयुक्त प्रवाहिका में सिरावेधन करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/14)

(a) श्रोणी से 2 अंगुल दूर (b) श्रोणी से 4 अंगुल दूर

(c) स्कन्ध से 4 अंगुल दूर (d) इन्द्रबस्ति मर्म से 2 अंगुल दूर

प्र. 17. गृध्रसी में जानु से कितने अंगुल ऊपर या नीचे स्थित सिरा का वेधन किया जाता हैं - (अ. हृ. सू. 27/14) (अ. हृ. सू. 27/15)

(a) 2 (b) 4

(c) 5 (d) 3

प्र. 18. अपची रोग में किस मर्म व कितने अंगुल नीचे सिरा वेधन किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 27/15)

(a) विटप मर्म, 2 अंगुल (b) क्षिप्र मर्म, 4 अंगुल

(c) इन्द्रबस्ति मर्म, 2 अंगुल (d) इन्द्रबस्ति मर्म, 4 अंगुल

प्र. 19. गुल्फ से चार अंगुल ऊपर स्थित सिरा का वेधन किस रोग में किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 27/16)

(a) सक्थि शूल (b) क्रोष्टुक शीर्ष

(c) A & B (d) खुड

प्र. 20. पाददाह, खुड, पादहर्ष, विपादिका, वातकण्टक व चिप्प रोग में कौनसी सिरा का वेधन किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 27/16)

(a) क्षिप्र मर्म के 2 अंगुल नीचे स्थित सिरा

(b) क्षिप्र मर्म के 2 अंगुल ऊपर स्थित सिरा

(c) क्षिप्र मर्म के 4 अंगुल ऊपर स्थित सिरा

(d) क्षिप्र मर्म के 4 अंगुल नीचे स्थिर सिरा

प्र. 21. विश्वाची रोग में किस रोग के समान सिरावेध करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/16)

(a) गृध्रंसी (b) क्रोष्टुक शीर्ष

(c) अपची रोग (d) अपस्मार

प्र. 22. सिरावेधन से पूर्व किस प्रकार के भोजन के सेवन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/19)

(a) स्निग्ध रसान्न (b) पिच्छिल अन्न

(c) रूक्ष अन्न (d) शीत अन्न

प्र. 23. उपनासिका का सिरावेधन किस शस्त्र से करते हैं। (अ. हृ. सू. 27/25)

(a) बडिश (b) शलाका

(c) ब्रीहिमुख (d) सूची

प्र. 24. हस्त सिरा व पाद सिरा का वेधन करना हो तो वेध्य प्रदेश से कितने अंगुल ऊपर पट्टिका बांध कर वेधन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/28)

(a) 2 (b) 4

(c) 5 (d) 1

प्र. 25. मांसल प्रदेश में सिरावेधन का प्रमाण होना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/33)

(a) यव (b) यवार्ध

(c) व्रीहि (d) मुद्ग

प्र. 26. अस्थियों के ऊपर कुठारिका को कितने प्रमाण में गहरा सिरावेधन में प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/33)

(a) यव (b) यवार्ध

(c) व्रीहि (d) कलाय

प्र. 27. उचित मिलार करें। (अ. हृ. सू. 27/34)

विद्ध	**लक्षण**
अ. सम्यक् विद्ध	**1. धारा रूप में रक्त बहता हैं।**
ब. अल्प विद्ध	**2. तैल की तरह बूंद बूंद रक्त स्राव**
स. दुर्विद्ध	**3. रक्त शब्द के साथ तेजी से स्त्राव**
द. अतिविद्ध	**4. रक्त का अल्प स्त्राव्**

(a) अ – 1, ब – 4, स – 2, द – 3 (b) अ – 4, ब – 1, स – 3, द – 2

(c) अ – 1, ब – 2, स – 4, द – 3 (d) अ – 4, ब – 3, स – 1, द – 2

प्र. 28. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 27/36)

(a) भय, मूर्च्छा, यंत्र शैथिल्य आदि रक्त अस्त्रुति के हेतु हैं।

(b) रक्त के असम्यक् स्त्राव् में वेल्ल, त्रिकटु, हरिद्रा, तगर, लवण, तैल इन सबसे सिरा के मुख पर लेप करना चाहिए।

(c) रक्त का सम्यक् स्त्राव् हो रहा हो तो तो सुखोष्ण तैल में नमक मिलाकर सिरा पर लेप करें।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 29. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 27/38-39)

(a) जिस प्रकार कुसुम्भ में पहले पीला रंग आता हैं बाद में लाल रंग का तैल वैसे ही सिरावेध करने से पहले शुद्ध रक्त निकलता हैं।

(b) जो रक्त अच्छी प्रकार स्त्रावित होकर स्वयं रूक जाये वह शुद्ध रक्त होता हैं उसे और नहीं निकालना चाहिए।

(c) रक्तस्त्राव् के समय मूर्च्छा आने पर बन्धन खोलकर व्यजनै से हवा करे व मूर्च्छा दूर होने पर पुनः स्त्राव् करें।

(d) यदि पुनः स्त्राव् करने पर मूर्च्छा आ जाये तो अगले दिन या तीसरे दिन स्त्राव् करें।

प्र. 30. अस्कन्दि व चन्द्रिकायुक्त रक्त स्त्राव् कौन से दोष के दूषित होने से निकलता हैं। (अ. हृ. सू. 27/40)

(a) वात (b) पित्त

(c) कफज (d) सन्निपातज

प्र. 31. पाण्डुवर्ण व तन्तुमत् रक्त स्त्राव् किस दूषित दोष से होता हैं – (अ. हृ. सू. 27/41)

(a) कफ (b) वात
(c) पित्त (d) सन्निपात

प्र. 32. बलवान व्यक्ति में भी रक्तस्त्राव् को श्रेष्ठ प्रमाण कितना बताया गया हैं। (अ. हृ. सू. 27/42)

(a) 1 ½ प्रस्थ (b) 1 प्रस्थ
(c) 1 कुड़व (d) 1 प्रसृत

प्र. 33. अतिरक्तस्त्राव् की चिकित्सा क्या हैं। (अ. हृ. सू. 27/42)

(a) अभ्यङ्ग (b) मांसरस
(c) दुग्ध व रक्तपान (d) सभी

प्र. 34. अतिरक्तस्त्राव् की चिकित्सा में किस आचार्य ने रक्तपान का वर्णन किया हैं। (अ. हृ. सू. 27/42)

(a) सुश्रुत (b) काश्यप
(c) लघु वाग्भट्ट (d) भेल

प्र. 35. रक्तमोक्षण करवाने के बाद भी अगर रक्त अधिक दूषित हो तो पुनः विधिपूर्वक स्नेहन स्वेदन के बाद रक्तमोक्षण कब करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/43)

(a) 2 दिन (b) 15 दिन
(c) 1 दिन (d) 10

प्र. 36. सत्य कथन क्या हैं। (अ. हृ. सू. 27/45-46, 47)

(a) रक्त मोक्षण में दुष्ट रक्त अवशिष्ट रहे तो भी उसको धारण करना चाहिए लेकिन अति स्त्राव् नहीं करना चाहिए।
(b) रक्तमोक्षण के बाद शेष बचे हुए दुष्ट रक्त को श्रृङ्ग, अलाबु आदि से निकाल देना चाहिए।
(c) रक्तमोक्षण के बाद शीतोपचार, रक्तपित्त में किये जाने वाली क्रियायें करनी चाहिए या वमन - विरेचन से संशोधन करना चाहिए या उपवास आदि से विशेषण करना चाहिए।
(d) सभी कथन सत्य हैं-

प्र. 37. यदि रक्तमोक्षण के बाद अपनी स्थिति नहीं प्राप्त करता हैं तो क्या क्रिया करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 27/48-49)

(a) स्तम्भन (b) चूर्ण का अवचूर्णन
(c) सिरा मुख दहन (d) सभी कथन सत्य

प्र. 38. तदा शरीरं ह्यवस्थितासृग ..... विशेषाद इति रक्षितव्य। इस सूत्र को पूरा करियें। (अ. हृ. सू. 27/52)

(a) अग्नि (b) रक्त
(c) पित्त (d) वात

प्र. 39. विशुद्ध रक्त पुरूष के लक्षण हैं - (अ. हृ. सू. 27/53)

(a) प्रसन्न वर्णेन्द्रिय (b) पुष्टिबलोपपन्न

(c) अव्याहतपक्तृवेगम्

(d) सभी कथन सत्य हैं

उत्तरमाला

1.	(c)	2.	(a)	3.	(c)	4.	(d)	5.	(c)	6.	(d)
7.	(c)	8.	(d)	9.	(d)	10.	(a)	11.	(b)	12.	(d)
13.	(d)	14.	(c)	15.	(b)	16.	(a)	17.	(b)	18.	(c)
19.	(c)	20.	(b)	21.	(a)	22.	(a)	23.	(c)	24.	(b)
25.	(c)	26.	(b)	27.	(a)	28.	(d)	29.	(a)	30.	(b)
31.	(a)	32.	(b)	33.	(d)	34.	(c)	35.	(b)	36.	(d)
37.	(d)	38.	(a)	39.	(d)						

अध्याय - 28

प्र. 1. शल्य की गतियाँ कितनी हैं। (अ. हृ. सू. 28/1)

(a) 3 (b) 5

(c) 4 (d) 7

प्र. 2. अन्तः शल्य के लक्षण क्या हैं। (अ. हृ. सू. 28/1)

(a) श्याम वर्ण (b) बुद् बुद्वत पिटिकोपचितं व्रण

(c) शोफ रूजा वन्त (d) सभी

प्र. 3. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 28/3-4)

(a) त्वाग्गत शल्य में व्रण स्थान पर विवर्णता होती हैं शोफ कठिन व दीर्घ होता हैं।

(b) मांसगत शल्य में चोष, शोफ बढ़ता है व इससे असहिष्णुता होती हैं और शीघ्र पाक होता हैं एवं शल्य मार्ग का रोहण नहीं होता।

(c) पेशी में शल्य होने पर शोथ को छोड़कर सभी लक्षण मांसगत शल्य के समान होते हैं-

(d) सभी कथन सत्य हैं -

प्र. 4. स्नायुगत शल्य के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 28/4)

(a) आक्षेप (b) स्नायुजाल संक्षोभ

(c) स्नायुजाल में स्तम्भ व वेदना (d) सभी

प्र. 5. असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 28/5-6)

(a) स्त्रोतस् में शल्य होने पर उस स्त्रोतस् के अपने कर्म एवं गुणों में हानि होती हैं।

(b) धमनी में शल्य होने पर वायु फेनिल रक्त को बाहर निकालती हैं और वायु शब्द के साथ बाहर आती हैं।

(UPSC 2010)

(c) शल्य पीड़ित व्यक्ति को ह्लास व अंग वेदना नहीं होती हैं।

(d) अस्थि की संधि में शल्य होने पर सन्धि में तीव्र क्षोभ होता हैं।

प्र. 6. अस्थि संधि में शल्य होने पर लक्षण होते हैं। (अ. हृ. सू. 28/7)

(a) अस्थि पूर्णता (b) शोफ

(c) अस्थि स्तम्भता (d) अस्थि वेदना

प्र. 7. शल्य के अस्थिगत होने के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 28/7)

(a) शोफ (b) रूजा

(c) Both a & b (d) स्तम्भन

प्र. 8. शल्य के सन्धिस्थ होने पर लक्षण किसके समान दिखते हैं। (अ. हृ. सू. 28/7)

(a) धमनीस्थ (b) अस्थि संधि गत

(c) अस्थिगत (d) स्नायुगत

प्र. 9. शल्य के कोष्ठगत होने के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 28/8)

(a) आटोप – आनाह

(b) व्रण के मुख से अन्न मल व मूत्र दर्शन

(c) Both a & b

(d) अतिसार

प्र. 10. त्वक्गत प्रनष्ट शल्य के लक्षण क्या – क्या हैं। (अ. हृ. सू. 28/11)

(a) अभ्यङ्ग, स्वेदन व मर्दन करने से लालिमा, दाह, पीड़ा, क्षोभ होता है।

(b) वहाँ घृत लगाने से शीघ्र पिघल जायेगा।

(c) लगाया गया लेप शीघ्र सूख जाता हैं।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 11. मांस में प्रनष्ट शल्य का ज्ञान कैसे करते हैं। (अ. हृ. सू. 29/12)

(a) वमनादि के कारण व्यक्ति कृश हो जाने पर मासंगत शल्य शिथिल हो जाता हैं।

(b) उस स्थान पर शल्य के कारण क्षोभ होने से उत्पन्न रागादि उत्पन्न होता हैं।

(c) Both a & b

(d) घृत लगाने पर शीघ्र पिघल जाता हैं।

प्र. 12. मांस प्रनष्ट शल्य के समान ओर किस शल्यगत लक्षण होते हैं। (अ. हृ. सू. 28/13)

(a) पेशीगत प्रनष्ट शल्य (b) अस्थि – संधि प्रनष्ट शल्य

(c) कोष्ठगत प्रनष्ट शल्य (d) All

प्र. 13. अस्थि प्रनष्ट शल्य का ज्ञान कैसे करते हैं। (अ. हृ. सू. 28/14)

(a) अस्थि अभ्यङ्ग (b) स्वेदन – बन्धन

(c) पीड़न – मर्दन (d) All

प्र. 14. संधियों में प्रनष्ट शल्य को किस प्रकार जानना चाहिए। (अ. हृ. सू. 28/14)

(a) प्रसारण व आकुञ्चन किया (b) अस्थि के प्रनष्ट शल्य गत ज्ञान

(c) Both a & b (d) पेशीगत प्रनष्ट शल्य वत

प्र. 15. एक व्यक्ति को अश्वयुक्त रथ पर बैठाकर असमान मार्ग पर तेजी से रथ को दौड़ने पर होने वाले क्षोभ से किस स्थान का प्रनष्ट शल्य जानना चाहिए। (अ. हृ. सू. 28/15)

(a) स्नायु – सिरागत (b) स्त्रोतस गत

(c) धमनी गत (d) All

प्र. 16. शल्य की आकृति किस प्रकार की मानी गयी हैं। (अ. हृ. सू. 28/18)

(a) वृत (b) पृथु

(c) त्रिकोण–चतुष्कोण (d) All

प्र. 17. शल्य आहरण के उपाय क्या हैं। (अ. हृ. सू. 28/19)

(a) अनुलोम – प्रतिलोम (b) अर्वाचीन – प्राचीन

(c) Both a & b (d) छेदन

प्र. 18. तिर्यग्गत शल्य किस प्रकार निकालना चाहिए। (अ. हृ. सू. 28/19)

(a) भेदन (b) छेदन

(c) प्रच्छान (d) लेखन

प्र. 19. अनिर्घातनीय शल्य कौन से है। (अ. हृ. सू. 28/20)

(a) उरः प्रदेश, कक्षा, वंक्षण व पार्श्वगत हो तथा प्रतिलोमगत हो।

(b) अनुतुण्ड व छेदन योग्य हो।

(c) पृथुमुखी शल्य

(d) All

प्र. 20. अनिर्हरणीय शल्य कौन से हैं। (अ. हृ. सू. 28/21)

(a) विशल्यघ्न शल्य (b) नष्ट शल्य

(c) निरूपद्रव शल्य (d) All

प्र. 21. निम्न में से असत्य कथन बताइए। (अ. हृ. सू. 28/22-23)

(a) जो शल्य हाथ से पकड़कर निकाल सकते हैं उन्हें यंत्रों की सहायता से निकालना चाहिए।

(b) जो शल्य हाथ से पकड़कर नहीं निकाल सकते हैं तथा दृश्य है उन्हें सिंहमुख, सर्वमुख, आदि यन्त्रों से निकालना चाहिए।

(c) अदृश्य शल्य को कंकमुख, भृङ्गमुख, शरारिमुख आदि यंत्रों से पकड़कर निकाला जा सकता हैं।

(d) यदि शल्य को निकालने में मांसादि का अवरोध हो तो सर्वप्रथम शस्त्र से उस व्रण मुख को काटकर उसके व्रण को निर्लोहित कर उसका घृत से स्वेदन कर उस स्थान पर पट्टी बांधनी चाहिए।

प्र. 22. त्वचा आदि में स्थित शल्य को किस यंत्र से निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/24)

(a) मुचुण्डी (b) संदंश

(c) ताल (d) All

प्र. 23. शुषिर स्थानों में स्थित शल्य को किस यन्त्र से निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/25)

(a) संदश (b) नलक

(c) बडिश (d) मुचुण्डी

प्र. 24. शुषिर शल्य को किस यंत्र से निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/25)

(a) ताल यन्त्र (b) मण्डलाग्र

(c) बडिश (d) संदश

प्र. 25. सिरा व स्नायु शल्य को किससे निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/25)

(a) बडिश (b) मण्डलाग्र

(c) शलाका (d) ताल

प्र. 26. अस्थिगत शल्य निर्हरण के लिए वाजि को कौन सा बन्ध बांधते हैं। (अ. हृ. सू. 28/30)

(a) पंचागी बन्ध (b) दाम

(c) उत्संग (d) **अनुवेल्लित**

प्र. 27. जो शल्य निष्कर्ण व्रण मुख विवृत वाले होते हैं उन्हें किसकी सहायता से बाहर निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/32)

(a) संदश (b) अयस्कान्त

(c) ताल (d) बडिश

प्र. 28. पक्वाशय गत शल्य को कैसे निकालते हैं। (अ. हृ. सू. 28/34)

(a) वमन (b) विरेचन

(c) बस्ति (d) शिरोविरेचन

प्र. 29. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 28/35-36-37)

(a) दुष्टवात, विष, स्तन्य, रक्त या शरीर में कहीं भी एकत्रित दूषित तोय आदि को चूषण विधि से निकालना चाहिए।

(b) कण्ठ में फसें शल्य को निकालने के लिए धागे को बिस के कण्ठ में प्रवेश करवाना चाहिए।

(c) कण्ठ में यदि लाख से बनी वस्तु फंस जाये तो शीत शलाका को कण्ठ में प्रवेश करवाते हैं।

(d) मछली आदि कण्टक कण्ठ में अटक जाये तो द्रव पदार्थ के साथ केशगुच्छ की बनी हुई कन्दुक को धागा बाँधकर पिला दें।

प्र. 30. किसी व्यक्ति के कर्णस्त्रोत में कीट चला जाये तो क्या करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 28/42)

(a) तैल या पानी मथकर कर्ण में डाले

(b) सुखोष्ण शुक्त से कर्ण पूरण करे

(c) कीट मर जाये तो कर्ण से क्लेद निकाल दें

(d) उपरोक्त सभी क्रियाएं

प्र. 31. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 28/43, 45,46)

(a) लाख व स्वर्ण, चांदी धातुओं के शल्य यदि देर तक शरीर में रहे तो शरीर गर्मी से उनका विलयन हो जाता हैं।

(b) विषाण, वेणु, अयस, ताल, दारू ये शल्य देर पर पड़े रहने से ये प्राय: रक्त-मांस आदि को शीघ्र पका देते हैं, एवं स्वयं उनसे पृथक हो जाते हैं।

(c) मांस में अवगाढ़ शल्ययुक्त स्थान पर पाक नहीं होता। इसलिए मर्दन, स्वेदन, बृहंण से पकाकर पाटन, ऐषण और भेदन कियाओं से बाहर करना चाहिए।

(d) All Correct

प्र. 32. निम्न में से कौनसा शल्य देह उष्मा से विलीन नहीं होता हैं। (अ. हृ. सू. 28/44)

(a) मिट्टी (b) वेणु

(c) श्रृङ्ग (d) All

प्र. 33. निम्न में से कौनसा शल्य देह उष्मा से विलीन हो जाता हैं। (अ. हृ. सू. 28/44)

(a) स्वर्ण (b) दन्त

(c) बाल (d) उपल

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(d)	3.	(d)	4.	(d)	5.	(c)	6.	(a)
7.	(c)	8.	(c)	9.	(c)	10.	(d)	11.	(c)	12.	(d)
13.	(d)	14.	(c)	15.	(d)	16.	(d)	17.	(c)	18.	(b)
19.	(d)	20.	(d)	21.	(a)	22.	(b)	23.	(b)	24.	(a)
25.	(c)	26.	(a)	27.	(b)	28.	(b)	29.	(c)	30.	(d)
31.	(d)	32.	(d)	33.	(a)						

अध्याय - 29

प्र. 1. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/1-2)

(a) श्वयथुपूर्वक पाक से व्रण होता है। इसलिए पहले शोथ की चिकित्सा करके पाक से बचाना चाहिए।
(b) शोथ का उपचार अतिशीतल लेप, परिषेक, रक्तमोक्षण औंर संशोधन से करना चाहिए।
(c) अल्प शोफ, अल्प ऊष्मा, अल्पवेदना, सवर्ण, कठिन स्थिर में आम शोफ के लक्षण हैं।
(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 2. विवर्णस्तु रागी बस्तिरिवाततः स्फुटतीव निस्तोदः साङ्गमर्दविजृम्भिकः। ये सूत्र किस संदर्भ में आया हैं। (अ. हृ. सू. 29/3)

(a) आमशोफ (b) पच्यमान शोफ
(c) व्रण (d) पक्व शोफ

प्र. 3. निम्न में से पच्यमान शोफ का लक्षण नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 29/4)

(a) दाह (b) अतिनिद्रा
(c) अनिद्रा (d) तृष्णा - ज्वर

प्र. 4. व्रणवत् स्पर्शनासह किस शोफ का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/4)

(a) पच्यमान शोफ (b) पक्व
(c) आम (d) निराम

प्र. 5. पाण्डुता, कण्डूता शोफादि मादर्व किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/5)

(a) व्रण (b) पक्व शोफ
(c) पच्यमान (d) आम

प्र. 6. वलि संभवः किस शोफ का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/5)

(a) अति पक्व (b) विद्रधि
(c) पक्व (d) पच्यमान

प्र. 7. स्पृष्टे पूयस्य संचारो भवेद् बस्ताविवाम्भसः। किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/5)

(a) पित्तज विद्रधी (b) पक्व शोफ
(c) रक्त पाक (d) व्रण

प्र. 8. उचित मिलान करें। (पाक में दोषो का हेतुत्व) (अ. हृ. सू. 29/6)

अ. वात	**1. दाह**
ब. पित्त	**2. शोफ**
स. कफ	**3. राग**
द. रक्त	**4 शूल**

(a) अ - 4, ब - 1, स - 2, द - 3

(b) अ – 4, ब – 1, स – 3, द – 2

(c) अ – 1, ब – 4, स – 2, द – 3

(d) अ – 4, ब – 2, स – 3, द – 1

प्र. 9. शूल नर्तेऽनिलाद् दाहः पित्ताच्छोफ कफोदयात् ..... ये सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 29/6)

(a) अ. ह. सूत्रस्थान (b) अ. ह. शारीर स्थान

(c) अ. ह. निदानस्थान (d) अ. ह. चिकित्सा स्थान

प्र. 10. सुषिरस्तनुत्व दोष भक्षितः वलीभिराचित श्याव शीर्यमाणतनुरूहः ये सूत्र किसके लक्षण में आया हैं। (अ. हृ. सू. 29/7)

(a) जलोदर (b) अतिपाक में शोथ

(c) रक्तपाक (d) विद्रधी

प्र. 11. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/8-9-10)

(a) कफज शोथ में रक्त का पाक गम्भीरता से (गहराई तक) होता हैं इसलिए इस शोथ में पकने के लक्षण अस्पष्ट होते हैं।

(b) रक्तपाक के लक्षण शीत शोफता, त्वक् सवर्ण, अल्पत्व वेदना आदि लक्षण होते हैं।

(c) अल्प सत्व, निर्बल, बालक में उत्पन्न शोथ में एवं पाक के कारण अत्यत उद्धत शोथ में या मर्म संधि आदि में स्थित शोथ में पाटन कर्म करना चाहिए।

(d) अल्प सत्व, निर्बल बालक में उत्पन्न शोथ में एवं पाक के कारण अत्यंत उद्वत शोथ में या मर्म संधि आदि में स्थित शोथ में दारूण कर्म करना चाहिए।

प्र. 12. घनस्पर्शवत् अश्मवत् ये किसका लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/9)

(a) कफज अश्मरी (b) रक्तपाक शोफ

(c) कफज शोफ (d) अतिपक्व शोफ

प्र. 13. आम शोथ में छेदन करने से कौन सी व्याधि उत्पन्न हो जाती हैं। (अ. हृ. सू. 29/11)

(a) क्षतजन्य विसर्प (b) ग्रंथि विसर्प

(c) आग्नेय विसर्प (d) कफज विसर्प

प्र. 14. आम शोथ में छेदन से क्या हानि होती है। (अ. हृ. सू. 29/11)

(a) सिरा – स्नायु व्यापद

(b) अति रक्त स्त्राव व अति रूजा वृद्धि

(c) त्वक् दारण

(d) उपरोक्त सभी

प्र. 15. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/12-13-14)

(a) पक्व शोथ में छेदन नहीं करने से पूय सिरा, स्नायु, रक्त व मांस को जला देती हैं।
(b) जो वैद्य आम शोथ का छेदन करता है या पाक शोथ की उपेक्षा करता हैं ऐसे वैद्य को श्वपच के समान मानना चाहिए।
(c) शस्त्र कर्म में जो वेदना व सहन करने वाला तथा मद्य पीने वाला रोगी हो उसे मद्यपान करना चाहिए।
(d) उपरोक्त सभी सत्य कथन हैं।

प्र. 16. शस्त्र कर्म करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/14)

(a) इष्ट भोजन करके (b) खाली पेट
(c) भोजन के मध्य (d) पीन पीकर

प्र. 17. अन्न संयोग व मद्यपान का क्या लाभ हैं - (अ. हृ. सू. 29/15)

(a) मूर्च्छा नहीं आती (b) शस्त्र पीड़ा का ज्ञान नहीं होता
(c) Both a & b (d) None

प्र. 18. किन व्याधियों में खाली पेट शस्त्र कर्म करना चाहिए।

(a) मूढगर्भ (b) अश्मरी
(c) मुख रोग व उदर रोग (d) All

प्र. 19. शस्त्र कर्म करते समय रोगी को किस दिशा में मुख करके बैठना चाहिए- (अ. हृ. सू. 29/15)

(a) उत्तर (b) पूर्व
(c) दक्षिण (d) पश्चिम

प्र. 20. शस्त्र कर्म विधि में शस्त्र को किस रूप में लगाना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/17)

(a) अनुलोम (b) प्रतिलोम
(c) Both a & b (d) तिर्यक

प्र. 21. यदि शोथ (पाकस्थल) बड़ा हो तो कितने अङ्गुल पाटन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/18)

(a) 4 (b) 2
(c) 3 (d) 1

प्र. 22. यदि पाकस्थल बड़ा है तो दूसरा पाटन कितनी दूरी पर करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/19)

(a) 2 अंगुल (b) 3 अंगुल
(c) Both a & b (d) 4 अंगुल

प्र. 23. सम्यक् पाटन के लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 29/20)

(a) व्रण सुविभक्त व निराशय वाला हो जायें। (b) व्रण आयत व विशाल होना चाहिए
(c) व्रण में पूय नहीं रहनी चाहिए (d) उपरोक्त सभी

प्र. 24. शौर्यम आशुक्रिया तीक्ष्ण शस्त्रम् अस्वेदवेपथू असम्मोहश्च। ये सूत्र में किसके गुण बताये गये हैं। (अ. हृ. सू. 29/21)

(a) परीक्षक (b) वैद्य
(c) शल्य चिकित्सक (d) परिचारक

प्र. 25. निम्न में से किस पर तिर्यक छेदन करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/22)

(a) ललाट (b) भ्रू
(c) दन्तवेष्ट (d) All

प्र. 26. निम्न में किस पर तियर्क छेदन नहीं करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/22)

(a) स्फिक् (b) कक्षा
(c) अक्षिकूट (d) कपोल

प्र. 27. तिर्यक छेदन कुक्षि, ओष्ठ, गल, वक्षंण प्रदेश आदि के अलावा किसी अन्य प्रदेश में किया जाये तो क्या हानि होती हैं। (अ. हृ. सू. 29/23)

(a) अति रक्त स्त्राव् (b) सिरा-स्नायु विपाटन
(c) त्वक् दारूण (d) अति रूजा वृद्धि

प्र. 28. व्रण छेदन के बाद क्या-क्या पश्चात कर्म करने चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/24-25-26-27)

(a) व्रण शोधक कषाय से व्रण का प्रक्षालन कर प्लोत से व्रण में स्थित जल को साफ करे।
(b) उसके बाद गुग्गुलु, सरसों, हिंग, वचा आदि से व्रण का धूपन करे।
(c) तिलकल्क, घी व मधु इसमें दोषानुसार अन्य औषध लेकर वर्ति बनाकर व्रण में रखें।
(d) उपरोक्त सभी

प्र. 29. व्रण पर वर्ति व औषध के ऊपर घृत मिश्रित सत्तू रखकर कर एक कवलिका रखकर युक्तिपूर्वक सावधानी से बांधने का विधान है - इसमें बांधने के लिए किस प्रकार की गांठ लगानी चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/28)

(a) दक्षिण पार्श्व में (b) वाम पार्श्व
(c) Both a & b (d) व्रण के ऊपर या नीचे गांठ लगाये।

प्र. 30. व्रण रक्षा के लिए किन औषध को सिर पर धारण करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/30)

(a) लक्ष्मी (b) गुहा
(c) जटिला (d) All

प्र. 31. व्रण उपचार के बाद किसके समान आचरण करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/31)

(a) स्नेहपानवत् (b) वमनवत्
(c) विरेचनवत् (d) बस्तिवत्

प्र. 32. व्रण के संदर्भ निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/32-33)

(a) दिवास्वप्न से व्रण में कण्डू, लालिमा, शोथ, रूजा और पूय उत्पन्न होता हैं।
(b) स्त्रियों के स्मरण, संस्पर्श या दर्शन से व्यवायजनित दोष उत्पन्न हो जाते हैं।
(c) आयास से व्रण में शोथ व रात्रिजागरण से लालिमा होती हैं।
(d) सभी कथन सत्य है।

प्र. 33. उचित मिलान करें (शस्त्र कर्म में त्याज्य का सेवन से लक्षण)। (अ. हृ. सू. 29/33 (1))

अ. आयास	**1. लालिमा**
ब. रात्रिजागरण	**2. शोथ**
स. दिवाशयन	**3. लालिमा + शोथ + रूक् + मृत्यु**
द. मैथुन	**4. लालिमा + शोथ + रूक्**

(a) अ - 2, ब - 1, स - 4, द - 3 (b) अ - 2, ब- 4, स - 3, द - 1

(c) अ – 4, ब – 1, स – 3, द – 2 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3, द – 4

प्र. 34. शस्त्र कर्म के पश्चात निम्न में से पथ्य आहार है। (अ. हृ. सू. 29/34-35)

(a) बालमूलक (b) वार्ताक

(c) कारवेल्लक (d) All

प्र. 35. निम्न में शस्त्र कर्म के पश्चात निम्न में अपथ्य आहार हैं। (अ. हृ. सू. 29/36)

(a) कर्कोट (b) तिल

(c) वास्तुक (d) आमलकी

प्र. 36. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/37-38-39)

(a) शस्त्रकर्म के बाद पथ्य सेवन करने से भोजन सूखपूर्वक जीर्ण हो जाता हैं।

(b) व्रणी को उड़द, मद्य, मांस, इक्षु विकृति आदि का सेवन करना चाहिए।

(c) अपथ्य पूर्वक, अकाल या अतिमात्रा में भोजन करने से अजीर्ण हो जाता हैं जिससे वातादि दोषो का बलवान विभ्रम होने से, शोथ, रूजा, पाक, दाह आदि उत्पन्न होते हैं।

(d) व्रणी को नवधान्य, अम्ल, लवण, कटुरस का त्याग करना चाहिए।

प्र. 37. व्रणी का अपथ्य आहार सेवन कौन सा दोष प्रकोपक होता हैं। (अ. हृ. सू. 29/40)

(a) वातप्रकोप (b) सर्वदोष

(c) पित्त दोष (d) कफ दोष

प्र. 38. व्रण में पूर्ववतः प्रक्षालन आदि व्रणकर्म किस दिन करने चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/43)

(a) तीसरे (b) चौथे

(c) दूसरे (d) सातवें

प्र. 39. दूसरे दिन व्रण में पूर्ववतः प्रक्षालन करने से क्या हानि होती हैं। (अ. हृ. सू. 29/44)

(a) तीव्र व्यथा (b) ग्रंथिया उत्पन्न होती हैं

(c) चिरात संरोहण (d) उपरोक्त सभी

प्र. 40. व्रण के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/41-42-44-48)

(a) बाल एवं उशीर से व्रण को हवा करनी चाहिए, व्रण पर किसी प्रकार का आघात या रगड़ नहीं करना चाहिए।

(b) व्रण पर अतिस्निग्ध, अतिरूक्ष, गाढ़ी, वेशिका या कल्क रखना चाहिए।

(c) व्रण में रखी हुई विशेका पूति मांस युक्त व्रण को, शुषिरयुक्त व्रण को मार्गयुक्त व्रण को व पूययुक्त व्रण को शीघ्र शोधित करती हैं।

(d) व्यम्लं (विदग्ध व्रण) को अज्ञानवश पाटन करने पर शोथ की पाचन द्रव्यों से चिकित्सा करे व व्रण विरोधी नहीं ऐसे भोजन व उपनाह का प्रयोग करें।

प्र. 41. उचित मिलान करें (व्रण व वेशिका या कल्क के संदर्भ में)। (अ. हृ. सू. 29/45)

वेशिका

अ.	**अति स्निग्ध**	**1.**	**छेदन**
ब.	**अतिरूक्ष**	**2.**	**रूजा**
स.	**अतिश्रलथ, अतिगाढ़**	**3.**	**व्रण वर्त्म अवघर्षण**
		4.	**त्वक दरण**

(a) अ – 3, ब – 2, 1, 5, स – 4 (b) अ – 3, 2, ब – 1, 4, स – 5

(c) अ – 3, ब – 2, 1, स – 4, 5 (d) अ – 1, ब – 2, स – 3, 4

प्र. 42. व्रण में सीवन कर्म के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/49-50-51)

(a) अभिघात से विवृत मुख वाले सद्योव्रण को तत्काल सीवन कर्म करना चाहिए।

(b) शिर, अक्षिकूट, ओष्ठ, गण्ड आदि के व्रणों पर सीवन कर्म नहीं करना चाहिए।

(c) गम्भीर स्थानों में जो मासंल व अचल व्रण हो उनका सीवन कर्म करना चाहिए।

(d) जिन व्रणों से वायु निकलती हो, अन्दर शल्य हो, क्षार, अग्नि विष से उत्पन्न हुए हो ऐसे व्रणों में सीवन कर्म नहीं करना चाहिए।

प्र. 43. मेदज ग्रंथियों व कर्णपाली में पहले कौनसा कर्म करके सीवन कर्म करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/49)

(a) छेदन (b) लेखन

(c) भेदन (d) प्रच्छान

प्र. 44. कौनसे स्थान सीवन कर्म के अयोग्य माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 29/51)

(a) वक्षंण प्रदेश के अल्प मांस वाले चल स्थान वाले व्रण

(b) कक्षा प्रदेश के अल्प मांसल पर चल स्थान वाले व्रण

(c) Both a & b

(d) शिर प्रदेश में

प्र. 45. निम्न में से व्रण में सीवन कर्म करने योग्य स्थान हैं - (अ. हृ. सू. 29/50)

(a) वृषण (b) पायु

(c) मेढ्र (d) All

प्र. 46. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/52-53-54)

(a) चलास्थि को दूर करके, शुष्क, रक्त, तृण व रोम आदि को हटाकर लटकने वाले मांस को अपने स्थान पर व्यवस्थित करके स्नायु या वल्कल से व्रण में सीवन कर्म करना चाहिए।

(b) न ज्यादा दूर-दूर, न ज्यादा नजदीक-नजदीक सीवन कर्म करना चाहिए व सीवन कर्म करते समय मांस त्वचा आदि को न अधिक ले एवं न कम ले।

(c) व्रण का सीवन करने वाद रोगी का सान्त्वना देकर अञ्जन, रेशम की राख, फलिनी, मुलेठी चूर्ण को मधु व घृत में आलोड़ित कर व्रण पर रखकर पट्ट बांध दें।

(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 47. आविक, आजिन, कौशेय बन्धन होते है। (अ. हृ. सू. 29/57)

(a) शीत (b) उष्ण

(c) Both a & b (d) शीत-स्निग्ध

प्र. 50. सीवन कर्म में सन्धान का काम कौन करता हैं। (अ. हृ. सू. 29/56)

(a) कफ (b) मांस

(c) रक्त (d) पित्त

प्र. 51. स्नायु व वल्कल, तूल के तन्तु व कपास से बने बंधन किस प्रकार के होते हैं। (अ. हृ. सू. 29/58)

(a) शीत (b) उष्ण

(c) A & B (d) स्निग्ध

प्र. 52. ताम्र, लोह, वंश व शीश इनके बन्धन किसमें प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 29/58)

(a) मेद व कफ अधिकता व्रण में (b) अस्थिभग्न में

(c) A & B (d) वंक्षण प्रदेश में

प्र. 53. अस्थिभग्न में किसका बन्धन कर्म में प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/58)

(a) फलक (b) चर्म

(c) कुशा (d) All

प्र. 54. अ. ह. के अनुसार कितने प्रकार के बन्ध माने गये हैं। (अ. हृ. सू. 29/59)

(a) 14 (b) 15

(c) 10 (d) 8

प्र. 55. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 29/60 (1, 2))

बंध	**स्थान**
अ. कोश	**1. कान, कक्षा आदि**
ब. स्वस्तिक	**2. अंगुलि पर्व**
स. मुत्तोली	**3. संबाध अंग**
द. चीन	**4. मेढ्र**
न. दाम	**5. ग्रीवा**
र. खट्वा	**6. संधिया**
	7. गण्ड प्रदेश, हनु, शंख प्रदेश
	8. अपागं

(a) अ - 1, ब - 2, 7, स - 3, द - 4, 5, न - 6, र - 8

(b) अ - 2, ब - 1, 6, स - 4, 5, द - 8, न - 3, र - 7

(c) अ - 1, ब - 6, स - 4, 5, द - 8, न - 3, 1, र - 7

(d) अ - 6, ब - 1, 4, स - 5, द - 8, न - 3, र - 7

प्र. 56. शाखाओं पर कौन सा बंध बंधाते हैं। (अ. हृ. सू. 29/60 (2))

(a) स्वस्तिक (b) पञ्चांगी

(c) अनुवेल्लित (d) उत्सङ्ग

प्र. 57. विबधं बंध किस स्थान पर बांधते हैं। (अ. हृ. सू. 29/60 (3))

(a) पृष्ठ (b) उदर

(c) Both a & b (d) आन्त्रवृद्धि

प्र. 58. स्थगिका बन्ध कहाँ-कहाँ बांधते हैं। (अ. हृ. सू. 29/60 (3))

(a) अंङ्गुष्ट, अंङ्गुलि के अग्र भाग (b) मेढ्र अग्र भाग

(c) आन्त्रवृद्धि (d) All

प्र. 59. लटकने वाले (विलम्बन करने) वाले अंगो व बाहु पर कौन सा बंध बाधते हैं। (अ. हृ. सू. 29/60 (4))

(a) उत्संग (b) दाम

(c) वितान (d) मण्डल

प्र. 60. नासिका, ओष्ठ, चिबुक व संधियां पर कौन सा बंध बाधते हैं। (अ. हृ. सू. 29/60 (5))

(a) वितान (b) गोफण

(c) मण्डल (d) यमक

प्र. 61. उचित मिलान करें। (अ. हृ. सू. 29/60 (5,4))

बंध	**स्थान**
अ. वितान	**1. वृत अंग**
ब. यमक	**2. पृथुल अंग**
स. मण्डल	**3. यमक व्रण**
द. पंचागी	**4. शिर**
	5. जत्रु का उर्ध्व भाग

(a) अ - 1, ब - 3, स - 2, 5, द - 4

(b) अ - 1, ब- 2, स - 3, 5 , द - 4

(c) अ - 2, 4, ब - 3, स - 1, द - 5

(d) अ - 2, ब - 3, 4, स - 1, द - 5

प्र. 62. उरू, स्फिक्, कक्षा, वंक्षण व मूर्धा पर कैसा बन्धन बांधना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/62)

(a) गाढ़ (b) सम

(c) अतिगाढ़ (d) शिथिल

प्र. 63. शाखा, वदन, पृष्ठ, पार्श्व, गल, उदर, मेहन, मुष्क आदि पर कैसा बंधन बांधना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/63) (NIA LEC 2020)

(a) गाढ़ (b) सम
(c) शिथिल (d) अतिशिथिल

प्र. 64. शिथिल बंधन किन अंगों पर बांधना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/1)

(a) नेत्र व संधियों (b) उरः प्रदेश
(c) कर्ण (d) All

प्र. 65. निम्न में से असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/63-64)

(a) शिथिल स्थान में वातश्लेष्मज व्रण हो तो सम बन्धना चाहिए।
(b) समस्थानों में वातश्लेष्म व्रण हो तो गाढ़ बन्धन बांधना चाहिए।
(c) सम स्थानों में वातश्लेष्मज व्रण हो तो अतिगाढ़ बन्धन बांधना चाहिए।
(d) जहाँ गाढ़ बंधन बांधना चाहिए वहाँ वातश्लेष्जम व्रण हो तो और भी ज्यादा गाढ़ बंधन बांधना चाहिए।

प्र. 66. वात श्लेष्मज व्रण में बांधे गये बन्धन को शीतकाल व बसन्त ऋतु में किसने दिन में अंतर से खोलना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/64)

(a) 5 - 5 (b) 3 - 3
(c) 7 - 7 (d) 2 - 2

प्र. 67. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/65, 66)

(a) पित्त रक्त व्रणों में गाढ़ स्थान पर सम बंधन बांधना चाहिए और सम बंधन जहाँ बांधने का विधान वहा पर शिथिल बंधन बांधना चाहिए।
(b) पित्त - रक्तज व्रणों में जहाँ शथिल बंधन बांधने का विधान है उन्हे खुला छोड़ना चाहिए।
(c) व्रण पर बंधन नहीं करने से दंश, मच्छर, शीतल वायु से पीडित व्रण दूषित हो जाता हैं व स्नेह भेषज चिरकाल तक ठहर नहीं पाती हैं।
(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 68. पित्तज व्रणों को कितने दिन में खोलना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/65)

(a) प्रातः साय प्रतिदिन (b) 1 - 1 दिन में
(c) 2 - 2 दिन में (d) प्रातः दिन में

प्र. 69. सभी प्रकार के व्रणों को कौनसी ऋतु में प्रातः सायं दोनों समय खोलना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/65)

(a) ग्रीष्म (b) शरद
(c) Both a & b (d) वर्षा

प्र. 70. व्रण बंधन नहीं करने से क्या हानि होती हैं। (अ. हृ. सू. 29/67)

(a) कृच्छ्रता से शुद्धि (b) कठिनता से संरोहण
(c) विवर्णता (d) All

प्र. 71. व्रण बंधन के लाभ क्या - क्या हैं। (अ. हृ. सू. 29/68-69)

(a) अस्थि में चूर्णित व्रण, अस्थि भग्न से हुआ व्रण या सिरा स्नायु छिन्न हो गई हो ऐसा व्रण बंधन से सूखपूर्वक संरोहित हो जाता हैं।

(b) उत्थान व शयन आदि सम्पूर्ण चेष्टाओं से व्रण पीडित नहीं होता।
(c) उद्धतौष्ठ, कठिन, अतिरूक्, मुदुरूक्, तथा समव्रण भी बंधन करने से शीघ्र संरोहित हो जाते है।
(d) All

प्र. 72. किन व्रणों का पत्राच्छादान करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/70-71)

(a) स्थिर व्रण व अल्पमांस वाले व्रण
(b) रूक्ष व्रण
(c) Both a & b
(d) स्निग्ध व्रण

प्र. 73. पत्राच्छादन के लिए किन वृक्ष का प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/7)

(a) क्षीरीवृक्ष
(b) भोजपत्र
(c) अर्जुन व कदम्ब
(d) All

प्र. 74. बन्धन के अयोग्य व्रण के संदर्भ में असत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 29/72-73)

(a) कुष्ठ व अग्निदग्ध से पिड़ित व्रण, मधुमेह पिड़िकायें, कुन्दरू विष से उत्पन्न कर्णिकाओं में गाढ़ बंधन के योग्य हैं।
(b) क्षारदग्ध, विष युक्त व्रण, मांस पाक के व्रण, दारूण गुदपाक से उत्पन्न शीर्यमाण व्रण, पीड़ा व दाहयुक्त व्रण में तथा शोथावस्था में विसर्पण शील वर्णों में बंधन नहीं बांधना चाहिए।
(c) जिन व्रणों में मक्खियाँ व कृमि होते हैं उन व्रणों का व्रण धावन करके सुरसादिगण की औषधियां प्रयोग करनी चाहिए।
(d) कृमिज व्रणों में सप्तवर्ण, करञ्ज, अर्क निबं आदि की छाल का गोमूत्र से कल्क बनाकर लेप करना व क्षार जल से परिषेक हितकारी होता हैं।

प्र. 75. व्रण में उत्पन्न कृमि क्या करते हैं। (अ. हृ. सू. 29/76)

(a) व्रण भक्षण
(b) वेदना
(c) शोथ व रक्तस्त्राव्
(d) All

प्र. 76. व्रण के रूढ़ हो जाने तक किन-किन का त्याग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/78, 79)

(a) अजीर्ण
(b) व्यायाम - व्यवाय
(c) अति हर्ष, क्रोध, भय
(d) All

प्र. 77. व्रणी को पथ्यापथ्य का परिपालन कितने समय तक करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 29/79)

(a) 1 वर्ष
(b) 6-7 मास
(c) 3 मास
(d) 6 मास

उत्तरमाला

1.	(d)	2.	(b)	3.	(b)	4.	(a)	5.	(b)	6.	(c)
7.	(b)	8.	(a)	9.	(a)	10.	(b)	11.	(c)	12.	(b)
13.	(a)	14.	(d)	15.	(d)	16.	(a)	17.	(c)	18.	(d)

19.	(b)	20.	(a)	21.	(b)	22.	(c)	23.	(d)	24.	(c)
25.	(d)	26.	(a)	27.	(b)	28.	(d)	29.	(c)	30.	(d)
31.	(a)	32.	(d)	33.	(a)	34.	(d)	35.	(b)	36.	(b)
37.	(b)	38.	(a)	39.	(d)	40.	(b)	41.	(a)	42.	(b)
43.	(b)	44.	(c)	45.	(d)	46.	(d)	47.	(b)	48.	(b)
49.	(b)	50.	(c)	51.	(c)	52.	(a)	53.	(d)	54.	(b)
55.	(b)	56.	(c)	57.	(c)	58.	(d)	59.	(a)	60.	(b)
61.	(c)	62.	(a)	63.	(b)	64.	(a)	65.	(c)	66.	(b)
67.	(d)	68.	(a)	69.	(c)	70.	(d)	71.	(d)	72.	(c)
73.	(d)	74.	(a)	75.	(d)	76.	(d)	77.	(b)		

अध्याय - 30

प्र. 1. सर्वशस्त्रानुशस्त्राणां ..... श्रेष्ठो बहूनि यत्। इस सूत्र को पूरा करें। (अ. हृ. सू. 30/1)

(a) अग्नि (b) क्षार

(c) हस्त (d) यन्त्र

प्र. 2. क्षार कर्म की श्रेष्ठता में क्या - क्या कारण हैं। (अ. हृ. सू. 30/1-2)

(a) यह छेदन - भेदन आदि अनेक कर्म करता हैं।

(b) जहाँ शस्त्र कठिनता से प्रयोग हो या जो रोग शस्त्र से सिद्ध नहीं होते वहाँ क्षार उपयोगी होता हैं।

(c) अतिकृच्छ्र रोगों में व पान में भी प्रयुक्त होता हैं।

(d) उपरोक्त सभी कारणों के कारण श्रेष्ठ है।

प्र. 3. क्षार का आभ्यान्तर प्रयोग किस व्याधि में करते हैं। (अ. हृ. सू. 30/2)

(a) अर्श (b) अग्निमांद्य

(c) अश्मरी (d) All

प्र. 4. क्षार का आभ्यान्तर प्रयोग किस व्याधि में नहीं करते हैं। (अ. हृ. सू. 30/2)

(a) मषक (b) गुल्म

(c) उदर रोग (d) विष

प्र. 5. क्षार का बाह्य प्रयोग किन व्याधि में करते हैं। (अ. हृ. सू. 30/3)

(a) श्वित्र (b) बाह्य अर्श

(c) कुष्ठ (d) All

प्र. 6. क्षार का बाह्य प्रयोग किस व्याधि में नहीं करते हैं। (अ. हृ. सू. 30/3)

(a) अर्श (b) भगन्दर

(c) अर्बुद - ग्रंथि (d) दुष्ट व नाडी व्रण

प्र. 7. क्षार प्रयोग का निषेध किसमें किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 30/5)

(a) वातज विकृति (b) सर्वशरीरगत शोथ

(c) ऋतुमती (d) All

प्र. 8. किन दो ऋतुओं में क्षार का प्रयोग निषेध किया गया हैं। (अ. हृ. सू. 30/7)

(a) शरद-ग्रीष्म (b) वर्षा - ग्रीष्म

(c) शरद-वर्षा (d) हेमन्त - शिशिर

प्र. 9. मृदु क्षार से मध्यम क्षार बनाने के लिए किसका प्रतिवाप डालना चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/15-16)

(a) सुधा भस्म (b) शुक्ति

(c) क्षीर पकं व शंखनाभि (d) All

प्र. 10. मृदु से तीक्ष्ण क्षार बनाने के लिए किस-किस द्रव्यों से प्रतिवाप किया जाता हैं। (अ. हृ. सू. 30/21)

(a) लाङ्गंली (b) दन्ती
(c) चित्रक (d) All

प्र. 11. तीक्ष्ण क्षार को कितने दिन बाद प्रयोग करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/21)

(a) 5 (b) 3
(c) 7 (d) 14

प्र. 12. निम्न में सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 30/22-23)

(a) तीक्ष्ण क्षार का प्रयोग महत स्वरूप वाले वातज, श्लेष्मज एवं मेदज अर्बुदादि रोगों में करना चाहिए। यदि वे विकार मध्यम स्वरूप वाले हो तो मध्यम क्षार का प्रयोग करना चाहिए।
(b) मृदु क्षार का प्रयोग पित-रक्तज, अर्बुदादि तथा सभी प्रकार के अर्श रोगों में करना चाहिए।
(c) जिस क्षार में जलीयाशं कम हो गया हो उस क्षार को शक्तिसंपन्न बनाने के लिए पुनः क्षारोदक डालना चाहिए।
(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 13. क्षार के कितने गुण हैं- (अ. ह.) के अनुसार। (अ. हृ. सू. 30/24-25)

(a) 10 (b) 8
(c) 12 (d) 11

प्र. 14. निम्न में से क्षार का गुण हैं। (अ. हृ. सू. 30/24-23)

(a) शिखरी (b) सुख निर्वाप्य
(c) सित (d) All

प्र. 15. निम्न में से क्षार का गुण नहीं हैं। (अ. हृ. सू. 30/24-25)

(a) सौम्य (b) श्लक्ष्ण
(c) पिच्छिल (d) शीघ्र

प्र. 16. निम्न में से असत्य कथन हैं । (अ. हृ. सू. 30/26)

(a) क्षार शस्त्र और अग्नि का भी कार्य करता है। यह आचूषण करता हुआ वेगपूर्वक गात्र को पीड़ित करता हुआ सभी मार्ग का अनुसरण करता हुआ समूल दोषो का उन्मूलन करता हैं।
(b) क्षार साध्य रोग में छेदन, लेखन या रक्त विस्त्रावण करके शलाका से क्षार लगाना चाहिए।
(c) अर्श रोग में क्षार प्रयोग करके हस्त से यंत्र के मुख को खोल देना चाहिए।
(d) वर्त्मरोगी में वर्त्म को उल्टा करके कृष्ण भाग को दूसरे स्वच्छ दूसरे स्वच्छ पिचु से ढककर वर्त्म में कमल पत्र के किनारे के बराबर पतला क्षार लेप करें।

प्र. 17. क्षार साध्य रोगों कितने समय तक क्षार लगाना चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/27)

(a) 1000 मात्रा (b) 100 मात्रा
(c) 10 मात्रा (d) 200 मात्रा

प्र. 18. घ्राणार्बुद व कर्ण अर्श में कितनी मात्रा तक क्षार का धारण करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/30)

(a) 100 मात्रा (b) 50 मात्रा
(c) 1000 मात्रा (d) 200 मात्रा

प्र. 19. क्षार का सम्यक् दग्ध होने पर दग्ध स्थान पर क्या लगाना चाहिए - (अ. हृ. सू. 30/31)

(a) घृत - मधु (b) मुलेठी - घृत
(c) मुलेठी - तिल (d) मधु - मुलेठी

प्र. 20. अर्श आदि में क्षार प्रयोग से स्थिर मूल के क्षरण नहीं होने पर क्या करना चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/33)

(a) धान्याम्ल बीज में मुलेठी व तिल का लेप (b) मधु - घृत का लेप
(c) मुलेठी - तिल का लेप (d) All

प्र. 21. क्षार दग्ध में व्रण रोपण के लिए किसका प्रयोग करते हैं। (अ. हृ. सू. 30/33)

(a) तिल कल्क + मुलेठी + मधु का लेप
(b) तिल कल्क + मुलेठी + घृत का लेप
(c) धान्याम्ल + मुलेठी + मधु
(d) मधु - घृत

प्र. 22. पक्वजम्ब्वसित के समान दग्ध स्थान कैसे क्षार दग्ध का लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 30/33)

(a) अति दग्ध (b) दुर्दग्ध
(c) सम्यक् दग्ध (d) हीन दग्ध

प्र. 23. दुर्दग्ध के निम्न लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 30/34)

(a) दग्ध स्थान ताम्रवर्ण (b) तोद
(c) कण्डू (d) All

प्र. 24. अतिदग्ध के लक्षण क्या - क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/35)

(a) रक्तस्त्राव् (b) मूर्च्छा
(c) दाह - ज्वर (d) All

प्र. 25. निम्न में से सत्य कथन हैं। (अ. हृ. सू. 30/36-37, 39)

(a) गुदा प्रदेश में अति दग्ध से विशेष रूप से विट् मूत्र अवरोध या अतिप्रवृत्ति होती हैं, नंपुसकता अथवा गुदा विर्दीण होने से मृत्यु हो जाती हैं।
(b) नासा में अति दग्ध होने पर नासिका वंश में विदीर्ण हो जाता है अथवा आकुञ्चन हो जाता हैं
(c) अतिदग्ध के उपचार में अम्ल द्रव्यों का प्रयोग करते हैं क्योंकि अम्ल रस क्षार से मिलकर स्वादु बन जाता हैं।
(d) सभी कथन सत्य हैं।

प्र. 26. क्षार से अतिदग्ध की चिकित्सा क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/38-39)

(a) अम्ल द्रव्यों से परिषेक (b) मधु - घृत - तिल का लेप
(c) वात पित्त शमन करने वाली शीतल क्रियाएं (d) All

प्र. 27. विषांग्नि शास्त्राग्नि मृत्यु तुल्य, क्षारो भवेद अल्पमतिप्रयुक्त रोगान् निहन्याद् अचिरेण घोरान् स धीमता सम्यनुप्रयुक्तो। ये सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/39 (1))

(a) अ. हृ. सू. 30 (b) अ. ह. चि. 5

(c) अ. ह. सू. 29 (d) अ. ह. नि. 2

प्र. 28. ..... क्षाराद् अपि श्रेष्ठस्तद्दग्धानाम् असंभवात्। सूत्र पूरा करें। (अ. ह. सू. 30/40)

(a) अग्निकर्म (b) जलौकावचारण

(c) शल्य कर्म (d) पंचकर्म

प्र. 29. जो रोग भैषज, क्षार, शस्त्र से भी सिद्ध नहीं होते हैं वो किस कर्म से ठीक हो सकते हैं। (अ. ह. सू. 30/40)

(a) व्यायाम (b) अग्नि कर्म

(c) पंचकर्म (d) All

प्र. 30. अग्नि कर्म के प्रयोग स्थल क्या हैं। (अ. ह. सू. 30/40)

(a) त्वक् - मांस (b) सिरा - स्नायु

(c) संधि - अस्थि (d) All

प्र. 31. निम्न में असत्य कथन हैं। (अ. ह. सू. 30/41-42-43)

(a) मषक, अङ्गग्लानि, शिरोरोग, चर्मकील, तिल आदि विकारों में अग्नि कर्म में त्वक् दाह करना चाहिए व वर्ति, गो दन्त, सूर्यकान्त मणि व शर से त्वक् दाह करते हैं।

(b) वर्ति गोदन्त, सूर्यकान्त, मणि, शर से मांस दाह करते हैं।

(c) अर्श, भगन्दर, ग्रंथि, नाडी व्रण, दुष्ट व्रण आदि में मधु, स्नेह, जाम्बवौष्ठ व गुड़ से मांसदाह करना चाहिए।

(d) श्रिलष्ट वर्त्म, रक्तास्त्राव्, नीलिका व असम्यक् सिरावेधन में मांसदाह वाले द्रव्यों से सिरा दाह करना चाहिए।

प्र. 32. अधिमन्थ रोग में क्या करते हैं। (अ. ह. सू. 30/41)

(a) मांस दाह (b) त्वक्दाह

(c) सिरा दाह (d) स्नायुदाह

प्र. 33. भगन्दर, नाडीव्रण में कौन सा दाह करते हैं। (अ. ह. सू. 30/42)

(a) मांस (b) त्वक्

(c) सिरा (d) स्नायु

प्र. 34. अग्नि कर्म का निषेध किया गया हैं। (अ. ह. सू. 30/44)

(a) अन्त:शल्य युक्त स्थान (b) अन्त: रक्त युक्त स्थान

(c) भिन्न कोष्ठ व बहु व्रण वाला आतुर (d) All

प्र. 35. अग्नि कर्म के निषेध किसके समान माने गये हैं। (अ. ह. सू. 30/44)

(a) स्वेदन (b) विरेचन

(c) क्षारकर्म (d) शल्यकर्म

प्र. 36. अग्नि कर्म में सम्यक दग्ध होने पर क्या उपचार करना चाहिए - (अ. ह. सू. 30/44)

(a) मधु - घृत लेप (b) स्निग्ध - शीत द्रव्यों से लेप

(c) Both a & b (d) मधु + मुलेठी + घृत का लेप

प्र. 37. पक्वतालं कपोताभ ये लक्षण किस प्रकार के दग्ध के हैं। (अ. हृ. सू. 30/45)

(a) अतिदग्ध (b) सम्यक् दग्ध

(c) दुर्दग्ध (d) अदग्ध

प्र. 38. सम्यक् दग्ध के क्या लक्षण हैं। (अ. हृ. सू. 30/45)

(a) प्रवृत रक्त स्त्राव् बन्द होना

(b) दह्मान स्थान बुदबुदशब्द के समान होना

(c) दह्मान स्थान लसीका युक्त व सुरोह नातिवेदनम्

(d) All

प्र. 39. दुर्दग्ध व अतिदग्ध में किसके लक्षण होते हैं। (अ. हृ. सू. 30/46)

(a) तुच्छ दग्ध (b) प्रमाददग्ध

(c) दुष्ट व्रण (d) क्षार दग्ध

प्र. 40. दग्ध कितने प्रकार का माना गया हैं। (अ. हृ. सू. 30/47) (UDAIPUR 2016)

(a) 5 (b) 3

(c) 4 (d) 7

प्र. 41. तुच्छ दग्ध के निम्न लक्षण हैं (अ. हृ. सू. 30/47)

(a) त्वक विवर्णता (b) अति दाह

(c) स्फोट न होना (d) All

प्र. 42. तीव्र दाह, ओष व स्फोट उत्पत्ति किसके लक्षण है। (अ. हृ. सू. 30/48)

(a) तुच्छ दग्ध (b) दुष्ट व्रण

(c) अतिदग्ध (d) दुर्दग्ध

प्र. 43. मांसलम्बनसंकोच दाहधूपन वेदना सिरादिनाश स्तृण्मूर्च्छा व्रणगाम्भीर्यमृत्यु ये दग्ध लक्षण किसके लिए कहे गये हैं। (अ. हृ. सू. 30/48)

(a) तुच्छ दग्ध (b) प्रमाद दग्ध

(c) अति दग्ध (d) दुर्दग्ध

प्र. 44. तुच्छ दग्ध में स्थान (जमा हुआ) रक्त होता हैं इससे वेदना अधिक होती है इसलिए स्त्यान रक्त को विलीन करने के लिए क्या चिकित्सा करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/49)

(a) शीतल उपचार (b) उष्ण भेषज

(c) अग्नि प्रतपनं (d) B & C

प्र. 45. दुर्दग्ध चिकित्सा क्रम क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/50)

(a) शीत – उष्ण – उष्णोशीतोपचार (b) शीत – उष्ण – शीतोपचार

(c) उष्ण – शीत – उष्णोपचार (d) उष्णोशीतोपचार

प्र. 46. तुगाक्षीरी, प्लक्ष, चन्दन व गैरिक को घृत व गिलोय स्वरस में मिलाकर लेप करना किस दग्ध की चिकित्सा हैं। (अ. हृ. सू. 30/51)

(a) अतिदग्ध (b) सम्यक् दग्ध

(c) तुच्छ दग्ध (d) दुर्दग्ध

प्र. 47. सम्यक् दग्ध की चिकित्सा किसके समान करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/51)

(a) पित्तज विसर्प (b) पितज गुल्म

(c) पित्तज विद्रधि (d) तुच्छ दग्ध

प्र. 48. अति दग्ध की चिकित्सा किसके समान करनी चाहिए। (अ. हृ. सू. 30/51)
(BHU PGET 2015)

(a) पित्तज विसर्प (b) आग्नेय विसर्प

(c) कर्दम विसर्प (d) पित्तज विद्रधि

प्र. 49. स्नेह दग्ध की चिकित्सा क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/52)

(a) शीतोपचार (b) रूक्षोपचार

(c) उष्णोपचार (d) उष्णशीतोपचार

प्र. 50. शस्त्र क्षाराग्नयो मृत्योः परमम् आयुधम अप्रमतो भिषक् तस्मात् तान सम्यक् अवचारयेत। ये सूत्र का संदर्भ क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/52 (1))

(a) अ. हृ. सू. 1 (b) अ. हृ. सू. 29

(c) अ. हृ. सू. 30 (d) अ. हृ. सू. 3

प्र. 51. अष्टांग हृदय का रहस्य स्थान कौन सा है। (अ. हृ. सू. 30/53)

(a) शारीरस्थान (b) सूत्रस्थान

(c) निदान स्थान (d) उत्तरतंत्र

प्र. 52. अष्टांगहृदय के सूत्र स्थान की विशेषताएं क्या हैं। (अ. हृ. सू. 30/53)

(a) सूक्ष्म अर्थ सूत्रित किये गये हैं (b) ये विषय सम्पूर्ण तंत्र में फैले हुए

(c) A & B (d) None

उत्तरमाला

1.	(b)	2.	(d)	3.	(d)	4.	(a)	5.	(d)	6.	(a)
7.	(d)	8.	(b)	9.	(d)	10.	(d)	11.	(c)	12.	(d)
13.	(a)	14.	(d)	15.	(a)	16.	(c)	17.	(b)	18.	(b)
19.	(a)	20.	(a)	21.	(a)	22.	(c)	23.	(d)	24.	(d)
25.	(d)	26.	(d)	27.	(a)	28.	(a)	29.	(b)	30.	(d)
31.	(b)	32.	(b)	33.	(a)	34.	(d)	35.	(c)	36.	(c)
37.	(b)	38.	(d)	39.	(b)	40.	(c)	41.	(d)	42.	(d)
43.	(c)	44.	(d)	45.	(b)	46.	(b)	47.	(c)	48.	(a)
49.	(b)	50.	(c)	51.	(b)	52.	(c)				

अध्याय-1

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. अष्टांग हृदय की विशेषताएं लिखें
प्र. 2 विकृत - अविकृत दोषो के बारे में लिखे
प्र. 3 दोषो का स्थान के अनुसार वर्णन करें
प्र. 4 दोष व अग्नि का सबधं बताएं
प्र. 5 दोष व शारारिक प्रकृति का वर्णन करें
प्र. 6 वात, पित्त, कफ दोष के गुणो का वर्णन करें।
प्र. 7 सप्त दूष्य कौनसे है।
प्र. 8 वृद्धिः समाने सर्वेषा विपरीतैविपर्ययः की व्याख्या करें।
प्र. 9 षड् रस कौन-कौन से है।
प्र. 10 प्रभाव भेद सें द्रव्य के भेद बताएं
प्र. 11 वीर्य का वर्णन करें।
प्र. 12 विपाक के भेद का वर्णन करें।
प्र. 13 गुर्वादि गुण लिखें।
प्र. 14 रोग व आरोग्य का वर्णन करें
प्र. 15 रोग के भेद कौन - कौन से हैं।
प्र. 16. रोगो को अधिष्ठान कौन - कौन से है।
प्र. 17. मानसिक दोष कौन - कौन से है।
प्र. 18. निदान पचंक क्या है।
प्र. 19. भूमि देश के प्रकार लिखें।
प्र. 20. काल के भेद को लिखें।
प्र. 21. शरीर दोषो की परम औषध क्या है।
प्र. 22. औषध के भेद लिखें।
प्र. 23. अष्टांग हृदय में कितनें स्थान व अध्याय है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. रोग - आरोग्य का वर्णन करते हुए रोग - आरोग्य का कारण का वर्णन करें।
प्र. 2. देश के भेद व देशानुसार दोषो का वर्णन करें
प्र. 3. चिकित्सा के चतुष्पाद का वर्णन करें
प्र. 4. सुख साध्य व्याधि का वर्णन करें।
प्र. 5. त्याज्य रोगी कौन-कौन से है।

दीर्घात्मक प्रश्न

प्र. 1. साध्यता - असाध्यता के आधार पर व्याधियों का वर्णन विस्तारपूर्वक करें।
प्र. 2. आयुष्कामीय अध्याय को विस्तारपूर्वक लिखें।

अध्याय–2

प्र. 1. ब्रह्म मुहूर्त में क्यों उठना चाहिए
प्र. 2. चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषात् श्रलेष्मतो। अर्थ समझाए
प्र. 3. ताम्बूल सेवन निषेध किसे कहा गया है।
प्र. 4. उद्वर्तन के लाभ बताएं
प्र. 5. सुख का साधन क्या है।
प्र. 6. उत्तमाङ्ग में उष्ण जल स्नान का प्रयोग क्यों नहीं करना चाहिए
प्र. 7. अभ्यङ्ग का वर्णन करें

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. दन्तपवन का विस्तारपूर्वक वर्णन करें
प्र. 2. अञ्जन का वर्णन करें
प्र. 3. व्यायाम के लाभ, मात्रा, निषेध, हानि का वर्णन करें
प्र. 4. स्नान का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
प्र. 5. दशविध पापकर्म विस्तार से लिखें

दीर्घात्मक प्रश्न

प्र. 1. दिनचर्या अध्याय का विस्तारपूर्वक वर्णन करें

अध्याय–3

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. सूर्य की गति के अनुसार संवत्सर के भेद कौन - कौन से है।
प्र. 2. आदान व विसर्ग काल में बल की स्थिति का वर्णन करें
प्र. 3. हेमन्त ऋतु मे जठराग्नि प्रबल क्यों होती है।
प्र. 4. हेमन्त ऋतु व शिशिर ऋतु में क्या अन्तर है।
प्र. 5. बसन्त ऋतु में कफ दोष का प्रकोप क्यों होता है।
प्र. 6. बसन्त ऋतु में अपथ्य क्या है।
प्र. 7. हंसोदक का वर्णन करें
प्र. 8. ऋतु संधि किसें कहते है।
प्र. 9. असात्म्यज रोग कौन से होते है।
प्र. 10. वर्षा ऋतु में अग्नि की स्थिति का वर्णन करें।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. हेमन्त ऋतुर्चया का वर्णन करें

प्र. 2. वर्षा ऋतु में त्रिदोष प्रकोप का कारण, पथ्य अपथ्य आहार-विहार का वर्णन करें।

दीर्घात्मक प्रश्न

प्र. 1. बसन्त व ग्रीष्म ऋतुचर्या का वर्णन करें

प्र. 2. शरद ऋतुचर्या का वर्णन करें। व ऋतुसंधि का वर्णन करें।

प्र. 3. ऋतुचर्या का विस्तारपूर्वक करें।

अध्याय-4

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. अधारणीय वेगों का वर्णन करें

प्र. 2. मूत्र वेग रोध से होने वाले रोगों का वर्णन करें

प्र. 3. मूत्र वेगरोध की चिकित्सा लिखें

प्र. 4. त्याज्य वेगरोधी कौन-कौन से है।

प्र. 5. वेगो को धारण व उदीरण करने से कौन सा दोष प्रकुलित होता है।

प्र. 6. भेषज क्षपितें पथ्यमाट्टैरबृहणं। अर्थ स्पष्ट करें।

प्र. 7. आरोग्य के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए।

प्र. 8. धारणीय वेगो का वर्णन करें।

प्र. 9. दोषाः कदाचित्कुप्यन्ति.....सूत्र को पूरा करते हुए अर्थ लिखें

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. रोगाः सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदरीणधारणैः। सूत्र का विस्तारपूर्वक वर्णन करें

प्र. 2. निज व आगन्तुज रोगों की अनुत्पत्ति के उपायों का वर्णन करें

प्र. 3. अधोगत वेगरोध के लक्षण व चिकित्सा को लिखे।

दीर्घात्मक प्रश्न

प्र. 1. अधारणीय वेगों से उत्पन्न विकार व चिकित्सा का विस्तार से वर्णन करें।

प्र. 2. धारणीय वेगों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करें।

अध्याय-5

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. द्रवद्रव्यादि विज्ञानीयमध्यायं में कितने वर्गो का वर्णन किया गया है।

प्र. 2. पय जल की विशेषताएँ लिखें।

प्र. 3. पेयजल की परीक्षा कैसे करनी चाहिए।

प्र. 4. अल्प जल का सेवन किन स्थितियों में करना चाहिए।

प्र. 5. उष्णोदक जल के गुण लिखें।

प्र. 6. गो दुग्ध का वर्णन करें।

प्र. 7. तक्र के गुण लिखें।
प्र. 8. पुराण घृत के गुण लिखें।
प्र. 9. कृशानां बृंहणायलं स्थूलानां कर्शनाय च/ तैल के लिये आये इस सूत्र का अर्थ स्पष्ट करें।
प्र. 10. मघ के गुण लिखें।
प्र. 11. आसुत किसे कहते है।
प्र. 12. अष्टमूत्र का वर्णन करें।
प्र. 13. धान्याम्ल के गुण लिखें।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. क्षीर वर्ग का वर्णन करें
प्र. 2. दधि पर टिप्पणी करें।
प्र. 3. नवनीत व घृत के गुणो पर प्रकाश डालें।
प्र. 4. इक्षु वर्ग का वर्णन करें।

दीर्घात्मक प्रश्न

प्र. 1. जल वर्ग व मघ वर्ग का विस्तार पूर्वक वर्णन करें
प्र. 2. द्रव द्रव्यविज्ञानीय अध्याय में आये विषयों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए तैल वर्ग का विस्तृत वर्णन करें।

अध्याय-6

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. अन्नस्वरूपविज्ञानीय अध्याय में उल्लेखित वर्गो का नाम लिखें।
प्र. 2. शूक धान्य कौन से होते है।
प्र. 3. शिम्बी धान्य क्या होते है।
प्र. 4. मण्ड, पेया, विलेपी, ओदन का लघुता क्रम बताएं
प्र. 5. विष्किर और प्रतुद को परिभाषित करे
प्र. 6. प्रसट्ट प्राणी कों परिभाषित करें।
प्र. 7. आज मांस के गुण लिखें
प्र. 8. द्राक्षा के गुण लिखें।
प्र. 9. क्षार के सामान्य गुण लिखें।
प्र. 10. पचंकोल क्या होता है।
प्र. 11. बृहत पचंकोल व लघु पचंमूल को लिखें
प्र. 12. तृण पचंमूल लिखें।
प्र. 13. चर्तुजात क्या होता है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. मांस वर्ग का वर्णन करें

प्र. 2. औषध वर्ग का वर्णन करें।

प्र. 3. कृतान्ज वर्ग का वर्णन करें।

निबंधात्मक

प्र. 1. अन्नरूवरूपविज्ञानीय अध्याय में आये विषयों का वर्णन करते हुए शाक वर्ग व शिम्बी वर्ग का संक्षिप्त वर्णन करें।

अध्याय-7

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. राज भिषक् का कर्त्तव्य क्या है।

प्र. 2. अन्नरक्षाध्यायं में विषाक्त व्यंजनों की परीक्षा का सिंद्धात क्या है।

प्र. 3. विष दुष्ट भात के लक्षण बताइएं

प्र. 4. विष दुष्ट का लक्षण लिखें

प्र. 5. विषाक्त अन्न का अग्नि से परीक्षण कैसे करते है।

प्र. 6. विष चिकित्सा कैसे करते है।

प्र. 7. विरूद्धाहार को परिभाषित करें

प्र. 8. संयोग विरूद्ध आहार का उदाहरण दें।

प्र. 9. विरूद्ध आहार किन लोगो में प्रभाव नहीं डालते है।

प्र. 10. त्रय सपस्तम्भ क्या है।

प्र. 11. सर्वथा दिवास्वप्न अयोग्य कौन है।

प्र. 12. मैथुन के बाद करने योग्य कार्य का वर्णन कीजिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. विषाक्त अन्न का पक्षियों द्वारा परीक्षा कैसे करते है ? वर्णन करें।

प्र. 2. विषाक्त अन्न के ग्रहण करने पर शरीर को किस प्रकार प्रभावित करता है वर्णन करें

प्र. 3. निद्रा का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

प्र. 4. त्रयउपस्तम्भ लिखते हुए अब्रह्मचर्य का विस्तार से वर्णन करें।

निबंधात्मक

प्र. 1. अन्नरक्षा अध्याय का सविस्तार वर्णन करें।

अध्याय-8

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. मात्राशितीय अध्याय में मात्राशितीय का अर्थ स्पष्ट करें।

प्र. 2. हीन मात्रा भोजन से क्या होता है।
प्र. 3. आमदोष का वर्णन करें।
प्र. 4. अलसक की परिभाषा लिखें।
प्र. 5. आमविष किसे कहते है।
प्र. 6. विसूचिका की निरूक्ति लिखे
प्र. 7. त्रीण्यप्येतानि मृत्युं वा धोरान् व्याधीन् सृजन्ति वा अर्थ स्पष्ट करें।
प्र. 8. अभ्यास योग्य आहार का वर्णन करें।
प्र. 9. भोजन का प्रमाण कुक्षि के अनुसार वर्णन करें
प्र. 10. अनुपान की परिभाषा लिखें
प्र. 11. नित्य असेवनीय आहार का वर्णन करें

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. व्याधि के सामान्य चिकित्सा सिंद्धान्त का वर्णन करें।
प्र. 2. अजीर्ण के प्रकार का वर्णन कीजिये
प्र. 3. भोजन करने की विधि का विस्तार से वर्णन करिए।
प्र. 4. अनुपान का टिप्पणी लिखें

निबंधात्मक

प्र. 1. अजीर्ण का विस्तार से वर्णन करते हुए विभिन्न अजीर्ण की चिकित्सा भी लिखियें।
प्र. 2. मात्राशितीय अध्याय मे वर्णित विषयों का वर्णन कीजिए।

अध्याय-9

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. द्रव्य का स्वरूप क्या है।
प्र. 2. व्यपदेशस्तु भूयसा। अथ्र स्पष्ट करें
प्र. 3. आप्य द्रव्य के गुणर्धम लिखें।
प्र. 4. द्रव्य की योनि व उत्पत्ति क्या है।
प्र. 5. वमन व विरेचन द्रव्यों का स्वरूप क्या है।
प्र. 6. वीर्य व विपाक मे अन्तर स्पष्ट करें।
प्र. 7. अ.ट्ट. के अुनसार वीर्य के भेद लिखें
प्र. 8. त्रिविध विपाक कौन-कौन से है।
प्र. 9. प्रभाव की परिभाषा लिखें
प्र. 10. विचित्र प्रत्यारब्ध को परिभाषित करें
प्र. 11. द्रव्य के कार्मुकत्व को स्पष्ट करें।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. पचंमहाभूत द्रव्यों के गुणधर्म का वर्णन करें।
प्र. 2. द्रव्य, रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव को परिभाषित करें।

निबंधात्मक

प्र. 1. द्रव्यादिविज्ञान मध्याय का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

अध्याय-10

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. षड् रस लिखें।
प्र. 2. मधुर रस के लक्षण लिखें
प्र. 3. रसों के संयोग व कल्पना कितनी है। वर्णन करें।
प्र. 4. तिक्त रस के कर्म लिखें।

लघुत्तरात्मक

प्र. 1. अम्ल रस का विस्तार पूर्वक वर्णन करे।
प्र. 2. षड् स्कन्ध का वर्णन करें
प्र. 3. रस संयोग कल्पना का वर्णन करें।
प्र. 4. षड् रसो को सामान्य दोषो पर प्रभाव का वर्णन करते हुए अपवाद द्रव्यों पर लिखें।

निबंधात्मक

प्र. 1. षड् रसो का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
प्र. 2. रसभेदीय अध्याय में वर्णित विषयों का वर्णन करें

अध्याय-11

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. अविकृत वात के कर्म लिखें।
प्र. 2. अविकृत धातु के श्रेष्ठ कर्म लिखें
प्र. 3. अविकृत मलों के कर्म लिखें
प्र. 4. वृद्ध रक्त धातु के कर्म लिखें
प्र. 5. पुरीष वृद्धि के लक्षण लिखें
प्र. 6. मलोचित्वाद् देहस्य क्षयो वृद्देस्तु पीड़नः। अर्थ स्पष्ट करें
प्र. 7. मासंवृद्धि से उत्पन्न रोगों की चिकित्सा कैसे करते है।
प्र. 8. ओज का वर्णन करें
प्र. 9. यथा बल यथास्व च दोषा वृद्धा वितन्वतें। श्लोक पूरा करते हुए अर्थ स्पष्ट करें।

लघुत्तरात्मक

प्र. 1. दोषो के अविकृत कर्मो का वर्णन करें
प्र. 2. आश्रय - आश्रयी भावों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
प्र. 3. धातु क्षय की चिकित्सा का वर्णन करें।
प्र. 4. अग्नि का वर्णन करें।
प्र. 5. ओज को 'देहस्थितिनिबंधन' क्यो कहा गया। स्पष्ट करें।

निबंधात्मक

प्र. 1. धातु क्षय - वृद्धि चिकित्सा का विस्तार से वर्णन करें
प्र. 2. ओज के स्वरूप, गुण, क्षय के कारणों-लक्षणों व चिकित्सा का विस्तार से वर्णन करें।

अध्याय-12

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. वात के स्थान क्या है।
प्र. 2. वायु के भेद का वर्णन करें
प्र. 3. अपान वायु का वर्णन करें
प्र. 4. साधक पित्त का वर्णन करें
प्र. 5. पित्त दोष के भेदो का नाम लिखें।
प्र. 6. क्लेदक कफ का वर्णन करें।
प्र. 7. कफ दोष के संचय, प्रकोप व शमन पर लिखें।
प्र. 8. दोष सचंय को परिभाषित करें।
प्र. 9. शारडाश्रित रोगों का वर्णन करें
प्र. 10. प्रकुपित पित्त के कम्र लिखें
प्र. 11. स्वतन्त्र व परतन्त्र व्याधि का वर्णन करें
प्र. 12. उपद्रव को परिभाषित करें।
प्र. 13. दशविध परीक्ष्य भाव क्या है।
प्र. 14. दोषो के संसर्ग व सन्निपात का वर्णन करें
प्र. 15. पूर्वरूप को परिभाषित करें।

लघुत्तरात्मक

प्र. 1. वात दोष का वर्णन करें (स्थान, कर्म)
प्र. 2. त्रिदोष का सचंय, प्रकोप, शमन को लिखें
प्र. 3. ऋतुओं के अनुसार दोषो के चयादिकाल का वर्णन करें।
प्र. 4. विकार जातं प्रीन् दोषान्। अर्थ को स्पष्ट करें

प्र. 5. दोषों के प्रकोप को विस्तार से समझाएं
प्र. 6. त्रिविध रोगमार्ग को समझाइए
प्र. 7. दोषो के सचंयकाल में प्रकोप नहीं होता क्यों।

निबंधात्मक

प्र. 1. त्रिदोष के भेदो का नाम लिखते हुए प्रकुपित त्रिदोष के कर्म लिखें।
प्र. 2. व्याधि के त्रिविध भेदो का वर्णन करते हुए दोष भेदीय अध्याय का संक्षेप में वर्णन करें।

अध्याय-13

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. दोष का कोष्ठ से शाखा में गमन का कारण लिखें
प्र. 2. वात दोष का चिकित्सा उपक्रम लिखें
प्र. 3. अन्यस्थानस्थित दोषों का चिकित्सा सिद्धांत लिखें
प्र. 4. आम की परिभाषा लिखें
प्र. 5. साम दोषो की चिकित्सा लिखें
प्र. 6. दोषो की स्वयं प्रवृति होने पर चिकित्सक को क्या करना चाहिए
प्र. 7. दोषो का शोधन काल लिखें
प्र. 8. औषध काल कितने माने है।
प्र. 9. सामुद्र औषधकाल का सेवन कब करना चाहिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. कफ दोष की चिकित्सा का वर्णन करें
प्र. 2. रोगानुसार औषधकाल का वर्णन करें
प्र. 3. दोषो का कोष्ठ से शाखा व शाखा से कोष्ठ गमन में कारण क्या है लिखें
प्र. 4. आम, साम, निराम दोषो को समझाएं

निबंधात्मक प्रश्न

प्र. 1. आम दोष को परिभाषित करते हुए विस्तारपूर्वक दोषो की निर्हरण विधि लिखे
प्र. 2. त्रिदोष चिकित्सा उपक्रम लिखें
प्र. 3. श्रेष्ठ चिकित्सा की परिभाषा लिखते हुए दोषोपक्रमणीय अध्याय का विस्तार से उल्लेख करे

अध्याय-14

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. उपक्रम्य व उपक्रम की परिभाषा लिखें।
प्र. 2. द्विविध उपक्रम क्या है।
प्र. 3. भवतः प्रायो भौमापम् इत्तरच्च ते। अर्थ स्पष्ट करे
प्र. 4. शोधन की परिभाषा लिखे

प्र. 5. शमन की परिभाषा लिखे।
प्र. 6. लंघन के भेदो का वर्णन करें
प्र. 7. बृहंण उपक्रम क्या है।
प्र. 8. लघंन के योग्य कौन-कौन है।
प्र. 9. सम्यक् लघंन के लक्षण लिखें
प्र. 10. अति बृहंण की चिकित्सा लिखें

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. अपतर्वण योग्य अवस्थाओं व उपादान द्रव्यों का वर्णन करें
प्र. 2. बृहंण की परिभाषा लिखते हुए। बृहंण के सम्यक् लक्षण अति बृहंण लक्षण व अति बृहंण लक्षण व अति बृहंण की चिकित्सा का उल्लेख करें।
प्र. 3. द्विविध उपक्रम का वर्णन करें

निबंधात्मक प्रश्न

प्र. 1. शोधन व शमन योग्य रोग व रोगियों का विस्तृत वर्णन करें।
प्र. 2. कार्श्यम् एव वरम स्थौल्यान्.....सूत्र को पूरा करते हुए स्थौल्य व कार्श्य करी चिकित्सा का उल्लेख करें।

अध्याय-15

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. शोधनादि गण संग्रहाध्याय में बताये गणो की संख्या लिखें
प्र. 2. वातनाशक गणो के नाम लिखे।
प्र. 3. वमनकारक द्रव्य लिखें
प्र. 4. दुष्टव्रण विशोधक गण कौनसा है।
प्र. 5. आमातिसार व पस्वतिसार नाशक गण का नाम लिखें।

निबंधात्मक प्रश्न

प्र. 1. शोधनादिगण संग्रह अध्याय में वर्णित विषयों का वर्णन करें।

अध्याय-16

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. विरूक्षण द्रव्यों के गुण लिखें।
प्र. 2. स्नेह के नाम लिखें।
प्र. 3. स्नेह के योग्य कौन है।
प्र. 4. तैल सेवन किन्हे करना चाहिए
प्र. 5. कालानुसार स्नेह का प्रयोग कैसे करते है।
प्र. 6. अच्छ पेय को परिभाषित करें